॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [१]

दीक्षादिन उत्सव प्रसंग पर
पू. श्रीमोटा की पावन वाणी

सुरत, ता. ४-२-१९७२

अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पासमें,
जहाँगीरपुरा, रांदेर, सुरत-३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ मूल्य : ₹. ..../- (.... रूपये)

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम,
पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.
फोन : (०२६८) २५६७७९४

❑ अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी,
अवनिकापार्क सोसायटी, खानपुर,
अहमदाबाद-३८०००१.
फोन : (०७९) २५५०२६२३

❑ मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड,
कांकरीया रोड, अहमदाबाद-३८००२२.
फोन : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरि:ॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम आवृत्ति)

पू. श्रीमोटा क्वचित् ही प्रवचन करते थे। उनकी पावन वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजनने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी। ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने अक्षरश: सुनकर उसकी हस्तप्रत अथाह परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यत: स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था। वे सभी पुस्तकों का पुन: प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्टने संभाल लिया है।

पू. श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिन गुजरातीभाषाओं को भी मिल सके उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है। इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी। आपश्री कहते थे के 'मेरे लेखमें अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं। और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही रहने देना। इस आज्ञा को ध्यान में लेकर श्रीमोटा की यह ध्वनिमुद्रित वाणी आपश्री जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है। इस में कोई सुधार नहीं किया गया है।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुन: प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरश: वाणी अनुसार है यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी के हेसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य चतुरंगी मुखपृष्ठ सहित श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक, प्रेमभाव से किया है। हम उनका खूब खूब आभार मानते है।

समाज का विशाल वर्ग पू. श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और पू. श्रीमोटा का आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं।

॥ हरि:ॐ ॥

दि. १४-१-२०१४ — **ट्रस्टीमंडल**
वि.सं. २०७०, उत्तरायण हरि:ॐ आश्रम, सुरत

‘‘मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ’’

– मोटा

॥ हरि:ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. श्रीसद्‌गुरु का ऋण चुकाने हेतु मौनमंदिर ९

२. **मोटा** समाज (भगवान) के मुनीम ९

३. स्वास्थ्य के लिए स्नानागर बनाओ १०

४. आश्रम का संचालन बिलकुल मितव्ययितासे ११

५. आश्रम द्वारा दी गई दान की रकम की हृदयपूर्वक संभाल १२

६. ठक्करबापा की प्रस्तावना— **मोटा** की कर्मठता का प्रमाणपत्र १३

७. असह्य रोगोंमें भी साहित्य का सर्जन १४

८. दीक्षा अर्थात् १६

९. समाज— भगवान का व्यक्त स्वरूप १९

१०. समाज का काम वही भगवान की सेवा पूजा २१

११. श्रीमद् राजचंद्र का त्याग २२

१२. श्रीबालयोगी की शर्ते २३

१३. अशक्य का शक्य वही प्रभुकृपा २३

१४. आशीर्वाद, दर्शन, धोका देना यह सब छोड़ो २५

१५. मन्नत नहीं— प्रभुस्मरण और प्रार्थना २६

१६. **मोटा** के पुस्तक खरीदें २८

१७. **मोटा** के प्रसंगों के साक्षी हैं २८

१८. भावप्रधान विषयो पर शास्त्र २९

१९. दीक्षा-विधि ३०

२०. मोटा की भजन-भक्ति ३१

२१. कर्म का तत्त्वज्ञान.. ३३

२२. **मोटा** का काम– सब को प्रेम करना ३४
२३. श्रीबालयोगी की आज्ञा के अनुसार साधना ३५
२४. दान, परमार्थ की समझ ३६
२५. विरोधीओं के प्रति गांधीजी का व्यवहार ३७
२६. समय का अभिज्ञान ३९
२७. **मोटा**– कुशल अर्थशास्त्री ३९
२८. जिसका नमक खाया उसे सावधान करने का फर्ज........ ४१

॥ हरि:ॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

दिनांक ४-२-१९७३ के दिन सुरतमें दीक्षादिन के २९वें उत्सव प्रवचन पर पू. श्रीमोटा ने किया हुआ प्रवचन

● श्रीसद्‌गुरु का ऋण चुकाने हेतु मौनमंदिर ●

श्रीसद्‌गुरु का बहुत प्रेम-भक्ति-ज्ञानपूर्वक स्मरण हो । उनका आभार शब्दों से मानुं वह किसी भी प्रकार से योग्य नहीं है। वह तो ऐसे सद्‌गुरु का ऋण तभी चुकाया जा सकता है, जब उन्होंने जो दीया मेरे में सुलगाया है, वैसा सद्भाव किसी जीव में सुलगाया जा सके। भगवानकी कृपा से तो ही उनका ऋण चुकाया जा सकेगा । ऐसा ऋण चुकाने हेतु ये मौन-मंदिरें आश्रम में मैंने बनाये हैं । हमारे वहाँ कोई भाषण, कोई प्रवचन, ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा । चाहे दूसरी जगह शास्त्र-बास्त्र पढ़े जाते हो, परंतु स्वयं को मथने के सिवा, स्वयं द्वारा संग्राम किये बिना यह ज्ञान कभी भी प्राप्त नहीं हो सकेगा । यह मेरे मन में एक निर्विवाद बनी हुई हकीकत है । स्वयं को ही मथना चाहिए । अनेक महात्माओं के पास गया हूँ। सत्संग के हेतु से, किन्तु स्वयं को मथने के लिए मुझे बहुत कम महात्माओं ने महत्त्व दिया है। **आशीर्वाद और कृपा पर तो बहुत भार । आज भी हमारा समाज आशीर्वाद और कृपा माँग माँग कर पंगु हो गया है ।** मैं कहता हूँ कि आशीर्वाद और कृपा वैसे रास्ते में पड़े हुए नहीं है भाई । दो पैसे की सोंफ पंसारी के वहाँ मुफ्त नहीं मिलती है, तो यह आशीर्वाद और कृपा माँगने की धृष्टता यह समाज करता है, उसके पर से उसका पूरा मूल्यांकन हो जाता है । पर उसके बारे में मैं बाद में कहूँगा ।

● मोटा समाज (भगवान) के मुनीम ●

शुरुआत में तो यह उत्सव मनाने का जिन भाईओं के मन में आया वह मैंने कुछ किसी से कहा नहीं था, भाई । यह उत्सव इसलिए ही मनाने

देता हूँ। मैं तो छोटा सा आदमी हूँ। ज्यादा से ज्यादा तो लोग चाहे जो उपमा दे, ''संत महात्मा'' चाहे वे कहे परंतु गलत बात है। मैं तो इनमें से कुछ भी नहीं हूँ। मैं ज्यादा से ज्यादा तो इस समाज का छोटा सा अदना में अदना एक नौकर हूँ। यह मैंने महसूस किया है— मेरे दिल में लगा है कि यह समाज बैठा नहीं होगा, वहाँ तक यह स्वराज मिला होने के पर भी खप का नहीं है। हमारे इस समाज के जीवन में इतनी सारी कमीयाँ है; यह कमीयाँ मेरे अकेले से दूर हो सके ऐसी नहीं हैं। किन्तु मेरे से हो सकता है, वह मैं करता हूँ। पर मैं कौन मात्र ? मैं यानी तो समाज, और समाज मुझे मान देता है। इसलिए मैं कहता हूँ। समाज न दे सकता होता तो में किस तरह कर सकता ? समाज का ही सब अच्छा प्रताप है। मेरा नाम गाया जाता है, वह गलत गाया जाता है। लेकिन जैसे किसी सेठ के वहाँ दो-चार-पाँच मुनीम हो और कोई मुनीम अच्छा काम करता हो, तो कहते हैं कि फलाना मुनीमने यह किया; उस तरह मेरा नाम बोला जाता है। बाकी उसके पीछे तो समाज बैठा है। इसलिए इन सब भाईओं को जिन्हें विचार सूझा पाँच-दस-पंदर व्यक्तिओं ने इकट्ठे होकर हम **मोटा** का यह उत्सव यहाँ मनावें और उन्हे रकम मिले।

● स्वास्थ्य के लिए स्नानागर बनाओ ●

मेरे पर ऋण (समाज उत्थान के कार्य के लिए हुए खर्च का) भी था। साहब, इस सुरत में कुछ कम धनवान नहीं है, परन्तु किसी को यह नहीं हुआ कि हम लड़कों का आरोग्य जिससे सुधरे, तंदुरस्ती बक्षे ऐसा एक सुंदर स्नानागार बनाएँ। यह मुझे चोखा वाला ने कहा। चोखा वाला हमारे गाँव के हैं। तीन-चार जगहों पर उन्होंने भाषण किये, पर कोई तैयार नहीं हुआ। उन्होंने मुझे कहा, ''**मोटा**, तू हीं करेगा तो होगा।'' मैंने कहा, ''भाई हम करें; मुझे तो बहुत ही पसंद है।'' ये युवा लड़के-लड़कियाँ तैरना सीखे और हमारे शहर में ऐसा स्नानागार हो। अब बाग जितना संपूर्ण उसका महत्त्व जागा है। जिस शहर में स्नानागर

न हो, वह शहर नहीं कहा जाएगा। हमारे वहाँ अभी तो बहुत कम एक, एक स्नानागर तो बहुत कम है। अहमदाबाद में आठ हैं। अहमदाबाद की आप प्रतिष्ठा सुनिए। धन-दौलत देने में, बहुत उदार नहीं ऐसा कहा जाता है। फिर भी वहाँ आठ स्नानागर है। हमारे वहाँ एक ही है, बहुत मुश्किल से। अभी तो कई करने चाहिए। पर मेरे पास पैसे नहीं है। मैं तो आज भी करुं। पर पैसा दे तब, इसके लिए पैसे कम पड़ते हैं। बाल-स्नानागार किया। उसमें भी मुझे नौ-दस हजार कम पड़ रहे थे। हमारी कोर्पोरेशन को पच्चीस हजार दे भी दिये हैं। वह सुरत के बच्चों के लिए ही है। उसे भी यह सब पैसे कम पड़ रहे थे।

● आश्रम का संचालन बिलकुल मितव्ययितासे ●

इन सब भाईओंने इकट्ठा मिलकर जो मेहनत की, प्रभुदासभाईने उनको जो टेका दिया और मेरे जैसे आदमी को मदद मिली— उन्होंने ऐसी सहानुभूति, सहारा दिया, प्रेरणा दी और स्वयं प्रेम से प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। हमारे प्रत्येक कार्य में भी उपस्थित रहे और उनका समय पर आने का स्वभाव जानकर मैं तो बहुत राजी हुआ। तब ये सब भाईओंने कितने-कितने हाथों से यह कार्य किया और कितने भाईओं ने ऐसा काम किया कि हम प्रभावित हो जाए। जिनके बारे में कोई अनुमान नहीं ऐसे भाईओंने कार्य किया है इसमें। और कितने ही भाईओंने अपना काम छोड़कर इसके पीछे ही लगे रहे और इतनी अच्छी मुझे मदद की। मुझे यानी मैं तो कहता हूँ कि समाज को मदद की और मैं कुछ ये पैसे को आश्रममें खा जानेवाला नहीं हूँ। बाहर से आनेवाले पैसों में से एक पैसा भी हम आश्रम में खर्च नहीं करते हैं और बहुत कम खर्च से जीते हैं। मैं तो गांधीजी के जमाना दरमियान आश्रम जीवन जीता था। तब मैंने हरिजन सेवक संघ के आश्रम चलाये हैं। उससे भी कम खर्च में हम जीते हैं साहब ! वे आश्रम स्वयं मैंने चलाये हैं। उनसे भी अधिक कमखर्च में हम जीते हैं। हिन्दुस्तान में मैं सीना ठोककर आज आप सब के सामने कह सकूँ ऐसा है कि हिन्दुस्तान के अनेक आश्रमों

में मैं घुमा हूँ– सत्संग के लिए लेकिन वहाँ ओ...... बिगाड़ और प्रतिदिन मिष्टान्न होता है। मैं कहूँ कि अबे, ब्रह्मचर्च का पालन किस तरह कर सकोगे ? पर आज भी वहाँ ऐसा ही चलता है।

● आश्रम द्वारा दी गई दान की रकम की संभाल ●

श्रीमोटा : भट्ट साहब को कैसा है मोदी साहब ?

श्रीमोदी : .....

श्रीमोटा : (एक स्वयंसेवक को) यहां कुर्सी पर उन्हें बिठाओ।

श्रीमोटा : इसमें बहुत लोगोंने पंद्रह-बीस भाईओंने इतनी सब मेहनत की है पर वे सब मुझे कहते थे कि, **मोटा**, जहाँ गये वहाँ हमें लोगोंने प्रेम से पैसे दिये हैं। कहते थे कि यह **मोटा** का काम अच्छा है, क्योंकि उसमें एक पैसा भी बेठिकाने नहीं जाता है। साहब, देखिए.... यह मेरा शरीर नहीं होगा, तब लोग प्रसंशा करेंगे। मैंने बहुत सारे ट्रस्ट भी देखें है। वहां भी पैसे बेठिकाने .... । पर मेरे पैसे ऐसे हैं कि सुरत में यह अपने कोर्पोरेशन में तैरने की स्पर्धा के लिए पैसे दिये थे। वह तैरने की स्पर्धा पूरे हिन्दुस्तानमें सब से पहली हुई। किसी भी जगह ऐसी नदी तैरने की स्पर्धा नहीं हुई है। लेकिन उसमें मेरे रुपये कायम रहे और वह सद्वृत्ति-सद्प्रवृत्ति लंबे समय चला करे। एक पैसा उसमें से बिगड़े नहीं। पैसों का ब्याज आये वह उन लोगों को दे देने का। एक पैसा भी उसका Administrative Expenditure यानी की कार्यालय कार्यवाही के लिए जो पैसा खर्च हो वह पैसा भी उस रकम में से खर्च नहीं किया जाएगा। एक-एक पैसा समाज का सद्व्यय हो, एक पैसा भी बिगड़े नहीं उसकी दरकार भगवान की कृपा से रखी जाती है। ऐसा सब काम गांधीजी के समय में भी मैंने किया है। बीस साल तक गुजरात के हरिजन सेवक संघ में परीक्षितलाल के साथ मैं मंत्री था; इसलिए यह सब वहाँ भी गांधीजी जीवित थे, तब भी खादी संघ तथा अन्य सभी जगह घोटाले हुए थे, इसलिए यह सब इतनी दरकार भगवान की कृपा से रखी जा रही है।

व्यक्ति से हो सके उतनी सब दरकार । एक पैसा भी बिगड़े नहीं । एक पैसा, क्योंकि यह भगवान का पैसा है । इसलिए आश्रम में भी हम इतनी मितव्ययिता से जीते हैं । कोई दिन हमारे यहाँ मिष्टान्न नहीं बनते हैं । भजीये, साहब ! मुझे बहुत पसंद सही, परंतु हमारे यहाँ आश्रममें नहीं बन सकते । यह acidity हुई तब हलुआ खाना होता है । हलुआ गुड़ का हो तो अच्छा; जल्दी हजम हो जाय । परन्तु मेरे से नहीं हो सकता । साहब गाँव में किसी को यह देने के लिए कहता हूँ ।

हमारे रावजीकाका घी देवे अंदर से खुश होकर दे तो अच्छा लगे तो खावें, नहीं तो अब अंदर दिल से राजी नहीं है हमारे पर ।

श्रीमोटा : काँटावाला साहब, जरा सिफारिश करना यार । मेरी सास का घी भी नहीं देता है । पहले तो हर समय देते ही थे, हमें कहना नहीं पड़ता । लोटा भर ही देता था, किन्तु अब हम कुछ बिगड़ गये होंगे । या तो वे बिगड़े हों या तो मैं बिगड़ गया हूँ, पर हमारे पर उनकी मेहरबानी कम हो गई है । वे आपके दोस्त है तो जरा सिफारिश करना ।

● ठक्करबापा की प्रस्तावना– *मोटा* की कर्मठता का प्रमाणपत्र ●

यह लड़का मरने का हुआ है अब और सच कहता हूँ साहब । शरीर तो लंबी अवधि तक किसी का नहीं टिकता है । इन सभी भाईओंने इतनी मेहनत की है, तब मैं तो कई बार कहता हूँ, ''मेरा भगवान हजार हाथ वाला है, वह हजार हाथ वाला मुझे मदद करता है । अनेक जगह मैंने देखा । आज तक अनेक काम हुए हैं । मेरे जैसे भिखारी मनुष्य साहब, बिलकुल सच्चे अर्थ में कहता हूँ साहब, मेरे पास पैसे नहीं है । २० साल तो देश की सेवा में मैंने बिता दिए और बहुत मस्ती से सेवा की है । मेरे गुरुमहाराज इतने सारे कार्यदक्ष और व्यावहारिक कि....... ''यह ठक्करबापा की प्रस्तावना लो ।'' मैंने कहा, ''आध्यात्मिक बाबत में ठक्करबापा क्या समझे ?'' परन्तु आज मुझे काम में आ रहा है । उन्होंने मेरे बारे में लिखा है कि ''यह लड़का कैसा काम करता था ? परीक्षितलाल

हैं, रविशंकर महाराज हैं, तब उन सब की यह जो प्रस्तावना ली थी वह उपयोगी हुई, पता लगता है इस लड़के ने कैसा काम किया है ।''

• असह्य रोगोंमें भी साहित्य का सर्जन •

आज भी यह मेरा शरीर तो तूटा हुआ ही है । आज तो बोलने की मनाई जैसी बात है हंअअ..... सुबह चार बजे बाद इतना सख्त दर्द उठा, वैसा अहमदाबाद में उठा था और मैं काँटा वाला साहब के घर पर ही था और वहाँ से मुझे होस्पिटलमें दाखिल करवाया गया । पेट को चीरने की बात थी, परंतु उसी समय ये काँटा वाला साक्षी हैं ऐसे वैसे बात नहीं करता हूँ– तब मैं ''सद्‌गुरु'' पर लिखता था । वहाँ उनको बिठाकर लिखाया । मैं बोलता गया । इतना भारी दर्द होता था, उस स्थिति में सद्‌गुरु पर मैंने उनको लिखाया था और वे उसे लिख लेते थे । पर आज भी चार बजे बाद ऐसा ही दर्द उठा; मैंने चाय पी फिर मुझे पता था कि आर. के. तो नहीं हैं, भट्ट साहब पास में हैं, इसलिए हमारे सिविल सर्जन चौहाण साहब को फोन किया ।

श्रीमोटा : (बीच में से एक स्वयंसेवक को) उपर मत लाना, बा को । बा, पैर पड़ता हूँ । नहीं यहाँ रखो, वहाँ बैठने दो, इस कुर्सी में बिठाओ । इस बड़ी कुर्सी में बिठाओ भाई । यह हमारे भीखुकाका के बा है । बा बैठिए ।

यह इतने सारे भाईओंने बहुत मदद की; आकस्मिक रूप से आये भाईओंने भी बहुत मदद की । उन सब भाईओं का मैं आभार मानता हूँ । वास्तव में तो मैं मेरे भगवान का आभार मानता हूँ कि कैसे कैसे मनुष्योंकों वह प्रेरणा देकर, प्रेरणा दिलाकर यह भगवान का काम करते हैं और इस साल भी मैंने दस लाख के काम लिए हैं, साहब । और मेरे गुरुमहाराज कहते कि, ''बेटा, ऐसे काम करना कि जो किसी की नजर भी न पहुँचती हो; किसी के ख्याल में भी न आये ।'' आप सब को आश्चर्य होगा कि ऐसे कौन से काम होंगे ? यह तो **मोटा** क्या बोल रहे हैं ? पूरे हिन्दुस्तान में अपने सुरत में नदी में तैरने की स्पर्धा, नावों की

स्पर्धा, समुद्र में नावों की चालीस मील की स्पर्धा, यह सब हमने आयोजित की, आश्रम ने। कोई ठिकाने हिन्दुस्तान में नहीं मिलेगी। समुद्र में तैरने की स्पर्धा कोई ठिकाने नहीं। इसी तरह अलग-अलग काम हुए हैं, वह भी किसी जगह किसी के ख्याल में नहीं आये इस तरह के काम हैं। और आज मेरा शरीर है, नहीं होगा तब वे लोग कहेंगे कि यह **मोटा** ने अच्छे काम किये थे, परंतु हमारा समाज कब्र को पूजने वाला है। उसका मुझे विरोध नहीं है। मुझे तो मेरे हिस्से में आया हुआ कर्म करना है और वह ऐसे शरीर से भी करता हूँ। ऐसा शरीर होने पर भी मैं किसी दिन कार्यक्रम तय हो तो मैं छोड़ता नहीं हूँ। काँटा वाला साहब बैठे हैं। बड़े आदमी हैं। बड़े से बड़े अमलदार थे हमारी सरकार के। उनके वहाँ ही मैं था, डॉक्टरों ने जाने की मनाई की थी। आपको दो-चार दिन रहना पड़ेगा। मैंने कहा, 'अशक्य बात', मेरा जो कार्यक्रम है, उस मुताबिक जाऊँगा और हम तो घुट्टी में ही यह सीखे हैं।'' डाक्टर कहे, ''जा नहीं सकते; आपका शरीर ऐसा है, हम रजा दें तो तो हम मूर्ख कहलायेंगे। परन्तु मैं तो गया ही मेरे कार्यक्रम के अनुसार। आज भी मेरी ऐसी स्थिति थी। डॉक्टर आर. के. देसाई आए थे। चौहान को सुबह फोन करवाया कि, ''भाई, पेट में बहुत दर्द है; जरा आ जाइए तो अच्छा। तुरत ही आएँ; फिर उन्होंने आर. के. देसाई को बुलाया, आर. के. आएँ, प्रदीपभाई आएँ, फिर तो दो सूई लगाई उन्होंने तो। उसके बाद कहा कि– **मोटा**, बोलना नहीं। शाम का कार्यक्रम—दोपहर का कार्यक्रम मेरा बंद है भाई। इस समय तो मुझे बोलना ही चाहिए। भजन होंगे, भाई। प्रश्नोत्तरी के लिए डेढ़ घंटा बोलना है, वह मैंने बंद किया है, अब डॉक्टर का भी कहा मानना चाहिए। अब तो मुझे बोलना ही चाहिए। वह मेरा धर्म है, उस धर्म में से मैं पीछे नहीं जा सकता हूँ। प्रश्नोत्तरी इसलिए मना करता हूँ, क्योंकि लोग जो प्रश्न पूछते हैं, वह मैं मानता हूँ, चोकस Superficial (छीछले) हैं; बुद्धि की खुजली जैसे कह सकते हैं। उस के अनुसार व्यक्ति को कुछ करना होता नही है, उसमें गहरे पैठना भी नहीं है, सिर्फ पूछने के लिए पूछते रहते हैं। इसलिए

यह हिस्सा मैं छोड़ देता हूँ और अब भविष्य में मैं रखने वाला भी नहीं हूँ। दोपहर का कार्यक्रम होगा तो भजन या ऐसा कुछ होगा; परंतु प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम अब मैं नहीं रखूँगा । अब मैं दीक्षा पर आता हूँ। फिर से प्रमुख साहब का और जिन भाईओ ने यह सब कार्य किया, उसके लिए फिर से उनका मैं बहुत-बहुत आभार मानता हूँ और मेरा भगवान हजार हाथ वाला जो है, वह इन लोगों को बरकत दें, उनके उद्योग-धंधे-व्यापार जो कुछ हो, उनके संसार-व्यवहार में अनेक प्रकार से मेरा हजार हाथ वाला भगवान उन सब को बरकत दे ऐसी मेरी प्रार्थना है ।

● दीक्षा अर्थात् ●

दीक्षा अर्थात् दीक्षा का अर्थ मैं आपको समझाउँ Dedicated Life (समर्पित जीवन); अर्थात् हमारे जीवन को सभी प्रकार से और सब भावों से जीवन के किसी उच्च में उच्च आशय में आहुति देना । तब मुझे खबर नहीं थी भाई । १९२१ के दिसम्बर का महीना था और गुरुमहाराज मुझे दीक्षा देनेवाले थे । परंतु मुझे पता नहीं था । मैं तो साधुओं को तब ऐसा मानता था कि, "Economical waste on the society" समाज पर ये लोग साधु-संन्यासी भाररुप है । किस तरह ?

श्रीमोटा: (बीच में से) ओ शाह साहब (नवसारी में उस समय श्री एच. एम. शाह, एक्जीक्युटीव एन्जिनीयर थे) तब तो मैं ऐसा मानता था और उस साधुने मुझे पकड़ लिया। किन्तु उसके पहले थोड़ी भूमिका हो गई थी। मेरे शरीर को फेफरु★ (मिरगी जैसा एक रोग) की बीमारी थी । फेफरुं की बीमारी भारी, हिस्टीरिया से भी कहते हैं भारी होता है । मैं तो फेफरुं और हिस्टीरिया में कुछ समझता न था । हिस्टीरिया का मुझे रोग हुआ है ऐसा मैं सब को कहता था। परंतु डॉ. आर. के. देसाई ने कहा, ''मोटा, आप यह तो वैसे ही कहते हो। यह आपके शरीर को जो रोग हुआ उसे फेफरु कहते हैं। तो साहब, फेफरु लिखा तब तो आपने वह गलत छापा है।'' मैंने कहा, ''अब पुन: छपाउँगा तब लिख

★ मिरगी का रोग दवा से मिट सकता है, किन्तु 'फेफरु' नहीं मिट सकता है। फेफरु गुजराती शब्द है।

दूँगा की फेफरु, भाई हिस्टीरिया नहीं ।'' हिस्टीरिया तो फिर भी मिट जाता है, पर डॉक्टरने कहा फेफरु तो कभी मिटता ही नहीं ऐसी बीमारी है यह । यह आपको मिट गई यह हमारे लिए बड़े आश्चर्य की बात है । मैंने कहा, ''भाई, भगवान के नाम से मुझे तो मिटा है ।'' तब फेफरु की बीमारी हुई शरीर को; इसलिए मैं नर्मदा तट पर गया था । उसमें मरने को भी– आत्महत्या करने को भी– तैयार हो गया था– कूद भी गया था; परंतु भगवानने बचाया । तब से मेरे मन में यह हुआ कि I am meant for something (मेरा जीवन किसी उद्देश्य के लिए है) । सचमूज कूद गया मैं और नदी में से किस तरह बवंडर उठा और मुझे बाहर डाल दिया, यह आज भी मेरी बुद्धि कबूल नहीं करती है । ऐसी यह आश्चर्ययुक्त हकीकत है, साहब । परंतु यह बनी हुई सचमुच शत प्रतिशत सच्ची हकीकत है । तब से मुझे जीवन के प्रति इतना उत्साह हुआ कि इस जीवन में भगवान ने मुझे बचाया है । इसलिए मेरा पूरा जीवन अब भगवान के लिए, और वैसे तो मैंने तय ही किया था– हाथ में गंगाजल लेकर जब से गांधीजी के सेवा के कार्य में जुड़ा था ।

बहुत गरीबी थी । मेरी बड़ी भाभी, विधवा मा, ये सभी बहुत काम करते थे । आज मेरे दूसरे तो कोई साक्षी नहीं होंगे । मेरी विधवा भाभी अभी भी गांधीजी के आश्रम में जीवित है । बहुत काम करते थे । चक्की में (अनाज) पीसते थे, (अनाज) कूटते थे और मेरी मा मुझे बहुत गालियाँ देती थी कि निकम्मे, इतना सारा पढ़ा, तुझे अच्छी नौकरी मिलती थी, वह ली नहीं और हमारे नसीब में यह पसीना ही रहा । मैंने कहा, ''पसीने की रोटी तो महा पुण्य की है, उसके समान कोई पुण्य नहीं हैं । पसीने की रोटी हम खाते हैं मा । मा कहती, ''निकम्मे, तुझे कमाना नहीं है, इसलिए यह कहता है ।'' तब उसे मैं कैसे यह बात समझाता ? परंतु मेरे मन से आज मैं कहता हूँ कि वह पुण्य की हमारी रोटी थी । पीस पीस कर जो रोटी हम खाते उसकी मधुरता कुछ और थी, आज वह मधुरता नहीं आती है ।

तब उस साधु-महाराज ने मुझे दीक्षा देने का तय किया, तब मैं दीक्षा-बीक्षा में कुछ समझता नहीं था । फिर उसने मुझे समझाया कि

''अब तेरा जीवन संसार के लिए नहीं है भाई ।'' ''कि अबे, मेरी मा है, इन लड़कों को मुझे पढ़ाना है, मेरी जिम्मेदारी है। उससे मैं मुँह नहीं मोड़ सकता ।'' तब कहा, ''तुम्हें संसार में रहकर मिले हुए कर्म करना है, परंतु संसार के लिए नहीं ।'' ''तब किस के लिए अबे ? तू कहता है कि इस संसार में रहना है, यह सब काम करना है ।'' तब मेरे भाई छोटे थे। मूलजी और सोमाकाका यहाँ है। पधारे हैं कि नहीं ?

श्रीमोटा : सोमाकाका आये ? कहाँ है ? आ पहोंचे ? यह मेरा सगा भाई है। कितने बजे आये ?

श्री सोमाकाका : ''मोटा, अभी आया ।''

श्रीमोटा : अच्छा, अच्छा भाई ।

उन लोगों को पढ़ाने की भी जिम्मेदारी मेरी और तब हम बहुत कम से कम पैसे लेते थे। मेरे सिर पर सात-आठ व्यक्तिओं के पालन-पोषन की जिम्मेदारी थी, जबकि परीक्षितलाल, हरिवदन ठाकोर और हेमंतकुमार नीलकंठ थे, किन्तु एकलराम। और मुझे सात व्यक्तिओं का पालन करना था। परंतु हम तो मामूली..... मामूली रकम लेते थे; नहीं तो सेवा का नाम उड़ जाए ने ? आज तो हमारे ही क्षेत्र में काम करने के चारसौ चारसौ रुपये लेते हैं। खादी के क्षेत्र में भी काम करनेवाले कितने रुपये लेते हैं ? आज सेवा का क्षेत्र अब मैं कहता नहीं ।

परंतु यह सब मेरी जिम्मेदारी। मैंने कहा, ''महाराज, आप मुझे, तो कहते करना जरुर। मैंने कहा तब कि किसके लिए ? आप कहते हो कि संसार के लिए तो नहीं ।'' तब कहा नहीं, संसार को तुम्हारे मनमें से ही निकाल डालो ।'' मैंने कहा, ''ऐसे नहीं निकल सकता। भाई, आप कहो इससे एक झटके से मन में से निकल जाए ऐसा नहीं हो सकता ।'' उन्होंने कहा, ''भाई, लेकिन तू भावना विकसित कर ।'' मैंने कहा, ''हाँ यह बात सही; तो कौन सी भावना विकसित करुँ ?'' तो कहा कि, **''सब कुछ भगवान-प्रभुप्रीत्यर्थ करने का ।'' यह बात मुझे पसंद आ गई, भाई। कि यहाँ वहाँ भगवान ही बसा है। अणु-अणु**

में उसकी शक्ति है । अबे, यह हमारे में भी जो चल रहा है, हमारा यंत्र वह भी भगवान की शक्ति के कारण । **यह संसार भी भगवान की शक्ति के कारण ही चल रहा है । जो कुछ होता है, वह भगवान की शक्ति से होता है, वह बात मेरे गले उतर गई ।** इसलिए उस प्रकार की भावना मैं विकसित करुँगा ।'' तब जो अब तुम्हें पूरी जिंदगी भगवान के लिए ही जीना है । यह बात मुझे पसंद आ गई, बराबर है । प्रभु-प्रीत्यर्थ कर्म करना, भाग जाने की बात नहीं । वह (बात) मुझे बहुत पसंद आ गई । क्योंकि संसारमें भी गृहस्थाश्रम में भी कोई भाग सकता नहीं है, वह भाग सकता भी नहीं है । बलपूर्वक से भी स्वार्थ के कर्म करने ही पड़ते हैं, छुटकारा नहीं है । तब मुझे तो बहुत आनंद हुआ कि **There is no escapism. संसार में नहीं है । गृहस्थाश्रम में नहीं है तो भगवान के मार्ग में तो हो ही सकता कैसे ?**

हमारे देश में लोग साधु-संन्यासी बन जाते हैं, वह मेरी समझ की दृष्टि से मुझे बराबर नहीं लगता है । कोई विवेकानंद जैसा, कोई शंकराचार्य जैसे, कोई रामकृष्ण जैसा, कोई रमण महर्षि जैसा हो जाए, बराबर है । जिसे अग्नि अणु-अणु में, रोम-रोम में, नस-नस में भगवान के लिए ऐसा जीवंत चेतनाग्नि जिसमें प्रज्वलित हो और जिसका मन सदैव भगवान में ही लीन रहा करता हो उसे ही अधिकार है– संन्यास का– अन्य को अधिकार नहीं है । यह तो मेरी ऐसी समझ है । मैने लिया नहीं संन्यास । मैंने गेरुए कपड़े नहीं पहने हैं, परंतु मुझे जीना है भगवान के लिए । परंतु भगवान को हम यदि मानते हों और प्रेमभक्ति से ज्ञानपूर्वक यदि मानते हों तो उनकी सेवा होनी चाहिए । यह बात भी मेरे गले उतर गई– सेवा तो होनी ही चाहिए ।

● समाज– भगवान का व्यक्त स्वरूप ●

तब भगवान तो बिना रूप का है, उसकी सेवा कैसे होगी ? तो भगवान पूरे समाज में, संपूर्ण ब्रह्मांड में, अणु-अणु में व्याप्त है । इस समाज की सेवा ही भगवान की सेवा है । यह तो समाज

अर्थात् आज के– आज के वातावरण में समाज शब्द प्रचलित है, इसलिए समाज (शब्द का) उपयोग करता हूँ, बाकी तो मेरे दिमाग में समाज नहीं है कोई काल में । मेरे दिमाग में तो मेरे भगवान ही बिराजमान हैं । मैं मेरे भगवान की ही सेवा कर रहा हूँ । मेरे मन से यह शत प्रतिशत की हककीत है । जब किसी समय दिमाग को जाँचनेवाला यंत्र निकलेगा तब, (मेरी तो) आज भी तैयारी है, मेरे दिमाग में रखकर देखें कि समाज है ? या रागद्वेष है । काम, क्रोध, मोह है या भगवान है ? मैं भगवान के लिए ही यह काम करता हूँ । इस समय भी जो काम कर रहा हूँ, वह भगवान के लिए, प्रभु-प्रीत्यर्थ के सिवा दूसरा कोई संकल्प मेरे मन में नहीं है अब ।

और कोई कहेगा कि भाई आप तो बैठे बैठे बोलते रहते हो । कुर्सी में बैठे रहकर वहाँ । परंतु बिना सबूत के तो इस जगत में कोई मानेगा नहीं । जिसे सबूत चाहिए तो सबूत भी है । मेरे शरीर में इतने दर्द हैं साहब । फिर से गिनाता हूँ, दिमाग में है वह झामर (Glucoma) है, आँखो में मुँहासे (Acne) हैं, गले में भी हैं, यह दमा हैं, acidity हैं, स्पोन्डीलाईटीस अर्थात् गले में भी मनके में से गद्दी बैठ गई हैं और कमर में से भी खिसक गई हैं । इससे कितना दर्द होता है, वह यह डॉक्टर है समझता हैं, मसा है, चमड़ी का दर्द है, Fluctuating बी.पी. है, ऐसे दूसरे दर्द हैं । यह acidity तो अभी हुई है फिर । और दमा फिर हुआ है । तब इन सब रोगों के बीच मैं किसी दिन मेरा प्रोग्राम- कार्यक्रम बंद नहीं करता हूँ । इतना ही नहीं, किन्तु ये लगातार दर्द साहब ।

यह मेरा पेट काट डालनेवाले थे । अहमदाबाद होस्पिटल में इतना जोरों से दर्द होता था, तब यह काँटा वाला साहब को मैंने ''सद्गुरु'' पर काव्य लिखाये थे । आज भी आश्रम में बैठे बैठे काव्य, भगवान के स्मरण मैं लिखा करता हूँ । कितनी सारी किताबें यह एक साल में छप चुकी हैं । जिसे देखना हो, वह देख ले । बैठे बैठे मैं भगवान के भजन ही ललकारता रहता हूँ । ऐसे दर्द से पीड़ित मेरा सगा भाई है । वह कवि

है । मेरे से भी उच्च कोटि का ..... हमारा मूलजीकाका । मूलजीभाई भगत कहताला है । वह होस्पिटल में आठ-दस मास से है । मैंने कहा, "**मूलजीकाका तुझे कविता आती है तो बैठे बैठे तू लिख न । इस दर्द में पड़ा रहा है तू । "मोटा**, मैं किस तरह लिखूँ ? मेरा मन तो आठो पहर पल-पल इस मेरे शरीर के रोग में ही है । दूसरा कुछ मुझे सुझता नहीं है । और अखबार का शौकिन परंतु अखबार पढ़ नहीं सकता ।" तब दर्द ऐसा है, शरीर का । दूसरा कुछ तुम्हें सूझने ही नहीं देता । परन्तु भगवान की कृपा से लिखता हूँ यह हकीकत है ।

● समाज का काम वही भगवान की सेवा पूजा ●

तो सबूत तो हैं परंतु लोगों के गले नहीं उतरेंगे । परंतु मुझे उसकी कोई चिंता नहीं है । मैं कुछ भजन करता हूँ, वह कुछ किसी के लिए थोड़ा करता हूँ ? यह तो किसी को सबूत चाहिए तो ठोस सबूत है । इतने रोग हैं, परंतु मैं घुमता रहता हूँ, कोई संसारी– गृहस्थाश्रमी नहीं घुमेगा । स्वयं के स्वार्थ के लिए भी नहीं घुमेगा साहब; यह मैं सच कह रहा हूँ, परंतु मुझे, मैं जींदा हूँ वहाँ तक यह भगवान का यज्ञ बंद न हो तो अच्छा । जहाँ तक चलेगा वहाँ तक मैं करता रहूँगा, क्योंकि भगवान की सेवा तो करनी ही चाहिए । यदि मैं भगवान को मेरा स्वामी मानूँ, मैं उसका नौकर होता, मुनीम होता..... तो सेठ रखता मुझे ? निकाल ही देता न ? और पीढ़ी में यदि हम मुनीम हों या नौकर हों और यदि काम न करे तो कोई सेठ हमें रखेगा सही ? उस तरह यह भगवान मेरा सेठ है । मैं तो उसका अदना में अदना नौकर हूँ, इसलिए मुझे उसका काम करना चाहिए । उसकी सेवा करनी चाहिए । उसकी सेवा, उसके चरणकमलमें रोज-रोज प्रेमभक्तिज्ञानपूर्वक चढ़ाने के लिए यह समाज के कर्म वह मेरे लिए पुष्प हैं, फूल हैं । इस भावना से समर्पणांजलि रोज-रोज भगवान को ऐसे कर्मों द्वारा ही करता हूँ कि ऐसे कर्मों, ऐसे कर्मों समाज की मदद से ही होते हैं । मेरे तो पैसे है नहीं ।

● श्रीमद् राजचंद्र का त्याग ●

मुझे भी कई बार निजी पैसे चाहिए सही साहब । सच कहता हूँ आपको । यह अब लोग समझने लगे हैं और कोई मुझे देते भी है सही मुझे कि, ''**मोटा**, यह खास आप के निजी खर्च के लिए ही ।'' वैसी रकम मैं अलग रखता हूँ। भाई (नंदुभाई) के पास उसका अलग हिसाब है । मेरे बही में भी रहते हैं, परंतु बहुत कम । क्योंकि मुझे किसी समय किसी को स्वयं अपने हाथ से देने की इच्छा है । भाई, इसको इतने रुपये दे दो । मुझे अभी एक जन को मैंने कहा, ''मुझे इसका बहुत कर्ज है । इसका कर्ज तो इस जन्म में मैंने किया नहीं है, परंतु मेरे पर ुसका कर्ज है । देना है सात हजार रुपये । तो कहाँ से लाकर मैं दे सकता हूँ ?'' श्रीमद् राजचंद्र तो व्यापार करने गए थे । बहादुर आदमी । परंतु उसके पास तो ऐसे व्यक्ति थे कि जो उसे पैसे भी दे । रेवाशंकर जगजीवन की पीढ़ी आज भी चल रही है, वहाँ जाकर वे कमाए । लाख रुपये । एक पैसा उसने दिया नहीं घर में । कुटुम्ब में भी उसमें से । लाख रुपये हुए तब गादी पर से उतर गए । परंतु मेरे से अभी व्यापार करने जाना मुश्किल है । मेरा शरीर भी चले ऐसा नहीं है । इसलिए और छोटी सी रकम होने से उसे लिए जाना वह भी निरर्थक है न ! इससे मुझे नीजी रकमों की जरूरत पड़ती है सही । लोग मुझे अब प्रेम से देते हैं । वह भी मैं भगवान की कृपा ही समझता हूँ ।

परंतु मूल बात थी मेरी दीक्षा की । कि उसने दीक्षा देते समय मुझे कहा कि ''तेरा पूरा जीवन अब भगवान के लिए ही है– और कबूल है और बराबर है । और तुझे मिला हुआ यह कर्म तेरी मा है, विधवा भाभी है, छोटे भाई हैं, तुम्हारे भाई के, मेरे बड़े भाई गुजर गये थे, उसके दो बेटे उनको पढ़ाना है । बेटी थी उसे ब्याहना था । यह सब था । किन्तु यह सब भगवान के लिए करना । अब तुझे संसार में से यह माया, ममता, ममत्व, यह रागद्वेष, काम, क्रोध इत्यादि निकल जाय उस तरह कर । बाद में यही दीक्षा ।

● श्रीबालयोगी की शर्तें ●

पहले दिन तो पधारे । मुझे कहा, ''हमें एकांत में रहना पड़ेगा । मुझे एक बंगला ।'' अरे ! मैंने कहा, ''बंगला कहाँ से लाना ? मैं गरीब आदमी और आप बात करते हो बंगले की । आप ऐसे साधु-महात्मा होकर इतना समझते नहीं । यह गरीब आदमी बंगला कहाँ से लाए ?'' तो बोले कि उसके बिना नहीं चलेगा । अबे ! किन्तु खड़ा रहे । बोले कि सिर्फ बंगला नहीं चलेगा, एकांत चाहिए, पास में जलाशय चाहिए ।'' ''बाप रे !'' मैंने कहा यह तो दो शर्तें और जोड़ दी । तब मुझे पता नहीं था, आज तो मैं कहता । साधु-महाराज कोई महात्मा पुरुष कहे तो सामने दलील नहीं करना । तर्क नहीं करना । हमसे हो सके उस मुताबिक करना । यह मैं आपको अनुभव की बात करता हूँ । मैंने उस तरह किया हुआ है । तो उसके साथ दलीलबाजी नहीं करना । हमसे हो सके तो करना, न हो सके तो नहीं करना । परंतु उसके साथ हमें दलीलबाजी नहीं करनी । परंतु तब मुझे अपने आप कुछ सुझा कि, मैंने कहा तो सही साहब, यह मेरे से हो सके ऐसा नहीं है, अशक्य लगता है, परंतु अशक्य का शक्य हो तब ही भगवान की कृपा उन्होंने ऐसा कहा मुझे । महाराजने हंअअ..... बहुत युवा उम्र थी ।

● अशक्य का शक्य वही प्रभुकृपा ●

फिर रोज मैं हरिजनवास में जाता । हरिजन का काम करता । मैं भजन गाता गाता जाता, तब मुझे रोज बोहराओं के मोहल्ले से होकर जाना पड़ता । हम विद्यापीठ में गांधीजी के संसर्ग में रहे थे, इसलिए सलामआलेकुम करने की आदत पड़ गई थी और रोज हमारे प्रभुचंदभाई है वे इतना सब टाईम के अनुसार बरतनेवाले तो मुझे भी वही आदत कि मैं पाठशाला जाता तो मेरी घड़ी कोई भी मिला सके । इतना समय का पाबंद आज भी हूँ । मेरा भोजन दस बजे तो दस बजे ही । उस तरह रोज समय पर मैं जाता रहता । कासम साहब रोज उस समय, आँगन में मेरी सलाम कबूल करने खड़े रहते । वह भी रोज । परंतु आज मैं विचार में था ।

गुरुमहाराज ने कहा बंगला चाहिए, एकांत चाहिए, जलाशय चाहिए। मैंने कहा, ''यह बड़े ज्ञानी हुए हैं, उसे इतना ख्याल नहीं आता होगा यह गरीब लड़का बेचारा बंगला कहाँ से लाएगा ?'' और वहाँ होकर जाता रोज की सलाम करने की मेरी आदत चूक गया और बीस-पच्चीस कदम आगे बढ़ गया तब मुझे याद आया कि अरेरे ! कासम साहब को मैंने सलाम की नहीं। हमारे नडियाद के लोग होंगे वे जानते होंगे। मेरे रावजीकाका जानते हैं। तो वापस आया मैं। मैंने कहा, ''कासम साहब, माफ करना। आपको आलेकुमसलाम नहीं किया वह साहब मैंने भारी भूल कर दी। कासम साहब ने कहा, ''लड़के वह अच्छा हुआ। परंतु तुम कुछ भारी विचार में हो।'' मैंने कहा, ''हाँ साहब ! विचार में तो हूँ।'' ''तो तुम मुझे कहो।'' मैंने कहा, ''साहब, आपको कह कर क्या करुँ ?'' ''अरे भाई ! खुदाताला की मरजी से मेरे द्वारा तुम्हारा काम हो जाय।'' मैंने कहा, ''साहब काम ऐसा है कि हो सके ऐसा नहीं है।'' ''परंतु उसे कहने में तुझे क्या हर्ज है ?'' मैंने कहा, ''हर्ज तो कुछ नहीं है। तो कहता हूँ। मेरे घर एक ओलिया आये हैं।'' ''ओहो ! तुम्हारा सुभाग्य है कि ओलिया तुम्हारे घर आये हैं। तो अब कहो भाई कि क्या माँगते हैं तुम्हारे ओलिया ?'' मैंने कहा, ''एक बंगला माँगते है।'' कहने लगे, ''अपना बंगला है, तुम्हें दे देता हूँ। जाओ, जहाँ तक रहे उपयोग करो।'' मैंने कहा, ''यह तो गजब की बात है ! परंतु साहब उसने तो साथ में दो शर्त रखी है कि एकांत में चाहिए।'' ''तो अपना बंगला एकांत में ही है।'' मेरे रावजीकाका ने बंगला देखा है। ''और भी'' मैंने कहा, ''दूसरी शर्त है पास में जलाशय।'' तो कहने लगे, ''पास में जलाशय है, रामतालाब है वहाँ।'' ओहो ! साहब उस समय इतना..... उस समय पर साहब, मुझे जो आनंद हुआ है वह मेरा दिल जानता है। उसने कहा था कि अशक्य का शक्य हो जाए, तब भगवान की कृपा प्रत्यक्ष है। मुझे तो पलभर ऐसा हो गया कि भागकर जाकर उसके पैर में पड़कर कह दूं कि मिल गया।''

● आशीर्वाद, दर्शन, धोका देना यह सब छोड़ो ●

परंतु हमें कर्म संदर्भ में वफादारी इतनी जबरदस्त कि नहीं, हमें कर्म है वह पहला । मुझे जो काम करने का है, जो समय पर हाजिर होना है वह बात पहले । इसलिए मेरे काम पर गया और फिर काम पूरा करके आखिर शाम को आया । **आकर नहाधोकर फिर उनको धोक दिया । आज भी जब जब मेरे सद्‌गुरु के दर्शन करने गया हूँ, तब नहाये धोये बिना पैर नहीं पड़ा हूँ । और कभी भी जब जब धोक दिया होगा तब नया संकल्प ऐसा किया है, पुष्प नहीं चढ़ाता हूँ, हार नहीं पहनाता हूँ, सिर्फ धोक नहीं दे रहा हूँ । परंतु उनको पैर पड़ना हो तो हमें कुछ समर्पण करना चाहिए । हमारा यह समाज तो खाली खाली पैर पड़ता है ।** मैं मना करता हूँ । भाई, यह दर्शन की बात छोड़ दो । हम यह दंभ का सेवन करते हैं, पर दर्शन के समय मन में तो इतना भाव उमड़ता है, इतना ज्यादा भाव होता है । साहब, मैं राजकोट में गया, तब मेरे पुराने सभी साथीदार गांधीजी के आश्रम में, उनके गांधीजी के भी साथीदारों, सब के नाम तो नहीं कहूँगा, परंतु बहुत बड़े आदमी । वे कहे, ''**मोटा**, हम तो दर्शन करने आये हैं ।'' मैंने कहा, ''ऐसा खाली मत बोलो । यह आपका दंभ है ।'' मुझे उनको यह कहने में बिलकुल संकोच नहीं हुआ । भाई नंदुभाई उपस्थित थे । मन में वैसा भाव उमड़े बिना मेरे साले दर्शन की बात करते हैं । यह दंभ छोड़ो । मेरा चले तो (इस समाज में) ऐसे कई दंभ चलते हैं ।

इसलिए मैं मना करता हूँ । कोई भी मेरे सामने दर्शन की बात न करें । आशीर्वाद की बात करना नहीं । कृपा की बात करना नहीं । कृपा या आशीर्वाद पाने के पहले उसका काम करो । उसका मन प्रसन्न करो । उसकी कुछ सेवा करो, तो फिर बात करो । मगर यह दर्शन .... बाहर गाँव से चले आते मेरे साले, फालतु पैसा खर्च करके । साहब, क्यों आये ? दर्शन करने । अबे भाई, इतने सारे पैसे खर्च करने की क्या जरूरत है ? तुम्हारे घर बैठकर परमार्थ का कोई अच्छा काम कर, परमार्थ का वह दर्शन है । यदि तुम्हें मेरे दर्शन करना है तो मेरा काम को । वह

दर्शन सच्चा दर्शन है । यह गलत लोलुपता छोड़ दो । यह धोक देने की बात— हमारा समाज नामर्द हो गया है । यदि सचमुच भावना प्रगट हो तो आदमी मर्द बन जाय । जबरदस्त भावना में पराक्रम रहा है, शौर्य रहा है, धैर्य रहा है, सहनशक्ति रही है । भावना से जीवन में गुण प्रगट होते हैं, वह प्रगट न हो वहाँ तक यह पैर पड़ने का पालगपन सब निकल जाए वह उत्तम है ।

● मन्नत नहीं– प्रभुस्मरण और प्रार्थना ●

और कई मेरी मन्नत मानते हैं, उसकी मुझे मन में बहुत ना पसंद है । साहब, गलत बात है । मुझे इससे पैसे भी मिलते हैं साहब, यह भी मैं कहता हूँ । यह आज मैं आप सब को जाहिर में कहता हूँ कि कोई भी मेरी मन्नत न मानें । यह गलत रिवाज है । समाज की अंधश्रद्धा है, उसे तोड़ना चाहिए । हमारे समाज में इतना सारा बावलापन है । उस खेरालु में पचास-साठ हजार लोग जाते हैं । साली मुझे तो शर्म आती है, हमारी प्रतिष्ठा की । यह हमारा कैसा समाज है ! और लोग अंधे होकर भागते हैं । ऐसे महात्माएँ आते हैं । ऐसे चमत्कारों के पीछे पागल हुए है लोग । मैं कहता हूँ चेतो । यह गलत बात है । इसके पीछे भागो मत । जहाँ जहाँ चमत्कार देखो वहाँ आप बिलकुल मत जाओ ।

ऐसे लोगों के जीवन में चमत्कार नहीं होते हैं, ऐसा मेरा कहना नहीं है । परंतु कभी क्वचित् ऐसा निमित्त प्रकट हो, तब अपने आप होता है । दिखाने क लिए चमत्कार नहीं होते है; भले कोई भी करते हो, किन्तु दिखावट करने के लिए चमत्कार नहीं होते । सत्य सांईबाबा करते है न । तो जो कोई करते हो उनको मुबारक । प्रेमभक्तिपूर्वक सिर झुकाता हूँ । परंतु उससे आपको क्या लाभ हुआ भाई ? कोई करोडाधिपति हो, आपको क्या लाभ हुआ ? इसलिए मेरी तो समाज से प्रार्थना है कि यह दर्शन करने की, पैर पड़ने की सब बात छोड़ो ।

अभी मुझे डोक्टरने इन्जेक्शन दिये हैं । एक नोवेल्जीन का और एक बार्गल का । इसलिए उन्होंने कहा, ‘‘आपका गला सूखेगा, बोला नहीं

जाएगा। इसलिए आप थोड़ा थोड़ा पानी पीते रहना।'' इसलिए यह बात आपको जानने के लिए कही, क्योंकि आप सब मेरे भगवान हैं।

एक भाई है, वे अहमदाबाद के हैं। हर महीने यह मुझे लिफाफा भेजते है। अंदर कुछ भी लिखा नहीं होता। बीस रुपये भेज देते हैं। इतने नियमित रुप से। उसको मेरी बहुत प्रार्थना हैं आपमें से कोई हो, उसको संदेश मेरा कह सकते हो तो कहना। हम उसे रसीद दे सकें। वैसे तो हम हिसाब में जमा तो करते हैं, उसकी रसीद भी बनाते हैं, अनामी रूप से। परंतु हर महीने नियमित दिया करते हैं।

तब यह मेरी कोई मन्नत मत मानना भाई। मेरी आपको फिरसे बिनती है। यह गलत बात। हाँ, आप आकर मुझसे बात करो, वह मैं सुनने को तैयार हूँ। मेरे से हो सकेगा तो मैं प्रार्थना भी करूँगा। प्रार्थना में बहुत मानता हूँ। कई प्रार्थना में मानता हूँ और प्रार्थना की शक्ति भी बहुत भारी है, यह भी मैं जानता हूँ। अनुभव से, प्रयोग करके कहता हूँ। मेरे जीवन में मैंने प्रार्थनाएँ की हैं। आपात्कालीन स्थिति में। मौत सामने आकर खड़ी हो गई हो, उस समय प्रार्थना की है। वैसे ही नहीं कहता हूँ।

मुझे साँप ने काटा था। ठक्करबापा साथ में सोये हुए थे। अभी श्रीकांत शेठ तो जीवीत हैं, उनसे जाकर कोई भी पूछकर आ सकता है। छींयत्तर (७६) घंटे तक नोन-स्टोप। अखंड भगवान का स्मरण जोर से चलता रहा था। अशक्य बात। किसी से हो नहीं सकता। भगवान की शक्ति बिना, बिना खाये-पिये ७६ घंटे। और फिर मुझे बीस घंटे बाद ठक्करबापा मोटर में ले गये आणंद में रायण की होस्पिटल में। डॉ. कूक की होस्पिटल में। वहाँ उन लोगोंने मेरी आंतो को धोया, पेट साफ किया और सब निरीक्षण किया कि यह लड़का जिंदा है किस तरह से ? परंतु वे लोग ईसाई लोग, भगवान को हम लोगों से ज्यादा माननेवाले। लेकिन तब भी मेरा भगवान का स्मरण चालू था। तब इस भगवान की मैं, भगवान की भक्ति करता हूँ, वह किसी को दिखाने के लिए नहीं करता हूँ।

● मोटा के पुस्तक खरीदें ●

मैं किसी से कहता नहीं हूँ, परंतु मेरे पास पैन्सिल और नोटबुक सतत तैयार ही रखता हूँ। इतने सारे दर्द में ऐसे भगवान के भजन होते हैं और कितनी पुस्तकें छप गई ! परंतु मेरी तो आप सब से बिनती है कि इतना सारा आप सुरत के लोग करते हो। यद्यपि सुरत की– सुरत की प्रजा इसमें बहुत हाजिर नहीं है । बहुत ही–बहुत ही कम लोग हैं। तो भी यदि मेरी आवाज उन तक पहुँचती हो तो कहता हूँ भाई, यह मेरी पुस्तकें लेना। क्योंकि उन पुस्तकों के पैसों में से एक भी पैसा मैंने खर्च नहीं किया है। **यदि मैं सब भगवान का कहता हूँ तो बुद्धि मेरे बाप की कहाँ से हुई ? बुद्धि भी मेरे भगवान की है।** लाख रुपये के उपरांत मैंने इसमें परमार्थ में खर्च कर दिये हैं। रकम बही में जमा हो जाती हैं। उस बहाने आप एक छोटी पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति दस-दस पुस्तकें बेच देवे तो मुझे कितना लाभ जाए ? यह भी आप सोचना भाई ! यहाँ पुस्तकें भी रखी हैं। तो जो सब भाई थोड़ी थोड़ी लेंगे तो भी मुझे मददरूप है । क्योंकि मुझे पैसे चाहिए ।

● *मोटा* के प्रसंगो के साक्षी हैं ●

बिना पैसे के कोई काम नहीं होते है। उस निमित्त से भी मुझे पैसे मिलते हैं, और कोई कहे, "**मोटा**, हमारे लिए लिखिए, हम पुस्तकें छपवायेगें, पैसे देंगे ।" तो मैं लिखता हूँ । वैसे नहीं लिखता हूँ, साहब। कोई न कोई व्यक्ति मुझे कहता है और इतना ही नहीं, आपको दूसरा कोई सबूत चाहिए तो यह **मोटा** जानता है । तो दूसरा सबूत दूँ। भगवान बुद्धिहीन को भी विद्वान बनाते हैं। कि मैं जीवंत उदाहरण हूँ। मैं हिमालय की गुफा में से आकर नहीं बोलता हूँ। उसका आपको प्रमाण नहीं मिलेगा। मुझे तो मेरे साथी जीवित हैं। आज भी वे कह सकते हैं कि कैसे मैं भगवान का भजन आदि करता था। ऐसे एकांत में, ऐसी भयंकर जगहों पर जहाँ सिंह रहते थे, वहाँ मैं रहा हुआ हूँ। यह हकीकत यह सब जानते हैं। हिमालय की गुफा में से आकर कहता

होता तो आप प्रमाणित किस तरह कर सकते बच्चों ? परंतु मेरे जीवन में तो आपको प्रमाण मिल सके ऐसा है । उसके उपरांत इतने सारे रोग हैं, किसी भी डोक्टर को भी पूछ सकते हो कि इतने रोगोवाला व्यक्ति इतना सारा काम करता है, वह कितनी बड़ी बात है ?

● भावप्रधान विषयों पर शास्त्र ●

परंतु उसके अतिरिक्त मुख्य बात तो यही है कि मुझे किसीने कहा कि, ''**मोटा**, आप जिज्ञासा पर लिखो ।'' जिज्ञासा पर । क्या है कि इतना बड़ा विशाल संस्कृत का साहित्य, परंतु इसमें कुछ भी इस पर नहीं मिलता है । यह हमारी हिन्दुस्तान की किसी भाषा में जिज्ञासा पर शास्त्र नहीं मिलता है । तो उस पर शास्त्र लिखा । साहब, 'जिज्ञासा' उसी तरह 'श्रद्धा', 'भाव', 'निमित्त', 'रागद्वेष', 'कृपा', 'कर्म-उपासना' और अभी 'सद्‌गुरु' भी पूरा हो गया । यह काँटा वाला साहब को लिखवाता था, बहुत बीमार था, भयंकर दर्द होता था, उस समय लिखवाया है और आज भी दर्द होता है तब लिखवाया ।

अभी मैं 'स्वार्थ' पर लिख रहा हूँ । एक व्यक्ति ने मुझे 'स्वार्थ' पर लिखने को कहा । मुझे ऐसा हुआ कि साला 'स्वार्थ' पर क्या लिखना ? स्वार्थ तो दिखता ही हैं । मैंने उसको ऐसा तो कहा, ''साहब, स्वार्थ पर तो नहीं लिखा जाएगा । उसमें क्या लिखना है ?'' मुझे ऐसा हुआ साला तुच्छ से तुच्छ जो हो, उस पर शास्त्र लिखें तभी हम सच्चे । गुरुमहाराज ने कहा, ''भाई, तब हम सच्चे भई । लिखो बेटा ।'' तो ''स्वार्थ'' पर लिखना शुरू किया है । चारसौ-चारसौ पच्चीस के उपर पंक्तियाँ हो गई हैं । ''आप लिखो, हम पुस्तकें बेच देंगे ।'' तभी मैं लिखुंगा वैसे तो मैं लिखने का लिखता नही हूँ और उसी तरह लोग मुझे मदद करते हैं । यह मेरे शरीर के कष्टमय दिन भगवान के भजन ललकारने में बितते हैं, वह मेरे लिए भगवान की उत्तम समर्पणांजलि है । इसलिए किसी का दिल हो तो कहना भाई ।

• दीक्षा-विधि •

अब यह दीक्षा दिन जब गुरुमहाराज ने तय किया था, तब साहब, समय देखिये वसंतपंचमी थी। वसंतपंचमी आज तो नहीं है, परंतु ईतवार है। बाहर से गाँव के लोगों को आने में सरलता रहे, इसलिए यह ईतवार का दिन रखा है। परंतु उसने दिन वसंतपंचमी में सब विकसित होता है। पेड़, पुष्प इत्यादि, कुदरत के सौंदर्य की बहार खिलती है। उस तरह हमारे जीवन में भी ऐसी वसंतपंचमी खिल उठे। यह गुरुमहाराज का एक symbolic action था।

मुझे ऐसे बिठाया कि तू अब ऐसे बैठ्कर विचारशून्य हो जा। मैंने तो कहा, ''साहब, नहीं हो रहा।'' ''क्या कहता है, अबे अब ?'' मैंने कहा, ''साहब, नहीं हो सकता। मुझे तो कई विचार आ रहे हैं।'' ''कि उनको सिर पर रखकर मेरी मूर्ति सामने रख।'' मैंने कहा, ''मूर्ति आपकी रहती परंतु विचार तो अभी आ रहे हैं।'' तो कहने लगे, ''मेरी मूर्ति रहती है और तुझे विचार आते हैं तो मेरी मूर्ति में तुझे अभी प्रेम नहीं है।'' मैंने कहा, ''साहब, एकदम तो कैसे प्रेम हो जाय ? पलभर में कुछ एसा प्रेम नहीं हो जाता। हम मिलते-जुलते रहे, साथ में रहे तो कुछ हो सकता है, तो आपमें मन रह सकता है। एकदम तो नहीं रह सकता।'' बाद में तो कहा, ''फिर से कर। मेरी मूर्ति मन में रखकर आँखे बंद कर और मूर्ति को सामने रख और फिर सब विचार आना बंद हो जाय वह देख।'' फिर से किया, मुझे तो विचार आते ही रहे। मैंने कहा, ''साहब, विचार तो बहुत आते है, और ज्यादा आते हैं।'' तीसरी बार करवाया। साहब, वह हुआ नहीं। उनके मनमें कुछ संकल्प होगा, वे भावना रखते होंगे, बनता होगा, परंतु मेरा दिमाग स्वीकार नहीं कर सकता था। मुझे तो जो हुआ वह मैंने तो कहा। परंतु उनको चीढ़ चढ़ी होगी या कुछ और होगा या पहले से खोज रखा होगा या प्लानींग होगा, उसकी पूरी योजना होगी मुझे पता नहीं है। बड़ा खूंटा, इतना बड़ा, आगे इतना बड़ा उसका डट्टा, बड़े लोहे के खूंट आते है ना साहब, छ, सात, आठ इंच के और आगे लोहे का डट्टा। एक डट्टा यहाँ

इतने जोर से मारा साहब कि और इतना सब जोर से मारा शरीर बेहोश हो गया था और मैं जो पद्मासन लगाकर बैठा था उसी स्थिति में तीन दिन गुजर गये थे ।

फिर जब होश आया तब मुझे मसाज करते थे वे । पाँव पर और सब जगह । ''अबे लड़के, अब विचार आते थे ?'' मैंने कहा, ''नहीं विचार-बिचार कुछ नहीं साहब । यह तो आपने मुझे यहाँ मारा और सब खत्म हो गया मुझे । बिलकुल विचार नहीं ।'' तब पूछा, ''क्या थी तुम्हारी स्थिति ?'' ''किसी भी प्रकार के विचार ही नहीं, ऐसी कोई स्थिति थी ।'' और मुझे पूछा, ''कितने बजे ? कितने घंटे ऐसा रहा ?'' मैंने कहा, ''रहा होगा पा घंटा, बीस मिनट ।'' क्योंकि मुझे तो यही ख्याल पा घंटा और कि पा घंटा-बीस मिनट । नहीं ।'' मैंने कहा, ''कितना एक घंटा ? आधा घंटा ?'' ''अरे क्या आधा घंटा !'' तो कि नहीं । फिर उन्होंने कहा, ''तीन घंटे, तीन दिन हो गये ।'' ''अरे !'' मैंने कहा, ''क्या बात करते हैं, साहब ? अब मेरा कामकाज गया ।'' ''मैंने बिगाडा और यह क्या साहब ?'' भारी । यह आप क्या करते हो मुझे ? साहब, हमें कर्म की वफादारी तब बहुत थी । गांधीजी के साथ रहे थे इसलिए । सच कहता हूँ मुझे बहुत आघात भी लगा था । सच कहता हूँ । नहीं लगना चाहिए । यह बहुत बड़े से बड़ा अनुभव हुआ था । फिर मैंने कहा, ''यह कर्म ! यह सब, साहब बहुत भयंकर भूल मैंने कर दी । हालांकि मैंने लिख दिया था । ठक्करबापा को कि इस तरह हुआ था और तीन दिन मैं बेहोश अवस्था में रहा था, मेरे काम पर नहीं जा सका था । मुझे माफ करना और मेरी छुट्टी मानना, परंतु ऐसी दशा हुई थी ।

● मोटा की भजन-भक्ति ●

उसके बाद उसने मुझे सभी साधन बतायें । उसने मुझे साधन बतायें, ''बेटा, देख, तुझे भगवान का स्मरण करते रहना है । प्रार्थना करना । भजन-कीर्तन गाना । और तुम्हें सभी शर्म-संकोच छोड़ देना । रास्ते में

जाते-जाते भी भजन गाना ।'' नड़ियाद में मेरी समकक्ष वय के जो हैं लोग आज भी जानते होंगे और मैंने भजन गाये..... बहुत से .... नड़ियाद में भजन गाते गाते ही घुमता था । यह मेरे शरीर की ज्ञातिवाले मेरे नरसिंहकाका यहाँ पधारे हैं । मेरी ज्ञाति में बहुत प्रतिष्ठता वाले । बहुत प्रतिष्ठा वाले । वहाँ उनके पिता थे, वे जानते थे । मैं भजन गाते-गाते जाता, परंतु हमारी ज्ञाति में उनके अकेले का ही मुझे सहकार था । सहानुभूति थी, क्योंकि वे सत्संगी आदमी थे । आज भी कोई ऐसे व्यक्ति मिले तो उन्हें मालूम है कि यह **मोटा** है, जो घुमते फिरते भगवान का भजन गाते हैं । काकरखाड़ के रास्ते जाते समय हमेशा भजन गाते जाते समय कोई लड़के मेरे पर धूल डालते थे, वहाँ एक मगन राजा थे, रावजीकाका, जानते हो न ? उस मगन राजा ने दो-चार बार लड़कों को मार कर भगा दिये थे और कहा था, ''यदि अब इस लड़के पर तुमने धूल डाली तो तुम्हारा क्या हाल करूँगा यह समझ लेना ।'' वहाँ उनका बहुत ड़र था । रावजीकाका, मगनकाका का । वे नहीं होते और हमारा केस, साहब रेलवे की पटरी का । जिसमें वे बिचारे बरबाद हो गये । ऐसे लोग मुझे मदद भी करते थे, बचाते भी थे । लड़के परेशान भी करते, परंतु मैं भजन गाने में ही मस्त रहता ।

तो उसने मुझे बताया कि, ''लड़के, तुम अभय, नम्रता, मौन और एकांत का पालन करना । यह भगवान का स्मरण अखंड करना । प्रार्थना करना । आत्मनिवेदन करना । सम्मुखता और समर्पण करते रहना । सब कुछ वृत्तिओं का, विचारों का, स्थूल कर्म का, संसार का, व्यवहार का । यह भी यह सब मैं करते रहता । अभय और नम्रता, अंतर्मुखता बढ़ाते हैं । जिसे यह साधन करना हो, वो कर सकता है साहब और वैसे सिर पर हाथ रखे और मिल जाय, आशीर्वाद से मिल जाय, ऐसी बात नहीं है । मैं तो मना करता हूँ, मेरा संग जिसे करना हो, वह करे । नहीं करना हो तो मुझे एतराज नहीं है । स्वयं पसीना बहाये बिना, यह ज्ञान नहीं मिल सकता । साले, तुम्हारी रोटी पाने के लिए आठ घंटे मेहनत करते हो तुम । **अपने स्वार्थ की रोटी पाने के लिए आठ घंटे मेहनत**

करते हो, तो भगवान के पास से तुम्हें लक्ष्मी प्राप्त करनी है, वह खेल में नही मिलेगी, साहब !

गलत बात है जो कोई कहता हो, उसके पास जाओ और कहेगा तो यह गलत बात है । स्वयं द्वारा मेहनत किये बिना, पलपल की awareness (जागृति), एक पल भी बाकी नहीं । पलपल की अखंडता उसकी, पलपल की उसकी जागे, तब ही ज्ञान प्राप्त होता है । ऐसे–वैसे नहीं होता । स्वयं को प्रयत्न करना पड़ेगा । तो कि यह सद्‌गुरु के आशीर्वाद काम में आये सही । परंतु सद्‌गुरु में कहाँ ओतप्रोत हुए हो, कहाँ दिल से मिले हो ? यह मैंने बहुरूपिया का वेश लिया है । **देखता हूँ कितने ही लोग खंडन करते हैं । अरे साहब, मेरा खून कर डालते हैं । कई लोग ऐसा नकारात्मक सोचते हैं कि जिसका कोई मतलब ही नहीं होता । अबे भाई, क्या मैं आपके घर पर चाँवल रखने आया था ? कुमकुम वाले चाँवल रखने तुम्हारे (वहाँ) आया नहीं मैं । मुझे स्वीकार किया है अपने आप और फिर मेरे साले, आपको शर्म नहीं आती ? आप अपने स्वयं के लिए वफादार नहीं हैं । मैं तो ऐसा कहता हूँ । जाहिर में कहता हूँ । परंतु अनेक लोग ऐसा करते हैं, फिर भी मैं तो प्रेम ही रखता हूँ । क्योंकि मेरी शपथ है, मेरा वचन है– प्रेम करने का ही । परंतु वह भगवान कहाँ देखता है, साहब ?**

● कर्म का तत्त्वज्ञान ●

साहब, जैन लोग कर्म पर बहुत, कर्म के सिद्धांत पर वे लोग बहुत.... और इतने सारे पृथक्करण में गहरे उतरे हैं । जैन धर्म वह ..... ऐसा दूसरा कोई धर्म इतनी गहराई में नहीं गया है, पृथक्करण के बारे में । वृत्तियाँ, उनके विभाग, उनके विभागों में भी । किन्तु उनके एक नानचंद्रजी मुनि करके बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं । यहाँ कोई जैन होंगे तो उनको पहचानते होंगे । वे ज्ञानी भी थे और कवि भी थे । साक्षर भी थे । प्रार्थना के बहुत परम भक्त और समान सभी धर्मों की तरफ समभाव वाले । इसलिए कई बार सत्संग होता था ।

वे कर्म की philosophy पर कहते थे । मैंने कहा, ''कर्म में तो मैं मानता हूँ । कर्म का परिणाम भी है । परंतु यदि सिर्फ अकेले कर्म का ही शुद्ध न्याय होता तो एक पल भी हम जी नहीं सकते । साहब, आप विचार करना । इस जीवन में हमने कितने ही ऐसे कुकर्म, अन्याय भगवान को नापसंद ऐसे किये होते हैं । हमारे इस जीवनमें इतना हमारा वर्तमान जीवन है, उसमें भी और उसके बाद के जीवनमें तो कितने ही कर्म किये होंगे । उन कर्म का यदि शुद्ध न्याय मिले तो एक पल भर भी हम जीने के लायक नहीं है । परंतु साथ में एक करुणा है । **करुणा वह आत्मा का गुणधर्म है ।** यह भगवान की करुणा है साथ में साहब । मैं मुनि महाराज के चरणस्पर्श करके कहता, ''साहब, आप इस बारे में विचार करो । आपके वहाँ कोई व्यक्ति आपका शिष्य हो । भूल करता है तो आप क्या करते हो, ज्यादा से ज्यादा ? आप उसकी गलती को माफ करते हो या नहीं ? वैसे तो सचमुच सच्चा ज्ञानी पुरुष होगा तो उससे ज्यादा प्रेम करेगा, उसे छोड़ नहीं देगा । भगवान किसी को छोड़ नहीं देता । भगवान किसी के पाप-पुण्य को नहीं देखता है और देखा हो तो पापीओं का उद्धार हो गया है– ऐसे बड़े बड़े भक्त हो गये हैं, इतिहास में उनका नाम है, प्रसिद्ध हो गये हैं ।

● *मोटा* का काम– सब को प्रेम करना ●

ऐसे मेरा भी धर्म यही है कि सब को प्रेम करना । कई लोग कहते हैं, ''**मोटा**, फलाना व्यक्ति आपके आश्रम में आता है ।'' मैंने कहा, ''तुम्हें क्या हो गया भाई ?, भले आता ।'' मेरा काम तो जो सब आये, वे भले आये । मेरा काम तो प्रेम करना है । कुछ किसीका मैं दुष्कर्म नहीं देखता । पाप-पुण्य देखना मेरा काम नहीं हैं । मेरा काम प्रेम करना है । तो मैं प्रेम करता रहता हूँ । परिणाम की भी मेरी इच्छा नहीं है । हमें तो गीतमाता सामने पुकार कर कहती हैं । अबे, बेटे, परिणाम की चिंता मत करना, परंतु सब मेरे बेटे सभी परिणाम ही पहले रखते हैं । तो यह नहीं चल सकता । **आप सब भगवान की बातें करते**

हो । भगवान के पथ पर चलने की बात करते हो और फल की अपेक्षा साथ रखो वह नहीं चल सकता ।

• श्रीबालयोगी की आज्ञा के अनुसार साधना •

तब यह गुरुमहाराज ने मुझे इस तरह दीक्षा दी कि भगवान का स्मरण करना, अखंड करना और साहब, उसके लिए प्रयत्न भी किया । उसका प्लानींग मैंने किया था कि रोज ढ़ाई घंटे लेना । जिस दिन न हो, भोजन नहीं करना और प्रत्येक पांच-पंद्रह दिन में दस-दस मिनट बढ़ाते जाना । इस तरह प्रयत्न किया, साहब । चौदह-पंद्रह घंटे तक तो ले गया था । फिर आगे बढ़े ही नहीं, परंतु भगवानने साँप कटवाया और मुझे अखंड स्मरण करवाया ।

तब स्मरण, प्रार्थना, भजन-कीर्तन, आत्म-निवेदन, समर्पण, सम्मुखता । क्योंकि भगवान को तो आकार नहीं है, स्वरूप नहीं हैं तो किसका स्वरूप सामने रखें ? मन को स्थिर करने के लिए स्वरूप की बहुत जरूरत । कि मन निराकार को नहीं पकड़ सकता । गीताजी के बारहवें अध्याय में कहते हैं, ''जगत में जाने-अनजाने सभी साकार का स्तवन करते हैं ।'' साकार को ही मन पकड़ सके ऐसी शक्यता वाला है । इसलिए मैं मेरे सद्गुरु महाराज को सम्मुख रखता था । परंतु सद्गुरु का शरीर वह सद्गुरु नहीं है । वहाँ मैंने सद्गुरु पर लिखा है, उसमें बहुत सारा उस बारे में लिखा है । **उसमें रहा हुआ चेतन जो है, वही हमारा असली धर्म है, वही हमारा आदर्श है, उसके प्रति जाना ।**

तब ये सब साधन साथ-साथ करता था । अभय, नम्रता, मौन और एकांत । किसी भी दिन घर में सोया नहीं हूँ । शरीर में चाहे कितना ही बुखार हो, बीमार हो । अभी भी जिसे पूछना हो तो पूछ लेना, फिर कोई साक्षी मिलेगा नहीं । गांधी आश्रम में मेरे विधवा भाभी हैं अभी । मेरे से चार साल बड़े । अभी उन्हें पूछ सकते हो । जिसे पूछना हो उसे । घर में सोया नहीं । चाहे जैसी भयंकर से भयंकर जगह के बारे में सूनुँ, वहाँ जाकर सोता । अभय विकसित होता है । साहब वैसे ही अभय

विकसित नहीं होता है। स्वयं द्वारा कि गई बात है। वह तो सामना करना पड़ता है । सामने जाना पड़ता है । ऐसी स्थिति में आ जाना पड़ेगा । तब गुरुमहाराज ने दीक्षा दी । इस तरह बरतने को कहा । उनके कहे अनुसार वर्तन किया ।

● दान, परमार्थ की समझ ●

और मेरी तो सब से प्रार्थना है कि संसार में हैं । हमें गृहस्थाश्रम चलाना है। **स्वार्थ तो करना ही पड़ेगा भाई, उसमें आपका कुछ भी नहीं चलेगा । परंतु साथ-साथ परमार्थ भी करते रहो ।**

ये दो पलड़े हैं— द्वन्द्व स्वार्थ और परमार्थ। तो अकेले स्वार्थ में रचेपचे रहेंगे तो नहीं चलेगा, साहब । आज लोग दान करते हैं सही, परंतु दान को आज मैं दान नहीं कहता, व्यवहार हो गया है। कि फलाना ने इतने दिये, इसने इतने दिये हैं। इससे इतने रखो भाई हम तो । अब दान की प्रथा भी व्यवहार हो गई है । उसके पीछे ज्ञान नहीं है । कोई सभानता नहीं है । उच्च आदर्श, उच्च भावना, हमारा धर्म है और हमें करना ही चाहिए। उस प्रकार की सभानता के बिना हुआ काम वह काम नहीं है। उससे जीवनमें उत्कर्ष नहीं होगा। **लीक अनुसार किया हुआ कोई भी कर्म वर्तमान जीवन में भावना का विकास प्रकट नहीं कर सकता है ।** तब मेरी तो प्रार्थना है, भाई, कि स्वार्थ तो हमारे सिर पर पड़ा ही है और वह हमें करना ही पड़ेगा, परंतु परमार्थ करते रहो ।

परमार्थ यानी सिर्फ आप आध्यात्मिक वाचन करो, उसे मैं परमार्थ नहीं कहता हूँ, साहब। उसे तो छोड़ो, मैं ऐसा कहता हूँ। वह एक बाधा है। उसके पीछे कई लोग लगे हुए हैं। इससे तो समाज का भला होता हो, ऐसा कोई प्रत्यक्ष अच्छा काम करो। तो क्या भला होता होगा ? वह सूझेगा, करने की दानत जागृत होगी, तब अपने आप सूझेगा । **परमार्थ के बिना हमारे समाज का उत्कर्ष नहीं होगा ।** यह भावना भी जागृत नहीं होगी । हमारा स्वराज मिला है, परंतु स्वराज की लायकी हमारे समाज में अभी जन्मी नहीं है, साहब ।

और ये सब रागद्वेष साहब । ये सारे झगड़े इतने बढ़ गए हैं । ये कोंग्रेसवाले भी अंदर ही अंदर अलग-अलग पक्ष बनाते हैं । जिससे पूरे समाज को परेशानी होती है । वे सत्याग्रह भले कराये हम मना नहीं करते हैं भाई । परंतु उसमें बेचारे निर्दोष मारे जाते हैं । और गांधीजी थे एक । परंतु साथ-साथ वे समाज की भावना भी जागृत करते थे, भाई । हालांकि उन्होंने समाज के सर फुडवाये, लाठीयाँ भी खानी पड़ी, लोग मर भी गये, कई जेलों में गये । परंतु उस समय भावना का जो प्रपात उछलता था, जो कोई उस समय के दिनों को जो कोई याद करेगा उसे मेरी बात सच लगेगी । उस भावना का प्रपात जो उस समय उछल रहा था, वह आज नहीं है । उस भावना की भूमिका में गांधीजी ने यह सब कराया है ।

● विरोधीओं के प्रति गांधीजी का व्यवहार ●

गांधीजी, गांधीजी इतने रागद्वेष से मुक्त थे कि उनके कट्टर विरोधिओं के साथ भी प्रेम करते थे, साहब । अनुभव की यह सच्ची हकीकत है । ऐनी बेसन्ट थे । स्वयं वह भी देशभक्त । उसके लिए गांधीजीने सरकार ने उनको पकड़ा, तब गांधीजीने उनको छुड़ाने के लिए तैयारी की थी । परंतु non-cooperation असहकार का आंदोलन शुरू किया, तब रोज मद्रास (चेन्नई) से अखबार निकालते थे, उसमें गांधीजी के विरुद्ध इतना सारा छपता था । परंतु गांधीजी वह अवश्य पढ़ते थे । कई लोग कहते थे, ‘‘अरे ! बापु, आप यह क्यों पढ़ते हो ?’’ तो वे कहते, ‘‘यह भी पढ़ना चाहिए । और यदि प्रसंग आवे तो हमारे विरुद्ध के व्यक्तिओं से भी मिलना चाहिए ।’’ और जिन जिन लोगोंने उनके विरुद्ध लिखा है, उनको भी प्रसंग आने पर, गांधीजी मिले बिना नहीं रहे हैं । ऐसे उनके जीवन में कई प्रसंग हैं । **हमारे गांधीजी के आश्रम में भी कितने सारे विरोधी । कोई कहे इनको इतना समय क्यों देते हो ? तो उसे ज्यादा समय देते । गांधीजी के जो विरोधी थे, वे यदि गांधीजी के पास आते तो उन्हें ज्यादा समय देते ।** इस तरह उन्होंने

जीवन में प्रत्यक्ष करके दिखाया है । उन्होंने विरोधिओं के प्रति रागद्वेष से मुक्त ऐसा सद्‌भाव दिखाया है । ऐसी स्थिति में वे प्रजा को असहकार करवाते थे ।

आज.... आज ऐसे व्यक्ति मिलने दुर्लभ है । होगें, नहीं हो । भाई, इतनी बड़ी पृथ्वी है । उसमें भी कई रत्न पड़े हैं । होगें । कोई नहीं होगा ऐसा मेरा कहना नहीं है । परंतु आज वह वातावरण नहीं है । उस भाव की भूमिका का प्रपात जैसा भाव उस समय उछलता था, तब ऐसा और वह भाव उछलता था, जिससे हजारों युवा लड़के-लड़किओं ने सभीने त्याग किया है, अपने सर तुड़वाये हैं और उस समय समाज ने पुलिस के भयंकर अत्याचारों का सामना भी किया है । उस भावना के प्रपात के कारण और उस स्थिति में, उस भूमिका में गांधीजीने यह सत्याग्रह चलायक है । आज वह भूमिका नहीं है । फिर भी सत्याग्रह होते रहते हैं । उसमें बेचारे व्यर्थ निर्दोष लोग और समाज को बहुत परेशानी भोगनी पड़ती है । परंतु समाज को उसका भान नहीं हैं । भेड़चाल में सब उछलते हैं, उछलने दो । मैं तो कहता हूँ होने दो । परंतु मेरी अंतिम एक ही प्रार्थना है भाई । स्वार्थ तो आपको करना ही पड़ेगा । आप बच नहीं सकते, परंतु साथ-साथ परमार्थ करना ।

आपको पैसे मिले हैं, वे आपके बाप के नहीं हैं । मैं जाहिर में कहता हूँ । आप समाज के पास से कमाते हो । यह समाजवाद का धर्म है इसलिए मैं नहीं कहता हूँ साहब । मैं तो धर्म का व्यक्ति होकर कहता हूँ । **धर्म का व्यक्ति वही जिसका स्वार्थ कम हो गया हो । त्याग और परमार्थ जिसके जीवन में आगे हो वही धर्म का पालन करता है, ऐसा समझना । ये लक्षण । उसके बिना धर्म नहीं, साहब । चाहे वह मंदिर जाता हो और तिलक लगाता हो, और रोज दो घंटे सेवा करता हो, परंतु यदि उसके जीवन में त्याग और परमार्थ अग्रभाग में नहीं है, त्याग, तप और परमार्थ उसके जीवन में नहीं है तो वह धर्म का भी पालन नहीं करता है ।**

तो हमारे समाज को स्वराज मिला है, उसे उन्नत होने के लिए इसकी जरूरत है । भजन-कीर्तन पूरी रात किया करे उन सब की जरूरत नहीं

है । यह न करें ऐसा मेरा कहना नहीं है, **परंतु उससे यदि आपके जीवन में गुण, भाव और शक्ति प्रगट न हुए तो उसका क्या अर्थ है, भाई ? साले भांग पीते हो तो आपको पता लगता है काम, क्रोध जागृत हो, वासना जागृत हो तो भी मालूम पड़ता है, तो आप भजन करते रहो और नामर्द रहो यह कभी हो सकता है, भाई ?** परंतु किसे यह सब समझना है ? अंत में मेरी एक ही प्रार्थना है कि भाई आप स्वार्थ करते रहो, परंतु परमार्थ करते रहना ।

● समय का अभिज्ञान ●

साहब, समय बहुत विपरीत आ रहा है । मैं कुछ भड़काने का काम मेरा काम नहीं है । परंतु सच बात कहता हूँ । मैं १९४४ के वर्ष में एक राजा के वहाँ भोजन करने गया था । मेरा मित्र वजुभाई जानी उपस्थित था । मैंने कहा, ''साहब, आपका यह राज्य चला जानेवाला है ।'' ''अरे ! **मोटा** क्या कहा ! आप क्या बात करते हो ! भांग पी है क्या ?'' (मैंने) कहा, ''साहब, भांग नहीं पी है, मैं समय के अभिज्ञान की बात कहता हूँ कि यह आपका राज्य जानेवाला है ।'' तो गए । उसी तरह आज भी कहता हूँ कि यह.... यह पैसे जायेंगे भाई । हमारे देश की स्थिति सलामत रहनेवाली नहीं है । अराजकता होनेवाली है । यह जो निशानी मुझे दिख रही है, वह मैं मेरे स्वजनों को, समाज को बताकर उन्हें चेतावनी नहीं दूँ तो वह बराबर नहीं । इसलिए वह समय आनेवाला है । तो तो फिर परमार्थ करो भाई ।

● *मोटा*– कुशल अर्थशास्त्री ●

आपसे जितने संभाले जा सकते हैं, उस तरह पैसे संभालो । और पैसे भी चीजवस्तु में रोकना । दिन प्रतिदिन पैसे का अवमूल्य होता जा रहा है । रुपये का Depreciation होता है । यह आज से नहीं कहता हूँ । यह हमारे दाक्टर काले कोटवाले हाजिर हैं, पूछो । उनके वहाँ था, तब से कहता हूँ । अबे ! पैसे तुम्हारे चीज वस्तु में लगाओ । नानाभाई डाक्टर हैं ? बीच में एक स्वजनने कहा, ''वहाँ खड़े हैं ।''

साहब, कहा था या नहीं ? सच बात ? वर्ना तो ये लोग कहेंगे कि बैठे बैठे **मोटा** तो भांग पीकर गप हांकते हैं । तुम्हार पैसे हो तो चीज-वस्तु में लगाना । वह appreciation होगा और नगद पैसे रखोगे । उसकी सलामती नहीं है, इस राज में ।

मैं तो आपको आज भी कहता हूँ कि हमारे देश में इस पैसे का अवमूल्यांकन आज नहीं तो कल होनेवाला है । कब होगा यह नहीं कहता हूँ । परंतु इतनी मुद्रास्फिति होती जा रही है और उससे रुपये का मूल्य कम किये बिना चलेगा नहीं । सो के पचास हो जायेंगे । कभी भी किसी वस्तु में आपने लगाये होंगे तो आदमी बच सकेगा । और यह मंहेगाई है वह बेवजह है । सच बात तो साहब यह है । मैं कुछ अर्थशास्त्र का सीखा हूँ । सिर्फ भगत मात्र नहीं हूँ साहब । मैंने सभी विषयों का अभ्यास किया है । इस मुद्रास्फिति के कारण इतने ज्यादा दाम बढ़ते हैं ।

यदि मैं सरकार में होता तो प्रजा को confidence विश्वास में लेकर कहता कि भाई यह हमारी मुद्रास्फिति की नीति के कारण दाम बढ़ते हैं । ये लोग– अनेक लोग हमें अलग-अलग कारण देते हैं परंतु यह मुद्रास्फिति तो बढ़ती ही जाती है । हरी नोट छापते ही रहते हैं । तो इसका अंत किस तरह आयगा ? किसी भी दिन उसे इस रुपये का अवमूल्यांकन करना ही पड़ेगा । तब आपके रुपये यदि किसी चीज वस्तु में लगे होंगे तो ही....... सकेंगे । स्वार्थ के लिए भी आप इतना तो करना । और मेरी सलाह मानने वाले कई लोगों को फायदा हुआ है, परंतु फायदा हो या ना हो उसके लिए मैं नहीं कहता हूँ, परंतु मैं तो जो परिस्थिति होने वाली है, उसे सामने देखकर कहता हूँ कि भाई, ऐसा समय आने वाला है । सही सलामती रहेगी नहीं हमारी ।

और यह समाज ये तो गरीबों की बात करते हैं । वे भले करे । पर यह बात गलत नहीं है । जिस तरह हम परिवार में कोई बीमार हो तो उसकी ज्यादा संभाल करते हैं, डॉक्टर को बुलाते हैं, उसकी सेवा करते हैं । उसी तरह हमारा एक समाजरूपी अंग है, उसमें जो गरीब लोग हैं उसको हमने, समाज ने उनकी उपेक्षा की है । यह बात बिलकुल सही

है । वे उपर आये, उनको काम-धंधा मिले, रोजगार मिले, खाना मिले । वह समाज को आज नहीं तो कल करना ही पड़ेगा । वह फिर इन्दिराबहन कहते हों या xyz कहते हों यह बात सच है, फिर वह राजकीय हेतु के लिए कहते हों तो वे जाने, परंतु हमारे धर्म की दृष्टि से तो यह बात सच है ।

धर्म तो वहाँ कहता है कि, ''**तेन त्यक्ते न भूंजीथा**'' कि त्याग त्यागकर भोग करो । आप अपने स्वयं के बारे में सोचो, थर्मोमिटर रखकर विचार करो कि कितना त्याग त्यागकर खाते हो ? अरे ! हम तो कहते हैं कि निरा भोग ही भोगतें हैं । हम गृहस्थाश्रमी आदमी । और लक्ष्मी को तो हमारे शास्त्र ने चंचल कहा है । पलभर में चली जायगी साहब । भलभले के राज्य गयें । हमारे दक्षिण में हजार-हजार, दो-दो हजार एकर वाले जमीनदार थे साहब । आज उनको घर का फर्निचर बेचना पड़ता है । अब वे सब कालीन बेचते हैं हमने स्वयंने देखा है ।

● जिसका नमक खाया, उसे सावधान करने का कर्ज ●

..... मैं सिर्फ बात नहीं करता कि इस उदाहरण से आप सावधान हो जाओ तो अच्छा । हमारे यहाँ भी उपरी मर्यादा आई है । किसानों को तो आई है । अब योग्य-अयोग्य उसकी बात आप सब समझो । परंतु यह आने वाले समय की निशानी दिखाता है । शहरों में भी धनवानों के लिए मर्यादा मकानों और धन की भी आयेगी ही । और किस तरह ये पैसे ले लेना । आप पूरी नीति को देखे तो किस तरह आपके पैसे ले लेना उसी बाबत की नीति है ।

मैं कुछ सरकार के सामने आरोप नहीं रख रहा हूँ । जो हकीकत है उसे कह रहा हूँ । इससे आपको सावधान होना हो तो हो जाईए । तो यह दे देने पड़ते हैं । अबे ! यह परमार्थ तो करो । अबे, मेरी सास के ये तुम तो कैसे लोग हो ? पर ऐसे के ऐसे नहीं करेंगे साहब । नहीं करेंगे तो भगवान...... मुझे तो मेरा भगवान हजार हाथ वाला, जो जो काम लेता हूँ, वह मदद करता है । परंतु मेरा धर्म है । आपका नमक मेरे पेट में

है, समाज का । इसलिए मुझे जो महसूस होता है, वह सच्ची हकीकत न कहूँ तो मैं बेवफा सिद्ध होऊँगा । इसलिए कहता हूँ, फिर से मेरी प्रार्थना है कि भाई, स्वार्थ तो साथ में है ही परंतु परमार्थ भी करते रहना । .... हरि:ओ........म तत् सत् ।

हरि:ॐ....... तत् सत्

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [२]

गुरुपूर्णिमा उत्सव प्रसंग पर पू. श्रीमोटा की पावन वाणी के अंश

(त्रिचिनापल्ली १९७४)

अनुवादक :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

॥ हरिःॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. आध्यात्मिक बातों का यह काल नहीं है ४५
२. काल के अनुसार बात ४५
३. काल को समझो ४६
४. विपरीत काल में भाईचारा विकसित करें ४७
५. रिश्वतखोर अमलदारी तंत्र ४७
६. बढ़ते दाम का विषचक्र ४९
७. साम्यवाद की निशानी ५०
८. बहनें गहनें का ठाट-बाट न करें ५१
९. **मोटा** को भेंट मिले हुए गहनों का उपयोग परमार्थ में ५३
१०. **मोटा** की आगाही : खून के संबंधीओ तो
भाईचारा विकसित करो— शब में से शब्द हरि-स्मरण ५४
११. वेदकाल का साहित्य सब से पुराना है ५५
१२. हठयोग की उत्पत्ति ५६
१३. आयुर्वेद की उत्पत्ति ५७
१४. गुरूपूर्णिमा की उत्पत्ति ५९
१५. मंदिरों की उत्पत्ति का कारण और वर्तमान में
मंदिरो के प्रति सरकारी अभिगम ६१
१६. दिल के भाव से गुरु करो और
काल के अनुसार की सिखावन ६१
१७. अहम् को फीका करने के लिए पैर पड़ने का रिवाज ६२
१८. स्वयं की शांति के लिए तो सद्भाव रखिए ६३
१९. सद्गुरु के पास खुले हो जाओ—
मोटा का कार्य समाज का कार्य है ६४
२०. धन का सदुपयोग करो ६४
२१. सच्ची भावना त्याग करवाती है ६५
२२. **मोटा** को कुटुंबी मानते हो तो भक्ति तो दिखाओ ६५
२३. मृत्यु तक भी गुरुआज्ञा का पालन ६६
२४. चेतनानिष्ठ के लक्षण उदाहरण सहित ६६

॥ हरि:ॐ ॥

सन् १९७४ में त्रिचिनापल्ली में गुरुपूर्णिमा के उत्सव प्रसंग पर पू. श्रीमोटा की पावन वाणी के अंश

• आध्यात्मिक बातों का यह काल नहीं है •

सद्‌गुरु पर तो एक पूरी पुस्तक लिखी है । अभी । प्रेस में छप रही है । काव्यो में लिखा है । अनुष्टुप में । और बहुत अच्छा है । मुझे लिखने से संतोष भी होता है । इतना ही नहीं, परंतु ऐसे पुस्तक लिखता हूँ, तब विद्वानों को इकट्ठा कर पढ़ाता हूँ कि जिससे उसमें कोई शास्त्र के विरुद्ध कुछ न हो । क्योंकि मैं तो शास्त्र पढ़ा नहीं हूँ । किसी भी दिन मैंने न तो शास्त्र पढ़े हैं या पृष्ठ भी खोला नहीं ।

यह सद्‌गुरु के अनेक पहलू, सद्‌गुरु कब हो सकते हैं । उनके लक्षण कौन कोन से ? उसके अनेक पहलू इस सद्‌गुरु में वर्णन किये हैं । और उस पर से कह सकता हूँ, परंतु यहाँ कहना व्यर्थ है, क्योंकि सब आध्यात्मिक बात करने में मुझे कोई अर्थ नहीं लगता है ।

जब सामान्य गुजरात में प्रवचन हो, तब इस आध्यात्मिक बात के बारे में बहुत कम बोलता हूँ ।

• काल के अनुसार बात •

पर एक बात मैं आपको कहता हूँ । कि इस काल के बारे में बात कहूँ । कि यह घबराने या डर दिखाने के लिए नहीं कहता हूँ किन्तु समय बहुत विपरीत आया है । काल अभी विपरीत आया है । उसके आपको चाहिए उतने उदाहरण मिल सके ऐसा है ।

और यह काल इतना विपरीत आया है कि उससे भी ज्यादा खराब काल आनेवाला है और यह हकीकत रूप से कहता हूँ ।

मैं तो कई समय से कहता हूँ कि हमारे देश में अराजकता आनेवाली है । तब उस तरफ हम सब यह सरकार की गति भी उसकी तरफ हो

गई है । उसका एक ही उदाहरण लो । तो सरकार ने कानून बनाया है कि यह गेहूँ हम कब्जे में लें कि जिससे गरीब लोगों को मिले । सस्ते दाम से गेहूँ मिल सके । परंतु उसमें सरकार निष्फल गई है । वे गरीब लोगों के लिए करने गए, परंतु इससे गरीब लोगों को ही ज्यादा से ज्यादा दुःख है । क्योंकि उसे मजदूरी छोड़कर इस लाईन में खड़ा रहना पड़ता है, तब मुश्किल से दो किलो देते हैं । उसमें भी दो किलो पूरे नहीं मिलते हैं । परंतु दो किलो में उसका कैसे गुजारा होगा ? इसलिए दूसरे बाजार से लेते समय यह कानून नहीं होता तो उसे सस्ते में मिलते और समय भी नहीं गँवाना पड़ता । यह तो स्वयं की मजदूरी खो कर उसे बेचारे को फिर कतार में खड़ा रहना पड़ता है ।

आप सब को उसका कुछ ख्याल नहीं आता कि आपको कतार में खड़ा नहीं रहना पड़ता । परंतु ये गरीबों को ही ज्यादा से ज्यादा तकलीफ हुई है इससे । और यह अनुभव हुआ है तो भी वे कहते हैं कि यह शालिधान की फसल भी सरकार के जरीए करेंगे । उसमें भी सफल नहीं होंगे । बिलकुल सफल होने वाले नहीं है वे । क्योंकि हमारा administration इतना strong नहीं है, जितना रशिया में है । चीन में, चीन में तो मार ही डालते हैं । वह नागरिक हो या कोई भी हो उसे । उसे कोई दहेशत नहीं होती है ।

चीन में सोना है, वह किसी के पास मिले और बच्चों ने यह कह दिया, माँ-बाप नहीं हो और बच्चे कह देते कि हमारे यहाँ सोना है तो उसे मार ही डाले । ऐसा रख्त जो administration हो तो ऐसी सब योजनायें फलीभूत हो सकती हैं । यहाँ हमारे देश में यह है नहीं, संभव नहीं है ।

• काल को समझो •

परंतु यह उदाहरण इसलिए देता हूँ कि काल कैसा विपरीत आता है । आप आपके पैसो के सुख से सुखी और आनंद में हो, इसलिए आपको इसका भार भी लगता नहीं है । उसकी reality उसकी वास्तविकता

भी आप लोगों को बिलकुल लगती नहीं है। क्योंकि पैसे है और उसके कारण आप मौज-मजे में हो तो वह अच्छी बात है। इसमें मुझे भी खुशी होती है। परंतु अभी तो सब के साथ सुख है। परंतु इस काल को आप समझो। मेरा कहना है। विनती करता हूँ।

● विपरीत काल में भाईचारा विकसित करें ●

कि अब आध्यात्मिक बात गुरुपूर्णिमा के बारे में कहूँ, उसका कोई अर्थ नहीं है। आप कोई कुछ भी उसमें से समझने बाले हो या उस विषय का रहस्य समझने वाले हो ऐसा मुझे बिलकुल लगता नहीं है और वह कहना व्यर्थ है। परंतु यह काल विपरीत आता है और आप सब यदि भाईचारा विकसित करोगे तो तुम सभी को। इस घर में कहता हूँ और सब जहाँ जहाँ हैं, जिसके जिसके यहाँ बैठे हैं, उन सभी को कहता हूँ कि भाईचारा विकसित करोगे तो उसमें से आप को जो दिल में आनंद होगा, शांति होगी, प्रसन्नता होगी और एक दूसरे का आपको आसरा और उष्मा रहेगी। यह बहुत बड़ा सुख है। पैसे से भी बड़ा सुख है। जो आज धनवान। जिनके पास आज पैसे हैं, उसे यह बात समझ में नहीं आएगी। बिलकुल सच कहता हूँ। उनको बिलकुल समझ में नहीं आएगी।

● रिश्वतखोर अमलदारी तंत्र ●

तो यह ऐसा समय आ रहा है कि अब ज्यादा से ज्यादा रेईड (छापे) भी डाली जाएगी और कई जगह उसकी शुरूआत भी हो गई है। परंतु जो ज्यादा नहीं डाले जा रहे हैं, क्योंकि हम भी ऐसे हो गये हैं और अधिकारी भी ऐसे हो गए हैं कि रिश्वतें देकर सब रुकवा सके ऐसा है। नहीं रुकवा सके ऐसा नहीं हैं। परंतु वह निश्चितरूप से जबरदस्त आगे नहीं बढ़ रहा है, क्योंकि सरकार जागृत है। यह सब करवाना है, परंतु administration इस बात में सहयोग कर सके वैसा नहीं है, सहकार दे सके वैसा नहीं है। परंतु फिर भी मुझे लगता है कि समय विपरीत है और हमारा व्यापार-धंधा बिखर जाए ऐसा सरकार का इरादा भी है।

हमारी अभी की सरकार वह communist minded है । पहले नहीं थी । जवाहरलाल नेहरु थे । उसे भी उसका leaning communism तरफ था । साम्यवाद तरफ था । परंतु वह बहुत चतुर आदमी था । कि हमें अमरिका के साथ अच्छे संबंध रखे बिना चलेगा नहीं । और यह अमरिका हमें मदद करे वैसा है । और जब चीन के साथ युद्ध हुआ, तब जवाहरलाल नेहरु ने निजी वायरलेस से कई राज्यों को संदेश भेजे थे । दुनिया के सभी राज्यों को संदेश भेजा था कि हमारे पर आफत आई है । अब आप हमें मदद करो । चीन को हमने ऐसा कोई कारण नहीं दिया है कि जिससे वह हम पर आक्रमण करे, फिर भी उसने हम पर बिना किसी कारण के हम पर आक्रमण कर दिया है तो आप हमारी मदद करो । तब रशियाने मदद की, परंतु अमरिका ने तुरंत सैनिक कार्यवाही कर दी । उसने अपने जहाजी बेड़े के सैन्यों के साथ लश्करी मदद दी और उसने शस्त्र भी दिये । तब उसने खर्च की परवाह नहीं की थी । तो नेहरू ऐसे सयाना व्यक्ति था । वह साम्यवाद के साथ मिले हुए होने पर भी अमरिका के साथ अच्छा संबंध रखा ।

इस समय में हम रशिया के साथ संपूर्ण रूप से मिल गये हैं । अमरिका के साथ हमारी सरकार का सहकार नहीं है । कहते जरुर हैं कि हमें उनके साथ अच्छा व्यवहार करना है । सब अच्छा करना है । परंतु internally भीतर से वह नहीं है ।

मैं तो आज भी हिन्दुस्तान के एक नागरिक के रूप से इच्छा करता हूँ कि हमें दोनों राज्यों के साथ हमारा सहकार होना चाहिए । दोनों राज्यों में से कोई हमारा दुश्मन नहीं है । किसी के प्रति हमें नापसंदगी नहीं होनी चाहिए । ऐसी नीति हमारे देश के लिए कल्याणकारी है, परंतु आज वह नहीं है । हमारी सरकार आज communist minded है । साम्यवादी है । और एक एक कदम उस तरफ बढ़ती जाती है । और इतना ही नहीं, परंतु यदि आप बारीकाई से देखेंगे तो इन धनवानों का धन कैसे बिखर जाय । उनके पैसे कैसे चले जाए ऐसे ही साम्यवादी कदम सरकार के हैं ।

आप यह देखो । बारीकाई से जाँचो । किस तरह उनके पैसे अभी तो उनकी शुरूआत ही है आज । तो यह आपकी एस्टेट ड्यटी, वेल्थ ड्युटी । एस्टेट ड्युटी में भी आप देखें तो पैसे देते देते आपकी एस्टेट ही कुछ सालों में खत्म हो जाए इस तरह की पूरी पद्धति है ।

तो सरकार को हम सफल होने देते नहीं, यह अलग बात है । परंतु उनकी नीति तो उसी प्रकार की है और व्यापार-धंधे भी अस्त-व्यस्त हो जाए उसी प्रकार की सरकार की पूरी नीति हैं । मध्यम वर्ग ही मारा जाता हैं । निकाल ही देते उसे सीधे सीधा ।

• बढ़ते दाम का विषचक्र •

ये व्यापारी लोग बहुत मुनाफा करते हैं, लोगों को चूसते हैं । परंतु हमारे से ज्यादा तो वे लोग जिन्होंने एक यह संस्था बनाई है, जिसमें सब कुछ विदेश से मंगवाना और फिर सब को बाँटना । वह सौ प्रतिशत नफा करती हैं । मैं तो जाहिर में कहता हूँ । हंअ..... साहब, आपको अकेले को नहीं कहता हूँ । जाहिर में कहने का मेरा अर्थ ये सहकारी मंडलियाँ लियाँ इतना ज्यादा नफा करती है कि उसे कोई कुछ नहीं कहता ।

हमारे व्यापारी नफा करते हैं तो परमार्थ करते हैं । धर्मादा देते हैं । कई शिक्षा-संस्थायें चलाते हैं और ये व्यापारी लोग मदद भी करते हैं । वे दान भी देते हैं । परंतु यह सहकारी मंडली तो किसी को कुछ नहीं देती । तब यह सरकार की नीति ऐसी है कि have और have not जिसके पास है, उसे कैसे कम (और) उसे have not को कैसे ज्यादा मिले उस तरफ ज्यादा झुकाव दे तो अच्छा । परंतु वह गरीबी हटाने की बात करती है, लेकिन गरीबी नहीं हट सकी । उसके अनुसार कदम अभी के सचमुच प्रयत्न करती है सही सरकार । मेरा ऐसा कहना नहीं है कि प्रयत्न नहीं करती है, परंतु एक-एक कदम से एक-एक कदम से गरीबों को सहन करना पड़ता है । तब ऐसे सब तो यह तो धनवान लोगों को भी लागू होता है न ? **तो ये धनवान लोग कुछ क्या उनकी जेब में से देने वाले हैं ? वे तो ग्राहक पर ही डालने वाले हैं– तब फिर दाम में वृद्धि ही उससे होती रहेगी । और दाम बढ़ते**

हैं तो गरीब लोगों को ही खटकेगा । इसमें दूसरे लोगों को ही ज्यादा से ज्यादा दुःख होगा। इसमें दूसरे किसी को ज्यादा से ज्यादा दुःख आया हो। सरकार भले ऐसे कर लगाये जो सिर्फ पैसेवालों को ही असर करे, जैसे पेट्रोल का कर बढ़ाया। यह धनवान लोगों को पैसे उसके देने पडेंगे। तो वे दूसरे तरीके से ग्राहक के पास से यह रकम ले लेंगे। तो यह इस तरह का विषचक्र है। Visiciou circle कि ग्राहक को जो ज्यादा पैसे देने पड़ते हैं, वह अंत में तो आखरी जुमला गरीब पर ही आता है। उन लोगों को ही पोंछ लेते हैं। यह तेल कितना महँगा है। अभी बीच में तो ८।। रुपये किलो हो गया था। हमारे यहाँ के गाँवो में से घी तो बिलकुल गया। बिलकुल। क्योंकि डेरियाँ हो गई, इससे सब उसमें चला जाता है। घी, तेल, यह दूध कि बच्चों को खाने के लिए नगद रकम देते हैं। अच्छी रकम। दूध का अच्छा दाम डेरी वाले देते हैं और पूरा दूध ले जाते हैं। दोपहर को आप दूध लेने आओगे तो गाँवों में नहीं मिलेगा। अरे ! हमारे आश्रम में दूध की आवश्यकता हो तो नड़ियाद में दूध मिलना मुश्किल हो जाता है। तब घी तो गया। बिलकुल। उससे छाछ होती। छाछ में तो हमें पोषण मिले ऐसे तत्त्व हैं। साहब, वह भी गई। घी भी गया। एक तेल खाने जैसा वह भी गाँवो में मिलता नहीं है। मिले भी तो साढे आठ रुपये। किस तरह मजदूर– गाँव के लोग बेचारे खा सकते हैं ? तेल भी गया है आज। इससे सब्जी खाते थे वह चला गया। इससे थोड़ा थोड़ा लाकर खाते हैं। बड़ी मुश्किल से तेल लाते। यह साढ़े आठ रुपये का किलो। क्योंकि उनकी रोजी है।

• साम्यवाद की निशानी •

तब यह गरीबी हटाने की बात तो खाली एक political stunt है। परंतु वे जो जो करते हैं, वह पूरा व्यवहार उनका साम्यवाद। असल जो साम्यवाद था। रशिया में शुरूआत हुई इसकी। वह रशिया में इस तरह हुआ कि धीरे धीरे धीरे। आज हर एक गरीब को वहाँ रहना, फिर उनके बच्चों को मुफ्त शिक्षा, हर एक को मुफ्त चिकित्सा, हर एक को खाने लायक रोजगार मिलता है यह सही है। हमारे देश में ऐसा नहीं हुआ है। चीन में करीब इस

तरह आ गये हैं। केवल वहाँ आपको तकलीफ इतनी है कि सब अनिवार्य। काम बराबर करना ही चाहिए। कि काम न करे तो मारते। पहले तो चीन में भी मारते। खेत में अनिवार्य रूप से प्रत्येक को इतना इतना काम करना ही चाहिए। अनिवार्य उतनी मजदूरी न हो तो उसे परेशान किया जाता। कोड़ा लगाते। मार पड़ता। आज अब वह कम हुआ है। फिर भी साम्यवाद में यह एक स्वतंत्रता नहीं रहती है। तो हम वह चाहते नहीं है। आखिर हमारी संस्कृति व्यक्ति की स्वतंत्रता पर निर्भर है।

परंतु इस समय तो मुझे लगता है कि थोड़े समय के लिए भी हमारे देश में साम्यवाद आएगा। फिर टिकेगा नहीं। परंतु उसकी जरूरत होगी। उसमें से यह सब अराजकता होनी उसमें से फिर से फिर हमारा उदय-वर्तमान होगा। किन्तु यह समय ऐसा आता है कि have और have not जिसके पास है, उसके पास से खत्म करना ऐसा यह समय है। तब ऐसे समय में हम हैं। ऐसे समय में— जमाने में हम जी रहे हैं। हमें व्यापार-धंधा करना है। हमें खाना है। पीना है। तब इसमें सुख-शांति में रहने के लिए हम जितने आपस में एक होंगे तो फायदा है। मैंने तो आप सब को पत्र भी लिखा था। उसके पीछे का भाव यह है। होना या ना होना आप जानो। आपका स्वार्थ जाने। आपका रोट जाने। आपको एश-आराम करना हो, मोटरों में घुमना हो तो यह आपके लिए बहुत आवश्यक है। करोगे तो अच्छी बात है। नहीं करो तो हरि हरि।

• बहनें गहनें का ठाट-बाट न करें •

और गुरूपूर्णिमा की एक दूसरी बात कर दूँ। इन बहनों को मेरी प्रार्थना है कि आप गाँव में जाओ, शहर में जाओ तो गले में सोने की कंठी— हार पहनकर मत जाओ तो आपके लिए अच्छा हैं। अखबार में प्रतिदिन देखता हूँ और मुझे जितनी बहनें मिलती है, उन सब को कहता हूँ। आपको ही कहता हूँ ऐसा नहीं है। मेरे यह जयश्रीबहन को तो अनेक बार कहता हूँ। और उन्हों ने मुझे कहा भी है, ‘‘**मोटा,** अब में बाहर जाऊँगी, तब सोने की कंठी नहीं पहनूंगी।’’ आप बहनों को मेरी प्रार्थना है कि आप बाहर

जाओ, तब गले में सोने का कुछ न रखोगे तो वह आपके लिए अच्छी बात है। फिर आप जानो। यह मेरी प्रार्थना आपके समक्ष बिनती के रूप में रख दी है। शादी का प्रसंग हो, तब आप घर में पहनो। परंतु आपके पास पैसे हैं, यह दिखाने के लिए गहनों से सज-धजकर बाहर निकलने की जरूरत नहीं है। यह सब तो देखादेखी से चला है भाई। उसका कोई अर्थ नहीं है। यह समय ऐसा है कि आपको लूट लेते हैं।

अभी मैंने अखबार में पढ़ा कि पेडर रोड कितना बड़ा ? ओ हो हो हो ! पेडर रोड में तो बड़े बड़े धनवान लोग रहते हैं। वहाँ उसके गले में से सब ले गए। अखबार में पढ़ा था मैंने और ऐसे तो कई किस्से अखबार में आते हैं, फिर भी हम सावधान नहीं होते हैं। समय तो हमें सावधान करता है। फिर भी ना समझो तो मुझे कोई विरोध नहीं है भाई। आप पहनकर जाएँगें। उसमें मुझे विरोध नहीं है। परंतु मेरा धर्म ऐसा है कि मुझे आपको सावधान करना चाहिए।

और अब भाद्रमास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को अहमदाबाद में मेरा उत्सव आयोजित होने वाला है। तब भी मैं तो बहनों को आज तक मैंने कहा नहीं वह कहूँगा। मेरे साथ जिन बहनों का निजी संबंध रहा है, उनको बात की है। उसमें से किसीने हाँ कहा और किसीने कहा, ''**मोटा,** आपको समझ नहीं है। क्या हम अब गले को सूना रखकर घूमे ? सूना गला लेकर ? उसमें आपका क्या जाता है ?'' मैंने कहा, ''मेरा कुछ नहीं जाता है, माफ करना, माँ अब तुम्हें फिर से नहीं कहूँगा।'' ऐसे भी मुझे मिलते हैं। और फिर उसे कहता भी नहीं हूँ। मैं तो उनके भले के लिए कहता हूँ, किन्तु खराब समय आता है और लूट जाते हैं।

चंदुलाल भावसार के साथ हमारा बहुत घरोबा। शारदा को मेरे पर बहुत भाव। नंदुभाई यह जानते हैं। मेरे लिए मठियाँ, सुखड़ी★, चिवड़ा, बड़े बनाकर कई बार सब भेजती रहती। एक बार ट्रेन में से, चलती ट्रेन में से उसके गले में से सोने का बड़ा हार खींचकर ले गए। शिकायत की सब। परंतु कुछ हुआ नहीं— हार गया। तो ऐसे ट्रेन में से भी गले में से खींच जानेवाले आज बहुत निकले हैं।

★ घी, गेहूँ का आटा एवं गुड़ से बनी हुई एक गुजराती वानगी।

● *मोटा* को भेंट मिले हुए गहनों का उपयोग परमार्थ में ●

तो समय ऐसा है । समझोगे तो अच्छी बात है । बाकी मेरा कुछ जाता नहीं । मैं तो आप सब के लाभ के लिए कहता हूँ । कि **मोटा** तो व्यर्थ पीछे पड़ गये हैं । परंतु पीछे पड़ा हूँ तो आपके लाभ के लिए । मुझे कुछ नहीं । मैंने तो अनेकों को देखा भी नहीं है यह । मिलता है तो राजी होता हूँ । परमार्थ के लिए है । यह सब । यह नंदुभाई जानते हैं आप सब की अपेक्षा मुझे । मेरा ऐसा उत्सव होता है, तब मुझे गहनें मिलते हैं । एक बार तो ३२-३३ तोले के मिले थे । विद्यानगर में उत्सव हुआ था तब । और मणिनगर में तो एक एक अंग के । उन सब ने मुझे भगवान को पहनायें हैं वैसे कान में सोने के कुंडल, सोने का कमरबंद, साहब और यह सब उंगली के, पाँव के, एक-एक अंग के गहनें मुझे मिले थे । यह चुन्नी नहीं मिली किसी को, पर मिली होती तो मैं पहनता साहब, मुझे कोई विरोध नहीं । मुझे उसमें क्या विरोध ? परमार्थ में दे देता । इससे मैं कोई गहनें का ...... हूँ । मुझे पहनाते हैं और देते हैं, उससे कुछ मुझे ...., यह कुछ विशेष बहुत कम है यह तो भाई । आपके पास जो धन है उसके अनुपात में । आपके पास पैसे हैं और मेरा जो निजी संबंध है आप सब के साथ उसके अनुपात में तो बहुत कम है साहब । Let me tell you frankly मुझे खुला कहने दो । **और पैसे लेकर मेरे घर में खा जाने वाला हूँ ? अच्छे काम में ही खर्च होनेवाले हैं ।** पूरे गुजरात के लिए खर्च करने वाला हूँ । पर मुझे जो बाहर से मिलता है, उसकी अपेक्षा मेरे परिवार के अंदर कि ये सुरेशकाका कहते हैं, ''**मोटा**, आप परिवार के हो, परंतु आप ऐसा भाव तो नहीं रखते हैं ।'' मैंने कहा, ''लाओ न भाई, लाख । लाख रुपये चाहिए । लाओ तुम्हारे में से । मेरा भी हिस्सा है । दो मुझे ।'' परंतु साहब कोई नहीं देता है । इससे ये गहने मुझे मिलते हैं, मैं राजी होता हूँ । परंतु आप मुझे ज्यादा देते हो ऐसा तो बिलकुल नहीं है । हेसियत से कम देते हो । मेरा भाव है । यहाँ आप के साथ आज तक रहा हूँ । आपके कण-कण में मेरा भाव है । अभी मैं प्रार्थना करता हूँ । मेरी

इतनी बात सच है। परंतु यह गहने मुझे दे रहे हो, उससे आप इस तरह संतोष मत मानना। आपसे ज्यादा मुझे देने वाले कई पड़े हैं। हजार हाथवाला मेरी धनी है।

● *मोटा* की आगाही : खून के संबंधीओ तो भाईचारा विकसित करो– शब में से शब्द हरि-स्मरण ●

परंतु मूल मेरी बात यह कि काल ऐसा है कि Have और Have Not। वह have पास से सब खिसकाने का यह काल और इस सरकार की नीति भी है। ऐसे काल में आप सब-सभी भाई भाईचारा विकसित करोगे तो एक दूसरे की उष्मा आपको मिलेगी, एक दूसरे से शांति मिलेगी। एक दूसरे के आगे आप आपके दिल खाली कर सकोगे। तो यह जो सुख है, वह सुख आप भोगें तो मैं भी राजी हो जाऊँगा कि इस परिवार में इतने सारे वर्ष हुए। मामा मुझे। मामा ने मेरे पर भाव रखा था वह ऐसे वैसे नहीं। मेरी बहुत परीक्षा की है मामा ने। आप सब को कहने की मुझे आवश्यकता नहीं है। यह मैं समझता हूँ। नंदलाल भी यह हकीकत नहीं जानते हैं। परंतु यह हकीकत सौ प्रतिशत सही है। मामा ने मुझ पर ऐसे ही भाव नहीं रखा था। और कई बातें उन्होंने मुझसे की है। मैंने नंदलाल को भी नहीं की है। तथा आपको भी किसी को नहीं की है। वे और मैं दो ही जानते हैं। तब यह साबित कर देता है कि मरते समय साहब उसको भगवान नाम आया। इतना नहीं, परंतु यह तो सब की कही हुई बात है। मेरे मुख की बात नहीं कहता। जब डॉक्टरने कहा, "**उन्नुम ईल्ले**" (कुछ नहीं है) उसके बाद भी वे बोले हैं और आखरी बार सब को राम-राम किया है। यह हकीकत की बात हैं साहब। ऐसा होना कोई आसान बात नहीं है। इसे भगवान की शक्ति का प्रत्यक्ष चमत्कार कहो तो चमत्कार है और मामाने मुझे लिखा था कि, **मोटा** अभी तो मैं शुद्धि में जागृत हूँ, ये सब नाड़ी पर तो मेरा काबू है। तब भगवान का नाम नहीं लेता हूँ। तब मृत्यु के समय तो मेरी सभी नाडियाँ शिथिल हो जाएगी। उस समय कैसे लिआ जाएगा ? तो यह बात आपकी मेरे लगे नहीं उतरती है। मैंने कहा, मामा, अब देखना

समय आएगा तब होगा ।' यह सब बनी हुई हकीकत है । तो आपको इसका महत्त्व आपके किसी के दिल में तो है ही नहीं । 'राम तेरी माया !' परंतु मुझे उससे कोई एतराज नहीं है; लेकिन मेरा तो यह प्रयत्न है कि आप सब भाईओं सब और खून के भाई हो । यह कोई भागीदारी के नहीं हो । दूसरे सब अनेक होंगे । एक दूसरे के साथ तो खून का संबंध । ऐसा खून का संबंध है । आप भाईचारा विकसित करो । यह कठिन काल है । प्रपंच काल कहता हूँ और यह हम । यह सब ऐसा काल आता है कि रेईड (छापे) बहुत पड़ती हैं और अनेक लोग बेचारे परेशान हो जाते हैं ।

हमारे नड़ियाद में बीच में इतनी सारी रेईड (छापे) पड़ी थी । अहमदाबाद में पड़ती हैं । यहाँ नहीं पड़ती हैं तो उसका कारण है कि अमलदार घूसखोर हैं । हमारा समाज भी ऐसा ही है । अमलदार आखिर तो हमारा समाज ही हैं ना ? इसलिए सब दबा दिया जाता । पता लग जाता है । उसी खाते के आदमी आकर कह जाते । क्योंकि सब ने पैसे खाये हुए होते हैं । और वे अमलदार रिश्वतखोर हैं । जब भी छापे पड़ते हैं तो उसे पैसों से नरम कर दिये जाते हैं, साहब । परंतु यह जमाना छापे मारने का है । उस समय आप सब एक दूसरें के साथ रहें तो अच्छी बात है ।

● वेदकाल का साहित्य सब से पुराना है ●

अब एक दूसरी बात कहूँ कि असल वेदकाल में यह गुरुपूर्णिमा क्यों हुई ? कि यह tradition क्यों पड़ा ? कि वेद के काल में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद । ये हमारे चार वेद । उसमें कहीं यह उल्लेख नहीं हैं । ऋषिओं थे सही । और वेद के ...... वे लिखते हैं । यह यानी कि लिखे हुए ऐसा नहीं । वे तो भगवान द्वारा बोले गये हैं । यह बात बराबर मानता नहीं हूँ । परंतु ये जो inspired ऋचाएँ, श्लोकों जो ऋषि-मुनिओं ने, जो ऋग्वेद इत्यादि में सब बोल गये हैं । वे ऐसे जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, इच्छा, कामना, तृष्णा, लोलुपता,

अनेक प्रकार की झंखनाएँ, रागद्वेष इन सबसे मुक्त हो सकें, तब उसकी inspiration उसकी प्रेरणा हमारे में उस समय में जागृत होती है । उस काल में । ऐसी उनको इस बात की अंदर से सफुरित हुई है और उस असल के समय में तो कुछ लिखने की पद्धति तो थी नहीं । तब ये लोग यह बोलते और वे सुनते । वे ऋषि हो, वे बोलते और शिष्य सुनते । इससे श्रुति और स्मृति दो ही है लोगों के । श्रुति अर्थात् सुनना और याद रखना...... स्मृति अर्थात् याद रखना । तो साहब, इन लोगों की यह दशा बहुत खिली हुई थी । सब याद रह जाता । आज ऐसे अमुक लोग हैं । उनको सब याद रह जाए । इतना ही नहीं, परंतु प्रयोग करके श्रीमद् राजचंद्र ने बताया था कि एक सही समय पर एक ही पल में उनके दिमाग में १०८ वस्तुएँ रहती थी । १०८ उसने प्रयोग करके दिखाया था । फिर उसने छोड़ दिया । वह प्रयोग । कि मेरे लिए योग्य नहीं है । फिर आध्यात्मिक विषय में चले गये । किन्तु एक ही पल में यह सब हमारे दिमाग में रहता है । ऐसी शक्ति हमारे में है । तो उस समय में श्रुति और स्मृति । यह सुने उसे याद ही रह जाय, ऐसी स्मृति थी उस समय में । आज नहीं बनता ।

उस काल में इसलिए होता था कि वे लोग एक में ही उसमें ही ज्यादा से ज्यादा एकाग्र और केन्द्रित थे । इससे उनको रह सकता था । इससे वह शक्ति बहुत खिली हुई थी । इससे ये वेद हैं, वे लोग बोलते और अन्य सब सुनते । इससे इसमें से दो शास्त्र निकले– श्रुति और स्मृति । फिर उसमें से सब । उस काल में जाँचे उस काल का साहित्य और यह साहित्य है हमारी दुनिया में Oldest । किसी देश का इस प्रकार का साहित्य पूरी दुनिया में सब से पहले हमारी पृथ्वी में हमारे यहाँ प्रगट हुआ ।

• हठयोग की उत्पत्ति •

.... हठयोग । हठयोग उसके लिए है । शरीर लम्बे से लम्बे समय तक जीये । तब उसके भी उन लोगोंने... उन लोगोंने हमारे लोगोंने वह

प्रयोग किया है। हमें ऐसा लगा कि साला यह किस तरह से हो ? किन्तु हमें पता नहीं है। हमारा शरीर जो क्षीण हो जाता है, अनेक प्रकार के संघर्षणों से, क्लेश, मुठभेड़, चिंता, फिक्र, उद्वेग, एक दूसरे के साथ झगड़ना, एक दूसरे के साथ मिलाप हमारा ना हो मन से। और ऐसे सब कारणों से, ऐसे संघर्षणों से फिक्र, चिंता, उद्वेग, एक दूसरे के साथ बनता नहीं। ये सब कारणों से शरीर पर बहुत भारी असर होता है। आवेश हो जाय उसका भी बहुत असर। इन सब के कारण शरीर क्षीण होता जाता है। यह हमारे मानने में आये ना आये, परंतु यह हकीकत है। और इसके कारण हमारा आयुष्य भी कम हो जाता है। आयुष्य कम हो जाता है, तब हमारे लोगों ने देखा कि साला यह सब कम हो जाता है। तो हमारा शरीर भी मजे में रहे, आनंद में रह सके, हलके फूल समान रहे। तो इसमें से यह हठयोग की पद्धति निकली।

हठयोग की पद्धति इसलिए निकली कि हमारे असल के ऋषिमुनिओं को लगा कि साला हमें चेतन को तो अनुभव करना है। हमें भगवान को अनुभव करना है। तब ऐसा लगा कि साला इस संक्षिप्त अवधि में हमारा शरीर तो इतने समय के बाद चला जाता है, मर जाता है। तो हमारा शरीर जीए। तब ज्यादा से ज्यादा जीये तो हम यह कर सकेंगे। उसमें से यह विद्या निकली। हठयोग की। लम्बे से लम्बा हमारा शरीर टिक सके। सात-सौ आठ-सौ वर्ष तक टिक सके ऐसे उदाहरण हैं। वह है हठयोग।

• आयुर्वेद की उत्पत्ति •

उसी तरह आयुर्वेद है। वह भी दवा का। इसीलिए निकला कि हमारे लोग साधना करते थे। भगवान का अनुभव करने के लिए तपश्चर्या भी करते थे। परंतु साला शरीर को रोग हो जाए। बुखार आये, फोडे हो जाए और फलाना हो जाए। तब वे लोगों ने सोचा साला हमें ये सब आते हैं। वह मानसिक परेशानी होती है। शरीर से बचना, शरीर से इच्छित कार्य नहीं ले सकते हैं। इसलिए उसे करो न। फिर ये

ऋषिमुनिओ में सब से पहले हुए ये चरक। उसके पहले यह विद्या थी सही, परंतु उसके दो ऋषिमुनिओं चरक और सुश्रुत हुए ।

आज उन सब के लिए, कहना, अब मैं कहता हूँ कि एक पेड़ के गुणधर्म खोजते-खोजते तो आपका कितना सारा समय निकल जाता है । तो ये हमारे चरक और सुश्रुत ने लिखा है ..... साहब । यह मुँह की बात नहीं । यह लिखा हुआ है कि चरक और सुश्रुत ने अनेक पेड़, पौधे के सिर्फ पेड़, पौधे ही नहीं बेलों और छोटी से छोटी वनस्पति के गुणधर्म लिखे हैं । एक ही जिंदगी के अंदर वे किस तरह जान सके होंगे ? तो वे अनुभवी थे । वह उनका मिशन था यह । यह मेरे से नहीं हो सकता वह या तो कोई दूसरे अनुभवी से भी यह नहीं कर सकते वह । यह जिसका मिशन को, वह कर सकता है ।

और चरक और सुश्रुत ने यह एक मिशन ले लिया कि साधना करने में यह शरीर अच्छा नहीं रहता है, इससे परेशानी होती है । इसलिए यह शरीर का आरोग्य सुंदर से सुंदर रहे तो हम यह अच्छा काम कर सकते हैं । इससे वे लोग उसमें लगे । इससे उन्होंने चेतन जिसने प्राप्त किया है । अनुभव जिसने किया है, उसका एक गुणधर्म तादात्म्य हो जाने का । यह ब्रह्म है । चेतनाशक्ति है । वह भी सब के साथ तद्रूप हो जाय । उसके साथ एकरस हो जाए । फिर अलग भी सही । एकरस हो जाय फिर भी अलग । उसके साथ तादात्म्य हो जाय । जैसा हो वैसा वह हो जाय और फिर भी स्वयं अलग ।

इससे ये ऋषिमुनिओं प्रत्येक वनस्पति के साथ एकरूप हो गये और अलग होने से, उनमें एक सही किन्तु फिर अलग, साक्षी थे । इससे उसके गुणधर्म जान लिए और यह सब लिखा । एक जिंदगी के अंदर इतनी सब वनस्पति, पेड़, बेल, फूल, पत्ते प्रत्येक के गुणधर्म लिखना कोई सरल बात नहीं है । आप किसी से भी पूछो.... पूरी जिंदगी लगती है ।

हमारी वनस्पति में जीवन है । उसे भी भाव है । और घायल होती हैं तो उसे दुःख होता है । आनंद में होती हैं, तब उनके आंदोलनों कुछ

अलग प्रकार के। यह साबित करने के लिए, एक ही वस्तु साबित करने के लिए कितना सारा समय लग गया था और हकीकत में यह घटना हुई है। तब ये ऋषिमुनिओं ने अनुभव से इसे खोज लिया। उसी तरह हठयोग है। शरीर को ज्यादा से ज्यादा टिका सके तो चेतन का अनुभव कर सकते हैं। क्योंकि यह शरीर तो चला जाता है, इसलिए इसमें से यह हठयोग निकला। पहले नहीं था। आरोग्य की विद्या भी उसमें से ही निकली।

● गुरूपूर्णिमा की उत्पत्ति ●

इस तरह यह जो है वेदों का ज्ञान जब था, तब यह गुरु की प्रथा नहीं थी। बिलकुल किसी गुरु की प्रथा ही न थी। फिर तब वह भावना predominant थी। जीवन में स्वार्थ, रागद्वेष, काम, क्रोध– ये सब थे नहीं। थे तो सही किन्तु बिलकुल गौण स्वरूप में। सब से आगे मुख्य रूप से भावना की संस्कृति थी। हमें जीवन में चेतन का अनुभव करना है और चेतन के प्रकार की ही भावना थी। लोगों में। सभी की यही स्थिति थी।

उसके पर से काल का निर्माण हुआ। कि किसी काल में सतयुग का महत्त्व। किसी काल में द्वापर का, किसी काल में त्रेतायुग। किसी काल में कलियुग। तो आज यह प्रपंच काल है। कलियुग का काल है...

यह काल की योजना तो बाद में निकली। कि असल समय में तो भावना अत्यंत predominant। तो उस समय किसी गुरु की प्रथा नहीं थी। बाद में जैसे जैसे भावना फीकी होती गई। वह फीकी होती गई, तब हमारे ऋषिमुनिओं को लगा कि यह ठीक नहीं है। यह तो भावना का नाश हो जाएगा और यह कुछ रहेगा नहीं। और भावना नहीं रहेगी तो संस्कृति किस तरह टिकेगी ? संस्कृति टिकाने के लिए भावना। **तो वह भावना यानी क्या ? तो उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, रागद्वेष, आशा, इच्छा, कामना इत्यादि की वृत्ति न हो वह।**

तो कि साला यह तो बहुत कठिन है । तो कि उसकी अपेक्षा भाई **हम जीवदशा में कुछ कर सके । ऐसा क्या कर सकें तो भावना हमारी रहे और रागद्वेष कम हो ? सब के साथ तुम्हारे दिल को जोड़ो । सब के साथ तो कि वह न जोड़े तो भी ? तो भी आपको सद्‌भाव रखना है । तो आप सद्‌भाव रखो तो आपके मन में तो शांति होगी । आपके मन में तो संघर्षण कम होगा । तो फलाना ऐसा नहीं करता है और मुझे ही करने का ? तो कि भाई तुझे गरज हो तो तुम करो । अन्यथा तुझे कौन कहता है ?**

तो हमारे लोगोंने यह सोचा । कि ऐसा कर । इससे तो फिर यह सब हमें सिखायेगा कौन ? यह सब कौन कहेगा ? इसमें से यह गुरु की प्रथा निकली । और सर्वप्रथम आद्यगुरु कहें तो व्यास भगवान हुए । और आप देखो आज किसी से भी पूछो जहाँ तो गुरुपूर्णिमा को व्यासपूर्णिमा कहा जाता है । आज आप यहाँ पूछोगे और हमारे वहाँ भी पूरे हिन्दुस्तान में सब जगह । इस गुरुपूर्णिमा को व्यासपूर्णिमा कहते हैं, इससे सर्वप्रथम व्यास हुए । व्यास कौन थे कि जिसने यह भागवत् और महाभारत जैसे ये जिसने काव्य लिखे हैं वह महापुरुष ।

व्यास भगवान पांडव-कौरव के भी गुरु थे । उनको कोई मुश्किल होती तो वे व्यास के पास जाते थे । और व्यास कई वर्षों तक जीए हैं । जेनरेसन्स तक तो चले । कोई कहते साला यह तो गप । तो हम..... हम सात सौ वर्ष तक जीए यह हमारी कल्पना में भी आये ऐसी बात नहीं हैं । परंतु यह हकीकत है । हठयोग से यह सिद्धि प्राप्त की जा सकती है । यह पक्की बात है । जिस शास्त्र को हम जानते न हो तो उसे हमें हमारी बुद्धि उसे कुछ उसे सच्चा समझ नहीं सकती । तब यह हकीकत सारी ।

इससे यह प्रथा गुरु की प्रथा व्यास भगवान से शुरू हुई । और फिर परंपरा चली । तब गुरु को ...... गुरु ...... गुरु तो पारंपरिक रूप से । जैसे मंदिर में दर्शन करने जाँय तो प्रतिदिन हम पूजा करते हों तो वह रिवाज पड़ गया है, उस अनुसार करते हैं । अब वह तो उस बारे

में हुआ । मंदिर में दर्शन करने जाना भी निकल गया । वह तो जैसे परंपरा रूप से mechanically एक रिवाज था, वह अच्छा था कि किसी काल में उस पद्धति से भगवान का विचार तो आपको आएगा भाई ।

● मंदिरों की उत्पत्ति का कारण और वर्तमान में मंदिरो के प्रति सरकारी अभिगम ●

मंदिरों का निर्माण भी इसीलिए हुआ कि इस बहाने यह मनुष्य–समाज भगवान का कुछ विचार कर सके । तो आज काल ऐसा है कि मंदिरों भी मिट जाए ऐसा काल है । उसे भी मिटाने का प्रयत्न होआ है । जो ब्राह्मण जिस भाव से पूजा करता है, उस भाव से वह हरिजन पूजा कर सकेगा कोई ? उसमें तो है नहीं । उसके खून में नहीं है वह । किन्तु आज काल ऐसा आया है कि पूजारी हो सकेगा । कायदे से साहब । इससे आज सरकार का भी मंदिरों की पूरी संस्कृति लुप्त हो जाए उस प्रकार के प्रयत्न हैं । वैसे तो हुआ ही है कानून । कि हरिजन को ही मंदिरों में पूजारी रखें । परंतु उस पर कितना अमल हुआ है, वह तो भगवान जाने । परंतु कानून की किताबों में आ गया है । और हमारे वहाँ भी ऐसा होने लगा है । हरिजनों की बात नहीं हुई, परंतु जैसे तैसे उचक्के आदमी पूजारी बनने लगे हैं ।

● दिल के भाव से गुरु करो और काल के अनुसार की सिखावन ●

इससे यह ऐसा काल आया है कि हमारी संस्कृति लुप्त हो जाय वैसा इस काल का लक्षण है । भाई, वैसे तो गुरु की बात कर रहा था । वह व्यास भगवान से यह प्रथा शुरू हुई । **इससे परंपरागत रीति से गुरु करने का कोई अर्थ नहीं है । आपका गुरु में भाव होना चाहिए । दिल का भाव होना चाहिए । जिस तरह आपके बाल–बच्चें, घरबार, पत्नी–परिवार, व्यापार–धंधा, प्रतिष्ठा इन सब में आपका दिल रहता है । ऐसा गुरु में कुछ रहता नहीं तो गुरु करने का कोई अर्थ नहीं है ।** जिस तरह आप बाल–बच्चे, पत्नी–परिवार के

लिए जो कुछ करते हो और करना पड़ता है । न करो तो पचड़ा आपको ही करना पड़ता है । छुटकारा ही नहीं । और आखिर में तो वह आप सब के संरक्षण के लिए । उदाहरण के लिए आप मेरे लिए गहनें बनवाते हो तो पहले गहनें सभी उपयोग में आते हैं । तो वह बहुत आवश्यक है साहब.... वह नहीं बनवाते हो तो भी जरूर बनवाइये ही । वह टिके ऐसा है । सोने के गहनें न बनवाते हो तो भी बनवाइए । हमारे लालाजी को मैं कहता हूँ । क्योंकि वह हमारे मामा के बड़े बेटे हैं । उसे कहीं जाना पसंद नहीं है । अहमदाबाद जाना हो तो भी बलपूर्वक । आनंद से नहीं ।

तब भी काल ऐसा आ रहा है कि भई बनवाना । वे आपके पास रहेंगे । कुछ नहीं तो यहाँ से भागना पड़ा तो उसे हाथ में रखकर साथ ले जा सकोगे । और कुछ हानि हुई तो उतना बचने का साधन तो होगा । अब यह तो दूसरी बात हुई ।

● अहम् को फीका करने के लिए पैर पड़ने का रिवाज ●

और यह जो गुरु है, वह आपके दिल का भाव नहीं होगा तो गुरु काम में नहीं लगेंगे । और मैं इस परिवार में रहा हूँ, वह एक बेटे के समान रहा हूँ । आपके परिवार का मैं बेटा हूँ । मेरा सदैव भाव रहा है । और बेटे के समान मेरा भाव वफादारी से मैं बजाता हूँ । साबित तो नहीं कर सकता । आपका दिल और मन जो कहता हो, वह भले कहे । सिवा मैं कुछ गुरु रूप में सब को मना करता हूँ । मैं तो सब को कहता हूँ मेरे पैर मैं मत पड़ना आप । पैर में पड़ने का रिवाज इसलिए निकला है कि आपका अहम् फीका पड़े । **किसी के पाँव आप पड़ो तो आपके अहम् को फीका करने की भावना के लिए रिवाज पड़ा था । उस समय यह सभानता रखें कि हमें इस अहम् को फीका करना है ।**

अहम् के कारण अनेक दोष हमारे से होते हैं । अहम् के कारण ही हम एक दूसरे के साथ मिलते नहीं हैं । एक दूसरे के प्रति प्रेम का, खुले दिल का नदी के पूर जैसा उमंग का भाव हमें जागृत नहीं होता । एक

दूसरे के साथ व्यवहार में उस का कारण हमारा अहम् है । अहम् ही एक दूसरे से झगड़ा कराता है । तब हमारे ऋषिमुनिओं ने देखा कि साला यह ही खराब कारण है । यह अहम् फीका हो तो, साहब, सभी को पैर पड़ने का रिवाज चालू करें । और उस समय प्रत्येक मन में सोचें कि साला मेरे अहम् को मुझे फीका करना है । इस तरह अनेक जगह पर वह पैर पड़ें तो यदि कोई रिवाज हो तो याद आये कि साला यह रिवाज किस लिए है ? कि मेरे अहम् को फीका करने के लिए है । किन्तु आज वह तो चला गया । में तो जाहिर में भी कहता हूँ आज । पसंद न पड़े तो कोई पैर मत पड़ो भाई । मेरे साले व्यर्थ व्यर्थ । आपके मन में तो कोई भाव है नहीं । पैर पड़ने का भाव नहीं है । उस समय कोई भाव या कोई लहर उठी हुई तो मुझे लगती नहीं है । तो ऐसे पैर पड़ने की क्या जरूरत है भाई ? किन्तु यह तो मैंने आपको उसका रहस्य किस लिए ये सब प्रथाएँ निकली उसका रहस्य आपको समझ में आये इसलिए कहता हूँ ।

• स्वयं की शांति के लिए तो सद्भाव रखो •

उसके बाद उसमें से यह गुरु का भाव निकला । पहले तो यह बिलकुल था नहीं । तो वह निकलते निकलते फिर वह एक चौकठ़ा हो गया । जैसे व्याहना । बाल-बच्चे हो । फिर उनको पढ़ने भेजते हैं । यह सब व्यवहार करना वह सब mechanical हो गया । लीक । इस लीक में कभी प्राण नहीं प्रगट होते । वह भाव ...... वह भाव जागृत होना बहुत कठिन बात है । और वह भाव हो तो ही सामने वाले का दिल हमें response देता है । परंतु भाव हो या ना हो, हमारी स्वयं की शांति के लिए, प्रसन्नता के लिए हमें मन से हलकापन लगे, हमारे मन को किसी भयानक स्वप्न से डर न लगे, इसके लिए हमारा सद्भाव । दूसरों के लिए नहीं । स्वयं अपने ही लिए । आप एक दूसरे के साथ सभी पूर्वग्रह छोड़कर यदि सद्भाव रखोगे ओर उसके अनुसार आपका व्यवहार होगा तो आपके मन से आप समझ लें कि आपको उससे कितनी शांति

होगी ? दूसरे कोई ऐसा व्यवहार करते हैं या नहीं करते हैं, वह छोड़ देना । वह ख्याल ही छोड़ देना ।

● सद्‌गुरु के पास खुले हो जाओ– *मोटा* का कार्य समाज का कार्य है ●

इसलिए यह सद्‌गुरु इसलिए हुआ कि हमारी प्रथा इसलिए निकली है कि खुले दिल से सब बातें करना। वे कभी किसी से दब नहीं जाएगा। आप उनकी खाने–पीने की सभी आवश्यकतायें पूरी करेंगे तो उससे वे आपके प्रभाव में नहीं आएँगें। कि खाया है, इसलिए आपका अच्छा ही बोलेंगे। मैं उदाहरण मौजूद हूँ। आपका खाता हूँ। आपके अकेले का तो बहुत कम खाता हूँ भाई। आप मुझे देते हो, उससे दूसरी जगह मुझे ज्यादा मिलता है साहब। यह हकीकत की बात है। इसलिए वह तो भूल ही जाना। मुझे दोगे तो गुजरात की समृद्धि के लिए देते हो। यह कुछ चुनीलाल भगत– यह **मोटा** बैठा है, उसे कुछ है नहीं। वह तो गुजरात के लिए काम करने पूरे देश के लिए काम करने वाला। उसमें पैसे खर्च होते हैं तो देंगे, वह बिलकुल यथार्थ सौ प्रतिशत की बात है।

● धन का सदुपयोग करो ●

इससे देते हो वह आपका कर्तव्य है। देना ही चाहिए। उतने आप धन्य। इतना यदि आप किया करो। वह तो आपका रहना था, और समय जाते कितने ही धनवान समय गुजरते गरीब हो गये, उसके कई उदाहरण मिलेंगे। **इसलिए यह जो आपको मिला है, उसका सदुपयोग करो। आपके धन का, वैभव, विलास। मैं तो बहुत लोगों को कहता हूँ कि केवल स्वार्थ में पड़े रहोगे तो नहीं चलेगा इस काल में। यह धन आपके अकेले बाप का नहीं है। सब जगह सरेआम मेरे प्रवचन में धनवान लोगों को भी कहता हूँ। इसलिए आपको अभी धन मिला है। तो उसका सदुपयोग करो। इच्छानुसार खर्च करने के लिए धन नहीं है।** उसका अर्थ यह नहीं की आप कंजूसी करें,

या धन खर्च ही नहीं करना । धन खर्च करें । परमार्थ में खर्च करें । परमार्थ पहले करो । परंतु वह नहीं होगा यह भी मैं जानता हूँ ।

● सच्ची भावना त्याग करवाती है ●

परंतु आज प्रथा इससे आज प्रथा की बात करता हूँ इसलिए कहता हूँ । तब गुरु करना वह mechanically लीक की तरह करना उसमें यदि भाव न हो तो कोई अर्थ नहीं है । और भाव होगा तो वह दिखे बिना कुछ रहता ही नहीं । भाव में त्याग रहा हुआ है । भाव जागृत हो तो उसके लिए कुछ न कुछ हम करते रहें तो भाव । वर्ना नहीं, साहब । खाली गलत बोलते हो आप । दंभ है !

मैं खार (मुंबई का सबअर्ब) में एक जगह गया था । यह हरि हाजिर था साहब । इसके लिए मैं हरि को इसलिए मैं हरि का नाम देता हूँ । हरि हाजिर था । उस कोलेज में प्रसिद्ध याज्ञिक साहब प्रिन्सीपाल । कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे । उसने मेरे साहित्य के लिए बहुत प्रसंशा की । मैंने कहा, ''साहब, मुझे यह प्रसंशा नहीं चाहिए । इस प्रसंशा के साथ चेक दोगे तो आप बोलते हो वह सच । बाकी गप ।'' यह हरि बैठा था और मैंने कहा । तो वह व्यक्ति समझ गया साहब । उसने पैसे दिये हैं । तो इसके लिए जितने पैसे मैंने लिखे हैं ..... का जो लेख मैंने किया है और मुझे मिलता है, वह आपको अवश्य दूंगा । वे पैसे दे दूंगा हरि के सामने ।

● *मोटा* को कुटुंबी मानते हो तो भक्ति तो दिखाओ ●

मैं तो बहुत स्पष्ट कहने वाला आदमी । पर मैं तो नहीं कहता । यह भाई हमारे कहते हैं कि **मोटा** कुटुंब मानो । तब .... आपके कुटुंब का मानते हो .... यहाँ मेरे सामने मत देखो साहब । कैसे कहूँ ? आप आपकी सुनने और स्वीकार करने की पात्रता को देखिए । मैं तो कहूँ आप सब भाई एक हो जाओ तो कहाँ होते हो ? मैंने तो पत्र भी नहीं लिखा है । तो किस तरह तैयारी ? कुटुंब कैसे मानुं मैं ? आप भक्ति तो दिखाओ । कुटुंब के कहे अनुसार । अब दूसरे को कहता हूँ साहब ये

धनवान लोगों के साथ कहने में तो बहुत स्पष्ट बात करता हूँ। यह नंदुभाई साक्षी है। आपसे कितना बड़ा धनवान। एक ही धनवान मुझे तो मिला है। परंतु मैंने उसे भी स्पष्ट कह दिया साहब। मैं तो किसीकी शेह में नहीं आता। उसके बाप का थोड़ा खाता हूँ ? परंतु यहाँ तो मैं संकोच के साथ व्यवहार करता हूँ। बहुत संकोच के साथ व्यवहार करता हूँ। आपको ख्याल नहीं आएगा। परंतु मुझे ख्याल है। यह तो भाईने मुझे सुबह कही बात। कि कुटुंब मानते हो तो सब जगह कहते हो तो खुला क्या ? आज खुला कहूँ। जरूर करना मुझे प्रसन्नता होगी। आप सब के पैर पड़ूँगा। करना भाई। आपके लाभ की बात है।

• मृत्यु तक भी गुरुआज्ञा का पालन •

किन्तु यह तो प्रथा की बात करता था। कि गुरु की यह परंपरा हुई। परन्तु गुरु खाली खाली करने का कुछ अर्थ नहीं है। गुरु हमारे भाव के लिए जो कुछ करना है साहब। मैंने तो गुरु की ऐसी ऐसी कठिन आज्ञा का पालन किया है, जिसमें मर भी सकता था। समुद्र में चले जाने का हुक्म किया था। आपकी ताकत है किसीकी आपमें से ? साहब, हेमंतभाई साथ में थे। ऐसा वैसा नहीं, मेरे गुरुमहाराजने कहा था कि कोई साक्षी रखना। तब गुरु करना। मैं तो कोई गुरु कहता नहीं सब को कि मुझे गुरु करो। आपके कुटुंब का बेटा हूँ और साबित हो गया है साहब। कि गुजरात में एक **मोटा** पैदा हुआ है, जो समाज के परमार्थ का काम करता है। अभी किसी अखबार में लेख आया था। छपा था कोई अखबार में। भाईने कल ही मुझे पढ़ाया। **आप माने या न माने तो भी मेरी प्रार्थना कुटुंब के साथ, आपके इस व्यापार में भी है। परंतु काल ऐसा आता है कि मेरी प्रार्थना भी सार्थक नहीं होगी। इसलिए आप चेत जाओ तो अच्छा है।** लेकिन वह बात दूसरी है।

• चेतनानिष्ठ के लक्षण उदाहरण सहित •

यह प्रथा आयी गुरु की। तो ज्यों का त्यों खाली खाली mechanically केवल लीक की तरह करने का कोई अर्थ नहीं। वह तो वफादार

आदमी है । गुरु हमेशा वफादार । उसकी वफादारी की तुलना में कोई संसारी व्यक्ति आ सके ऐसी ताकत नहीं है । मैंने इस सद्‌गुरु पर लिखा है । उसमें भी लिखा है कि वह वफादार है । चेतन में निष्ठा पायी है ऐसा उसका या आपको ऐसा अनुभव हुआ है ? आप ऐसे हो उसका सबूत क्या ? अबे, अभी मैं जिंदा हूँ । सबूत क्या .... मेरे इतने रोग हैं । ये रोग तो साबित हो सकते हैं । वैसे तो मैंने एक जाहिर प्रवचन में कहा है फिर कि कोई पाँच हजार रुपये मुझे दे और क्लिनीक में मुझे बिठाकर मेरे शरीर को जाँचे । कि ग्लुकोमा है, आँखो में मुँहासे है । गले में ..... रोज जलता है । सोते समय और दोपहर को सोते समय जलता है । विचार करके देखो गले का दर्द । फिर यह दमा तो दिखाई देता है । फिर यह Fluctuating B.P., Fluctuating pulse किन्तु एम. डी. डॉक्टर साहब जाँचे । **मोटा**, आपकी pulse सौ हैं । आज जाँच की तभी । आज । मेरी बात नहीं है यह । यहाँ बैठे़ है पूछीए कि fluctuating pulse भी है और fluctuating B.P., तीन जगह spondilitis कमर में, पीठ पर और गले में, पाइल्स, प्रोस्टेट ग्लेन्ड, साहब रात को इतनी परेशानी होती है और दिन में भी होती है, परंतु किसे कहना ? मैं स्वयं किसी से कहता नहीं हूँ । ओपरेशन भी हो सके । ऐसे अनेक दर्द । कितने गिनाउँ ? पेट में भी है । फिर यह acidity ज्यादा एक साल हो गया मेरा बेटा । यह मेरे आश्रम में से मुंबई से निकला तब से चीपकी किन्तु जाहिर हुई मेरी बेटी ...... में जाहिर हुई । होगा भी उसे भी रहने दो । परंतु इतने सब रोगों के बीच में भी घुमता हूँ, फिरता हूँ, बातें करता हूँ । कल दो सौ बीस मील की मुसाफरी की । मुझे वेदना होती होगी, वह मेरा मन जानता है । परंतु बाला काका के वहाँ भी सब आनंद से बात की । स्वस्थता से साहब । और यहाँ आया तो सब को प्रेम से बुलाया किया, आनंद से बातें हुई । कोई ताकत नहीं कि कोई ..... कि शरीर के इतने रोगों के साथ । परंतु यह आप साबित कर सकते हैं । आज तो और ऐसे दर्दों के बीच उसने सर्जन किया है ।

यह सब इस कुंभकोणम् आश्रम में आज मैं खाली नहीं रहता हूँ। 'जिज्ञासा', 'भाव', 'निमित्त', 'रागद्वेष', 'कृपा', 'कर्म-उपासना' ऐसे लिखे हैं, और यह सुरत के भट्ट के दवाखाना में बारह दिन आर. के. देसाई ने मुझे रखा । वहाँ मैंने यह 'स्वार्थ' पर लिख डाला । पूरा शास्त्र । जिसको पढ़ना हो तो पढ़े । देखना आप । मेरा लेख बहुत सरल होता है । सब को समझ में आ जाता है । ऐसे दर्दों में मेरा भाई है वह कवि भारी, मेरे से भी बड़ा साहब । उसे मैंने कहा निवेदन के साथ । अबे "मूलजी काका, तू कुछ काव्य लिख । पर तुझे अखबारों का इतना रस । तो मंगाओ । क्या पढ़ते हो ?" मेरा.... पूरा मन ही मेरी यह वेदना में हैं । तब यह कुछ आसान नहीं है भाई । इतने सारे रोगों के साथ इस तरह घुमना, फिरना सब के साथ आनंद से बातें करना और ऐसा सर्जन होना यह सब प्रत्यक्ष खुला देख सकते हो । यह कुछ मानने में न आये तो भी । और फिर आपका शरीर । मेरा भगवान मेरे द्वारा और साल भर में बारह-बारह चौदह-चौदह लाख के काम होते हैं । हमारा । मिलता है । किन्तु साहब संकल्प मेरा भगवान पूरा करता है । किन्तु आपको कहाँ देखना है ? प्रकृति जीवित रखती है चेतना को साहब । हम मानते हैं । परंतु आपको यह मानना हो तो मानो । यह प्रत्यक्ष है । परंतु आपके ख्याल में नहीं आएगा । आपके गले नहीं उतरेगा । और आपको तो मानना है नहीं । फिर मैं क्या करूँ ? परंतु मेरे हाथ में । मैं इससे निराश नहीं होता हूँ ।

क्योंकि ऐसे लोगों का जगतने हमेशा इन्कार किया है । ईसु भगवान का भी इन्कार किया है । हरएक जो ऐसे महान समर्थ हुए हैं, उसका जगत ने इन्कार किया है । इनका इन्कार किया है, उसका उनको दुःख नहीं है । इससे निराश भी नहीं होता । उसका भाव हमेशा टिका रहता है । इसमें उसका स्खलित— उसका स्खलन कभी नहीं होता है । ऐसे माने या न माने उसके साथ उसे निसबत नहीं है ।

॥ हरिःॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [३]

गुरुपूर्णिमा उत्सव प्रसंग पर पू. श्रीमोटा की पावन वाणी

कुंभकोणम्, ता. २१-७-१९६८

अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सुरत-३९५००५.
दूरभा, : (०२६१) २७६५५६८, २७७१०४९
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ मूल्य : ₹. ..../- (.... रूपये)

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम,
पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.
फोन : (०२६८) २५६७७९४

❑ अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी,
अवनिकापार्क सोसायटी, खानपुर,
अहमदाबाद-३८०००१.
फोंन : (०७९) २५५०२६२३

❑ मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड,
कांकरीया रोड, अहमदाबाद-३८००२२.
फोन : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरि:ॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम आवृत्ति)

पू. श्रीमोटा क्वचित् ही प्रवचन करते थे। उनकी पाव वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजनने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी। ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने अक्षरशः सुनकर उसकी हस्तप्रतें अथाग परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यतः स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था। वे सभी पुस्तकों का पुनः प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्टने संभाल लिया है।

पू. श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिन गुजराती भाषाओं को भी मिल सके उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है। इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी। आपश्री कहते थे के 'मेरे लेखमें अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं। और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही रहने देना। इस आज्ञा को ध्यान में लेकर श्रीमोटा की यह ध्वनिमुद्रित वाणी जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है। इस में कोई सुधार नहीं किया गया है।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुनः प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरशः वाणी अनुसार है, यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी के हेसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य एवं चतुरंगी मुखपृष्ठ श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक, प्रेमभाव से किया है। हम उनका खूब खूब आभार मानते है।

समाज का विशाल वर्ग पू. श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और पू. श्रीमोटा का आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं।

॥ हरि:ॐ ॥

दि. १४-१-२०१४. **– ट्रस्टीमंडल**
वि.सं. २०७०, उत्तरायण हरि:ॐ आश्रम, सुरत

“मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ”

– मोटा

॥ हरिःॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. धार्मिक भावना की विशेषता दक्षिण भारत में है ९
२. हरियाली रमणीयता का प्रदेश दक्षिण भारत है ९
३. कुंभकोणम् में आश्रम की स्थापना १०
४. एकांत, जलाशय के पास आश्रम स्थापना का रहस्य ११
५. वेदकाल में गुरु की प्रथा नहीं थी १२
६. मूर्तिपूजा की उत्पत्ति का कारण– भावना का पतन रोकने के लिए १३
७. सकल ब्रह्मांड सिर्फ अणु-परमाणु का खेल है १४
८. वेदकाल में ऋषिमुनिओं के जीवन में चेतन का ही महत्त्व १४
९. गुरुप्रथा का उद्‌भव–जीवन की भावना का पतन रोकने के लिए .. १५
१०. महादेव के मंदिर में नंदी– कछुए का रहस्य १६
११. चेतनानिष्ठ निरीच्छ है १७
१२. चेतनानिष्ठ शरीरधारी भगवान नहीं है १८
१३. चेतनानिष्ठ शरीरधारी और ब्रह्म–भगवानके बीच का फर्क १८
१४. चेतनानिष्ठ– अनुभवी का मुख्य कर्तव्य और पहचान के लक्षण ... १९
१५. चेतनानिष्ठ जड़ में चेतना प्रगट कर सकता है २०
१६. चेतनानिष्ठ को समय और स्थल की मर्यादा नहीं होती २१
१७. **मोटा** का और आश्रम का प्रचार मौनार्थी-स्वजन करते हैं २२
१८. **मोटा** का मुख्य कर्तव्य पैसे इकट्ठे करना नहीं है २३
१९. धर्म के लक्षण– समाज में गुण और भावना का प्रगट होना २४
२०. पुनर्जन्म की साबिती २५
२१. उत्तम दान– समाज में गुण और भावना प्रगट करे २६
२२. चेतनानिष्ठ का भक्तिभावपूर्ण संग जीवन-उद्धारक २७
२३. चेतनानिष्ठ का आश्रय जबरदस्त शक्तिदायक है २९
२४. चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त आधारित है २९

२५. निमित्त में चेतनानिष्ठ की शक्ति भगवान का काम है ३१
२६. चेतनानिष्ठ को संबंध निमित्त संयोग से होता है ३२
२७. धर्म का उदय दक्षिण भारत में से होगा ३२
२८. अराजकता का समय आने वाला है ३३
२९. समाज के पतन का कारण– पैसे का महत्त्व ३६
३०. भगवान के प्रतिनिधि– महात्माओं की सोबत विकसित करें ३६
३१. भगवान का सगुण और निर्गुण स्वरूप ३७
३२. भगवान शंकर का प्रतीकात्मक रहस्य ३८
३३. चेतनानिष्ठ में विरोधाभास का मेल होता है ३९
३४. श्री हरिभाई का उद्बोधन ४१

॥ हरि:ॐ ॥

दिनांक २१-७-१९६८ के दिन कुंभकोणम् में गुरुपूर्णिमा के दिन हुए उत्सव प्रसंग पर पू. श्रीमोटा की पावन वाणी

● धार्मिक भावना की विशेषता दक्षिण भारत में है ●

.... तब से मुझे यह देश जैसे कि मेरा घर हो ऐसा लगा हुआ है । तब मैंने भाई नंदलाल से कहा कि इस देश में बहुत भावना है । तब उनके गले बात नहीं उतरी थी । फिर जैसे जैसे उनको समझ अनुभव के प्रदेश की होने लगी, तब उनको लगा कि **मोटा** की बात सच है कि यह दक्षिण के लोग उत्तर हिन्दुस्तान से हमारे गुजरात से यहाँ लोग ज्यादा भावना वाले हैं और धर्म जिसे कहे धर्म का बीज यहाँ विशेष है ।

यहाँ से हमारे देश में, हमारे समाज में धर्म का उदय जब होने वाला होगा तभी दक्षिण में से ही होने वाला है । हिन्दुस्तान के एक-एक संप्रदाय लो । धर्म के संप्रदाय, उन संप्रदाय के आचार्यों दक्षिण में से ही हुए हैं, यह इतिहास की बात है ।

इस दक्षिण को जितना महत्त्व हमारी अभी की भी देश की सरकार या अन्य देंगे तो पूरे हिन्दुस्तान देश का उसमें कल्याण समाया हुआ है । परंतु उसे बनाये रखना भी उतना ही कठिन है । यहाँ दक्षिण हिन्दुस्तान में जितनी गरीबी है, उतनी दूसरी जगह नहीं है । इसलिए उस वर्ग को, गरीब वर्ग, निम्न वर्ग है, उसे यदि हम इस समय में नहीं संभाल सकेंगे तो बहुत भयंकर परिणाम भी आने की संभावना है ।

● हरियाली रमणीयता का प्रदेश दक्षिण भारत है ●

तब यह प्रदेश एक तो रमणीय, कुदरत की नैसर्गिक, कुदरत का नैसर्गिक सौंदर्य नदीओं से भरपूर, खेतीबाड़ी भी बहुत अच्छी हो सकती है । दक्षिण भारत में जितना चावल पैदा होता है, उतना अन्य किसी जगह

पैदा नहीं होता है । वैसे तो दूसरी जगह है, बंगाल इत्यादि प्रदेश, वहाँ भी ज्यादा पैदावार है, परंतु दक्षिण भारत जितनी कहीं नहीं है ।

इससे '**शश्य श्यामलाम् मातरम्**' वह जो असल के कवि ने गाया है, वह दक्षिण भारत को विशेष लागू होता है । बंगाल में हालांकि हरियाली है, सब हराभरा दिखता है, परंतु उससे भी ज्यादा रमणीय देश हमारा दक्षिण भारत है ।

● कुंभकोणम् में आश्रम की स्थापना ●

तब भगवान की कृपा से इस देश में मेरा आना जो हुआ उसमें भी कोई न कोई हेतु ही रहा हुआ है । बिना किसी हेतु के कोई भी कार्य हो नहीं सकता । इससे जब यहाँ आने का हुआ, तब मुझे बहुत प्रसन्नता हुई । और तब से मुझे विचार आया कि एक आश्रम हो तो यह साधना के लिए अनुकूल हो सकेगा । तो ऐसा आश्रम बनाना और भगवान की कृपा से वह हो तो अच्छा, क्योंकि मेरे पास पैसे तो थे नहीं । वैसे आर्थिक स्थिति तो मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत गरीबी की, बहुत गरीबी और उसमें भी तो बीस वर्ष देश की सेवा में बिताये, तब हमें पगार कुछ ज्यादा नहीं मिलता था, सिर्फ पैंतालिस रुपये ही मिलते थे ।

परंतु बाद में भगवान की कृपा से आश्रम के लिए ठीक-ठीक रकम इकट्ठी हुई । अंदाजन नब्बे हजार तक की कह सकते हैं, उतनी परंतु तब मुझे लगा की मेरे भगवान का हुक्म मिला नहीं है, इसलिए वह पूरी रकम वापस कर दी । फिर जब १९५० के वर्ष में मैं यहाँ था या तो '५० या '४९ '५० के वर्ष में हरि का जन्म हुआ है '४९ में । तब मामा को (श्री हसमुखभाई के पिताश्री गोपालदासभाई जो श्री नंदुभाई एक मामा होते) मैंने कहा कि मुझे इस तरफ एक आश्रम बनाना है, तो कोई अच्छी जगह हम तलाश करें । बहुत मेहनत की थी । मामा इतने सारे हम और सब जगह-जगह कुंभकोणण् और आगे पीछे बहुत भटके थे और कई जगह देखी तथा मामा भी अपना कामकाज छोड़कर यहाँ रहे हमारे साथ । और हम बहुत घुमे, फिर आखिर अभी जहाँ आश्रम है, वह जगह मुझे पसंद आई कि यह जगह मुझे बहुत पसंद है ।

अब एक बात मैं कहता हूँ कि जो हमारी कल्पना में या मानने में न आये। कि अभी जो समाधि है, उस समाधि के संत की consicousness चेतना का भी मुझे अनुभव हुआ था और तब भाई हसमुखभाई को बात कही थी और उस चेतना का संपूर्ण अनुभव उनको नहीं हुआ था, यह भी पता लगा था। तब यह जगह मैंने कहा बहुत उत्तम है और यह जगह हमें लेनी चाहिए और वह जगह लेने के लिए थोड़े ज्यादा पैसे भी हमें देने पड़े थे।

• एकांत, जलाशय के पास आश्रम स्थापना का रहस्य •

प्राचीन समय में साधु-पुरुषों के ऐसे आश्रम थे, वह भी जलाशय के किनारे पर ही। उसका एक बड़ा रहस्य तो यह है कि हमारे वातावरण में अनेक प्रकार के उग्र विचारों के आंदोलन वातावरण में होते है। आज हम यहाँ बैठे हैं। इस कमरे के अंदर भी कितने सारे देशों के शब्द हैं यहाँ पर। इन्लेन्ड के हैं। चाईना के हैं। जापान है। चीन है। इन्लेन्ड है, रशिया है, जर्मनी है। फ्रांस, हिन्दुस्तान के एक-एक जहाँ-जहाँ रेडियो हैं, उस-उस स्थान के शब्द इस कमरे के अंदर हैं। यह तो आज विज्ञान ने साबित किया है।

एक काल ऐसा आयेगा कि तब हमारे लोग यह भी मानने लगेंगे कि भई जैसे शब्द की तरंगे हैं, उसी तरह इस विचार की भी तरंगें हैं और यह विचार की तरंगें जैसे शहर के लोग आबादी अधिक वहाँ अलग-अलग प्रकार के, अनेक प्रकार के, टेढे, उलटे, खड़े, विरोध वाले उन विचारों की तरंगें हैं और वह विचार की तरंगें भी हमें स्पर्श करती हैं। जिस समय जिस-जिस प्रकार का हमारा mood हो, भूमिका हो, उस प्रकार के विचार के आंदोलनों हमें छूते होते हैं। इस वातावरण में से। परंतु उसकी नींव हमारे में रही होती है। वे आंदोलन जरूर हमें छूते हैं; इससे जितना एकांत में, दूर से दूर आश्रम हो और जलाशय के पास देखो तो विशेष अच्छा।

प्राचीन समय में देखो तो आश्रम का वर्णन पढ़ो तो जलाशय को बहुत महत्त्व दिया गया है । वह इसलिए कि जल जलतत्त्व ऐसा है कि इन सब तरंगों को शीतलता प्रदान करना है । उनकी उग्रता का हरण करने वाला है । इतना ही नहीं, परंतु हमें स्वयं को भी उसमें से आनंद प्राप्त होता है । जल उपयोगी है । हमें– संसार को– मनुष्यों को, जलचर प्राणीओं को, पशु-पक्षी को पृथ्वी पर जो कुछ है, जड़-चेतन सब को ही पानी का बहुत उपयोग है और बड़े से बड़ा ज्यादा से ज्यादा लाभप्रद तो यह है कि ऐसे जो विचार के उग्र आंदोलन होते हैं, उसे कमजोर करता है जल-तत्त्व । यह एक बड़े से बड़ा उसका फायदा है, इसी कारण से आश्रमों के पास जलाशय होना ही चाहिए । यह प्राचीन समय से एक रूढि प्रचार हो गया था । मेरे गुजरात में जहाँ जहाँ आश्रम हैं, वहाँ हर जगह नदी है । नडियाद में, सुरत में बिलकुल नदी किनारे है । यहाँ भी भगवान की कृपा से हमें ऐसा आश्रम मिल गया ।

• वेदकाल में गुरु की प्रथा नहीं थी •

अब यह गुरु की प्रथा को, रिवाज को हम विचार करें तो प्राचीन वेदकाल के समय में गुरु नहीं है । गुरु की परंपरा नहीं थी । इसका अर्थ ऋषिमुनि नहीं थे ऐसा नहीं । ऋषिओं का अस्तित्व था । बड़े-बड़े गुरुकुल भी थे तब भी । पढ़ने के लिए ऋषिमुनिओं के पास वे जाते जरूर । और यह भी संस्कृति में था कि जिसे जिसकी पास पढ़ना है, उसके प्रति यदि आदर और नम्रता हमारे में प्रगट न हुए हो तो विद्या का हृदय हमारे में प्रगट होता नहीं । इसीसे हमें यदि विद्या सीखनी हो, विद्य सिखने की गरज हो तो जिसके पास से सीखनी हो, उसके प्रति हमें आदर, सद्‌भाव, नम्रता, प्रगट हुए हों तो उसके पास से हम ज्यादा सीख सकेंगे ।

संसारव्यवहार में भी किसी के वहाँ हम यदि सीखने के लिए रहे हो तो उच्छृंखलता से यदि उसके साथ व्यवहार करें, बदतमीजी से व्यवहार करें, बेपरवाही से व्यवहार करें, उसके सामने बगावत करें तो

उसके पास से कुछ भी हमें सीखने का नहीं मिलेगा। अरे ! सिर्फ नौकरी भी करते हो तो भी उसके साथ यदि हमारा प्रेम का संबंध नहीं प्रगट होगा, उसके साथ यदि हमारा सद्‌भावभरा मेल नहीं होगा, सुमेल नहीं होगा तो वहाँ भी कुछ ठिकाना नहीं होगा । आप आगे नहीं बढ़ सकोगे ।

• मूर्तिपूजा की उत्पत्ति का कारण— भावना का पतन रोकने के लिए •

तब हमारे ऋषिमुनिओं ने देखा कि जैसे-जैसे भावना का पतन होता जाएगा वैसे-वैसे वह भावना हमारे में जागृत करने के लिए वह जो medium साधन वह साधन धीर-धीरे सूक्ष्म में से स्थूल होता जाता है। आज मूर्तिपूजा इसीलिए ही है। असल के समय में कोई मूर्तिपूजा नहीं थी। परंतु समाज का— समाज की भावना का जैसे पतन होता गया तो समाज को जीवीत रखने समाज की भावना को कोमल-कोमल रखने के लिए कोई साधन चाहिए। इसीसे उसके बाद यह मूर्ति का साधन हुआ।

इसी तरह वेदकाल या तो Pre-Vedic Times में अपने आप भावना की प्रचंड लहर थी और स्वयं के जीवन का— जीवन का हेतु ज्यादातर लोग समझते थे । जीवन किस लिए मिला है और उसके लिए लोगों की आतुरता भी विशेष थी । वैसे आचार्य, ऋषिमुनिओं भी विशेष थे। उन लोगों ने जीवन का स्वीकार किया था। जीवन का स्वीकार किया था अर्थात् यह जीवन या संसार मिथ्या है उस तरह की तब किसी भावना का अस्तित्व न था । उन लोगों ने जीवन का स्वीकार किया था ।

उसके बाद की अवधि में यानी कि शंकराचार्य की अवधि में यह जगत मिथ्या का ख्याल हमारे समाज में प्रगट हुआ । परंतु वह भी शंकराचार्य तो relatively था । चेतन की अपेक्षा से यह जगत मिथ्या है । यह पूरा जगत जो दिखता है वैसा है नहीं । यह तो सिर्फ द्रश्यमान है ऐसा । परंतु उसके पीछे का रहस्य तो अलग है ।

• सकल ब्रह्मांड सिर्फ अणु-परमाणु का खेल है •

उदाहरण के लिए हम जो कुछ भी देखते हैं, वह सब का सब अणु-परमाणु का बना हुआ है । यह सब खेल अणु-परमाणु के ratio का ही है । उदाहरण के लिए पारा और सोना लें तो उसमें ...... ratio का थोड़ा फर्क हो जाय तो सोना हो जाय पारे में से और सोने के अणुओं में से कुछ अणु कम कर दें तो पारा हो जायगा । तब यह अणु-परमाणु का जो ratio है, वह प्रत्येक का ration अलग-अलग है । इससे अलग स्वरूप दिखता है । है तो सिर्फ अणु का । तब अणु-परमाणु का यह खेल है और अणु-परमाणु में देखें तो अनंत शक्ति रही हुई है ।

इससे हमारे अनुभवी पुरुषों—ऋषिमुनिओं कहते हैं कि यह सब जो है, वह चेतन ब्रह्म से भरा हुआ है, यह कोई अत्युक्ति की बात या गलत है या भ्रम है या लोगों ने गप मारी है, ऐसा नहीं है । यह जो कुछ भी वह कुछ सब अणु-परमाणु से भरा हुआ है और उसमें शक्ति रही हुई है । आज विज्ञान ने साबित कर दिखाया है । इससे यह सभी चेतन से ही भरा हुआ है, वह और यह चेतन के कारण ही यह सब द्रश्यमान हुआ है ।

• वेदकाल में ऋषिमुनिओं के जीवन में चेतन का ही महत्त्व •

इससे असल के ऋषिमुनिओं ने यह जगत मिथ्या है या संसार मिथ्या है ऐसा नहीं कहा है । हम यदि देखे तो वेदकाल के ऋषिमुनि तो सब पत्नी वाले थे । उनमें बड़े से बड़े ऋषि वसिष्ठ कहे जा सकते हैं, उनको भी पत्नी । बहुत से ऋषिओं को पत्नी थी । संतान भी थी । तब कोई कहेगा कि भाई, चेतन में निष्ठा पा गये थे तो फिर संतान कैसे हो सकती हैं ? उन्हें तो कामवासना होती नहीं । ऐसा हमें एक प्रश्न उठे, परंतु वे उस तरह बालकों की प्रजोत्त्पपत्ति नहीं करते थे । कामवासना से प्रेरित होकर प्रजोत्त्पत्ति उन्हें नहीं होती थी ।

उनको तो एक ही सिर्फ चेतन की भावना कि एक पुत्र या पुत्री या फरजंद होना चाहिए । क्योंकि यह चेतन अनंत है । संसार भी अनंत है

और यह...... **यह इस संसार को चलने के लिए या स्वयं की जो स्वयं की भावना है, स्वयं के जीवन के जो संस्कार हैं, उस संस्कार को ग्रहण कर सके, वे संस्कार चलते ही रहे, वह भावना अखंडित रहा करे इससे फरजंद की आवश्यकता । और ज्ञानपूर्वक, हेतुपूर्वक जब वे संसार भोगते हो, तब भी उनके मन में वही predominant महत्त्व का विचार, भावना, कि चेतन चेतन से ही प्रगट करना । उसी भावना से ही वे संसार को भोगते थे ।** क्योंकि वे हमारे ..... हमारे conception में या तो हमारी बुद्धि की समझ में शायद वह न आये तो वह असत्य है, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है । अनेक वस्तुएँ हमारी बुद्धि में न आये फिर भी वह सत्य हो सकती है । तब वह जो ऋषिमुनि सब थे, उन्होंने जीवन का स्वीकार हमने भी जीवन का तो स्वीकार किया हुआ है ।

● गुरुप्रथा का उद्‌भव जीवन की भावना का पतन रोकने के लिए ●

परंतु मूल बात पर मैं आता हूँ कि असल के समय में यह गुरु की प्रथा नहीं थी, परंतु जैसे-जैसे भावना का पतन होता गया वैसे-वैसे यह प्रथा का उद्‌भव हुआ । अब गुरु के बारे में मैं आपको कुछ विस्तार से कहूँ, परंतु वह शायद हम सभी को पूरी तरह से समझ में नहीं आयेगा ।

क्योंकि गुरु यानी कि जिसने भगवान का अनुभव किया है । सगुण और निर्गुण दोनों पहलूओं का । किसीने सगुण का किया हो । किसीने निर्गुण का किया हो । सगुण का करे वह निर्गुण का अनुभव भी कर सकता है और निर्गुण का अनुभव करे वह सगुण का भी अनभव करता है । शंकराचार्य अद्वैत थे । अद्वैतवादी । संपूर्ण निर्गुण का अनुभव उन्होंने किया था । परंतु ऐसे महापुरुष को भी श्रीनगर में द्वैत का अनुभव होता है । शक्ति का अनुभव होता है और भक्ति के कितने सारे श्लोक अष्टक उन्होंने लिखे हैं ।

इतना ही नहीं, परंतु जो अद्वैत के– संपूर्ण अद्वैत के अद्वैतवादी ऐसे शंकराचार्य ने पंचायतन की स्थापना की । बदरीकेदार उन सब का

पुनरोद्धार भी उन्होंने ही किया । वहाँ तो प्रतिमा है ना ! संपूर्ण अद्वैत के ही वे आचार्य । उसके समान कोई वेदांती आज तक हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुआ है । संपूर्ण निर्गुण के अनुभवी किन्तु उसे नीचे अवतरण करना ही पड़ता है क्योंकि उसे.... उसे.... उसे grasp उसका स्वीकार कौन कर सकेगा ? उसने देखा कि यह सब तो इतना सारा तो नहीं समझ सकेंगे । इस समाज को समाज की भावना को पकड़ने के लिए उसे कोई साधन देना ही चाहिए और वह साधन नहीं देंगे तो फिर यह भावना किस आधार पर टिकेगी ? समाज की । इससे उन्होंने यह पंचायतन की स्थापना की । गणपतिजी, पार्वतीजी, हनुमानजी, शंकर भगवान इन सब की ।

• महादेव के मंदिर में नंदी–कछुए का रहस्य •

आप देखिये हमारे महादेव के मंदिर में और वहाँ भी देखिये । मुझे यह सब कहते तो जरूर है । सब वेदांतीओं मैं कोई शास्त्र पढ़ा नहीं हूँ । तो वहाँ भी उन्होंने जीवन का स्वीकार किया है उसने । कि वहाँ नंदी रखा है, तो कहे कि हाँ ऐसा है । तो नंदी वह **जीव** है । जैसे वर्षाकाल में चरकर मस्त साँड़ हो, परंतु यदि इस तरह हम यह **जीव** है, परंतु जैसे नंदी का मुँह भगवान की तरफ घुम गया तो वह कछुआ जैसा हो सके । कछुआ जैसा अर्थात् जिसे संपूर्ण संयम प्रगट हुआ है । स्वयं की इन्द्रियों के सामने कुछ आये तो स्वयं की इन्द्रियों को इकट्ठा कर लेता है । कछुआ । उसके समान हम हो सकते हैं । वर्षाकाल में चारा खाये हुए मस्त साँड़ जैसे हम **जीव** हैं । परंतु यदि हमारी अभिमुखता– हमारा मुख यदि भगवान की ओर हो जाय तो इस कछुए जैसे हो सकते हैं । यह ज्ञान देने के लिए– यह समझ देने के लिए हमारे अनुभविओं ने यह प्रतीक रखा है । महादेवजी में । परंतु उसका अर्थ कोई समझता नहीं है और कोई समझाते भी नहीं हैं । बहुत रहस्यवाली यह घटना है ।

● चेतनानिष्ठ निरीच्छ है ●

तो उस तरह गुरु की– गुरु जो है। उस चेतना में जिसे चेतना का अनुभव हुआ है। अनेक लोग कहते हैं कि भाई आप– आप तो सब जानते हो, परंतु उसे जाना यानी क्या ? जानना यानी उसके पहले जानने की इच्छा हो तब जाना जा सकते हैं न ? कुछ भी जानना हो तो पहले उसे जानने की इच्छा होनी चाहिए। तो उसे तो इच्छा है ही नहीं, वह तो निरीच्छ है। यदि इच्छा हो तो वह हमारे जैसा ही संसारी। इससे उसे कुछ जानने की इच्छा नहीं होती। वह तो जैसा होता हो वैसा होने देता है।

सुरत के आश्रम में मैंने एक शादी करवाई थी। एक बी.ए., बी.एड. बेचलर ओफ एज्युकेशन और बी.ए. पास एक बहन और एक भाई है वह एन्जिनीयरींग की लाइन के मीकेनीकल और इलेक्ट्रीकल दोनों में डिप्लोमा में फर्स्ट क्लास फर्स्ट उत्तीर्ण हुए थे। दोनों की शादी मेरे हाथों से हुई। उनके मा-बाप मेरे पास लाये, इसके साथ शादी करें। मैंने कहा करो, आपको करना हो तो। लड़का अच्छा है। बहुत समय से मेरे अनुभव में है। मेरे आश्रम का सब काम मुफ्त कर देता है, इसलिए नहीं कहता। किन्तु वह भाई अच्छा है। फिर शादी हुई। ढ़ाई साल तक, फिर कुछ झगड़ा हो गया होगा। दो-ढ़ाई साल हुए। वे एक दूसरे के पास जाते ही नहीं। लड़के की मरजी बहुत। लड़का मेरे पास आता था। सुरत में मेरे आश्रम का सब काम काज करता था। लड़की नहीं आती थी। कुछ ऐसी गाँठ पड़ गई थी कि जो खुल नहीं सकती थी। **अनेक लोग मुझे कहते, ''*मोटा*, आपके हाथ से शादी हुई, ऐसा ?'' मैंने कहा, ''भाई ऐसा। कहते हो तो आपको। आपको ऐसा लगता हो तो लाईए मसी की डिब्बी और मेरे मुहँ पर मल दो, मुझे कोई इतराज नहीं है।''**

तब मूल बात ऐसी है, इस पर से उदाहरण पर से देता हूँ कि यह लोग कुछ जानते है, ऐसा जो सब मानते हैं, वह बात गलत है। वह तो जैसा चलता है वैसा चलने देता है। वह तो दीवार से भी टकरावे ? तो कहे दीवार से भी टकराने दे। तब कुछ सावधान न करे ? किसी समय में शायद ऐसा

कोई निमित्त प्रगट हो तो कहते जरूर। परंतु वह निमित्त पर आधार रखता है। सब आधार निमित्त पर आधार रखता है। तब यह निमित्त बहुत बड़ी बात है इसमें।

• चेतनानिष्ठ शरीरधारी भगवान नहीं है •

दूसरी एक बात है। निमित्त आया इससे मुझे दूसरी एक बात कहने की सूझ रही है। कि अनेक लोग ऐसे जो अनुभवी हो गये हैं। महात्मा–पुरुष होते हैं। साधु–महात्माओं सब भगवान की तरह कहते हैं। (कोई बालक बीच में जोर से बोलता है। पू. श्रीमोटा कहते हैं बोलने दो उसे, बोलने दो उसे, चाहे जो बोले) भगवान की तरह ऐसा कहते हैं। परंतु शरीरधारी चाहे जितना अनुभव वाला हो, परंतु भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। यह एक भ्रम है समाज का।

वेदांत में भी कहते हैं कि ब्रह्म का अनुभव किया इससे ब्रह्म ही है। नहीं, जहाँ तक शरीरधारी है, वहाँ तक ब्रह्म भी नहीं है। ब्रह्म की तुलना में नहीं आ सकता। परंतु मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ कि समुद्र का पानी और उसे उस पानी को कुलिया में भरो और उस कुलिया का पानी और समुद्र के पानी के गुणधर्म समान है। उसे आप कोई पानी को। पानी का पृथक्करण करते हो और उसे दो तो कुलिया में जो समुद्र का पानी है और समुद्र का पानी है दोनों के गुणधर्म समान परंतु विस्तार और मर्यादा में नहीं।

• चेतनानिष्ठ शरीरधारी और ब्रह्म–भगवान के बीच का फर्क •

उसी तरह शरीरधारी आत्मा है। जिसे अनुभव हुआ है। उसे थोड़ा–बहुत भी प्रारब्ध है। कैसा प्रारब्ध कि रस्सी को जला दो तो उसकी ऐंठन दिखेगी। उसकी ऐंठन दिखती जरूर है, परंतु उसे हाथमें लोगे तो उसका कुछ नहीं, उसका जोर कुछ नहीं। उस प्रारब्ध का उस पर कोई जोर नहीं, परंतु ऐसा थोड़ा–बहुत प्रारब्ध उसे है। और इस प्रारब्ध के कारण उसे निमित्त मिला करते हैं।

तब उसी तरह चेतन जो है, उसे कुछ ऐसा थोड़ा-बहुत, भगवान है— ब्रह्म है— उसे कोई प्रारब्ध नहीं है। उसे कोई निमित्त नहीं है। तो यह एक बड़े से बड़ा फर्क है। यह तो मैं आपको सिर्फ बुद्धि से ही समझा रहा हूँ। मैंने कोई शास्त्र पढ़े नहीं हैं। परंतु यह बुद्धि में बराबर। मैं तो अनेक महात्मा लोग से कोई मिले तब सब बातचीत हो तब कहता हूँ कि "भाई, यह किस तरह हो सकता है ? शरीरधारी जो आत्मा है। चाहे बड़े से बड़ा, आखरी में आखरी कक्षा का उसे अनुभव हो, परंतु वह भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। क्योंकि शरीर है, वहाँ तक उसे थोड़ा-बहुत भी प्रारब्ध है, निमित्त है। निमित्त के बिना वह कुछ कदम भी नहीं चल सकता है। उसके जीवन में निमित्त बड़ी से बड़ी बात है।

उसके जीवन की बात छोड़ दो। हम संसारीओं में ऐसा ही है। हम संसार लेकर बैठे हैं। उसमें भी निमित्त मिलता है उस मुताबिक ही हम व्यवहार करते हैं। परंतु उसको निमित्त उस प्रकार का है कि उसे बंधन नहीं है। परंतु जब भगवान को तो कोई निमित्त भी नहीं और थोड़ा-बहुत बिलकुल प्रारब्ध उसे है ही नहीं। तब यह एक बहुत बड़े से बड़ा फर्क है। इससे ऐसा मनुष्य किसी भी दिन भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। चाहे जितना बड़े से बड़ा उसने ऊँचे से ऊँची कक्षा का चाहे उसे अनुभव हो, परंतु वह भगवान की तुलना में नहीं आ सकता और यह आपकी बुद्धि में आ सके उस तरह समझाने का प्रयत्न किया है।

● चेतनानिष्ठ— अनुभवी का मुख्य कर्तव्य और पहचान के लक्षण ●

दूसरा कि ऐसे पुरुषों का मुख्य कर्तव्य क्या होता है ? **मुख्य कर्तव्य तो हमारे हृदय में चेतना के संबंध में बीजारोपण करना। भगवान की भावना उनके दिल में प्रगट हो उसका बीज बोना। यही उनका कर्तव्य। तो मुख्य कर्तव्य यही है।** इसलिए जिन-जिन के साथ वह हृदय की भावना से एकाकार हुआ करता है और उसका कोई ऐसे पुरुष का कोई लक्षण है या नहीं ? लक्षण तो है भाई। परंतु उसे पहचानना

दुर्लभ है। प्रेमभक्ति के साथ लंबे समय तक का दीर्घकाल तक सद्‌भाव और भक्ति से सेवा करने से यदि परिचय हो तो लक्षण समझ में आयेगा, नहीं क्यों आयेगा ?

संसारी मनुष्य हो वह हमारे परिचय में आता है तो साला लुच्चा है। यह दया वाला है, यह करुणा वाला है, यह ऐसा है, यह वैसा है– यह हम जानते हैं। उसी तरह। परंतु वह जानते है किस तरह ? लंबा परिचय होता है तब। पहले परिचय में नहीं पहचानेंगे। दस-पंद्रह बीस-पच्चीस बार उसका परिचय हुआ कि हमें कुछ उसकी समझ पड़ती है। उस तरह ऐसे पुरुषों का भी दीर्घकाल तक, प्रेमभक्तिपूर्वक और सद्‌भाव से किया हुआ ऐसा यदि हमारा परिचय हो तो उसकी समझ आती है। न आये ऐसा नहीं है। तो भी दूसरे कोई लक्षण हैं ? तो लक्षण हैं। तो भी हैं लक्षण। तो कि प्रत्यक्ष देख सके ? कि हाँ प्रत्यक्ष देख सके वैसे लक्षण हैं। नहीं ऐसा नहीं।

● चेतनानिष्ठ जड़ में चेतना प्रगट कर सकता है ●

कि हमारी संस्कृति, हमारा धर्म ऐसा कहता है कि यह ब्रह्म तो जड़ और चेतन सभी में बसा हुआ है। तब ऐसा जो अनुभवी पुरुष है, शरीरधारी ऐसी आत्मा कोई निमित्त ऐसा मिल जाय तो जड को भी चला सकता है। तो कि जादु है– जादु की बात नहीं है।

चबूतरा को चलाया था। आज वह भाई जिंदा है। आपने हमने सब ने ज्ञानेश्वर की बात पढ़ी है। ज्ञानेश्वर भगवान की बात पढ़ी है वह उनका चबूतरा चलाया था। तब हम अहोभाव से मुग्ध हो जाते हैं। यह तो हमने सिर्फ पढ़ी हुई बात है न ? हमने प्रत्यक्ष देखी हुई नहीं है।

परंतु इस जीवनमें ऐसे है भाई। अहमदाबाद में रमाकांतभाई को जाकर पूछीये। जिंदा आदमी है। पढ़ा लिखा है। बी.एससी. पास है। उन्हों ने ऐसा माना नहीं है। अभी भी। और उसे चबूतरा चला था। मेरे मौनमंदिर में। आज किसीको जाकर पूछने का इससे कहता हूँ कि आप सब मेरे स्वजन हो। अब शायद मेरा शरीर ज्यादा लंबा

टिकेगा नहीं । पाँच-छ ऐसे भयंकर रोग हैं । यह तो भगवान की कृपा कि उसकी शक्ति से ही मेरे शरीर का काम चलता है ।

तब मैं इसीलिए कहता हूँ । उदाहरण देता हूँ कि भाई, मैं ापमें ापके साथ रहा हूँ । आपका नमक मैंने खाया है । तो आप सब अब मेरे—मेरे शरीर का अंतकाल आया है । उस समय मेरे में भावना रखो । और यह साबिती की बात है । मैं कोई नितान्त कल्पित गप नहीं मार रहा हूँ । आप सब भरोसा कर सको ऐसे हो ।

● चेतनानिष्ठ को समय और स्थल की मर्यादा नहीं होती ●

इतना ही नहीं परंतु चेतन जिसे अनुभव हुआ है, चेतन का जिसे अनुभव हुआ है । ऐसे चेतन वाली आत्मा सत में भी व्यवहार करे, असत में भी व्यवहार करे । तब हमारे ख्याल में न आये । उसे हम स्वीकार नहीं कर सकते । परंतु चेतन तो सब में रहा हुआ है ।

उसके उपरांत दूसरा एक है । चेतन जिसमें प्रगट हुआ है । उसे कोई स्थल, काल की मर्यादा उसे नहीं है । इससे स्वयं कहीं भी प्रत्यक्ष हो सकता हैं । यह आप के पास यह दिलीप बैठा है । यह यहीं बैठा है । उसको पूछो कि मोहनभाई के वहाँ मैं सोया था । पलंग पर मेरा शरीर और दूसरा शरीर उसे दिखा है । वह झूठ बोलता हो तो उसे पूछकर देखो । जिसको पूछना हो वह अभी पूछ सकता है । तब एक के दो शरीर, चार शरीर भी उसको हो सकते हैं । यह बड़े से बड़ा अनुभव ।

इतना ही नहीं यह दिलीप तो मेरे साथ जुड़ा हुआ है । परंतु मेरे साथ बिलकुल जुड़े हुए नहीं । हजार रुपये के अमलदार है पारसी । पहली बार ही मौन में बैठे थे नड़ियाद में । और मैं सुरत था । यह तो जीवित व्यक्ति है । मैं कुछ दूसरे कहीं कोई बात नहीं करता हूँ । दूसरी कोई जगह हम पढ़े तो पहले का पढ़े तो अहोभाव हो जाता है । तब उस व्यक्ति को वहाँ मौन में नडियाद में **मोटा** दिखे । बाप रे ! उसे यह तो मालूम था कि **मोटा** तो यहाँ नहीं है, फिर भी उसको वहाँ दिखे । आज भी वह सुरत में है । आसिस्टन्ट कलेक्टर की ग्रेड के हैं । एक्साईझ में । एक्साईझ और कस्टम में, परंतु उसको मेरे प्रति भक्ति हो गई है ।

इतना ही नहीं, सरकारी अमलदार होने के बावजूद वे मेरे लिए पैसे भी इकट्ठे करके लाते हैं । उसे ऐसा नहीं होता कि मेरी नौकरी चली जायगी । मेरे साथ जुड़े हुए कई अमलदार । एक आर.टी.ओ. हैं । साहब । पारसी मौन में बैठते हैं हर साल । उसे मेरे अनुभव हुए हैं । तो पिछली बार मुझे जो लाख रुपये इकट्ठे करने थे । उसे दस-दस ग्यारह हजार रुपये उसने मुझे इकट्ठे करके दिये हैं । आर.टी.ओ. ने दूसरे कई इन्कमटेक्ष अमलदार हैं, वे भी मुझे पैसे इकट्ठा कर देते हैं । परंतु मैं उसे कहता हूँ भाई, यदि किसी से तुम जबरदस्ती से लो तो यह मुझे मंजूर नहीं है । एक इन्कमटेक्ष अमलदार तो मेरी रसीद-बुक ही अपने पास रखते हैं । कोई अेसेसी आये । फिर मेरे परिचित । भाई, **मोटा** के इस आश्रम में इतनी रकम देने की है, ज्यादा नहीं । सौ रख दो, सौ भर दो । रसीद उसके हाथ से ही बनाने को कहे । अेसेसी के हाथ से । उस तरह ।

● *मोटा* का और आश्रम का प्रचार मौनार्थी-स्वजन करते हैं ●

तब इस मौन में जो लोग बैठ़ते हैं हमारे यहाँ । उसका भी अनुभव मुझे यह दिलीप पास में है उसका भी । मौन में से मेरे साथ संबंध है । कितने सारे आदमीओं को आप देखो कि मौन में बैठने से कितना संपर्क होता है । उनका किसी चेतना के साथ कि उसका मैं प्रचार करने जाता नहीं । यह अखबार में तो अभी-अभी यह आया । अभी-अभी ये लेख और मेरे बारे में प्रसिद्धि गुजरात में आने लगी है । किन्तु मैं हम स्वयं आश्रम की तरफ से या नंदुभाई हम कोई यह प्रवृत्ति करते नहीं है ।

एक भाई मुंबई के चार्टर्ड एकाउन्टन्ट मौन में बैठने आये । तब मेरे सभी पुस्तक उसने पढ़े । साहित्य का भी रसिक व्यक्ति । कि ‘‘**मोटा,** इतना अच्छा साहित्य है और आप क्यों कुछ देते नहीं हो ।’’ मैंने कहा, ‘‘यह हमारा काम नहीं है भाई ।’’ तब उसने कहा, ‘‘मैं

दूँ ?'' मैंने कहा, ''दे दो भाई, तुम्हें देना हो जैसा करना हो वैसा कर ।'' तब वह हमारे यहाँ प्रतिवर्ष मौन में बैठते हैं । वह चार्टर्ड एकाउन्टन्ट हैं और उसने जैसे कि यह स्वयं का मिशन हो, उस तरह यह काम ले लिया है । सब मासिक पत्रिकाओं में भेजते हैं । अखबारों में भेजते हैं । प्रश्नोत्तरी तैयार करे, उसके उत्तर लिखे हुए हो, वह पुस्तकों में लिखा हो उस मुताबिक लिखे । मुंबई समाचार वाले को ।

मुंबई समाचार वाले बदते नहीं थे । इससे उसके संपादक को मेरे पास पिछली रामनवमी को बुलाकर लाये । मेरा और उनका इतना सुंदर सत्संग हुआ । सत्संगी थे भाई । उसने meditation पर दो किताबें भी लिखी हुई हैं । इससे अब 'मुंबई समाचार' में भी मेरे लेख आते हैं । 'जन्मभूमि' वाले को पकड़ लाये । अभी 'जन्मभूमि' में मेरे बारे में एक लेख आया । वह विजयगुप्त मौर्य करके हैं । 'अखंड आनंद' में 'ज्ञानगोष्टि' लिखते हैं । तो उसने आकर मुझे पूछा, मैंने सब बात की वे बहुत प्रभावित हुए । तो इस तरह यह प्रचार का ...... अभी इन अखबारों में, मासिक पत्रिकाओं में आता है, उसमें हमारा कोई मूल नहीं है । यह वह भाई रतिभाई (चार्टर्ड एकाउन्टन्ट) ही किया करते हैं । वे करते हो तो होने दो । हमें कोई एतराज नहीं है ।

● *मोटा* का मुख्य कर्तव्य पैसे इकट्ठे करना नहीं है ●

तो मेरा कहना यह है कि ये जो लक्षण हैं अनुभव वालों के यह प्रत्यक्ष । दूसरी कोई जगह बात नहीं करता हूँ । आप तो मेरा घर ही हो, कुटुंब हो । इससे आपको न कहूँ तो किसे कहूँ ? और इसको कहने का हेतु इतना ही है कि भाई, अब यह मेरा शरीर कोई अनंत काल तक तो टिकने वाला नहीं है । अब आखरी अवधि है और अंतिम अवधि में आप सब का प्रेम प्राप्त कर सकूँ तो मुझे दूसरा कोई काम नहीं है । पैसे तो भगवान की कृपा से आप भी देते हो और गुजरात में से भी मुझे मिलते हैं । **पैसा वह मेरा मुख्य कर्तव्य नहीं है ।**

मेरा मुख्य कर्तव्य तो जो कोई हम सभी मिले हैं, उनमें भगवान की भावना का बीज बोया जाय यही तो मेरा मुख्य कर्तव्य है । तब

यह आप जानते हो तो अभी भी आप जाओ । साबित करो । **जितने सबूत ढूँढ़ने हो इतने सबूत ढूँढ़े कि एक शरीर के एक शरीर का कहीं भी होने पर भी अन्य जगह प्रगट हो सकता है । यह आप दूसरी किताबो में पढ़ते हो, परंतु यह तो प्रत्यक्ष उदाहरण है ।** आप कहीं भी जाकर सब को पूछकर आप विश्वास कर सको ऐसे है । चबूतरा चला था वह आप उस व्यक्ति से भी मिलकर विश्वास कर सकते हो । तब यह दो तो बड़े से बड़े लक्षण हैं । दूसरा कोई नहीं कर सकेगा । संपूर्ण चेतना में निष्ठा प्राप्त किए बिना कोई व्यक्ति ऐसे काम नहीं कर सकता । संभावना नहीं है । किसीने सिद्धि प्राप्त की हो तो दूसरा कुछ भी बता सकता है, परंतु यह तो कर ही नहीं सकता । **स्थल और काल की मर्यादा– स्थल और काल की मर्यादा जो लांघ जाता है,** वह चेतना में अनुभवी । अनुभवी है उसके लिए ही संभव है । दूसरे के लिए यह संभव नहीं है ।

फिर आप देखिये कि प्रति वर्ष भगवान की कृपा से कोई न कोई ऐसे अच्छे काम के संकल्प, शुभ संकल्प होते हैं । वे सभी पूरे होते हैं । '६२ की साल से ही अभी मैंने तो यह काम शुरू किया है । उसके पहले तो यह मेरा आश्रम चलाने के बारे में ही प्रयत्न हुआ करता था । Struggle हुआ करती थी । क्योंकि मकान बनाना, यह करना, वह करना सब में पैसे तो चाहिए ही । वह काम पूरे होने के बाद यह काम शुरू किया गया ।

● धर्म के लक्षण– समाज में गुण और भावना का प्रगट होना ●

इसीलिए मैंने शुरू किया कि समाज अगर धर्म– **धर्म जीवित है उसके दो लक्षण कि गुण और भावना प्रगट हो, तब धर्म है ऐसा समझना । गुण और भावना न हो तो धर्म है, यह नहीं माना जाएगा । तो हमारे समाज में गुण और भावना नहीं है । वह गुण और भावना प्रगट हो तो ही धर्म टिक सकता है ।** धर्म की भावना

समाज में उत्पन्न हो सकती है। इसलिए ऐसे गुण और भावना के भगवान की कृपा से काम करने का सूझता रहता है वैसा करता हूँ। और दूसरी एक बड़ी बात यह है कि दूसरा आप कुछ भी करोगे, परंतु हमारे जीवन में जो गुण और भावना है वही साथ आनेवाले हैं।

• पूनर्जन्म की साबिती •

तब किसी को– किसी की बुद्धि को यह हो कि साला दूसरा जन्म है उसकी गारंटी क्या ? तो जैसे अभी के यह वैज्ञानिक कहते हैं, वह हम सब मानते हैं या नहीं मानते हैं ? H_2O कहते हैं कि दो हिस्से हाइड्रोजन और एक हिस्सा ओक्सिजन का हो तो पानी। उसका कोई इन्कार नहीं करता है कि नहीं होता है। वह तो मानना ही पड़ता है।

तो उसी तरह हमारे शास्त्रकारोंने, जगत के सभी धर्मों ने, उन धर्मों की नींव डालने वालों ने, मूल पुरुष वे सभी इस बारे में सहमत हैं। तो कि Christanity कुछ सहमत है ? मुस्लिम- मुस्लिम तो ऐसा कुछ मानते ही नहीं हैं। भाई, आप विचार करो। वह भी कहता है। उसने बीच की बात नहीं की है। इस जन्म का हमारा शरीर गया। फिर Day of Judgement आयेगा। और तब न्याय होगा। तब सब जागेंगे या नहीं ? तो पुनर्जन्म है या नहीं ? उसने बीच के समय की बात नहीं की है। मुस्लिम धर्म और क्रिश्चियन धर्म ने। परंतु Day of Judgement न्याय के दिन की बात की है।

तब पुनर्जन्म होगा और सब का न्याय होगा। न्याय होगा तो भोगना पड़ेगा न ? न्याय होगा तो भोगना पड़े न ? तो भोगने के लिए तो शरीर ही चाहिए। तब वहाँ है सही पुनर्जन्म की बात। वहाँ उसमें उनमें। परंतु बीच की– यह शरीर खत्म होने के बाद में और फिर इस बीच के समय की बात नहीं की है, क्योंकि वह काल अलग था। लोग समझते नहीं। हमारे– हमारी संस्कृति के शोधकर्ता बहुत गहरे गये हैं और यह बिलकुल सच्ची बात है एक। हमारा पहले भी जन्म था, अभी भी है और फिर भी होनेवाला है।

यह हमारे अनुभवीओंने, हमारे ऋषिमुनिओंने इस संबंध में प्रयोगों करके यह साबित किया है । परंतु विज्ञान के किये गये प्रयोगों को हम तुरंत स्वीकार कर लेते हैं और इन ऋषिमुनिओं द्वारा किये गये प्रयोग हम स्वीकार नहीं करते । **क्योंकि हमारी बुद्धि कुंठित हो गई है । हमारे में धर्म की भावना कम हो गई है ।** अबे, उसने प्रयोग किये हैं वह आप मानते हो और इन लोगों ने प्रयोग किये हैं, वह आप क्यों नहीं मानते हो ? तब वह हमारे गले उतरता नहीं है । वह दिखाता है । ये पुरुष भी बताते हैं । किसी किसी बाबत में । सब बातों में दिखाते नहीं है, परंतु वह बात सच है ।

● उत्तम दान– समाज में गुण और भावना प्रगट करे वह ●

उनके जीवन में ऐसे कई प्रसंग बनते हैं कि उसे मालूम है कि अमुक व्यक्ति के जीवन के साथ पूर्वकाल का मेरा ऐसा संबंध है । वे कहते नहीं हैं । परंतु यह संबंध है । तब पहले भी जन्म था, अभी भी जन्म है और इसके बाद भी होगा । परंतु इस जन्म का हमारा जो शरीर है, उसमें जो गुण और भाव प्रगट हुए होंगे वे हमारे साथ आनेवाले हैं । इससे मैं जो कोई धनवान बहुत भावना वाले हो तो **मैं कहता हूँ भाई, आप धर्मादा करो । परंतु इस प्रकार का करो कि जिससे सामने वाले व्यक्ति में गुण और भावना प्रगट हो । वह उसके साथ-साथ आयेगा और समाज को ज्यादा कल्याणकारक है । इस प्रकार की भावना ।**

तब यह जो गुण और भावना यदि समाज में हो, जागे तो ही यह धर्म फिर से उठ सके ऐसा है । मैं बिना कारण ऐसे ही कुछ नहीं करता हूँ या hapazardly या लस्टम-पस्टम मैं कुछ करता नहीं । बहुत सोच समझकर मैं मेरे काम करता हूँ और यह धर्म तभी उठेगा यदि गुण और भावना समाज में प्रगट हुए होंगे तो और फिर साथ साथ ही आनेवाले हैं ।

● चेतनानिष्ठ की भक्तिभावपूर्ण सुहबत जीवन-उद्धारक ●

तब उसके अलावा ऐसे जो व्यक्ति हैं, वे दीप-मीनार हैं । हमारे पथदर्शक हैं । हमारा हित चाहने वाले हैं । हमारा कल्याण करने वाले हैं । परंतु यदि उनके साथ जुड़े रहे तो ।

पहली ही बार जब मैं मेरे गुरुमहाराज के पास गया तब । तब मैं तो बहुत raw अर्थात् मेरी बुद्धि तब धर्म की भावना से प्रेरित नहीं थी तब । मेरे में भक्ति भी नहीं थी । भावना भी नहीं थी । और गुरुमहाराज के प्रति किस तरह का attitude अर्थात् कैसा व्यवहार रखना उसकी भी मुझे समझ नहीं थी ।

तब उनके पास प्रतिदिन तीन सौ-चार सौ आदमी आते थे । वे तो नग्न रहते थे । गाँव से बाहर रहते थे । और बड़ी धूनी जिसमें प्रतिदिन दो सौ तीन सौ मन लकड़ी जलती थी, इससे धूनीवाले दादा कहलाते । तब पहली ही बार मैं तो गया था । और मुझे तो यह सब नंगे और लस्टम-पस्टम सब बोलते । इससे मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा । मैंने कहा, ''मैं यहाँ कहाँ आ गया ?'' मैं तो मेरा सामान, धर्मशाला में एक कमरा किराये से लिया था वहाँ से सामान-बिस्तर बाँधकर घर वापस जाने के लिए तैयार हो गया । कहा, ''चलो, हम हमारे आश्रम में वापस चले जाँय ।''

बाद में फिर next step ऐसा हुआ कि चलो पैर पड़ते तो जाऊँ । तो पैर पड़ने के लिए गया । तब वे कुछ बोले कि, ''भई, यदि सचमुच हमारे दिल से सत्संग यदि हुआ हो किसी महात्मा की सोबत हमें लगी हो और उस सोबत में हमारा दिल लग गया हो तो चाहे कितना पापी में पापी हो, परंतु मृत्यु के समय उसे ऐसी भावना प्रगट होती है ।'' तब उनका तो बहुत तब । कि साला यह तो अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए कहते हैं । गुरु सही फिर भी मेरी बुद्धि इस तरह वक्र रीति से काम करती थी । यह आपको पक्का उदाहरण देता हूँ । तब मैंने तो मन में ही ऐसा विचार किया था । तब गुरुमहाराज बोले कि, ''अबे, भाई ! कि तू यहाँ से पंद्रह मील दूर एक गाँव है । बीच में इतने इतने गाँव आते हैं ।''

उन गाँवो के नाम दिये, वे लिख लिये । उन गाँवो से होता हुआ मैं वहाँ पहुँचा । और एक आदमी मरने पड़ा हुआ है । वह कैसा सब कुछ बोलता है, वह देख । कैसे कैसे कर्म किये हैं, वह सब बोलेगा और फिर मरने के एक आधे घंटे पहले उसकी मनोदशा, उसकी भूमिका पूरी बदल जाती है । उसे तुम देखोगे तब यह मालूम पड़ेगा । कि ऐसे किसी महात्मा की सोबत की हो और उनमें हमारा दिल लग जाय, उनमें भक्ति लग जाय तो व्यक्ति का कैसा कल्याण हो जाता है, यह बात तुम्हें प्रमाणित होगी । प्रत्यक्ष देखे बिना तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं आयेगी ।

इससे मैं तो गया वहाँ । मैंने कहा मेरे मनमें विचार किया था और उसने मुझ जवाब दिया यह । इससे मुझे प्रयोग करना चाहिए । इससे मैं तो चला । गाँव पूछते पूछते पूछते उस गाँव में जा पहुँचा । वहाँ सब जगह आंगन आंगन घुमा कि भाई यहाँ कोई व्यक्ति बहुत गंभीर बीमार हो । हिन्दी में बोलता था । कोई गंभीर बीमार हो और मृत्यु का समय आ गया हो । तो कि नहीं भाई यहाँ नहीं है । ऐसा करते-करते एक घर मिल गया । फिर वह तो ऐसा सब बोलता रहा कि उसने जो-जो सब कुकर्म किये थे उस के गाँव में । जो कुकर्म किये थे वह सभी बोलता ।

मैंने सोचा वे गुरुमहाराज कहते थे, वह बात सच्ची । फिर तो अचानक उसकी पूरी मनोदशा बदल गई । फिर तो भजन गाने लगा । यह गाने लगा । फिर गुरुमहाराज की प्रार्थना की । ‘प्रभु, तेरी सोबत हुई और मेरा दिल लग गया ।'' यह सब करके और फिर एक आखरी प्रार्थना, ‘हे प्रभु, तुम उद्धार करना मेरा ।'' यह बोलकर उसके प्राण छूट गये । उसकी कही हुई बात तो सच निकली ।

फिर गाँव में फिर से मैं निकला । मैंने पूछा, ‘‘भई, यह मर गया वह कैसा था ?'' ‘‘अरे !'' कहने लगे, ‘‘साला, काईयां था, मर गया वह अच्छा हुआ । उसके गाँव में उसके सामने माँ-बेटी सलामत नहीं थी । ऐसा चरित्र का दुष्ट आदमी था । परंतु ऐसे महात्मा की उसे सोबत हुई । मृत्यु के समय उसकी कैसी सुंदर गति हुई । मैंने स्वयं अनुभव की हुई बाबत है यह ।

इतना ही नहीं, परंतु सूरदास तो प्रतिष्ठित हैं। बिल्वमंगल प्रतिष्ठित हैं। ऐतिहासिक व्यक्ति हो गई है। वेश्यागामी था वह। सब प्रतिष्ठित हकीकत। इतिहास की बात है। परंतु भगवान में उसकी लगन लग गई तो कितने बड़े भक्त हो गये। सूरदास का भी ऐसा है। बिल्वमंगल का। ऐसे कितनी व्यक्ति ऐसे हैं।

● चेतनानिष्ठ का आश्रय जबरदस्त शक्तिदायक है ●

तो ऐसे व्यक्ति की सोबत और उसमें यदि हमारा दिल प्रगट होता है। अनेक रीति से हिम्मत देता है, साहब। हमारी मुश्किल के समय में, संकट के समय में, परेशानी के समय में हमें वह एक सहारा देते हैं। ऐसा सहारा कोई भी धनवान आपको नहीं दे सकेगा।

मैं तो आपके परिवार का व्यक्ति हूँ। आपका नमक मेरे पेट में पड़ा है। तो मैं यह सच बात कहता हूँ। कि ऐसे व्यक्ति की यदि सोबत हमें हो गई हो और उसमें हमारा दिल लग गया हो तो उनका सहारा बहुत जबरदस्त शक्तिशाली है। अनेक संकटों में हमें चट्टान की तरह हमें तना हुआ रखते हैं। तो ऐसे जो पुरुष हैं, वे हमें निमित्त के कारण से मिलते हैं, हम न चाहते तो भी मिलते हैं।

● चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त आधारित है ●

मैं जब १९२१ के वर्ष के अंत में इस आंदोलन में कूद पड़ा। तब मेरा कोई ख्याल नहीं था कि यह भगवान की– भगवान के मार्ग का कोई बिलकुल कोई ख्याल नहीं था। मैं तो उस समय यह मानता था कि यह सब महात्मा साधुओं हैं वे Economical Waste- Economical burden on the society आर्थिक रूप से इस समाज पर बोझ है, मैं ऐसा मानता था और सच में ऐसा मानता था।

फिर भी एक साधु ने आकर मुझे पकड़ा। पकड़ा यानी मैं तो नडियाद होता और वह रहे अहमदाबाद। और अहमदाबाद। उसका शरीर बंगाल का था। लोग उनका नाम बालयोगी कहते थे। तो अहमदाबाद में एलिसब्रीज है न ? वहाँ से सामने टाउन हॉल की तरफ जाँय तो

दाहिना हाथ की तरफ नदी में वे बैठे रहते । बहुत मस्ती, इतना ज्यादा नाचते और उँचे कूदते । मैंने स्वयं देखे थे । और इतनी सारी मस्ती कि जब नदी में नहाते, तब तो जैसे हाथी नहाता हो इतनी उनकी मस्ती ।

अनेक लोग आते उनके पास । विपुल संख्या में लोग आते । तो भी वे दिनमें बीस-पचीस दफा कहते कि नडियाद से चूनीलाल भगत को बुलाओ । योगानुयोग ऐसा हुआ कि नडियाद के एक नागर गृहस्थ नानुभाई नाम के थे । कंथारिया........ नागर । वे वहाँ गये थे । बात सुनी थी इससे बालयोगी के दर्शन करने । तो उसने देखा कि आप नडियाद से चूनीलाल भगत को भेजो । फिर वे शाम को वापस आये ।

तब प्रतिदिन शाम को कुछ काम हो तब गोपालदास बापु, फूलचंद शाह हमारे नडियाद के दो तीन नेता हैं । तब ये मणिभाई नभुभाई थे, उनके भाई माधवदास– माधवलाल ये कंथारिया ये सब इकट्ठे होते थे । मैं वहाँ गया था । नानुभाई ने मुझे कहा, ''भाई भगत, तुम्हें बुलाते हैं । एक साधु है । बालयोगी है । बहुत अलौकिक मूर्ति है । बहुत मस्तीवाले, तुम जाओ ।'' मैंने कहा, ''भाई, मुझे और साधु को मुझे क्या काम है ?'' साहब मैं तो बिलकुल नहीं गया था, परंतु अंत में उसने मुझे खींच लिया ऐसा मुझे कहना चाहिए ।

तब वह पूर्व का संबंध है । मैं उसे नहीं पहचानता था । वह मुझे नहीं पहचानता था । यह एक सौ प्रतिशत सच्ची बात है यह । तब ऐसे व्यक्ति से पूर्व से हम जुड़े हुए होते हैं । यह पूर्व का जो संबंध है, उसकी श्रृंखला है, वह हम जानते नहीं है । यह मेरे जीवन का ही प्रसंग है । वह जानता था मुझे । मैं उसे नहीं जानता था । उसने इतनी सारी गरज । उसे ही गरज थी । वे फिर नडियाद आया । मुझे initiate किया । **पहली बार वे दो महीने– सवा दो महीने रहे । दूसरी बार देढ़ महीना रहे । तीसरी बार एक महीना रहे मेरे साथ ।** और मुझे initiate दीक्षा में इस मार्ग पर ले जाने में यही मूलभूत कारण । वे बालयोगी मेरे गुरुमहाराज के शिष्य थे । उन्हें ही भेजे थे ।

● निमित्त में चेतनानिष्ठ की शक्ति भगवान का काम है ●

तब ऐसे पुरुषों का जो संबंध है वह निमित्त। और निमित्त की एक परंपरा है। Continuity है। और उस निमित्त के कारण से हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं। मिला हूँ। मैं आपको मिला हूँ। आप मुझे मिले हो। और मेरे जीवन के कई दूसरे उदाहरण आपको दूँ साहब।

सूरत के आश्रम में एक Eye specialist मौन में बैठे थे– अभी भी जीवित है– प्रसिद्ध है– जगन्नाथ। डॉ. जगन्नाथ। Eye specialist मौन में बैठे थे। और फिर दूसरी कोई बात लम्बी तो नहीं कहूँगा, परंतु वह बारिश का मौसम था। नदी में तो बाढ़ आयी थी। मेरा आश्रम तापी किनारे पर ही है, बिलकुल तापी के तट पर। जिस तरह यह कावेरी पर आश्रम है उस तरह। अभी भी आपको किसी को भरोसा करना हो तो जरूर करना और उसे जाकर पूछ लेना। वे नदी में नहाने गये और गये अंदर। बाढ़ में बहने लग गये, किन्तु तैरना आता नहीं था साहब। हमने तो यह सोचा कि वे गये। खलास यह आदमी। परंतु वे पोने दो मील दूर रांदेर तक पहुँच गये वहाँ किनारे पर लोगों ने उनको उठाकर निकाला। किन्तु तैरना आता न था। आज भी जिसे पूछना हो जाकर उसे पूछ सकता है।

तब यह भगवान की शक्ति बिना भारी बाढ़ में जिसे तैरना न आता हो, ऐसा व्यक्ति सुरक्षित रूप से पार उतर सके वह भगवान की शक्ति बिना तो हो नहीं सकता। .... परंतु कोई लकड़ी पकडी थी। वह भी आप जाकर पूछ सकते हैं। ऐसा है। भाईने ऐसी एक खुद को पढ़ाई हुई ऐसी एक हकीकत लिखी है भाई ने। नंदुभाई ने लिखी है। तब ऐसे तो कई उदाहरण आपको दे सकता हूँ। उदाहरण इसलिए देता हूँ कि अभी भी आप मेरे लिए ऐसी भावना प्रगट करोगे तो अच्छा है। मुझे तो कुछ नहीं है। प्रगट करो या मत प्रगट करो तो मेरा तो जो संबंध है, वह है। आपके साथ का मेरा संबंध आप के साथ का कभी लस्टम-पस्टम हो जाय तो भी ऐसा का ऐसा ही रहनेवाला है।

● चेतनानिष्ठ को संबंध निमित्त संयोग से होता है ●

और यह जो मेरा संबंध है, वह भगवान का दिया हुआ है। मैं कुछ नंदुभाई को ढूँढ़ने नहीं गया था, या नंदुभाई को कहने नहीं गया था कि भाई तू मेरे पास से यह सीख। यह विद्या सीख। किसी के साथ संबंध मैं ढूँढने नहीं गया था। अपने आप मिले हैं। किसी भी जगह आप पूछे। सुरत में तो मैं बिलकुल अनजान साहब। बिलकुल अनजान। नडियाद तो मेरे शरीर का गाँव। इससे सब को पहचानता। परंतु नडियाद में भी किसी दिन शहर में नहीं गया हूँ। किसी दिन और किसी से संबंध बाँधने भी नहीं गया हूँ।

सुरत में भी वैसा ही। जैसे-जैसे मिलते गये। क्योंकि मुझे इतना विश्वास था कि प्रारब्ध के कारण, प्रारब्ध के कारण जिन-जिन के साथ मेरा निमित्त है, मिलने ही वाले हैं, फिर यदि मैं प्रयत्न करूँ तो मैं अपने आप मिथ्या माना जाऊँगा। आप सब का संबंध भी मुझे अपने आप ही हुआ है। मैं कोई संबंध बाँधने आया नहीं हूँ। इसी कारण से और मैंने कोई विचार करके यहाँ आने का नहीं किया था। नंदुभाई के साथ आना हुआ। दूसरी बार आना हुआ तो यहाँ सब दुकानें बंद थी। सभी हम सब भाई वहाँ आये थे। तब मैंने नंदुभाई को कहा कि, ''हमें वहाँ ही जाना चाहिए। संकट के समय में तो हमें वहीं जाना चाहिए। तू जा। मैं तुम्हारे पीछे आता हूँ।'' यह '४२ की साल में या ऐसी साल में हुआ था। तब से दक्षिण के साथ का आज भी चाहे मेरा शरीर वहाँ रहता है, परंतु मेरा संबंध यहाँ चालू रहता है।

● धर्म का उदय दक्षिण भारत में से होगा ●

दक्षिण भारत को— दक्षिण भारत को— दक्षिण भारत मुझे बहुत प्रिय लगता है वह भावना के कारण। इस देश में अभी, आप समझना इस देश में भावना सब भोले हैं। उसका कुछ भावना है। इस देश में जितनी भावना है, उतनी अन्य जगह पर नहीं। हमारे हिन्दुस्तान में। उसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो इसी देश में से हिन्दु धर्म के अनेक संप्रदाय के आचार्य

इस देश में से हुए हैं। यह इतिहास की बात है साहब। आप पूछ लेना। जिसे पूछना हो उसे। फिर से हमारी संस्कृति का उदय होने वाला है। इस दक्षिण भारत में से ही होने वाला है। यह भी निश्चित हकीकत है।

● अराजकता का समय आने वाला है ●

जब हम इस देश में हम बसे हैं और रह रहे हैं, वह भी मैं तो ऐसा मानता हूँ कि हमारे किसी प्रारब्ध के पुण्यकर्म का उदय है। और एक काल ऐसा आने वाला है। यह मैं कोई ज्योतिषी नही हूँ। परंतु यदि आप प्रतिदिन के अखबार पढ़कर देखोगे तो अराजकता फैलती जा रही है। इस सरकार का जो administration पर पकड़ कमजोर होती जा रही है। यू.पी. में सत्तर प्रतिशत प्रत्येक विभाग के आदमी अनुपस्थित थे ! हमारी कल्पना में भी नहीं आये ऐसी इतनी पकड़ कमजोर होती जा रही है। आज आप अलग-अलग जगह देखो तो आज राज्य चलाने की शक्ति जो व्यवस्थाशक्ति वह कमजोर होती जा रही है। तब यह जो administration हमारा जो है, वह यदि कमजोर हो जाय तो प्रजा की क्या स्थिति होगी ?

तब मुझे स्वयं को लगता है कि एक समय ऐसा आने वाला है कि यह अराजकता फैलनेवाली है। यह मुझे बहुत स्पष्ट लगता है। मुझे उसका दर्शन है, ऐसा कहूँ तो भी चलेगा। परंतु इस कारण से डरने की जरूर नहीं है या भय रखने की भी जरूरत नहीं है, परंतु यह काल आने वाला है हिन्दुस्तान में। आप उसके लक्षण देखो। शुरूआत हो चुकी है। तब किसी की सलामती नहीं ऐसा काल आने वाला है। और प्रत्येक देश का देखो कि हमें स्वराज मिला है, परंतु क्रान्ति नहीं हुई है। इस प्रजा में भी नव चेतन प्रगट करने के लिए उथल-पुथल की जरूरत है। यह जमीन भी उथल-पुथल होती है, तभी अनाज पकता है।

यह स्वराज आया है। परंतु उथल-पुथल हुई नहीं है। अभी। चाहे सरकार अनेक रीति से धनवानों के पास से टेक्ष निकालने की कोशिश कर

रही है। परंतु वह उथल-पुथल हुई नहीं है। Topsy-turvey नहीं हो गया है। समाज में एक एक थर Topsy-turvey नहीं हुए है। उथल-पुथल नहीं हुई है। इससे इस प्रजा में प्राण प्रकट करने के लिए चेतन जगाने के लिए यह उथल-पुथल होनी वह अनिवार्य है। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो पचास साल में, साठ साल में कभी भी यह होने वाला है, होने वाला है, होने वाला है। और यह अराजकता आनेवाली है। और आर्थिक परिस्थिति भी हमारे देश की आप देखो तो बहुत ज्यादा खराब है। अत्यंत खराब है। अब उसका किस तरह निकाल आएगा। यह तो सब कोई बैलगाड़ी लुढ़काते जा रहे हैं। उसका सच्चा चिंतक कोई नहीं है। उसके बारे में कोई चाहे जितना मानो कि कोई हो मौलिक विचारक तो भी वह आज अमल कर सके ऐसी स्थिति नहीं है किसी की।

तब यह अराजकता आने वाली है, वह मुझे स्पष्ट लगता है। तब भी हमारी कोई सलामती नहीं है। सलामती नहीं रहने वाली। यह बात भी उतनी ही मुझे चौकस लगती है। और इस पैसे का भी ऐसा ही है। मेरे जैसा। मेरा तो Charitable Public Trust है। मेरा वहाँ कोई Legal Status नहीं है। मैंने तो ट्रस्ट बनाकर ट्रस्टीओं को नियुक्त कर दिया है। परंतु मुझे लगा कि साला आश्रम के भी ये पैसे सब। हमारे से तो दूसरा कुछ खरीद किया नहीं जा सकता। चीजवस्तु ले नहीं सकते।

आप पढ़ो तो ये सभी देशों इस आफ्रिका के ये सब ऐशिया और ये सब हमारे साथ हिन्दुस्तान के साथ जुड़े हुए। बाद में वे सब अलग हो गये हैं। तो स्थान भी बदलता है। और काल के भी तबके बदलते हैं। काल के भी तबके आते हैं। एक के बाद एक ऐसे तबके होते हैं। तब इस समय का तबका भी ऐसे प्रकार का है कि बदलाव होने वाला है। परंतु वह बदलाव हम नहीं जान सकते। कोई कहे तो भी हम पहचान सके वैसा नहीं है।

परंतु प्रत्येक उदाहरण देकर आपको कहता हूँ कि भाई, मैंने ऐसा किया है। मेरे आश्रम के लिए। हमें तो परवानगी भी नहीं मिलती।

हमारे यहाँ कायदा ऐसा कि जमीन लेना हो तो जो महसूल हो। जैसे कि एक बिघा का मैं दस रुपया भरता हूँ। दस रुपया भरता हूँ तो उसका दो सौ गुना। ऐसे मैं जमीन खरीद सकता हूं। उससे ज्यादा दूँ तो Legal नहीं कहा जायगा। फिर भी भगवान की कृपा से कहो चेरिटी कमिश्नर ने हमें इजाजत दे दी। चालीस हजार में लेने की इजाजत दे दी। भाई नंदुभाई और रावजीभाई मिलने गये थे और सद्भाग्य से वे (चेरिटी कमिश्नर) पहचान वाले भी निकले। और उनकी बेटी की शादी में मैं गया था। समधी की तरफ से। इसलिए उसने मुझे इजाजत दे दी।

इससे मैं उदाहरण इसलिए कि मेरे जैसा भी व्यक्ति इस आश्रम की stability के लिए मेरे से तो दूसरा कुछ लेने जैसा होता यदि कानून की इजाजत मिले तो मैं आज ले लूं, बाकी तो हम ज्यादा पैसा तो रखते नहीं है, परंतु कुछ Earmarked donation हो तो उसे रखना पड़ता है। वह नहीं खर्च कर सकते फिर भी जितने खर्च कर सकते हैं, उतने पैसे हमने इसमें, आश्रम की stability के लिए मैंने खर्च किये हैं।

● अराजकता में टिकने का सहारा सिर्फ भगवान है ●

मुझे काल ऐसा लगता है कि अराजकता आयेगी। तब हमारे कई लोग कहते हैं कि ''तुम्हारा अस्तित्व नहीं होगा। तुम्हारे तुम्हारे इस आश्रम इत्यादि को ले लेंगे।'' भले ले ले। हमारी तो किसी की मालिकी है नहीं भाई। हम तो कहते हैं कि समाज की मालिकी है। हमने ट्रस्ट में– ट्रस्टडीड में भी लिखवाया है कि यह जब न चले तब उसे समाज के उपयोग में आये उस तरह उसका उपयोग करना। हमने कोई मालिकी रखी नहीं है। जैसा होगा वैसा। तो हमें कोई हर्ज नहीं है। परंतु तो भी जब समाज के उपयोग में आयेगा तो भी जमीन होगी तो भी उसको उपयोग में आयेगी। तो काल यह एक अराजकता का आनेवाला है। ऐसे अराजकता के काल में जहाँ सुरक्षितता का ठिकाना न रहे तब हम–हमारा सहारा एक भगवान है। तब हमें टिका सके, हमें आधार दे सके, आश्रय दे सके ऐसा कोई तत्त्व हो तो यह भगवान है।

● समाज के पतन का कारण– पैसे का महत्त्व ●

पैसा आज जगत में पैसा वह भगवान हो गया है । बुरे में बुरा व्यक्ति, चारित्र में अधम व्यक्ति भी पैसे के कारण आगे है । महत्त्व पाता है । आज समाज में । रसिकभाई, आपको याद हो तो वडोदरा में केस हुआ था । एक महिला के साथ उसे । और उसे फेंक दी थी, मार डाला । वह भाई आज पैसे के कारण महत्त्व बहुत है । उसे कोई उसे इन्कार नहीं करता । सब यह महात्मा तो आगे बिठाते हैं, एक सभा में मैंने देखा है । स्वयं देखा है । और केस चला था । सजा हुई है उसे (डॉक्टर को) । परंतु आज पैसे हैं इसीसे साहब उसका महत्त्व है ।

आज कोई भगवान का या चारित्र्य का महत्त्व नहीं है । इतना समाज हमारा कितना पतन हुआ है समाज का वह दिखाता है । यह एक- यह एक थर्मोमिटर है । हमारे समाज का । कैसा समाज है हमारा ! उसका यह एक थर्मोमिटर है । **इससे पैसा- पैसे को महत्त्व, पैसे को परमेश्वर समझने वाला हमारा समाज है । उस समाज का पतन ही है । निश्चित ।** उसमें कोई शंका की बात मुझे लगती नहीं है । यह मैं कुछ घबराने– प्रत्यक्ष लक्षण बताकर कहता हूँ कि इस समाज का पतन ही होने वाला है । वह भी कब होगा कि यह अराजकता आयेगी तब । उथल-पुथल हर एक स्तर उथल Topsy-turvy हो जाने वाला है । उसमें मुझे बिलकुल शंका की बात नहीं लगती ।

● भगवान के प्रतिनिधि–
महात्माओं की सोबत विकसित करें ●

तब वह जो समय आयेगा उस समय हमारा सहारा क्या ? कि यह भगवान । अकेले भगवान हमें तब आश्रय दे सकते हैं । तब कि वह भगवान तो हमें दिखता नहीं । तब कि उसके– उसके representative प्रतिनिधि इस पृथ्वी पर हैं । ऐसे प्रतिनिधि ऐसे जो महात्माओं की सोबत है, उस सोबत में जिसने दिल लगा दिया है । जिसका दिल उनके साथ मिला हुआ है । वह एक उनका बड़े से बड़ा सहारा है । उस काल में वे हमें मदद देते हैं । मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है साथे प्रयोग के ।

इतना ही, नहीं परंतु १९३२ की साल में ये सभी जेल में । कोई भी नहीं मिलता । किस तरह यह पूरी संस्था चलाना ? पचहत्तर हजार, अस्सी हजार का खर्च । मुझे तो कोई पहचाने नहीं । परंतु यह भगवान ने चलाई है । बनी हुई हकीकत आपको कहता हूँ । मेरी तो यह बात किताबों में तो लिखी हुई ही हैं । इससे मैं ज्यादा विस्तार करता नहीं हूँ । परंतु दस महीने तक मैंने कुछ किया नहीं । भगवान ने मिला दिया । सरसुबा नवसारी प्रांत और यह बात सब पूरी लम्बी कहता नहीं, क्योंकि किताब में तो लिखा हुआ है मेरी यह हकीकत तो । परंतु उसने पूरे दस महीने तक पैसे दिये । जहाँ वे ले जाय वहाँ मुझे ले जाय । अनाज दिलाते और दस महीने तक ये सभी संस्थाएँ उसने चलाई है । तब वे भगवान कहते हैं—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

(गीता ९/२२)

तब यह तो अनुभव की बात है । हम अनुभव करते नहीं है । हम किसी अच्छे व्यक्ति के पाले में पड़े हों तो वह हमें निभाता हैं । हम यदि उसकी प्रेमपूर्वक प्रेमभक्तिपूर्वक उसकी यदि सेवा की हो, उसके प्रति वफादारी दिखाई हो तो ऐसे व्यक्ति हमें निभाते हैं । संसार में ऐसे चाहिए उतने उदाहरण हैं, तो भगवान क्यों नहीं निभाये हमें ?

● भगवान का सगुण और निर्गुण स्वरूप ●

तो यह जो भगवान है, वह साकार भी है और निराकार भी है । सगुण भी है और निर्गुण भी है । तब यह निर्गुण और सगुण । सगुण यानी कि किसी स्वरूप का दर्शन ऐसा नहीं । उस स्वरूप का दर्शन होता है जिसे जिसे जिस जिस प्रकार की भावना ।

त्यागराज स्वामी हमारे वहाँ अभी ही कोई बहुत लम्बा समय नहीं हुआ अभी । सौ वर्ष पहले ही वे शायद । तब सौ वर्ष पहले ही हुए हैं । इस हमारे ही देश में त्यागराज । उनको श्रीराम प्रत्यक्ष । उनका

इतिहास पढ़ो । उनका जीवनचरित्र पढ़ो तो श्रीराम उन्हें प्रत्यक्ष थे । और उसके समान कोई संगीतकार तो हिन्दुस्तान में पैदा हुआ नहीं है। कोई राग-रागिनी उसके उपविभाग– उसके उपविभाग उसके ही । उन्होंने अखूट किर्ती, न बनाई हो ऐसा है नहीं । आज भी दक्षिण भारत के संगीतकार तो त्यागराज को ही भजन उसके। तब वह तो प्रयोग किया है साहब, इतिहास की बात है न ? उसे राम प्रत्यक्ष थे । मीरांबाई को कृष्ण प्रत्यक्ष थे ।

तो वह जो स्वरूप है, उस स्वरूप का तो एक ऐसा आकर्षण है । वह आकर्षण फिर किसी समय टूटता नहीं है । उसके मन में से आकर्षण निकलता नहीं है । बिलकुल निकलता नहीं है । वह कुछ भी किया करता हो, परंतु वह आकर्षण उसके आगे ही आगे रहता होता है । इतना जबरदस्त आकर्षण है उसका । वह ऐसी वैसी बात नहीं है । और बहुत बड़ी बात है । वे भक्त उनके साथ बात भी कर सकते हैं । खेल भी सकते हैं ।

तो ऐसे जो भगवान का स्वरूप उसे भी मैं सगुण नहीं कहता । मैं तो सगुण क्या कहता हूँ कि **चेतन के जो गुणधर्म तादात्म्यभाव, साक्षीभाव, यह सब गुण हमारे जीवन में प्रत्यक्ष प्रगट हो और हम अनुभव करें, उसे मैं सगुण स्वरूप कहता हूँ । चेतन के गुणधर्म हमारे में प्रगट हो तब वह सगुण स्वरूप ।** और निर्गुण का तो कुछ कह नहीं सकते । शब्दों में निर्गुण कहे तो भी contradiction हो जाय । तो इतना आप कहते हो वह सगुण में ही आ जाता है । तब निर्गुण तो कभी कुछ बोलकर नहीं, सिर्फ अनुभव कर सके ऐसी स्थिति है । परंतु उस निर्गुण की अवस्था में व्यक्ति नहीं रह सकता । चाहे कितना अनुभवी हो तो भी उसे नीचे उतरना ही पड़ता है । उसे नीचे उतरने के बाद ही मनुष्य के साथ का उसका व्यवहार रह सकता है । उसे अवतरण होना ही पड़ता ।

● भगवान शंकर का प्रतीकात्मक रहस्य ●

तब कोई कहेगा कि भाई प्रत्यक्ष हमारे ऋषिमुनि बहुत सयाने थे । बहुत दीर्घदृष्टि । कि भाई हमें जिस लक्ष्य को प्राप्त करना है, उस ध्येय

का conception तो हमारी बुद्धि में प्रगट होना चाहिए न ? वह हमारा कैसा ध्येय ? कैसा हमें जो होना है वह कैसा है ? वह conception में हमारी– हमारी बुद्धि की समझ में आने के लिए भगवान शंकर का एक उदाहरण हमारे सामने– प्रतीक symbol रखा है ।

कि आप भगवान शंकर को देखो । तो कामदेव को जला डाला है और पार्वतीजी के साथ खेल रहे हैं । जाँघ पर बैठे हैं । अपनी दाहिनी जंघा पर बैठे हैं । पुत्र भी हुए हैं । दो contradiction है न ? वहाँ मेल हुआ । असुरों के स्वामी । उनके भूत, पिशाच, गण के स्वामी महादेव। आप किसी को भी पूछ कर देखो । और देवों के भी स्वामी । दोनों contradiction का जिसमें ऐक्य होता है । फिर स्वयं तो स्मशान में रहने वाले, भस्म लगाने वाले, निष्किंचन, परंतु उनका एक गण कुबेर तो विपुल स्वामी । लक्ष्मी का तो जिसे कहा नहीं जा सकता, अपार कल्पना में भी न आये । यह दोनों contradiction का जिस में मेल होता है । तब यह अनुभव की स्थिति । हमारे ऋषिमुनिओं ने रख दी कि ऐसा जब होता है, तब ही होता है । वही इस अवतरण को पकड़ सकता है । Decent of the Divine. यह जो गंगाजी सिर पर उतर रही है, वह तो प्रतीक है– Symbol है । यह जो Decent of the Divine वह तब अवतरण कर सके कि ऐसी स्थिति हो तब ।

• चेतनानिष्ठ में विरोधाभास का मेल होता है •

तो ही उसे पकड़ सके । शक्तिशाली ऐसा ही मनुष्य हो तब । वह हमें हमारे शास्त्रकारों ने समझा दिया की ऐसी स्थिति हो तब । वह अनुभव की स्थिति । परंतु हम कोई उसे स्वीकार नहीं कर सकते । हमारी ताकत नहीं है भाई । हमारी मानसिक ताकत नहीं है । हम उसे ऐसा आदमी । यह तो शास्त्रों में लिखा है और यह सब समझाया है । इससे हमें अच्छा लगता है और हम कबूल करते हैं । **परंतु प्रत्यक्ष ऐसा कोई मनुष्य हो तो । तो नहीं । साला लुच्चा है, यह तो । लबारी है, ऐसा ही कहेंगे हम । हम उसे स्वीकार नहीं कर सकते ऐसे आदमी को ।**

क्योंकि असुर का भी स्वामी और देव का भी स्वामी । तो असुर भी आये उसके साथ और देव भी हो । तो कि असुर हो तो हमारा ठिकाना ना रहे । हम अस्वीकार करते उसे । साला, यह तो ऐसा है । यह तो ऐसे सब हैं और उसके साथ और सब । अभी देव हो तो तो हरज़ नहीं । तो तो हमें अच्छा लगे । परंतु आसुरी के साथ खेलता हो और ऐसे करता हो तो हम उसे स्वीकार नहीं करते ।

अब भगवान शंकर की ही तरह ही वह निष्काम हो गया है । मनुष्य ऐसी तो हमें गारंटी नहीं होती । किस तरह हमें विश्वास हो ऐसे मनुष्य का कि वह निष्काम हो गया ऐसा ? परंतु ऐसे मनुष्य का विश्वास होता है । जगत में उसे ऐसे भी प्रसंग बनते हैं । ऐसे भी प्रसंग अपने आप उसके जीवन में प्रगट होते हैं कि उसका भी सबूत मिलता है । परंतु जिसे जानना हो उसे मिलता है । नहीं मिलता ऐसा नहीं है ।

तो हमारे शास्त्रकारों ने हमारे सामने प्रत्यक्ष सब रखा है कि जिससे हमारी बुद्धि स्वीकार कर सके कि **हम ऐसे महादेव के जैसे हो जाय तो हम में Decent of the Divine उतरेगा । इसके बिना नहीं** । तब यह विद्या । यह भी एक विद्या है । तब दूसरी सब विद्याओं को सीखने के लिए हमें कोई न कोई गुरु के पास तो जाना ही पड़ता है । बालमंदिर में पढ़ें, पहली में पढ़े, चौथी में पढ़े, मैट्रिक पास हुए । कॉलेज में गये । तो किसी के पास तो सीखते है न ?

व्यापार में भी ऐसा ही । किसी के पास सिखे बिना तो कोई विद्या हम जान नहीं सकते । सुतार की विद्या हो तो सुतार के पास जाना पड़ेगा । लुहार की विद्या हो तो लुहार के पास जाना पड़ेगा । हीरे की विद्या सिखनी हो तो जो शेठ बैठे हो, उसके पास सिखनी पड़ती है । कुछ भी सिखना हो, रसोई का सिखना हो तो किसी बहन के पास या मा के पास सिखना पड़ेगा । कुछ भी सिखना हो तो वह सिखाने वाले वह जो सिखने के लिए सिखना है, उसका जो जानकार है, उसके पास हम रहें और सिखें तो सिख सकते हैं ।

॥ हरिःॐ ॥

दिनांक २१-७-१९६८ के दिन कुंभकोणम् में गुरुपूर्णिमा के दिन पू. श्रीमोटा के साथ एक जिज्ञासु भाई की प्रश्नोत्तरी

● श्री हरिभाई का उद्बोधन ●

जिज्ञासु : अभी Reader's Digest में ...... नाम का लेख.... है। फिर उसमें ऐसा कहते हैं, व्यक्ति को वैसा हम साधारण रीति से जानते हैं कि कई बार ऐसा बनता है कि कम distance के अंदर या लंबे distance में भी कई बार ख्याल आता है कि मुझे उसने याद किया। उसके लिए उसने तीन-चार उदाहरण दिये। Reader's Digest में अभी। यह तो मानो कि ऐसी एक...... हम कहते हैं न कि ..... कि जो न समझ सकते हो या telepathy को न मानते हो ऐसे लोगों को भी ऐसा अनुभव हो रहता है कि जिससे करके वे लोग भी फिर मान्य कर देते हैं।

उस तरह ऐसा एक उदाहरण देता है कि एक महिला फ्रान्स में रहती थी। वह उसके बेटे के साथ अमेरिका शीप में गई। जब उसने अमेरिका में पैर रखा उसी समय वहाँ युरोप में युद्ध शुरू हो गया। इससे अमेरिका से वापस आने की संभावना न हुई।

वहाँ उसे एक दिन रात को सो रही थी, तब उसे एक स्वप्न आया। उस सपने में उसने देखा कि बहुत ही गुस्से में पेरिस के अपने घर तरफ वापस आ रही है। खुद जिस मकान में रहती है, जिस फ्लेट में रहती है, उस मंजिल पर बहुत जल्दी चढ़ रही है। गुस्से में और गुस्से में ...... वहाँ जाने के बाद उसने दरवाजा खटखटाया..... और उसी सपने में। जिस तरह दरवाजा खटखटाती है, उसी तरह एक आदमी खोलता है। तो स्वयं के फ्लेट में दूसरा आदमी, बिलकुल अनजान व्यक्ति, नाटा है ...... भाववाला है। और थोड़ा वयस्क है। उस आदमी

ने कहा कि ‘‘आओ।’’ ऐसा कहकर की ‘‘आपको किसका काम है ?’’ इससे वह उसकी परवाह किये बिना एकदम अंदर दाखिल होने का प्रयत्न करती है, तब वह व्यक्ति हाथ डालकर .... कि आओ अंदर और वह अपने घर में एक नई व्यक्ति के रूप में स्वागत पाती है और अंदर जाकर देखती है तो अपने फर्निचर में जो सब सजाया हुआ है, उस पर किसी पर चद्दर बिछाकर रखी है और कमरे के बीच एक ..... पड़ा है और उस तरह उसकी आँख में अचानक आँसू आ जाते हैं। एकदम गुस्से के कारण।

वह व्यक्ति जाग गई और देखती है कि ..... फिर भूल गई वह बात। तब वह लड़का है वह बड़ा हो जाता है। और लड़का युद्ध में खत्म हो जाता है। मर भी जाता है और युद्ध जब पूरा होता है। छ साल बाद जब वह महिला पेरिस वापस जाती है। तब वह जाती है, तब उसका जो अपार्टमेन्ट है, उसका जो अपार्टमेन्ट एक अमेरिकन ओफिसरने occupy किया हुआ है। इससे उसे खाली करके चले जाने के लिए फोन पर फोन करती है, परंतु वह दाद नहीं देता। वह उसे एपोइन्टमेन्ट देता है। इससे वह महिला चुपके से कमरे की ओर जाती है। और उपर चढ़कर वह दरवाजा खटखटाती है तो अंदर से बदमाश व्यक्ति खोलता है और उस आदमी का, उस व्यक्ति का चेहरा देखते ही उसे तुरंत .... होता कि छ साल पहले एक ..... कद के आदमी को देखा था। वह यही है। वह आदमी ...... नाटा और ...... और वाला और हाथ रखा जाय ऐसा है। वह गुस्से में ऐसा कहता कि आ अंदर ऐसा कहकर बुलाता है और गुस्से में दाखिल होकर देखती है ....

तो एक ही समय दो व्यक्ति .... बात करते है टेलीपथी काम करती है ..... जो वस्तु उस महिला को सपने में आने की संभावना ..... मैंने आपको पहले बात की थी। मुझे याद नहीं है, परंतु चाचा बीमार हुए ’५५ की साल में उसके पहले एक दिन रात को मुझे सपना आया कि जैसे कि दीवार से सहकर पलंग है और पलंग में चाचा नग्नावस्था में सोये हुए है और मैं पीछे से देखता हूँ और मैं जैसे कि रो रहा हूँ।

इसलिए कि अब मानो कि अभी .... जैसा समय आये तो जो होनेवाला है, वह होगा.... उतने में मैं जाग गया। जाग गया तब .... मैं रोता था, परंतु आँखो में से आँसू बह रहे थे। उस समय हुआ कि ऐसा सपना आने का कारण क्या ? उस समय वे बीमार नहीं थे और कुछ भी नहीं था फिर .... उसी प्रकार दीवार से सटकर पलंग था और हम चाचा को नहला रहे थे। उस समय ...... नहला रहे थे, तभी मुझे ख्याल आया कि यह दृश्य मैंने देढ साल पहले मैंने सपने में देखा और मैंने माँ से बात की थी। चाचा को तो बात नहीं की मानो कि— आपका मैंने ऐसा दृश्य देखा। परंतु वह दृश्य देखा, तब उस समय मुझे लगा कि यही दृश्य मैंने देखा है पहले। अब जो उस दूसरे अमुक प्रकार के दृश्य ऐसे जनरल .... होते हैं। परंतु यह तो मानो निश्चित हो।

उसी तरह चाचा को कुछ अनुभव हुआ कि एक दिन रात को सो रहे थे और नींद में उनका सपना आया कि एकाएक वह मानो कि बीमार हो गये हैं ..... और तीसरे दिन पत्र आया कि .... अकस्मात हुआ है और अस्पताल में हैं और अच्छे हो जायेंगे। आज जब ऐसा समझो कि उनको जो आया था सपना उस तरह उनको एक्सीडेन्ट भी हुआ था। यह बहुत समय पहले .... डेढ़ साल पहले मुझे ऐसा सपना आया था कि जो बना ..... पर का अनुभव है। उसकी possibility कहाँ से हो ? उसमें telephaty का तो कोई सवाल ही नहीं होता है।

श्रीमोटा : नहीं। नहीं। नहीं। नहीं।

जिज्ञासु : और future में जो ..... इस तरह होने वाला है, इस बारे में मुझे बताने कि किसी शक्ति को आवश्यकता लगी उसे क्या आवश्यकता ?

श्रीमोटा : ...... दो तीन तरह से इसका जवाब दिया जा सकता है और rationally यदि जवाब देना हो तो दूसरी हमारे सिवा कोई ऐसी शक्ति चेतन प्रकार की अंदर जुड़े बिना। तो हमारे स्वयं में एक सात प्रकार की ग्रंथियाँ पड़ी हुई हैं। थाइरोईड ग्लेन्ड, पीच्युटरी ग्लेन्ड, प्रोस्टेट ग्लेन्ड। यह तो अब अेलोपेथी से इतना सारा प्रमाणित हो चुका

हैं कि सात ग्रंथियाँ हैं। उनमें दिमाग के अंदर जो पीच्युटरी ग्लेन्ड है ..... दिन प्रतिदिन यह जो telepathy वह कहते हैं कि उसके पीछे भारी शक्ति है। यह पीच्युटरी ग्लेन्ड और उसे ऐसे उदाहरण भी बने हैं। जो ... नाम की किताब भी है। वह गिर जाता है, बाँधते बाँधते काम में। पीटर हरकोस उसका नाम। राज का काम करते-करते पाइट पर से ..... उसे उसका आघात लगता है। उसे उस पीच्युटरी ग्लेन्ड का। उससे कुछ विकास होता है और कुछ भी थोड़ा बदलाव उसके कारण इस साहित्य का सब जान सकता था। आदमीओं के विचार उस आदमीओं का कुछ बताया उसका कपड़ा स्पर्श कराये तो भी .... तब वह कोई आध्यात्मिक तो व्यक्ति था नहीं कोई।

तब यह हमारे में एक ऐसी शक्ति रही हुई है। यह शक्ति पीच्युटरी ग्लेन्ड है। इस पीच्युटरी ग्लेन्ड में से अमुक रस प्राप्त होते हैं। ग्लेन्ड सिर्फ। थाईरोईड ग्लेन्ड कहो। मामा को थाईरोईड ग्लेन्ड .... की इस प्रकार की एक .... शक्ति है। इस समय प्रोस्टेट ग्लेन्ड का भी ऐसा ही है। यह जो वीर्य की शक्ति कहो, तेजस कहो तो एक प्रकार की दृढता, अटलता, मानसिक शक्ति यह हमारे प्रोस्टेट ग्लेन्ड का स्थूल जैसा है उसका कार्य प्रोस्टेट ग्लेन्ड का वैसा सूक्ष्म भी इस प्रकार का उसका कार्य है। दृढता the power of determination, दृढ़ता अटलता, तेजस वह सब प्रोस्टेट ग्लेन्ड का functioning। उस तरह पीच्युटरी ग्लेन्ड इतनी सारी ..... even the past, even the future कि उसी समय उसके ख्याल में वह आ जाता है। क्योंकि सब को क्यों नहीं होता और हमें होता है ? यह सवाल होता है न हमें ? तब यह एक ..... एक समझने जैसी बात है, इसमें कि व्यक्ति गहरा सोचे कि यह दूसरे सब को नहीं होता। और हमें होता है। तो हमें हो तो सही न क्योंकि उसे और साबित हुआ फिर। वैसे तो हम कल्पना से यह मान लेते हैं। इसमें बिलकुल कल्पना की बात नहीं है। Reality की बात है इसमें। परंतु दूसरे लोगों को न हुआ और हमें हुआ तो यह बताता है कि एक प्रकार की ऐसी एक भूमिका हमारी है कि इस मार्ग पर आगे बढ़ सके ऐसी भूमिका

हमारी है सही । तब उस भूमिका को विकसित करने की हमें सभानता नहीं रहती है । यह साबित कर देता है ।

अमुक मनुष्यों को । मुझे भी इस बचपन से ही हिमालय के सपने आते और सब दृश्य देखता । और पहली बार तो गया, तब जो जो मैंने दृश्य देखे उन स्थानों पर .... करके भी मैं गया था वहाँ और मुझे लगा कि यही दृश्य बचपन में मैं देखता था । तब भी मुझे तब मुड़ा तब मुझे आई सभानता और हुआ कि यह एक एक प्रकार की tendency जो है, वह मेरे इस मार्ग में बढ़ने के लिए एक भूमिका रूप से है, वह मुझे तब समझ का एक प्रतीक के रूप में जागृत हुआ ।

इससे अभी जो घटना हो रही है, वह एक हमारे अपने में ही ऐसी शक्ति रही हुई है और वह शक्ति थोड़े बहुत अंश में इस प्रकार की है कि थोड़े बहुत अंश में भी विकसित हुई है और इसमें मुख्य ग्लेन्ड पीच्युटरी ग्लेन्ड बहुत बड़ा रोल अदा करती है । यह पीच्युटरी ग्लेन्ड वह हम समझे उसे हम सिर्फ स्थूल ही जानते हैं । वह दीखती है । आप disection करो तो आपको ग्लेन्ड निकाल कर दे सके । थाइरोईड ग्लेन्ड निकाल दे सके । प्रोस्टेट ग्लेन्ड निकाल कर दे सके । ऐसी सात प्रकार की ग्लेन्ड हैं । अनेक प्रकार की ग्रंथियाँ हमारे शरीर में, उसे disection करके खोजी हैं उन लोगों ने । अब उस पर विशेष वे लोग संशोधन करते जा रहे हैं कि इस शरीर के लिए ही यह ग्लेन्ड का काम है या उससे विशेष प्रकार का है और जैसे जैसे संशोधन करते हैं । वह कोई सिर्फ शरीर के लिए नहीं है ।

ये जो ग्लेन्डस हैं । उसका शरीर पर्याप्त तो संबंध है । उससे भी कुछ विशेष ज्यादा उसका functioning है । काल्पनिक स्थिति एक प्रकार की । उससे यह सब जाना जा सके इतनी सारी पीच्युटरी ग्लेन्ड की शक्ति है । तब वह कुछ अंश में हमारे में कुछ थोड़ी बहुत भी थोड़ी सी तिल जितनी कहे तो । क्योंकि हमें बारबार ऐसा नहीं होता । जीवन में दो-चार बार या पाँच बार ऐसा हुआ हो तो हमारा जीवन तो कई वर्षों तक टिका हुआ है । उसके वर्ष के हिसाब में दो-चार बार आये हो तो कोई

हिसाब ही नहीं .... क्षुल्लक कहा जायगा । तो यह तो विश्लेषण के अंश में हमारी पीच्युटरी ग्लेन्ड विकसित हुई है वैसा यह साबित होता है । ऐसा यह साबित होता है, वही बताता है कि हम इस मार्ग पर अभिरुचि को विकसित करें तो विकास होने की बहुत बड़ी संभावना है । यह तो मानो कि किसी तीसरी व्यक्ति के बीच कुछ .... अंश में Divine Power को दूसरे के बीच जुड़े बिना यह मैंने समझाया ।

अब एक दूसरी भूमिका । क्योंकि अकेला .... दोनों में पहलू नहीं समज सकते । और उसे हम अनुभव कर सकते हैं ।

अब एक दूसरा प्रश्न लेता हूँ । ये नंदुभाई यहाँ बैठे थे । मौन में । और यह युद्ध सेकन्ड वर्ल्ड वोर हुआ, तब यह खबर नहीं थी । और उन्होंने पेरिस ज्वालाओ के साथ जलते देखा था । पेरिस । नंदुभाई ने मौन में । उन्हें स्वयं को अनुभव है । क्योंकि अंदर तो उसे कुछ खबर ही नहीं थी । कि वे अखबार इत्यादि तो वे पढ़ते नहीं थे । वह तो उसने लिखा कि ऐसा हुआ । उसने देखा प्रत्यक्ष ।

इतना ही नहीं, परंतु कहाँ उनके भाई मर गये थे, वे कीकाभाई थे । बंसीभाई थे । बंसीभाई नहीं थे । उनके सगेभाई... हाँ .... यह... उनकी पत्नी का देहांत हो गया होगा और चिता जल रही है । सब गये होंगे और वह भी उन्होंने .....

जिज्ञासु : ....

श्रीमोटा : नहीं उनके भाई ।

जिज्ञासु : नंदुभाई के ।

श्रीमोटा : बंसीभाई । वह भी उन्होंने देखा था ।

जिज्ञासु : बंसीभाई के पत्नी का देहांत हो गया ।

श्रीमोटा : मर गये और चिता जल रही है, वह सब भी प्रत्यक्ष देखा था । उसने सब ..... रखा ही होगा न । लिखा है कि यह सब देखा था । तब उस समय वह एक ऐसे मौनरुम में एक चेतना का वातावरण है । हमारे वहाँ भी है वातावरण ऐसा । बहुत सालों से—बहुत समय से देखता हूँ कि एक यह भगवान का स्मरण होता होगा वह बिलकुल उसकी तरंगे कहाँ से कहाँ हो और एक वातावरण.... हो जाय ।

अनेक व्यक्ति हमारे यहाँ आते हैं । मौनमंदिर में । किसी दिन पूरे जन्ममें भी नाम नहीं लिया हो । परंतु ऐसे व्यक्ति बारह-बारह घंटे तक चौदह घंटे, सोलह घंटे ज्यादा से ज्यादा आया है । परंतु बारह घंटे या ग्यारह घंटे तो एवरेज कह सकते हैं । होता है । अनुभव नहीं होता है, उसका कारण कि continuity नहीं है । अखंडता नहीं है उसकी ।

यहाँ अनेक लोग बैठते हैं । मामा या कोई बैठे तो तो जो नहीं होता है, उसका कारण कि वैसा वातावरण जमा नहीं है । यहाँ अखंड हुआ करके तो उसकी एक तरंग को एक वातावरण वहाँ रहा करता है । तो हमारे वहाँ आश्रम में भी अनेकों को होता है ऐसा । ऐसा हो सकता है । तब एक यहाँ अलग तरह से ही हमें सोचना पड़े । प्रत्येक ...... हम जो सोचे वह बात अलग । यहाँ एक बात अलग । यहाँ एक प्रकार का चेतना का एक वातावरण .... गया है और वह एक समय उस तरह भाव की स्थिति में हों । भजन करते सो गये हों । भगवान का नाम लेते लेते । उस तरह बहुत साधन कर सकते हैं । ध्यान यह तो ..... ये सब साधन भी करते, तब एक भाव की स्थिति जागृत हो जाय और आँख खुल जाती है । आँख खुल जाती है वह .... इतनी उसके साथ के हमारे उस समय के एक संस्कार । हमारे में तो पड़े होते हैं सब के । कई सारे । वह संस्कार जाग गया तो वह संस्कार प्रत्यक्ष हो जाता है । आकार ले लेता है । उस तरह एक इसका संबंध अभी .... साथ में होने से इस प्रकार की संभावना हुई ।

अब एक दूसरी दृष्टि ...... अब एक तीसरी दृष्टि ली कि यह तों पहले से जो घटना बनती है, वह तो पाँच-छ वर्ष बाद बनती है और पाँच-छ वर्ष पहले अनुभव होता है यह तो । तो उसका किस तरह ? उसका समन्वय किस तरह करना हमें ? तो प्रत्यक्ष हमें आज हुआ और आज का आज हमें भान हुआ तो तो फिर भी समझ सकते हैं । किन्तु पाँच-छ वर्ष पहले से यह तो घटी हुई घटना है । तो उसका समन्वय किस तरह करना ? उसको समझाता हूँ ।

कि हमें हमारे जो हैं । हम जी रहे हैं काल और स्थल की दुनिया में । Time and space । किन्तु Time and Space वह relative है ।

वह तो आज साबित हुआ है । Relative है वह तो हमने ... साबित किया है और बड़े सब सायन्टीस्टों ने फिर इससे हम मान लेते हैं । हमें कुछ उसके ..... अनुभव नहीं है । किन्तु यह भी स्वीकार कर लेते हैं कि नहीं यह बात सच्ची है कि relative । तब वहाँ कोई आगे या पीछे कुछ भी है नहीं Time में । तब ऐसा कुछ आंतरिक या शायद जब कि छ वर्ष पूर्व उस महिला को आदेश दिया उसने .... फिर भी हरज नहीं । तब उस समय उसे क्या हुआ होगा ? सामान्य रीति से तो व्यक्ति को होता नहीं हैं । कि कुछ उसके दिल में किसी प्रकार का .... हुआ होना चाहिए । कुछ । जैसे यह ..... तो अमुक प्रकार के अमुक अमुक .... हो तो ..... योग्यता वाला उसे । यदि यह पूरा सभी को और स्वयं ...... तो उस तरह की पोजीशन उस तरह का फिर उसे जमाना भी है । सब किया हो तो ही आये ।

तब इस महिला को छ वर्ष पहले से ही यह जो दिखा था, तब हमारे ..... तब मानो कि उसके being में कुछ change हुआ होगा । सामान्य यदि हो सपने में भी ऐसा नहीं आयेगा । तो कुछ change हुआ होना चाहिए उसके being का । सो रही होगी, परंतु सोते हैं, तब शरीर सोता है । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् ये सब कोई सोते हुए नहीं होते । वे तो जागते ही होते हैं । यह तो हम बुद्धि से भी कबूल करेंगे । नहीं तो हम देखेंगे किस तरह दृश्य? उस समय सब आदमीओं से मिलते हैं, देखते हैं, करते हैं ...... परंतु अंदर से सब हमारा मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् इत्यादि सभी जागते होते हैं । तब वह जो change होता है, तो change क्यों हुआ उस पर सब हम आते हैं ।

किसी प्रकार का change हुआ, तब यह जो एक उसे Super Natural Power तो न कहें, परंतु कुछ हमारे से सविशेषरूप से ऐसी कोई शक्ति के कारण जो यह छ साल पहले का जो देख सकते हैं । तब कुछ change उसे हुआ होना चाहिए । तब वह जो change होता है । हुआ हैं उसमें, तब किस कारण से हुआ, उसे यदि हम सोचें तो सपना तो है ही । यह तो आपने बात कही उस पर से कहता हूँ । तो

वह सपना तो है ही । तो सपने का संबंध हमारे .... पहले के साथ तो है ही न ! तो उसे घर का, उसके स्वयं के घर का जो ममत्व है । घर के साथ का राग है, मोह है, वह उसके चित्त में पड़ा हुआ है ।

अब उसे जब किसी कारण से बैर हुआ हो, कुछ भी हुआ हो । मानो उसे किसी कारण से अब उसे सख्त मानसकि चोट लगे हमारे मोह की, राग की । अंदर । किसी कारण से । तब दिन के समय में तो पूरा सब हमारा मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् सब अनेक प्रकार की प्रवृत्ति में व्यस्त ही होता है और हमें स्वयं हमारे स्वंय के बारे में सोचने का अवकाश होता ही नहीं है । मनुष्य को यदि सोचे ...... सही तरीके से देखो तो अच्छा statement (विधान) सच लगेगा । क्योंकि हम इतने सारे हमारे ..... हमारे ..... हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् पूरी प्रवृत्ति में व्यस्त रहते हैं कि हमारे स्वयं में कैसे कैसे स्तर हैं, कैसे विकार हैं ... राग है, कितना मोह है, यह सोचने का मनुष्य को अवकाश ही रहता नहीं । बिलकुल । और वहाँ अवकाश होता ही नहीं है ।

तब दिन के समय में तो आ सके ऐसा नहीं है । क्योंकि उसका मनादिकरण तो प्रवृत्ति में व्यस्त रहता है । उसे उसके राग .... की मानसिक चोट चाहे लगी होगी । परंतु इस प्रवृत्ति में व्यस्त होने से वह वहाँ manifest होता नहीं है । रात्रि में होता है । रात्रि में कोई प्रवृत्ति में व्यस्त नहीं होते हैं । इससे जो पड़े हुए संस्कार हैं, उसे जो मानसिक चोट लगती है और उसके साथ । परंतु मानसिक चोट तो कइयों को लगती हो, उसे अकेले को नहीं । अनेकों को लगती है । अनेकों को ऐसा दर्शन होता नहीं । यह फिर एक फर्क है । तब एक मानसिक चोट है । एक कारण है । कुछ ना कुछ । हम । उसने भले लिखा न हो ।

हमारा चित्त । हमारी चित्तवृति हमारा एक तंत्र वह चित्त । उस तंत्र के उदय अनुसार रात्रि में हमें जो सपने आते हैं । उसमें भी किसी न किसी प्रकार के दिन के .... दिन के समय में हमारी प्रवृत्ति में किसी न किसी प्रकार के मानसिक रूप से, इस तरह से, उस तरह आघात–प्रत्याघात हुए हो– होने के कारण ही रात को हमें ये सपने आयेंगे । ये

सपने अलग-अलग आते हैं । संकर हो जाते हैं । खीचड़ी उसमें हो जाती है । अनेक ये सब बाबत इकट्ठी हो जाती हैं । उसका भी सायन्स है एक । उसका आंकलन किया जा सकता है ।

तब उस तरीके से उसे कोई मानसिक चोट लगी हुई है । परंतु उसे यह दिखता है इस तरह का । उसमें उस मानसिक चोट में वह .... वह जानती नहीं है कि भविष्य में मैं जाऊँगी । यह देखूँगी और ऐसा है वह भी नहीं है । उसने सिर्फ एक ऐसा सपना देखा । वह सपना बाद में उसे मालूम पड़ता है कि यह reality थी । बादमें यानी कि छ साल बाद उसे मालूम पड़ता है तब वह । वह जो reality उस समय एक स्वप्न ही थी । परंतु सही रूप में थी reality । तब उसे मूल कारण सपने का । कारण कि आघात-प्रत्याघात दिन की प्रवृत्ति में होते हैं । वह संक्षुब्ध-क्षुब्ध-क्षुब्धता आ जाती है, तब एक क्षुब्धता.... आघात-प्रत्याघात हुए तो उसका संबंध है, हमारे मन के साथ, दिमाग के साथ, हमारे ज्ञानतंतुओं के साथ । जैसे हमें क्लेश हो, शोक हो, हर्ष हो, आघात लगे । यह होता है उन सभी को संबंध है हमारे ज्ञानतंतु के साथ ।

यह तो मैं सब बिलकुल बरतकर कहता हूँ । किसी प्रकार का आपको तर्क—मेरी falacy हो तो मुझे कहना । आपके मन में । ऐसा नहीं कि **मोटा** को कैसे कह सकते हैं ? तब यह .... इस .... इस ज्ञानतंतु के साथ संबंध होता है । हरएक को । तब इस ज्ञानतंतु का संबंध है, उसे दिखाता है । अब वह ज्ञानतंतु का संबंध यह जो हमें यह जो हमारे दिमाग में । हमारे में ये सब ज्ञानतंतु की .... ऐसे ज्ञानतंतु के भी अलग-अलग चैतन्य और सब .... ये सब गठाने होती है वहाँ । जैसे थाईरोईड ग्लेन्ड... ग्लेन्ड कहते है उसे । ग्रंथि । गठाने नहीं कही जायगी । ग्रंथि । इस प्रकार की ग्रंथि है । वे ग्रंथि यह सभी जो ज्ञानतंतुओं की ही ग्रंथियाँ हैं .... और वहाँ यह पिच्युटरी ग्लेन्ड रही हुई है । और पिच्युटरी ग्लेन्ड के साथ जो ज्ञानतंतु जुड़े हुए हैं परंतु जो कोई उसके इस तरह ज्ञानतंतु जुड़े हुए है जो टाईम और स्थल के साथ जुड़े हुए हैं । तो कि उसकी साबिती क्या ? ऐसा कोई कहे तो हम मना नहीं कर सकते । क्योंकि disection करने से आ सकते नहीं ।

जिज्ञासु : वे disection करने से नहीं दिखते वे ।

श्रीमोटा : क्या ..... ?

जिज्ञासु : Abstract being है ।

श्रीमोटा : Abstract है । तत्त्व है । तत्त्व यह । तब तो पिच्युटरी ग्लेन्ड है जो उसके साथ इस प्रकार के ज्ञानतंतु । क्योंकि मुझे आपकी तरह ऐसे साधना के काल में अनेक सपने आते थे, इतना ही नहीं, परंतु actually मुझे साधना का .... तब पहले मैं ऐसा समझता कि साला सपना यानी मिथ्या ऐसा हो गया । तो मैं कुछ उस पर ध्यान देता ही नहीं था । तब लगातार पाँच-सात दिन तक एक का एक संपूर्ण detail के साथ आया करता था । साला, एक का एक क्यों आया करता है ? ऐसा विचार होता है न ?

हमारा शरीर है, वह शरीर स्थूल भी है, सूक्ष्म भी है और कारण भी है । तीन प्रकार के शरीर हमारे में हैं । उस तरह हमारे में जो ज्ञानतंतु हैं । वे एक हैं वे स्थूल । वे शरीर की अंदर, रगों की अंदर सब तरह से, उससे छोटी से छोटी रगों में बाल जितनी हैं । बाल से भी छोटी से छोटी रग हो ये ज्ञानतंतु हैं । और उसे देख सकते हैं । उससे भी यह ज्ञानतंतु भी सूक्ष्म हो । और कारण है वह तो abstract है । शरीर भी कारण शरीर तो बिलकुल abstract और सूक्ष्म शरीर है । उसका आकार है किन्तु ...... कारण उसका प्रमाण भी हमारे लोगोंने दिया है । अंग्रेज सरकार में हाथी हो या मानव हो या बड़ा हो, परंतु उससे विशेष नहीं । ऐसा सूक्ष्म शरीर भी हमारे में रहा हुआ है । किन्तु ये सब एकदूसरे के साथ जुड़े हुए हैं । एकदूसरे के साथ इतने सारे जुड़े हुए हैं कि एकदूसरे के साथ का संबंध कायम है ।

उसी तरह ये जो ज्ञानतंतुओं, ज्ञानतंतुओं के द्वारा ही शरीर को यह सब समझ हमें है । जो कुछ बाबत की, व्यवहार की बाबत की कहो, संबंध बाबत की कहो । हमारे काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, अहंकार उस बाबत की भी । सब तरह की समझ इन ज्ञानतंतु के कारण ही है । चाहे उसे किसी को पूछकर देखो । तो वह बात बिलकुल सच

है । तो इस तरह ये जो ज्ञानतंतु जो हैं । वे जो स्थूल हैं । बाल से भी छोटे छोटे परंतु सूक्ष्म सही । उसके अलावा भी ये सब ज्ञानतंतु जुड़े हुए हैं हमारे दिमाग में । और वह पिच्युटरी ग्लेन्ड के आगे-पीछे उन सब की रचना है सब और यह जो-जो यह जो स्थूल रीति से है, और सब सूक्ष्म ..... वे हैं वे अनेक प्रकार के हैं । अब ये जो Time and Space के भी ज्ञानतंतु । उसकी भी समझ हमें ज्ञानतंतु के कारण ही पड़ती हैं । तब वे भी पिच्युटरी ग्लेन्ड के साथ जुड़े हुए हैं ।

तो अब एक सवाल ऐसा है कि काल है । वह काल आप जो सपने में देखो तो आप प्रत्यक्ष उस काल का अनुभव करते हो तो वह बात हुई हो कई वर्ष पहले । सपने में आप देखो तो सामान्य रूप से प्रत्येक मनुष्य को .... प्रत्येक मनुष्य को हो चुकी बात .... कि दो-चार दिन की हुई बात या उस दिन की हुई बात ज्यादा से ज्यादा तो वह भी एक .... परंतु ज्यादातर मनुष्य को यह सपना होता है वह यह .... है अब वे हो चुकी सभी हककीत हो ।

जिज्ञासु : इस लाईफ की ?

श्रीमोटा : इस लाईफ की भी हो । उस लाईफ की भी हो । वे जुड़ी हुई होती हैं । इस लाईफ की भी । परंतु वह opening हुई होती है तब .... और opening हुई हो । हो तो उस लाईफ की कोई भी एक आती है । परंतु हमें opening न हुई हो तो हमें कोई भी एक कितनीक हकीकतें पूर्व के जीवन की प्रत्यक्ष होती है । और at least संस्कार रूप से तो होती हैं । तब उनका देखो तो उनके टाईम-स्थल से संभाली हुई होती नहीं है ।

बहुत साल पहले की घटना हो चुकी हो, वे संस्कार पड़ चुके हो, वे आज सपने में जागृत होते हैं । तब सपने में Time and Space मं यदि आप देखो तो सब प्रकार से आपको मालूम हो जाय वैसी हकीकत है । परंतु उसमें होता है क्या कि हो चुके हो, भूतकाल की बात आती है । भविष्यकाल की बात आती नहीं । सामान्य रूप से । सामान्य रूप से भविष्य काल की बात नहीं आती । बहुत कम .... शायद ही आती

है । परंतु वह हम वह .... वह उसकी हमें समझ संपूर्ण रूप से हो । उसका मूल किस तरह समन्वय किस तरह कर सकते हैं वह हम देखें ।

तब इससे हम देखते हैं कि सपने में समय में भूतकाल में बन चुके हो । आज हम प्रत्यक्ष देखते हैं । इससे काल-काल की पेटी में है वह जैसे इस तरह की संभावना है और हम प्रतिदिन के हमारे experience से अनुभव से जानते हैं कि यह तो बहुत काल पहले ऐसा हुआ था । परंतु आज हमें दिखा । तब पहले की .... भूतकाल की हो चुकी जैसे आज दिखती है तो भविष्य का भी हम देख सकते हैं । यह बन सके वैसी एक possibility है, ऐसी मान्यता पर अब हम आ सकते हैं । यह possibility है ऐसा मानना पड़ेगा । क्योंकि जो भूतकाल की संभावना । भूतकाल में हो चुकी है । वे संस्कार पड़े हुए हैं । उसका recording हो चुका है । वह जो हुआ परंतु उसमें से मूल बात हम लाना क्या चाहते हैं कि काल .... काल । बहुत वर्षों पहले हो चुका वह आज हम देख सकते हैं । उसका recording हो चुका है वह बात पक्की । उसका recording हो चुका था । तब recording हो चुका होते हुए भी बहुत सालों पहले की बात आज हम देखते हैं । तब वह काल जैसे सपने को उड़ाता है । पहले भूतकाल को आज प्रत्यक्ष करने की शक्ति है तो वह भविष्यकाल के लिए भी वह संभावना हो सके उतना हम possible है उतना हम मानें ।

फिर अब आगे विचार ज्यादा करते हैं । परंतु इतना मानने में हम कुछ अत्युक्ति करते हैं या कल्पना दौड़ाते हैं ऐसा कुछ नहीं है । तो हमारे अंदर यह जो पिच्युटरी ग्लेन्ड है उसकी शक्ति भारी । हालांकि आध्यात्मिक विद्या में भी ऐसी शक्ति है । परंतु वह खर्च नहीं होती ।

एक दूसरी एक ऐसी विद्या है, जो संजय को प्राप्त हुई थी । संजय को प्राप्त हुई थी वह ऐसी एक विद्या है, वह धृतराष्ट्र के पास बैठे बैठे वहाँ देख सकता था । युद्ध देख सकता था और कहा करता था । धृतराष्ट्र को । वह आज टेलिविझन की भी आज वही शक्ति है । और यह नया

हो गया है सब । टेलिविझन । उसके भी वेव्ज भेजता है । तब यह जो विद्या है, वह विद्या जैसे जैसे आगे बढ़ती है आध्यात्मिक, आत्मा के प्रदेश में, तब आत्मा के प्रदेश में Time and Space नहीं है । बिलकुल नहीं है ।

जिज्ञासु : .....

श्रीमोटा : .... हो सकता है ।

जिज्ञासु : .... लेकिन हो जाते होंगे ।

श्रीमोटा : हाँ ...... परंतु हो जाते हैं । परंतु यह तो possibility की बात की । परंतु हम actually reality पर आये ।

जिज्ञासु : ....

श्रीमोटा : यह reality पर इसलिए होता है उसे कि यह अपने स्थल पर ममत्व है एक प्रकार का । उसे कोई न कोई कारण से ... कहे, उस कारण से कि यह सब तूटफूट जाएगा । कोई भी कारण से । कोई कारण उसने दिया भी नहीं है और हम जानते भी नहीं है । परंतु कुछ उसे मानसिक चोट पहुँची होगी । औक इतना सारा सख्त आघात जब हो जाता है । किसी समय तब उस आघात के कारण मनुष्य .... जैसे .... जाता है । कई बार जब बहुत आघात होता है, मनुष्य मूढ़ हो जाता है । मूढ़ । जड़ जैसा हो जाता है ।

उस उसकी वर्तमान स्थिति से बिलकुल अलग प्रकार की स्थिति हो जाती है .... हो चुके हो ऐसे हम मनुष्यों देखते हैं । तो उसी तरह ऐसा जब आघात लगता है, तब अंदर का कोई करण तब उसे खुला हो जाता है । उसे पिच्युटरी ग्लेन्ड कहो, कुछ भी कहो, परंतु उसे किसी ऐसे उस आघात के कारण से । हमारा.... हमारे शरीर के अनेक केन्द्र हैं । Knowledge का भी केन्द्र है । ज्ञान का भी अंदर दिमाग में केन्द्र है । उस आघात के कारण कुछ खुलता है और खुले .... वह खुलता है जब, तब Time and Space वहाँ पर होते नहीं हैं ।

ऐसे पुरुषो कें अनेक अनुभव भी है । तब Time and Space रहते नहीं होने से पीछे की घटना का जिस पर हमारा ममत्व है, जिसके कारण

आघात लगा है, वह बीच में उसे दिखता है । प्रत्यक्ष । तब वह प्रत्यक्ष इसके कारण उसे उस समय होता है । मूल में तो उसे आघात लगा होना चाहिए । यह मेरा अनुमान है । उसने कहा होता तो तो विशेष विश्वासपूर्वक कह सकता । वह अचाक कुछ कोई विचार अंदर उसे उस प्रकारका विचार हुए बिना । पानी को तालाब का पानी एकदम स्थिर हो । पत्थर डालने पर कुँडरें होते हैं । उसके सिवा तो हो सकते नहीं । इससे किसी भी प्रकार की ऐसी उसके मानस में कोई हलचल हुई होनी चाहिए । उसे जो सपना उसे जो आया अनेक सालों बाद जो दिखने वाला स्वयं है उसकी बाबत को जो सपना आया । उसके बारे में उसे कोई आघात या कोई हलचल हुई होनी चाहिए उग्र प्रकार की । और उसे ऐसे आघात के कारण अंदर का कोई करण कोई ऐसा करण खुल जाय अथवा तो वहाँ .... कहें और उसके कारण Time and Space .... जाय ।

यह स्थिति । उस स्थिति के अंदर Time and Space है नहीं होते हुए भी । Time and Space में होते हुए भी, वे होते हुए भी उसकी मर्यादा नहीं है । उसकी काल और स्थल की .... उसे अनुभव से यह experience होना ही चाहिए । **अनुभवी पुरुषों को । उस स्थान पर नहीं हो, फिर भी कोई निमित्त प्रगट हो तो वह सुरत में प्रत्यक्ष हो सकता है वह । और नड़ियाद में प्रत्यक्ष या अमेरिका में हो सकता है । या मंगल में हो सकता है । शुक्र में या पूरे ब्रह्मांड में प्रत्यक्ष हो सकता है वह । वहाँ जो जो परिस्थिति हो, जिस तत्त्व अनुसार की उस अनुसार होगा ।** पृथ्वी में तो पाँच तत्त्व अनुसार हो सकता है । प्रत्येक स्थान पर अलग-अलग तत्त्व predominant होते हैं । हमारें यहाँ जल और पृथ्वी ये दो predominant । हमारी पृथ्वी पर । दूसरे ठिकाने अलग-अलग तत्त्व predominant । उदाहरण के लिए सूर्य हैं, वहाँ तेज predominant । तब दूसरी जगह अलग-अलग तत्त्व predominant हो, उस तरह जिस जगह जो तत्त्व predominant हो उस तत्त्व के अनुपात में वहाँ वह हाजिर रह सकता है ।

तब Time and Space उन लोगों को नहीं है। Time and Space में रहने पर भी नहीं है। यह अनुभव हुए बिना संपूर्ण ज्ञान उसे अनुभव हुआ है नहीं कह सकते।

जिज्ञासु : मानो किसीको कोई एक व्यक्ति उस संसारी व्यक्ति को जो आध्यात्मिक ज्ञान में .... गया। उसे यह पिच्युटरी ग्लेन्ड के कारण कहो या किसी भी आध्यात्मिक कारण से भी उसे एक flash कुछ दिखा। flash हुआ। तो उसमें से एक यह भी possibility साबित हो सकता है न कि अमुक व्यक्ति का उस लाइन में आगे जाने का कारण यह कि flash के कारण से उस flash की उन लोगों को continuity हुई है।

श्रीमोटा : बराबर है। बेशक। अब ..... परंतु सच तो मनुष्य की तरह व्यापारी लाभ देखे या न देखे ? कि साला, पाँच पैसे मिले। तो जिस तरह मनुष्य को extraordinary एक सर्वसामान्य से किसी अनोखे प्रकार का एसा जब उसे अनुभव होता है, तब उसके बारे में मनुष्य को ज्यादा सोचना चाहिए कि इस कारण से मुझे हुआ तो मेरी कोई संभावना सामान्य से कोई विशेष होनी चाहिए। यदि मनुष्य गहरा सोचे तो, क्यों सब को क्यों नहीं होता ऐसा ? नंदुभाई को तो मौन में हुआ कि मौन के वातावरण के कारण एक मानो। आपको कोई मौन का वातावरण था नहीं। उस महिला को वातावरण था नहीं। तब वह हुआ उसमें एक प्रकार की विशिष्टता क्या है ? किस कारण से ऐसा हुआ ? उसके मूल में उतरें हम यदि तो यह समझ में आता है कि ऐक ऐसे प्रकार की possibility हम में है कि इस तत्त्व को हम विकसित कर सकते हैं। जो बीजरूप से बीज है। तिल है उसके सौ वे भाग का कह सकते हैं, उससे भी कम कहे तो भी हमें एतराज नहीं है। तब था यह हमें साबित हुआ है।

तब यह साबित हुआ है यह बताता है कि किसी काल में divine सत है हमारे में। हाजिर रहा हुआ है। इस प्रकार के संस्कार रहे हुए हैं। इस प्रकार का ...... रहा हुआ है। तब यह possibility है, उसे क्यों न विकसित करें उस तरफ ध्यान नहीं जाता हमारा। उसका महत्त्व जागा नहीं है। बहुत ही एकदम। कुछ नहीं। एक सपने की तरह निकल

गया। परंतु उसका ordinary नहीं है। यह ordinary नहीं है। यह हमारी बुद्धि कबूल करती है। नहीं कबूल करती ऐसा नहीं है। परंतु फिर भी उसका विशिष्ट तत्त्व, उसका महत्त्व हमारे मन में जागा नहीं है। इससे खत्म। फिर समाप्त।

कुछ आया आपको जगाने के लिए कि देखो भाई! है यह शक्ति। परंतु हम जागते नहीं है। इससे निकल जाता है। उस एक आदमी को। अंधा आदमी एक यह जिस दरवाजे में प्रवेश करेगा उसे राजगद्दी मिलेगी। तो घुमते घुमते आया। तो जहाँ दरवाजा आया वहीं पर खुजली चडी उसे। दरवाजा चला गया।

तब किसी पल ऐसी divinity जागेगी। हमारे में भगवान की कृपा से कोई पल ऐसी प्रत्येक मनुष्य को जागती होती है। किसी के कोई भी बाकी नहीं। मनुष्यमात्र को कोई एक पल ऐसी जागती होती है। उस पल का फिर मनुष्य विचार करता ही नहीं। उसका महत्त्व उसमें जागता नहीं है। कुछ भी नहीं वह मनुष्य जागे, मनुष्य सोचे तो उसे लगे बिना रहेगा नहीं।

मनुष्य सोचे। मनुष्य ऐसा सोचे कि यह मेरी बुद्धि से करता हूँ, मेरी चतुराई से करता हूँ तो बुद्धि तो चतुराई अनेक में होती है। वह तो खाली विचार .... होता है। अहम् उसे होता है। बुद्धि से सब होता रहता है ऐसा भी नहीं होता। तब बुद्धि की अपेक्षा, बुद्धि जिसके हुक्म में है........... वाला कोई ऐसा expression व्यक्तव्य हमारे जीवन में प्रगट हुआ कि जो ऐसा out of ordinary या सामान्यरूप से कोई एक अलग ही अनोखे प्रकार का है, ऐसा बुद्धि हमारी स्वीकार करती है तो भी उसका महत्त्व हमें जागा नहीं है। उसके बारे में कोई विचार भी नहीं किया।

जिज्ञासु : वह भूमिका भी जिसे आई हो।

श्रीमोटा : हाँ ....

जिज्ञासु : .... जागी हो।

श्रीमोटा : हाँ ....

जिज्ञासु : फिर उस तरह भी आने की संभावना सही ?

श्रीमोटा : संभावना तो हो। परंतु उसके संबंध की सभानता हमारी प्रगट हुई हो तो विशेष लाभ होगा। तो सभानता कैसे जागे ? वह तो आये साहब। आपका गरज जागे। गरज जागे, गरज जागे तो अपने आप जागे। आपके वहाँ ग्राहक आये। तो दुकान पर बैठे हो। इस दुकान पर बैठे हो आप। गद्दी पर। और पचास हजार का ग्राहक आया। तो उसका व्यवहार देखो तो कहीं भी थूंकता हो और जैसी तैसी गंदी गालियाँ बोलता हो और उसे attend करो तो ऊबे हुए हो .... अंदर। अभी मेरा सौदा बिगड़ जाएगा। ऐसी सभानता होने से। उसका ऐसा वैसा व्यवहार सहन कर लेते हो। वह सौदा बिगड़ जाएगा ऐसी आपको सभानता है और सौदे की गरज है। तब ऐसी गरज जिसे प्रगट हो और उस गरज की जिसे सभानता रहे तो काम हो सकता है।

॥ हरिःॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [४]

वसंतपंचमी दिन उत्सव प्रसंग पर पू. श्रीमोटा की पावन वाणी

वडोदरा, ता. ३०-१-१९७२

• समाज को उन्नत करने की जरूरत •

परमार्थ ऐसा करो कि जिससे समाज उन्नत हो । समाज उन्नत हो ऐसी प्रवृत्ति की आज जरूरत है ।

समाज ऐसे ही उन्नत नहीं होगा । मर्दानगीवाला, साहसिक, हिम्मतवाला, धैर्यवाला, किसी में जीवट के साथ कूद पड़े, उस उम्र में समाज नहीं होगा, वहाँ तक स्वराज्य आया हुआ यथायोग्य नहीं है । इससे धर्मादा ऐसा करो कि जिससे समाज उन्नत हो । ये हमने अस्पताल में दिये, यह मैंने मंदिर बँधवाया और धर्मशाला में दिये, वह बात अभी एक बीस साल, पचीस साल तक जाने दो । आपको जो पैसे देना हो, वे उस तरह दो कि जिससे समाज उन्नत हो, उसमें आप परमार्थ करो इतनी मेरी विनती है ।

(सन् १९७४ की एक पावन वाणी का अंश पू. श्रीमोटा)
मई १९८३ ''हरिवाणी''

अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

॥ हरिःॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. उत्सव मनाने का और भोजन में सादाई का कारण ६१
२. उत्सव में पधारने के लिए कायमी निमंत्रण ६२
३. समाज के परमार्थ के लिए भेंट-सौगात की बिक्री ६३
४. तिनके में से मेरु ६४
५. साधु संन्यासी ऐश्वर्य त्यागे ६५
६. भगवान की भक्ति— स्मरण सभानतापूर्वक करो ६६
७. मिरगी के रोग में भी प्रभुकृपा ६७
८. समाज लक्ष्मी से उन्नत नहीं होगा ६८
९. मिरगी के रोग से हरिस्मरण ६९
१०. नाम-स्मरण की महिमा और प्रताप ७०
११. स्मरण में दिल लगाने`स जीवन भंगार कैसा ये? ७१
१२. देश सेवा में भी रागद्वेष हैं ७४
१३. मोटाका शरीर— असह्य रोगों का संग्रहस्थान फिर भी सक्रिय ७५
१४. भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग है ७६
१५. मौनमंदिरो की स्थापना— स्वमंथन और स्वदोषदर्शन ७७
१६. अनुभवी मौलिक है सर्जनशील है ७८
१७. पल पल पर .... पलटना .... रूपम् मनोहर नींव ७९
१८. हमारा देश संशोधन में आगे बढ़े ७९
१९. असह्य रोगों में भगवान की कृपा ८०
२०. त्याग और परमार्थ करो ८१

॥ हरिःॐ ॥

पू. श्रीमोटा की ध्वनिमुद्रित वाणी दिनांक ३०-१-१९७२ को वडोदरा में श्री रमणभाई अमीन द्वारा आयोजित वसंतपंचमी दीक्षादिन उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन वाणी

● उत्सव मनाने का और भोजन में सादाई का कारण ●

पहले एक मुद्दा मैं स्पष्ट कर लूँ कि ऐसे उत्सव मैं होने देता हूँ। बाकी मैं तो गरीब से गरीब आदमी हूँ। सच ही कहता हूँ। आज भी मेरा कुटुंब – शरीर का कुटुंब है, वह गरीब है और ऐसी गरीबी में पलकर बड़ा हुआ हूँ कि आपको कल्पना नहीं आयेगी। ऐसी गरीबी के कारण मुझे– हमें ऐसे ठिकानो में रहना पड़ा कि जहाँ चमड़े की गंध आती, चमड़े पड़े हुए हो सब। ऐसे लोगों के बीच मुझे रहना था। आठ साल की उम्र थी, तब से तो मैं खेत में पौद-शालिधान-पौद बोने को ले जाता और वह गरीबी तो देखी है ये सच ही कहता हूँ वहाँ ...... मेरे काम देश में फैले हुए काम ऐसे लेता हूँ– और वह भगवान के हुक्म से मेरे दिल में ऐसा होता है। प्रवचन में उसके बारे में मैं कहूँगा आप को। तब मैं ऐसे उत्सव करुँ इससे मुझे भगवान की कृपा से यह जो रकम मिलती है उसके लिए मैं होने देता हूँ।

भोजन में खीचड़ी और सब्जी बनाने का मैंने खास मैंने बहुत आग्रह किया। रमणभाई साहब को, धीरजबहन को कि प्रभु, मेरा कहा मानो, मेरा रास्तो तो लीक के अनुसार नहीं है। ये दाल-चाँवल और लड्डु खाने की बात छोड़ दो अब। इतने पैसे अच्छे काम में उपयोग हो और आप तो बहुत मुझे मदद करते हो। उस बारे में मेरा बोलना निरर्थक है। इसलिए मेरा कहा मानो आप। वे लोगों ने कहा, "**मोटा**, नहीं अच्छा ये खीचड़ी और शाक।" मैंने कहा, "खीचड़ी और शाक ही

चाहिए ।'' मैं तो सभी को मेरे उत्सव में — भविष्य में जो भगवान की कृपा से हो उसमें — सभी को कहता हूँ कि आप यदि आओ तो भाव से आना । त्याग करने के हेतु से आना । परमार्थ करने के हेतु से आना । खाली खाली घुमने के हेतु से या चलो घड़ी-दो घड़ी घुम आते हैं उस हेतु से कोई मत आना । नहीं आओगे तो चलेगा । एक भी व्यक्ति नहीं आयेगा तो चलेगा मुझे । किन्तु आओ तो जीवन में ये त्याग, परमार्थ ..... और स्वार्थ तो रचापचा रहा ही है । स्वार्थ से ..... स्वार्थ तो आपको कोई नहीं कहेगा आपको करना पड़ेगा । वह तो सटा हुआ है गले से । खून-खून में फैल गया है । लेकिन यह परमार्थ और त्याग फैले ... यदि हमारे देश का उद्धार करना हो तो इससे ही होगा भाई । इससे मैंने बहुत आग्रह किया, कि भाई, आप खीचड़ी और शाक ही रखो । और मेरा कहा माना इससे मैं उनका आभार मानता हूं ।

● उत्सव में पधारने के लिए कायमी निमंत्रण ●

पत्रिका हम बहुत संभालकर तो रखते हैं भाई हरएक को भेजने की और उसकी सूची भी रखते हैं । गाँव के अनुसार सूची रखते हैं । जिन के दान मिलते है, उनको तुरंत ही जोड़ देते हैं । किन्तु किसीको भूलचूक से न मिली हो तो यह मेरा हमेशा का निमंत्रण है, कि पत्रिका न मिले तो भी उत्सव का पढ़कर आपको जानकर जरूर पधारना है ।

एक कोई भाई है, वे हर महीने मुझे ड़ाक के पेकेट में टिकट पर्याप्त होती है, उसमें हर महीने बीस बीस रुपये भेजते हैं । हालांकि यह गैरकानूनी है । इस तरह रुपये नहीं भेजना चाहिए । परंतु भगवान की कृपा से हर महीने मिलते हैं सही मुझे । वे यहाँ यदि पधारे हो और नंदुभाई को मिलेंगे तो मैं बहुत राजी होउँगा । भले उनका नाम बताये तो मैं जाहिर नहीं करुँगा । मैं मेरी बही एक सज्जन उस रूप से लिखूँगा । हालांकि ये भी लिखते है तो सही ही हम । किन्तु वे भाई मिलेंगे तो राजी होउँगा ।

• समाज के परमार्थ के लिए भेंट-सौगात की बिक्री •

ये सामने दीवार पर फोटो है । रामरातडीया भाई ने बहुत प्रेम से, बहुत भावना से और बहुत मेहनत ली है । विद्यानगर में विद्यार्थीओं ने मेरा उत्सव मनाया, तब हमें पूछा-गाछा नहीं । हमारी सलाह भी नहीं ली थी । मैं तो जो उत्सव होता है, उसमें किसी दिन जिसे जैसा करना हो वैसा करने दूँ । मुझे तो खबर नहीं हुई थी । आखिर तक । अंतिम दिन मालूम पड़ा । उस भाई ने बहुत उत्साह से ३,३०० रुपये उन्होंने दिये हैं ।

तब मैं तो ऐसा आदमी कि अबे ! सभी के पसीने के आये हुए पैसे इसमें तो नहीं खर्च डालूँगा, भाई ! मुझे कुछ ..... मैं तो ये फोटो मिले उसे बेचकर ये पैसे मैं जमा करवाता हूँ । अच्छे काम में खर्च हो जाय । हर साल १२००-१३०० । एक बार तो १८०० रुपये मिले थे । हमें तो ये शिक्षा मिली है । **गहनें भी माँगता हूँ । किन्तु गहनें पहन कर– कपड़े भी पहने हुए दे तो बेच ड़ालता हूँ । धोती भी ज्यादा हो तो बेच देता हूँ । यह सब भगवान के लिए है भाई, कि मैं तो जी कर ..... मेरे गुरुमहाराज कहते, ''मेरे बेटे, तुम सँभालना, यह डंडा देखा कि ?''** मेरे गुरुमहाराज डंडा रखते । किन्तु परम कृपा से डर तो नहीं था । मैं डरता तो नहीं । उसे बहुत प्रेम करता हूँ । किन्तु आज भी डंडे को सामने रखा है । जीता जागता कि सब जो भी है भगवान के लिए है । अत: जो कुछ मुझे मिलता है ..... साहब, मिठाईयाँ भी मिलती हैं– सब कुछ मिलता है, फल भी मुझे मिलते हैं । मैं तो गरीब आदमी साहब । बहुत गरीब । ये कुछ कहने के खातिर कहता नहीं । साहब .... भोगने का तो बहुत मन हो गरीब आदमी को । किसी दिन पूरी जिंदगी में भी देखा न हो । परंतु मेरे गुरुमहाराज, मेरा भगवान, हजार हाथ वाला बैठा है सिर पर । वे कहते, ''**बेटा, भोगना नहीं । यह सब है, वह मेरे लिए है । इससे जो कुछ मिलता है, मिठाईयाँ भी जो जो किसीने मदद की हो, प्रेम रखते हो, उसे दे देते हैं ।** गहनें मिलते हैं । माँगता हूँ सही । आज भी बहनें प्रेम से दे । सब को मेरी

प्रार्थना है कि आप दो, भाई ! परमार्थ सिखए । स्वार्थ को सिखाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । परमार्थ और त्याग सिखो । मेरे लिए यदि भाव रखते हो तो यह करने की आवश्यकता है ।

तो ये फोटो दीवार पर हैं, वे यदि कोई ले ले तो मुझे तीन सौ–तैंतीस सौ रुपये मिले तो मुझे काम में आ जायेंगे । मेरे लिए ये लोगोंने इकट्ठे किये हुए उसमें खर्च किया । बाकी, कोई मेरी रजा ले तो मैं रजा ना दूँ । अबे ! तुम ऐसे पैसे चंदा करके लाया ये भगवान के लिए मिले थे । मुझे फोटो क्या करना है ? अरे ! मैं तो जीताजागता तो यहाँ बैठा हूँ । कोई भाई देखना आप थोड़ा और तैंतीस सौ से ज्यादा यदि मिलेगा तो ये भाईने जो मेहनत की है, जिस भावना से उसने किया है, उससे पहले तो मेरा साहित्य पढ़ गये और यह सब मेहनत की है । तो ३३०० उपरांत मिले तो ।

श्रीमोटा : (श्री नंदुभाई को) कहूँ क्या ?

श्री नंदुभाई : कहिए ।

श्रीमोटा : ये उसे ३३०० से ज्यादा मिले, वे सब उसे हमें दे देना हैं । वह आप थोड़ा देखना ।

• तिनके में से मेरु •

अब आज तो मुझे यह कहना है कि ननिहाल जाना और माँ परोसने वाली ऐसा प्रभु ये आज का इस समय का उत्सव । ये तो भगवान हमारे में कहावत है कि छप्पर फाड़ के पैसे देते, लक्ष्मी देते । ऐसा मेरे लिए एक बड़ा ..... जीवन में इतना बड़ा प्रसंग हो गया । तेरह लाख के काम लिए हैं । वे क्यों लिए हैं और किस लिए मैं सब करता हूँ वह बाद में कहूँगा । लेकिन सात लाख रुपये तो हो गये और सब भाईओं की ...... यहाँ हरिःॐ आश्रम की जो एक कमिटी– समिति हुई है उन लोगों का तो ऐसा पक्का विचार है कि १०॥ लाख रुपये **मोटा** को कर देना । कि बेचारे शरीर से **मोटा** भटक भटक करते हैं, लेकिन भाई मैं भटकता बंध नहीं होउँगा, किन्तु जहाँ मुझे रोटी खाने का निमंत्रण

मिलेगा। १०००-२००० दोगे तो कहीं भी जाउँ मैं। मुझे शरीर .... शरीर तो मेरे भगवानने मुझे दिया है और वह संभालेगा। परंतु मैं कोई शरीर मात्र नहीं हूँ। यह मेरे जीवन का जीताजागता प्रयोग है। जिसे समझना हो वह समझ ले।

तब, यह एक ऐसा-एक अनमोल प्रसंग मेरे जीवन में भगवान ने मुझे दिया कि बेटा, जीते जागते देख ले। कि जो भगवान का होता है, तिनके का मेरु कर देते है। तिनके का मेरु— यह अत्युक्ति की बात नहीं। हकीकत है। बिलकुल सच्ची हकीकत। अभी जिसे समझ न पड़ती हो तो कालोल गाँव में जाना भाई, और जिस ठिकाने मैं रहता था, एक छोटी सी जगह— छोटा कमरा। आगे एक छोटी सी— अभी तो मेरा भाई सोमाभाई यहाँ आये हुए हैं— और आज दूसरा कहते मुझे आनंद होता है कि आज अभी मेरी माँ जीवित है। वह माँ नहीं, मुझे जन्म देनेवाली नहीं, परंतु मुझे गोद जिसने लिया है। किसीको आश्चर्य होगा। परंतु बिलकुल सच्ची बात। उस मा का मेरे पर जो प्रेम है। उसने मुझे सब कुछ उसका दे दिया। उसके बेटे— सब मेरे भाई आज आये हैं। लखपति— लाखों वाले हैं। उन्होंने मुझे इतना नहीं दिया है। देते हैं सही। मदद करते हैं। किन्तु मा ने तो जितना उसके पास था, वह सब कुछ दे दिया। और कहा फिर मेरे बड़े भाई के सामने, नंदु के सामने कि, ''मेरा देहांत हो जाय तब जितनी मेरी रकम हो, वह इस **मोटा** को दे देना।''

तब, ये सभी भाई आज प्रसंग में पधारे हैं। इससे मुझे भी आनंद हुआ। लेकिन ये सब से विनती है कि भाई, लाख आपके आपके पास— पैसे हैं आपके पास और सब जो धनी हैं, उनको कहता हूँ कि यह काल सब विपरीत आ रहा है। यह काल ऐसा विपरीत आ रहा है कि किसी के भी पैसे चाहे जितने होंगे।

• साधु-संन्यासी ऐश्वर्य का त्याग करे •

तो— भी ये पैसे तो हमारे अनुभवीओं ने, ऋषिमुनिओं ने कहा है, कि भाई, ये पैसे तो चल हैं। अचल नहीं। अचल तो अकेला भगवान

हैं मेरा। तब ये पैसे तो आज है और कल नहीं। ये पैसे आपके स्वार्थ में, भोगने में, ऐश्वर्य में, विलासितता में मत भोगो। यह सब को मेरी बात कहनी है। इस अनुभव से आचरण कर– मेरे गुरुमहाराज का डंडा सामने के सामने है, ''बेटा, तू आचरण किये बिना का मत कहना।'' आज मुझे लाखों रुपये मिलते हैं। **मैं चाहूँ तो मेरे रहने का मकान सब सुंदर बना दूँ। परंतु मैं आज कहता हूँ, मेरे भगवान के बुलाने से, कि मेरे गुरुमहाराज कहते हैं और कहता हूँ, कि हमारे पंथ के– हमारे– जो भगवान के मार्ग पर निकले हुए ऐसे साधु-संन्यासी हमारे देश में पड़े हैं। हरएक संगमरमर के– ऐसे संगेमरमर के बनाते हैं, साला। मुझे ऐसा होता है कि पसीने से कमाकर बेटे बनाओ न ! लोग भले उन्हें देते हैं, प्रेम से। उसकी ना नहीं। परंतु यह सब भोगते हैं ....** मेरे भगवान के पास अनंत गुना ऐश्वर्य है। अनंत गुना ऐश्वर्य है। परंतु वह ऐश्वर्य आप जरूर भोगो। जो व्यापारी लोग हैं। पुरुषार्थ करते हैं, उद्योग करते हैं और कमाते हैं, वे भले भोगे। परंतु उनको भी मेरी विनती है कि त्याग और परमार्थ दो आगे रखना। और फिर भोगना। किन्तु ये हमारे साधु–संन्यासीओं का पहले काल आने वाला है। हमारा– समाज जब जागेगा, ये गरीब जब जागेगा, हमारे देश में सच्ची क्रांति जागेगी, तब सभी का हिसाब होगा।

• भगवान की भक्ति– स्मरण सभानतापूर्वक करो •

तब मैं तो बात कह रहा था– तिनके की, कि ऐसी गरीबी में जीवन जीया हूँ, कि कोई गिनती नहीं थी। कोई हिसाब नहीं था, कुछ जिसकी पात्रता नहीं थी। ऐसी एक गरीबी में समाज के अंतिम हद के स्तर का यह **जीव** हूँ मैं। बिलकुल अतियुक्ति बगैर कहता हूँ। ऐसे जीव को ये भगवान की भक्ति करता है .... भगवान की भक्ति एक ऐसा सामर्थ्य प्रेरित करती है। ये आप उदाहरण जीताजागता देख लो। हमारा समाज कब्र को पूजने वाला है। मेरा भगवान– मेरे गुरुमहाराज मुझे कहते, ''अबे ! बेटा'' उन्नीस सौ और बाईस की साल में मुझे कहा, एक मुझे

मेरा नडियाद का आश्रम है उस पेड़ पर मुझे बिठाया .... उस पेड़ पर बिठाकर कहा– उपर हंअ .... डाल पर, तब वहाँ पर एक कबीर आश्रम था । कि, ''बेटा, जा पेड़ पर बैठ । रात को सोना नहीं और भगवान का नाम तू ले ।'' परंतु उसके पहले तो कहा, जा । तू एक दस-बारह बड़े पत्थर ले आ । इससे ले आया । मैं तो समझा कि ये पत्थर इसलिए मंगवाये हैं कि, ''यदि तू सो गया तो यह पत्थर तुझे मारूँगा ।'' मैं तो समझा कि व्यर्थ ही कहते हैं । वे कोई पत्थर मारे हमें कुछ ? मैं तो उपर बैठकर भगवान का भजन गाऊँ, बोलूँ, भगवान का नाम बोलूँ । परंतु साहब, सचमुच उसने ऐसा तो पथ्थर मारा कि मेरी जाँघ में लगा । अभी भी जब मुझे भाव से मेरे गुरुमहाराज का स्मरण होता है, कोई निमित्त संजोग से, तब मेरी जाँघ में अभी मुझे यह उमड़ता है । लुढ़का, वह हाथ में ड़ाली आई तो रह गया । मैंने कहा, ''प्रभु, मैं तो भगवान ..... '' ''साले !'' कहे, ''नींद में बोलता था तू तो जागता .... जो भी कुछ जागते करें । जागते-जागते करें उसका फल है ।'' मैं .... तो तब समझता नहीं था । बहुत रो (raw) था । गँवार था बिलकुल । इससे मुझे तब समझ न आयी । **आज समझ आई है कि जो कुछ करें ज्ञानपूर्वक और उसके हेतु की पूरी सभानता के साथ । वह योग्य है ।** तब मुझे खबर न थी । तो ऐसी गरीबी में से उसने ये भगवान की भक्ति करते-करते तार दिया ।

• मिरगी के रोग में भी प्रभुकृपा •

और भगवान सीधा नहीं भाई हूँ .... मेरा बेटा वह भी शरारती है । हम ऐसे न पकड़े तो वह तो फिर बायाँ कान पकडाये वैसा भी है । कि मुझे ये हिस्टीरिया यानी मिरगी का– बहनों को हो उसे हिस्टीरिया कहते हैं और मरद को मिरगी का रोगी होता है– वैसा मुझे रोग हुआ । साहब, तब मैं ये सेवा के काम में तो लग चुका था । इन्दुलाल याज्ञिक अभी जीवित हैं । तब हरिजन अंत्यज सेवा मंडल नाम– उनके मंत्री के रूप में मैं लगभग पौने दो साल तक मैंने काम किया और तब यह रोग हुआ ।

परंतु मुझे देश के प्रति बहुत देशभक्ति थी। तब भी इतना ही अनंत जोश था और कोलेज-आर्टस कोलेज वडोदरा में से ही छोड़कर विद्यापीठ में गया। गाँधीजी ने प्रवचन किया कि, ''अबे ! मेरे साले, तुमने तो एक डिग्री का मोह छोड़कर दूसरी डिग्री का मोह तो कायम रखा तुमने । कुछ तुमने छोड़ा ? मेरी तो ऐसी मरजी कि तुम युवा लोग देश के काम में लग जाओ। और इस देश के गाँवो में जाकर काम करो। ऐसी मेरी तो मरजी थी, और तुमने तो यह मोह कायम रखा।'' तुरंत ही साहब निकल पड़ा। तुरंत ही– उसी पल में। एक मिनट के लिए भी रुका नही मैं। और उस काम में लगा मैं। तब उस समय मैं जब इन्दुलाल के साथ अत्यंज सेवा मंडल का मंत्री था। हमारी गुजरात विद्यापीठ में से सब से पहले मैं उसमें जुड़ा। तब यह मिरगी का रोग हुआ। परंतु मैंने काम बंद नहीं किया। मुझे जाना हो बैंक में– पैसे लाने का, अनेक बार पैसे होते जेब में। रास्ते में साइकिल पर से गिर जाता। बहुत लगता परंतु आज मैं याद करता हूँ कि भगवान कितना सारा ....। मेरे पर कृपा की। एक बार मेरा पैसा गया नहीं। अनेक आदमी चारों ओर आ जाते लेकिन भगवानने मुझे संभाला है। ये सब उपकार मैं याद करता हूँ, आज तब मैं गद्‌गद हो जाता हूँ। तब उस स्थिति में यह मिटे कैसे ? मैं उकता गया था। मुझे ऐसा हुआ कि ये महिलाओं को रोग होता है। इतना मैं संयम नहीं रख सकता ! इसकी अपेक्षा तो बेहतर है मर जाना। आत्मसमर्पण कर देना। ऐसा सोचकर नर्मदा में कूद भी गया साहब, हाँ ! अभी मुझे याद है वह प्रसंग। मेरे पैर पानी को छुए थे, उस स्पर्श का भी मुझे आज अनुभव है। किन्तु नर्मदा में, एक बड़ा बगूला निकला कि उस बगूले ने मुझे फेंक दिया। किनारे से कितना सारा दूर ! जगत में कितनी ऐसी घटनाएँ बनती हैं कि हमार बुद्धि नहीं समझ सकती।

● समाज लक्ष्मी से उन्नत नहीं होगा ●

आज इतनी सारी वड़ोदरा के भाईओं ने, दूसरे अहमदाबाद के भाईओं ने, मुंबई के भाईओं ने जो मदद की है मुझे ! मुझ गरीब को कल्पना नहीं कि मुझे सात लाख रुपये मिले। मेरी ऐसी कोई प्रतिष्ठा

नहीं है । यह सब काम मैंने उठाया है । अकेले हाथ से करता हूँ । रचनात्मक काम में मैं तो पड़ा हुआ आदमी । मेरे साथ बहुत लोग हैं । ये महासभावाले बहुत हैं । किन्तु सब बखान करते हैं, कि ''**मोटा**, काम तेरा अच्छा है ।'' मेरे गुरुमहाराज कहते, ''बेटा, लीक पर चलना नहीं । लीक पर नहीं चलना ।'' ''लीक पर चलने वाले जीवन की जरा भी न कीमत है ।''

हमारा मार्ग मस्ती का है, मस्त का है । खाखी बाबा का है, इससे हमारे काम भी मौलिक हैं । मुझे तो ऐसी समझ है, मेरे गुरुमहाराज के आशीर्वाद से, भगवान की कृपा से कि जो अनुभवी हो । यदि काल को न परख सका, काल का धर्म न परख सका, तो वह नहीं चल सकता और **हमारे देश में, हमारे समाज में, ये मर्दानगी, साहस, हिम्मत नहीं होवे तो हमारा देश उन्नत किस तरह होगा ? देश उन्नत सिर्फ लक्ष्मी से कभी होने वाला नहीं । साहब, लक्ष्मी साधन है, जरूरत है, परंतु लक्ष्मी वाले के पास गुण और भाव नहीं हो तो वह स्वच्छंदी हो जायगा । उस लक्ष्मी का दुरुपयोग होने वाला है और लक्ष्मी वह शक्ति है, माता है,** तब मेरे गुरुमहाराज ने मुझे जो कहा, तब इस तरह तिनके का मेरु बना देते हैं ।

• मिरगी के रोग से हरिस्मरण •

इस तरह मुझे मिरगी तो हुई । फिर मुझे फेंक दिया था । उस में से एक साधु महात्मा मिल गये, कि, ''बेटा, तू हरिःॐ कर ।'' मैंने कहा, ''भाई ऐसा ये भगवान का ऐसा हरिःॐ बोलने से कुछ मिटेगा कुछ रोग ?'' कुछ जड़ी-बूटी जानते होते और मुझे कुछ दी होती तो राजी होता । कि चलो ये महात्मा घुमते हैं तो जंगल की जड़ी-बूटी जानते होंगे और मिट जाएगा मुझे । लेकिन उसमें मुझे विश्वास न हुआ । वहाँ से वडोदरा आया । मेरे दूसरे आध्यात्मिक मा थे । इसी राज्य के एक दीवान थे, मणिभाई जशभाई, पेटलाद के । उनका बेटा भी बहुत बड़ा अमलदार था । जूनागढ़ के नवाब के पास । उनके पत्नी थे, वे बहुत भक्ति वाले । ये मेरे .... गरीब

विद्यार्थी के रूप में उनके वहाँ रहता और मेरे पर बहुत भाव रखते । सही रीति से देखूँ तो उस मा का मेरे पर ऋण है । यह जो भक्ति मेरे में फूटी वह उसके कारण । वह सयाजीराव महाराज साहब थे वे सब वह .... पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध ऐसे मौलाबक्ष को– मौलाबक्ष तब हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित गायक को यहाँ ले आये थे । उनके पास सीखे हुए और भक्ति के पद वे गाते । उसके मुझे संस्कार पड़े थे । तो उसके बाद भगवान का नाम ..... तो मैं वडोदरा आया । तो तीसरी मंझिल से, सीढ़ी उतरने जाता था, वहाँ मुझे मिरगी आई और लुढ़का और गिरा.... सीढ़ियाँ पर से फिसल फिसल कर– और नीचे ईंट की फर्श थी । वहाँ मेरा शरीर बहुत छिलाया । तब वहाँ मुझे उसके दर्शन हुए । आँखे तो मेरी खुली थी । किन्तु तब मेरी बुद्धि ऐसी नहीं– नहीं समझ सकता । कि यह भ्रम है । ''अबे, कि लड़के इतना दुःखी होता है तो भगवान का नाम लेकर तो देख, प्रयोग तो करके देख, तुम बुद्धिमान हो तो .....! तू अभी rational नहीं ।'' ''क्यों बापजी ?'' ''तो प्रयोग किये बिना तुम ऐसे ही कहते हो कि नहीं इससे नहीं होगा !'' तो, वे तो फिर अदृश्य हो गये । मैं थोड़ा स्वस्थ हुआ । इससे मेरी आध्यात्मिक मा को बात की, ''अबे, लड़के तू कुछ कर ।'' फिर मैंने बापुजी को पत्र लिखा । गांधीजी को, कि ऐसा मुझे रोग है, इस तरह इस मिरगी में मैं गिरा था, वहाँ मुझे दर्शन दिये और मुझे ऐसा कहा कि, ''तू ये भगवान का नाम ले .... '' तो उनका पत्र मेरे पर आया कि, ''भाई, सच्ची बात है । तू भगवान का नाम ले और तुझे मिट जायगा ।'' उनमें मुझे अनंत विश्वास । गांधीजी में । तब से लेने लगा ।

• नामस्मरण की महिमा और प्रताप •

इस स्मरण की महिमा का बहुत गाया मैंने साहब । पहले तो मैंने लिखा ही है । किन्तु अभी अभी के जो काव्यों में चार पुस्तक प्रगट हुई हैं । दूसरी तीन प्रगट होने वाली हैं । तैयार हो गई हैं दो तो । तीसरी अब लगभग तैयार होने आई है । उसमें मैंने स्मरण के बारे में बहुत गाया है । मस्ती से गाया है । स्मरण को दोहराया है, लहेराया है और अभी

मैं कहता हूँ साहब कि आज हमारे देश में भगवान के स्मरण की महिमा **उस**के नामकी महिमा गिनते हैं । बहुत पहले से । आज की बात नहीं है । अनेक संत-भक्त हमारे देश में भगवान का नाम लेकर भक्त हो गये हैं । उन सब के नाम लेने की मुझे कोई जरूरत नहीं है । परंतु कई कहते हैं कि ये स्मरण और ये नाम नहीं बराबर । उससे क्या हो जायगा ? मन दृढ हो जायगा । मैं कहता हूँ । मैं जीताजागता साक्षी बैठा हूँ । कि उसने मुझे मेरी बुद्धि को सतेज की है । वृत्ति के बारीक से बारीक, छोटे से छोटे, वृत्ति के टुकड़े को, उसने मुझे उसके मूल समझाये हैं । उसके बारे में सब मैंने बहुत लिखा है । तटस्थता यदि मेरे में आई हो.... यह मेरा जीवन भंगार जैसा है ।

स्मरण में दिल लगाने से जीवन भंगार कैसा यह?

यह मुझे भान आया है । उस भान ने मुझे जगाया है । अरे ! बिलकुल । दूसरा मैं कहता हूँ आपको बात । स्मरण की । स्मरण की हकीकत बनी हुई है कि ये स्मरण की । मुझे साँप काटा बोदाल आश्रम में । अभी हाल में ही बारडोली सत्याग्रह में हमारी जीत हुई थी भगवान की कृपा से और तब वल्लभभाई को सरदार का बिरुद मिला था । उसके बाद तुरंत ही बोरसद तालुके के बोदाल गाँव में हमारे आश्रम का उनके हाथ से उद्‌घाटन होने वाला था । तब हम सब वहाँ गये थे और ठक्कर बापा भी थे । श्रीकांत शेठ थे । हमारे संघ के सभी मंत्री परीक्षितलाल, हरिवदन ठाकोर, हेमंतकुमार नीलकंठ सब थे और पहली बार ये बोदाल गाँव में सरदार पहली बार ही सरदार बारडोली जीत करके आये थे । इतने सारे लोग इकट्‌ठे हुए थे । हमेशा मेरी आदत एकांत में सोने की । '२१ के दिसम्बर के बीच में से लगाकर '३८ की साल तक कोई दिन घर में सोया नहीं । कोई दिन । भयंकर से भयंकर जगहों में सोया हूँ । बाहर ही सोता ।

श्रेयार्थी या तो भगवान के मार्ग पर जाने वाले के लिए एकांत वह बहुत जरूरी वस्तु है । यह मेरा शरीर चला जायगा, तब लोग कहेंगे

कि **मोटा** वैसे तो एकांत प्रिय था सही । मेरे आश्रम भी दूर हैं, एकांत में । तब बहुत लोग थे, इससे मुझे मैं तो एकांत में आज सोने वाला व्यक्ति, कि हमें इन सब में अनुकूलता नहीं । इससे मैं तो जाकर दूर .... दूर सोया । बहुत दूर जाकर खेत में । एक पेड़ के नीचे । फिर ठक्करबापा निवृत्त हुए उनके काम में से । इतने सारे अपने काम में दक्ष, चौकस, यदि कोई मेरे में आई हो चौकसी व्यवस्था की । तो उनके कारण है । डायरी लिखे बिना तो किसी भी दिन सोते ही नहीं । इससे कहे कि अबे इन सब में हमें नहीं अनुकूल होगा सोना । इससे श्रीकांत शेठ अभी जीवित है । श्रीकांत शेठ तो भाई कि अबे वह भगत भी अकेला सो गया है । चलो हम वहाँ जाँय । तो एक तरफ ठक्करबापा और एक तरफ श्रीकांत शेठ और बीच में मैं । वहाँ मुझे साँप काटा । साँप काटा तब जहर का असर हुआ और मुझे वह बेहोश करने की कोशिश करे और शरीर में तो इतना दर्द हो हो कर सिर में आकर ब्रह्मरंध्र की जगह इतना सारा जैसे करोडों मन के हथौडें ठोक रहे हो .... कण-कण होते जा रहे हो ऐसी मुझे सभानता भी थी मुझे..... भगवान की कृपा से लग गई ...... ध्येय हमने प्राप्त किया नहीं है और मरना नहीं है। दृढ निश्चय हो गया साहब । इससे तब से भगवान का स्मरण हरिः ॐ हरिः ॐ हरिः ॐ बोलने लगा । बापा तो जाग गये और सब कहे क्या है किन्तु बोलता ही नहीं । कुछ भी किसी को जवाब दिया नहीं था । छिहत्तर घंटे तक साहब । यह मैं ऐसे वैसै वात नहीं करता हूँ । छिहत्तर घंटे तक नोन-स्टोप । लगातार एक-सा भगवान का स्मरण चलता ही रहा और उस समय ब्रह्मरंध्र में आकर हथौड़े.... दस दस मन के मानो हथौड़े पड़ते और टुकडे टुकडे हो जाय और वेदना का तो त्रास कि हद नहीं । शरीर के रोम रोम में जो दर्द प्रगट हुई थी और मुझे बेहोश होने का समय आये उस समय बहुत जोर से भगवान का स्मरण .... और उस समय हेतु की सभानता के साथ कि मरना नहीं है ..... उस ध्येय का ध्येय हमने अभी प्राप्त किया नहीं है । मरना नहीं है उस प्रकार की उ.....तनी सारी alert और creative ऐसी सक्रिय सभानता के साथ । कोई कहेगा भगवान

के स्मरण में ऐसी सभानता नहीं रहती वह अनुभव बेटे करो। करो प्रयोग और करके देखो। इतनी सारी सभानता के साथ। किसी को तर्क होगा, किसी को हुआ, इससे बात करता हूँ कि अबे, वह तो व्यर्थ छोटा जलसर्प ऐसा होगा। जहर बिना का। साहब, ऐसा नहीं। उसकी भी बात कर लूँ इससे किसी को शक न हो।

श्रीमोटा : ओ... रावजीकाका, लंबे पैर करके नहीं बैठते सभा में। (हरि:ॐ आश्रम, नडियाद के प्रमुखश्री को श्रीमोटा की टोक)

भाई, फिर तो ठक्करबापा ने सब को कहा भाई, तुम देख क्या रहे हो, इस लड़के को। किसीने कहा कि आसोदर में साँप उतारते हैं, वहाँ ले जाओ। इससे खटियामें डालकर बापाने भी मुझे उठाया था और ले गये वहाँ। वहाँ से दूर तो होगा लेकिन ..... ले गये। मैं तो कुछ भी नहीं दूसरा। भगवान के नाम का उच्चारण ही करता रहा। वहाँ ले गये। उसे दूसरी जो कोई उसे आती थी वह विद्या का उपयोग किया लेकिन कुछ हुआ नहीं। दूसरे गाँव ले गये। किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं हुआ। मैं तो कुछ जवाब ही न दूँ किसी को। ठक्करबापा ओ..... गुस्से हुए। परंतु मैं तो भगवान का नाम ही लिया करूँ। वहाँ से दूसरे गाँव कुछ न हुआ। फिर तो ठक्करबापा सब को हमारे सब कार्यकर्ताओं को गुस्सा होकर कहने लगे अरे ..... ये सब जाने दो। कुछ नहीं उसे दवाखाना में ले जाओ। बोरसद से मोटर ले आओ। इससे कोई लड़का दौड़ा साइकिल लेकर दूर बोरसद ..... तो मोटर वाले को किसीने कहा, भाई, चलो तो फिर पैसे हैं ? तो कहा नहीं। इससे बेचारा वापस आया वह तो। वापस आया इससे अबे क्यों ? कहे कि साहब, ये तो पैसे बिना नहीं आता है। अबे, किसी को भान भी ना हुआ कि उसे पैसे दें। कैसे तुम तो आदमी ? इससे फिर पैसे लेकर भेजा। इस सब में दस-बारह घंटे हो गये थे। साहब।

मैं तो बोलता ही रहा। मोटर आकर मुझे आणंद में ये रायण का दवाखाना है। वहाँ डॉक्टर कूक थे उसे रायण का दवाखाना कहते हैं न रावजीकाका ?

रावजीकाका : हाँ जी ।

आणंदवाला, उस रायण के दवाखाने में ले गये । ठक्करबापा के साथ सब बात की उसने डॉक्टरने । ऐसा ऐसा है भाई, ठक्करबापा ने कहा । समय बीत गया इससे अब उन्होंने स्टमक वोश किया । Intestine–आंतो को धोया और उस पानी का pathological analysis यानी कि ये Allopathy पद्धति से जो उसका पृथक्करण किया और चार घंटे तक फिर मुझे उन लोगों ने आकर ठक्करबापा को सब को यह लड़का जिंदा है किस तरह ? लेकिन ये मिशनवाले के डॉक्टर पादरी लोग होते हैं । वे हमारे सभी डॉक्टर से भगवान में विश्वास वाले ज्यादा । कि यह लड़का भगवान के नाम के कारण जिंदा है । कि अब इसमें कोई उपाय दूसरा हो सके ऐसा नहीं है । इससे मुझे तो अभी की जो हाईस्कूल है दादाभाई नवरोजी वहाँ ठक्करबापा ले गये । वहाँ छिहत्तर घंटे तक साहब नामस्मरण चला । **मैं कहता हूँ कि ऐसा घोर संग्राम ऐसा युद्ध वह भगवान के स्मरण का प्रताप है ।**

वह *है प्रताप पद की रजधूलिका का,*
ढिंढोरा पीटकर जगत को कहूँ ध्यान लेना ।

वह.... वह ..... यह अन्य किसी से नहीं होगा । चाहे जितनी भाँग पीओ, गाँजा पीओ, L.S.D. लो । किन्तु यह एक घोर संग्राह वह नहीं कर सकेगा साहब– तब बाद में दूसरे साधन तो मुझे इसमें से सूझे थे । भगवान के स्मरण में से और वह भगवान की कृपा से हुए हैं ।

● देश सेवा में भी रागद्वेष हैं ●

लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मेरे गुरुमहाराज ने कहा अब तू यह सेवा–बेवा छोड दे । परंतु देश की भक्ति का एक जुनून था । भगवान की कृपा से वह साला छूटे कैसे ? सब छूटे परंतु यह जुनून नहीं छूटता । किन्तु ये बीस साल सेवा करने के बाद बात आपको कहता हूँ । कि, अबे, देख तू, यह तो सब रागद्वेष है । अरे हो ? मैंने कहा । ये सब कितने तो जीवन समर्णप कर दिया है और सब काम करते हैं न ! किन्तु जैसे भगवान ने बहुत अनंत कृपा कर के अर्जुन को

विश्व के दर्शन करवाये । विश्वस्वरूप के दर्शन करवाये । वैसा मेरे गुरुमहाराज ने कृपा कर के मुझे दर्शन करवाये । रागद्वेष के । और मैं ऐसे वैसे मानता नहीं । मान लूँ वैसा आदमी नहीं । मेरे जीवन के बारे में मैंने प्रयोग उन्होंने मुझे करवाये हैं ।

● *मोटा* का शरीर– असह्य रोगों का संग्रहस्थान फिर भी सक्रिय ●

आज भी वह प्रयोग मेरे गुरुमहाराज कहते कि अनुभव की बात सब बात तू करता लेकिन प्रयोग बगैर गलत साहब । यह मेरा शरीर आज कोई पाँच हजार रुपये यदि दे तो मेरी तैयारी है । मैं क्लिनीक में, कहे उस क्लिनीक में जाने को तैयार हूँ । और मेरे रोग ऐसे हैं, कल्पना के नहीं । वह जाँच कर ले । और कई रोग ऐसे हैं प्रत्यक्ष सभी रोग प्रत्यक्ष दिखे । एक सिर का यह ग्लुकोमा दिखे ऐसा नहीं साहब । यह साफा इससे बाँधता हूँ । मेरी तैयारी है । किसी की तैयारी हो पाँच हजार रुपये देने कि तो मेरी तैयारी है सबूत कर ले । और इतना ही नहीं परंतु १३२ नाड़ी हुई हो, तब नडियाद से हजार रुपये के लिए साहब । मेरे भगवान का प्रसाद है । मैं तिरस्कार करूँ किस तरह ? तो मैं गया वहाँ । और वहाँ प्रमुख थे डॉक्टर हीराभाई साहब । ये हमारे काँटावाला साहब बैठे हैं, वे जानते हैं । प्रसिद्ध डॉक्टर वहाँ के । मैंने कहा, ''साहब, जरा नाड़ी जाँचीए न ।'' वह १२० ! अररर ! तो अभी । आप यहाँ रह जाईए अभी । हम जा सकते नहीं । ऐसी स्थिति में भी साहब वहाँ से वापस डेढ़ सौ मील गया सुरत । कल भी १२० नाड़ी थी । आज तो जाँची नहीं । हाँ जाँची थी डॉक्टर ने । ११० है आज । परंतु मैं कुछ यह शरीर मेरा यह कुछ शरीर नहीं । अंदर जो बोल रहा है, वह शरीर नहीं । वे मेरे गुरुमहाराज ने कहा प्रयोग के बगैर की बात भाई सब गलत ।

तब यह जो हकीकत है, यह हकीकत तो भगवान का— कृपा का प्रसाद है । तो मेरी आप सब को प्रार्थना है कि हम सब इकट्ठे होते हैं और मेरे पर भाव रखते हो, वह मैं भाव को, ऐसे ही मानने वाला

आदमी नहीं भाई । आप में वृत्ति जागेगी तो सक्रिय होती है । सक्रिय होती है साहब । काम की वृत्ति हुई तो सक्रिय होगी । लोभ की वृत्ति हुई तो सक्रिय होगी । मोह की वृत्ति हुई तो भी वह सक्रिय होगी । तो भगवान की वृत्ति चुपचाप कैसे बैठी रहेगी ?

● भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं ●

मेरे भगवान ने और मेरे गुरुमहाराज ने बताया कि, **भाई, इन उपदेशों से नहीं सुधार होगा इस देश में । यह समाज उपदेश से उन्नत नहीं होगा** और यह मेरी बात गलत हो तो आप सब विचार करना ।

आज शहर-शहर में सप्ताहें होती हैं । उसे मेरा कम महत्त्व देने का हेतु नहीं है । भाई । मेरे भगवान का । इस सूर्यनारायण के अनंत मार्ग हैं, अनंत किरणें हैं । गलत हो तो आप मुझे कहना । अनंत हैं । भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं । एक मार्ग नहीं । अनंत मार्ग हैं । भगवान रामकृष्ण परमहंस की बात करुँ । आज भले कोई उसे माने या ना माने उसे परंतु मैं तो कहता हूँ कि उसकी बात सच है । वह अर्वाचीन है । अनुभवी मात्र अर्वाचीन है । वह पुराना हो सकता नहीं । पुराना होने की इच्छा हो तो भी नहीं हो सकता । हालाँकि इच्छा ही ना कर सके । उसे किसीने पूछा, ‘‘भाई ये सब क्या ? यह तंत्र और वाम-मार्ग । उसने भगवान ने कहा । कितने उदार थे और कितने अनुभवी ! कि भाई, घरमें गटर के मार्ग से भी जा सकते हैं । घर में गटर के मार्ग से भी जा सकते हैं । बोलो आपको सब को और आज के विचारकों जो मौलिक विचारक हैं उसे शायद यह नहीं उतरे, लेकिन साहब बात उसकी सच है । अनंत मार्ग हैं । भगवान के मार्ग पर । उस चेतन को अनुभव करने के अनंत मार्ग हैं । उस मार्ग को आप कैसे ना कह सकते हो ? आपने अनुभव नहीं किया हो । आपका मार्ग अलग हो । आपकी बुद्धि अभी इस चेतन के जितनी चेतन वाली– चेतन– चेतना से भरी हुई । अनंत विस्तार तक पहुँची हुई नहीं है ऐसा मैं कहता हूँ आज । इसलिए जो जिस मार्ग पर जाता हो, वह सब मार्ग भगवान के मार्ग पर है । यह नहीं है । यह हो ही नहीं सकता यह बात नहीं ।

● मौनमंदिरों की स्थापना– प्रयत्न और स्वदोषदर्शन ●

दूसरा, ये जो सब मैं कर्म करता हूँ। भगवान के मार्ग पर सब को मोड़ सकुँ ऐसा नहीं है। संभव ही नहीं है। बहुत सारी कथाएँ होती हैं; सप्ताहें होती हैं, उपदेश होते हैं, साधु-संन्यासीओं जगह-जगह पर इन उपनिषदों के पाठ करते हैं। कुछ फायदा हुआ नहीं है अभी तक। इससे एक तरफ से मैं स्वयं प्रयत्न करे। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं प्रयत्न करे ऐसे उपाय के लिए सब मौनमंदिर किये हैं। मैं किसीको उपदेश देता नहीं हूँ। कहता नहीं कुछ भी।

प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय-निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है।
प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय-निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है।

वह चाहिए आप में। हमारे समाज के लिए मुझे कहते थोड़ा दुःख होता है लेकिन बात सच्ची है। मेरे आश्रम में आज अमेरिकन सब बैठने आते हैं। उन लोगों में इस तरह मुझे ज्यादा अच्छा लगता है। हमारे से ज्यादा वे frank हैं, sincere हैं। यानी कि सब साफ, खुले दिल के हैं। मेरे आश्रम में अनेक बैठते हैं सब। किन्तु जिस तरह से वे लोग प्रयत्न करते हैं, जो वफादारी उनका जो काम लिया उसके प्रति उनकी जो प्रामाणिकता है, जो वफादारी है, जो हृदय की निष्ठा है, उसमें हमारी कमी है। तो यह जो एक भाई बैठा है। सामने ही है देखो .... कभी के वे बैठे हैं। अभी ही, अभी ही वह मौन में से उठ़कर आया। तो एक तरफ से यह मैं प्रयत्न करता हूँ कि,

प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय-निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है।

इससे वह किया करे कोई। बाकी यह उपदेश से या ये सप्ताहों से या ये कथाएँ करने से कुछ होनेवाला नहीं। अरे भाई, उससे उसमें तो उसके संस्कार तो फूटेंगे। हमारा समाज दिन पर दिन ज्यादा अभि-मुखता वाला। भगवान की अभिमुखता वाला होता मुझे अनुभव में आता

नहीं है । इससे मैंने यह मार्ग लिया कि हरएक व्यक्ति को बैठने दो अंदर और अपने आप प्रयत्न करने दो । कुछ नहीं तो उसे समझ आयेगी कि मेरे में कैसा कैसा भरा पड़ा है । अनेक प्रकार का । उस बेचारे को कुछ काम नहीं । कुछ सामने आकर उसकी आँख, हमारी कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ वहाँ से मिलता ही नहीं खुराक । इससे अंदर के संस्कार बाहर आते हैं । रस्सी का बट निकलता है, वैसे वे संस्कार उसे मालूम पड़ते हैं । कुछ ऐसे बने हुए उदाहरण साहब, कि उसे ऐसे सिनेमा के पर्दे पर जैसे दृश्य दिखते हैं और उसे अपने कर्म दिखते हैं प्रत्यक्ष, स्थूल रीति से । इससे उसे पछतावा भी हुआ है । और वापस भी मुड़े हैं । तब इस तरह प्रयत्न अपने आप करे उसमें से उसे भगवान की कृपा से जो होना हो वह हो जाय । बाकी मैं उपदेश में बिलकुल मानता नही हूँ ।

यह तो एक प्रवचन ऐसे उत्सव हो तब करता हूँ । या तो कोई मुझे ले जाय भाई जिस तरह सोलिसीटर या वकील को फीस देकर कोई ले जाय तब उसका केस चलाना पड़े । तब जो कोई मुझे दे और मुझे ले जाय । बहुत लोग मुझे रोट खाने बुलाते हैं । निमंत्रण देते हैं । मदद करते हैं और कराते हैं । तब एक तरफ से यह काम करता हूँ, तब सिर्फ मैं बोलने का करता हूँ । बाकी नहीं करता । मेरे में । आश्रम में आये तो इधर-उधर दूसरी बात करूँ । बहुत कहते ज्ञान की बात करो । तो मैं मना कर दूँ भाई, तुम रहने दो, व्यर्थ यह सब । कुछ करना नहीं । सिर्फ स्वार्थ में डूबा हुआ आदमी । कोई प्रयत्न करता हो तो मैं बहुत राजी होता हूँ ।

● अनुभवी मौलिक है, सर्जनशील है ●

तो एक तरफ यह काम करता हूँ । कईओं को ऐसा होता है कि **मोटा,** ये क्या सब चेष्टा लेकर बैठे हो ? परंतु मेरे सामने मेरा भगवान है । मेरा गुरुमहाराज मेरे सामने हैं । मेरा आदर्श चेतन है । वह पलपल सक्रिय है । कितना ही सर्जन करता है । गलत बात हो तो आप सोचना बुद्धि से और मुझे कहना बाद में । यह हो जाने के बाद । तो मैं कबूल

करूँगा। मेरी समझने की तैयारी है। मैं किसी प्रकार का आग्रह रखता नहीं हूँ। **मैं ही सच्चा हूँ यह बात भी मैं गलत मानता हूँ।** किन्तु मुझे लगता है कि मेरे सामने जो मेरे सामने है, वह भगवान मेरा है, पलपल सक्रिय सर्जन करता है। तो अनुभवी व्यक्ति से किसी न किसी प्रकार का सर्जन होता है। एक ही प्रकार हो। अनंत मार्ग हैं सर्जन के भी। वह ठोस होना चाहिए। वह सर्जन और मेरे दिल में ऐसी समझ है कि अनुभवी मौलिक है।

● पल पल पर .... पलटना .... रूपम् रमणीय पाया ●

उस को तो रमणीय कहा है। भगवान हमारा सौंदर्य है। उसके समान किसी को सौंदर्य है ही नहीं। वह पल पल पर मौलिक है। पल पल में उसमें नवीनता है। अनुभवी व्यक्ति ऐसा मौलिक होना चाहिए। दूसरी मुझे ऐसी समझ है कि लीक अनुसार नहीं। इससे मेरे गुरुमहाराज की कृपा से भगवान के अनंत उसकी कृपाप्रसादी से मुझे लगा कि **इस समाज में मर्दानगी, साहस, हिम्मत, ये सब प्रगट हो तो ही धर्म रह सके उसमें। अन्यथा कहाँ से बेचारा रहे ? गुण और .... गुण बिना कहाँ से ? गुण बिना।**

इस मार्ग में इतने सारे पराक्रम की जरूरत पड़ती है साहब, यह देवासुर संग्राम जागता है तब। यह कल्पना की हकीकत नहीं है। तब यह जो मर्दानगी, यह जो पराक्रम यह जो चाहिए, वह बड़े से बड़े सेनाधिपतिओं से भी बढ़ जाय ऐसा है। तब ये सब सर्जन। **हमारे देश में हजारों मील का समुद्र। परंतु समुद्र रौंदने का जिस समाज को दिल ना हो वह समाज कैसा ?**

● हमारा देश संशोधन में आगे बढ़े ●

हमारे गुरुमहाराज मेरे भगवान मुझे ऐसे दर्शन कराये इससे ऐसे करुँ। दूसरा मुझे ऐसा लगा मेरे में देशभक्ति आज भी है। किसीसे ज्यादा कम की बात नहीं करता। मेरे स्वयं की बात करता हूँ। आज मेरे में देशभक्ति उतनी ही है। इससे ही मैं काम लेता हूँ कि इस दुनिया के

देशों में मेरा भारत देश वह आगे की पंक्ति में रहे । वह तभी रह सकेगा कि अनेक प्रकार के संशोधनों में आगे रहे । मेरे पास तो कोई शक्ति नहीं है । मैं तो मेरे भगवान को प्रार्थना करता हूँ कि भगवान, **तू हमारे देश में हमारे देश के नेताओं में सद्बुद्धि प्रेरित कर कि अनेक क्षेत्रों में हम संशोधन कर सकें । हमारा देश गरीब है । मुझे लगा कि अकेली प्रार्थना सक्रिय भी मुझे कुछ करना चाहिए । इससे ये तीन काम लिए ।**

खेती में संशोधन हो बहुत जरूर का साहब । मैं तो कहता हूँ कि यह गरीबी हटाने का भगवान की कृपा से यत्किंचित् एक तिल के लाखवाँ जितना प्रयत्न कर रहा हूँ । कि उसमें जो संशोधन होगा और खेती की पैदावार बढ़ेगी तो सब को लाभ होनेवाला है । आज दवा के बिना किसी को चलता नहीं है । उसमें शोध होगी तो कितने सारों को .... । उसी तरह यह सायन्स और विज्ञान में **संशोधन होगा तो हमारा देश– हमारा देश दूसरे देशों की पंक्ति में भी रह सकेगा । अभी अनेक क्षेत्रों में ऐसे संशोधन की जरूर हैं । ऐसे दूसरे अनेक क्षेत्रों मुझे लगा कि बुक ओफ नोलेज की हमारे वहाँ मिलती नहीं है । हमें सायन्स और ऐसे अनेक काम मुझे जो हुए नहीं हैं । किसी की कल्पना में भी आते नहीं हैं । ऐसे काम मेरे गुरुमहाराज मुझे सुझाते हैं और यह सर्जन है ।** मुझे ऐसा लगा कि भगवान कि कृपा से एक तिल जितना भी यदि मेरे में इस बारे में मेरा भगवान यदि अंदर से प्रगट हुआ हो तो ऐसा सर्जन भी मेरे से होना चाहिए । परंतु मेरे गुरुमहाराज कहते हैं, कि बेटा प्रयोग बगैर की बात गलत । यह मेरा शरीर ऐसा ही है साहब ।

● असह्य रोगों में भगवान की कृपा ●

यह मुसाफिरी के लायक नहीं बिलकुल .... आज यहाँ से मुझे चलकर जाना हो तो अभी जा नहीं सकता । तब तो भी मैं काम करता हूँ । वह मेरा बल नहीं है । अंदर का आंतरिक बल मेरा भगवान प्रगट हुआ है, उसका बल है । प्रयोग बिना मैं कुछ मानता नहीं हूँ । बिलकुल

नहीं साहब । आज बैठा हूँ यहाँ मुक्ताबहन और विनोदभाई .... तब परिणाम बहार आ गया था, भाई, डायाबीटीस शरीर को नहीं है । परंतु मेरा विचार ऐसा कि भाई मुझे नहीं वह बात सच्ची । लेकिन शरीर का कोई अंग हमारा कमजोर हो गया है, इससे हमसे नहीं लिया जायगा । **मोटा** ले लो ऐसा करके आग्रह करने लगे । मैंने उनका मान रखने के लिए एक टुकडा लिया । नंदुभाई ने कहा, **मोटा** ले लो कोई हरज नहीं मेरे पास है पट्टी । वह जिमने के बाद दो घंटे बाद जाँच लेंगे । फिर मैंने तो लिया । लेकिन कुछ भी दूसरा लिया नहीं हंअ.... कि केलेरी की बात को मैं मानूँ । सच देखना चाहिए । अकेली जलेबी बहुत खाई किन्तु मैंने और फिर समझदारी से खाई कि उस diabetes का बिगड़ा हुआ अंग स्वस्थ है या बलवान है कि क्या ? यह मुझे मालूम पड़ेगा । इसलिए लो ज्यादा । साहब जाँचा तो मिले नहीं, राम तेरी माया । तो मैं कहता हूँ मेरे गुरुमहाराज कहते कि ऐसे ही बेटा, नहीं मानी जाएगी तुम्हारी बात । यह ग्लुकोमा है । ग्लुकोमा । वह इतनी सारी अंदर वेदना – शूल लगे कि दीवार में सिर पटककर मर जाय । वृद्धा को पूछना कि ग्लुकोमा हो तब क्या होता है ? वह पूछकर विश्वास तो करना भाई । परंतु यह भगवान के बल की यह **उस** की परम कृपा है ।

● त्याग और परमार्थ करो ●

तो मेरी आप सब को प्रार्थना है कि हम सब को मिलने का हुआ है तो कुछ सार्थक करें । इसलिए अकेले स्वार्थ में मत राचो । त्याग और परमार्थ करो । नहीं करोगे तो भी करना पड़ेगा । ऐसा काल आ गया है कि जबरदस्ती करायेगा । यह काल ऐसा आता है कि जबरदस्ती करायेगा आपके पास त्याग । उसका कोई परिणाम नहीं आयेगा । ज्ञानपूर्वक, हेतु की सभानता के साथ, हर्ष के मिजाज से त्याग करें, जो परमार्थ करें, उसका फल है । बाकी नहीं । लेकिन यह काल ऐसा आता है कि जबरदस्ती यह सरकार जबरदस्ती ले जाएगी । हमारे में भक्ति प्रगट हुई हो देश के प्रति तो तो प्रेम से दे दें ।

इसलिए अब मुझे पाँच मिनट की ही देर है । यहाँ सभी भाईओंने यह यहाँ की समिति के सभी भाईओं ने इतनी सारी मेहनत की है, अहमदाबाद के भाईओंने, सब के नाम तो नहीं दूँगा । कितनी सारी मेहनत की है इस बार । इससे यह सुरत के और अन्य सभी भाईओं आये हुए को मेरी प्रार्थना है कि आज आपकी यहाँ पर समर्पण विधि करो और दो तब थोड़ा ज्यादा देना । हर बार जैसा करना नहीं । और ये बहनों से मेरी प्रार्थना है कि मुझे गहनें पहनने हैं । गरीब आदमी । किसी दिन पैसे देखे नहीं हैं । साहब, तो मुझे ये गहनें पहनाइये । ये गहनें सत्कर्म में सत्कर्तव्य में उपयोग आयेंगे । यज्ञ है यह तो । और एक व्यक्तिने मुझे पूछा कि **मोटा** आप भक्त की व्याख्या मुझे दिजीये । मैंने कहा, दे दूँ । भाई मुझे देरी क्या ? लाओ न ! तुरंत ही उसके सामने ही लिखा भी नहीं मैंने ।

समर्पण करे सब जो भी कुछ हरि के पाद भक्त जो,
भक्त को अच्छा बुरा नहीं, भक्त के कर्म यज्ञ हैं ।
समर्पण करने को कुछ ना रहे बाद में भक्त को,
ऐसे भक्त का संपूर्ण जीवन यज्ञ भव्य है ।

तब यह सब को फिर से प्रार्थना है कि इस थाली में रखो । यहाँ कोई उपर मत आना । और मुजे हार पहेनाने का कृपा करके कोई करना नहीं । और कृपा करके बहनों को प्रार्थना है कि गहनें देना ।

यह काल ऐसा आयगा कि ये गहनें भी नहीं रहेंगे । चीन का उदाहरण लो– चीन का । चीन ने कहा किसी के पास सोना रखना नहीं । और घर में यदि रखा हो तो लड़के अपने उनके बाप को फाँसी पर लटका देते । तो ये रखा हुआ संभाला हुआ संभाला नहीं जाएगा । ऐसा काल आने वाला है । मैं कोई घबराता डराता नहीं हूँ । परंतु यह प्रेम से त्याग करो । और मुझे दो और इस यज्ञ के कार्य में भाग लो ।

● *मोटा* की प्रभु-प्रार्थना त्यागी परमार्थीओं के लिए ●

ये सभी भाईओं ने अहमदाबाद के, वडोदरा के, अन्य स्थानों के भाईओं ने बहनों ने ये मेरे लिए जो मेहनत ली और बीते कल ही मुझे हुआ कि, मैं क्या बदला दूँ ? मेरे से तो कुछ दिया जा सके ऐसा नहीं है । इससे मैं तो मैं तो भजन करूँ भगवान का । वह भजन करके मेरा कहना मैं पूरा करता हूँ । इतने में समय भी हो जाएगा ।

हुए उपकारों को प्रभुमय भावना जीवन,
हृदय उभारने के लिए कृपा से प्रार्थना हुई है ।
संभव नहीं चुकाना किसी का कोई बदला अन्य रीति से,
हरि को प्रार्थना भाव से करूँ दिल जहाँ मैं उसके लिए ।
हमारे से तिनका भी न तोड़ कुछ सकेगा वह,
मदद करने ही सब पात्र समर्थ सिर्फ हरि स्वयं ।
मदद का योग्य बदला वह, पूरा **वह** *चूका सकेगा वह,*
किस तरह और फिर कब हरि वह योग्य जानता है ।
फिर कहता है, सुनो साहब;

यह एक हम सभी समझ लें.... होनेवाले कर्म । जब कर्म हो रहे हो उसी पल में exactly at that very moment बाद में नहीं ।

होते कर्म में सचमुच हो हृदय का भाव जैसा उस,
अनुसार वहाँ परिणाम सब निश्चित प्राप्त होता है ।
हुए उपकारों को प्रभुमय भावना जीवन,
हृदय उभारने के लिए कृपा से प्रार्थना हुई है ।

॥ हरिः....... ओ.......म् तत् सत् ॥

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [५]

पू. श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

सत्-चर्चा प्रश्नोत्तरी, अहमदाबाद

अगस्त-८, १९७४

पू. श्रीमोटा की दृष्टि

• समाज लक्ष्मी से उन्नत नहीं होगा •

हमारे देश में, हमारे समाज में, ये मर्दानगी, साहस, हिम्मत यह नहीं में होंगे तो हमारा देश उन्नत कैसे होगा ? देश उन्नत केवल लक्ष्मी से कभी नहीं होगा । साहब, लक्ष्मी साधन है, जरूरी है, किन्तु लक्ष्मी वाले के पास गुण और भाव नहीं होंगे तो वह स्वच्छंदी हो जायेंगे । तो इस लक्ष्मी का दुरुपयोग होने वाला है ।

(वसंतपंचमी उत्सव-दिन प्रवचन, दिनांक ३०-१-७२, वडोदरा)

• समाज में गुण भाव के अकाल का निवारण करो •

लोग अनाज-पानी के अकाल की चिंता करते हैं, किन्तु सचमुच तो समाज में जो गुण और भाव का अकाल पड़ा हुआ है, उसके लिए मुझे काम करना है । उसके लिए प्रजा की सहानुभूति नहीं होती । इससे मेरा काम मुश्किल बनता है । **समाज में गुण और भाव का अकाल पड़ा है, उसके निवारण के लिए प्रयत्न करना वह समाज की सच्ची सेवा है ।**

(अकाल के समय के एक प्रवचन से) **– मोटा**

अनुवादक :

भास्कर भट्ट

संपादक :

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

॥ हरि:ॐ ॥

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सुरत-३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ मूल्य : ₹. ..../- (.... रूपये)

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम,
पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.

❑ अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी,
अवनिकापार्क सोसायटी, खानपुर,
अहमदाबाद-३८०००१.
फोन : (०७९) २५५०२६२३

❑ मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड,
कांकरीया रोड, अहमदाबाद-३८००२२.
फोन : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरिःॐ ॥

• अनुक्रमणिका •

१. सभी समझ पहले अंदर होती ह्ख २०

२. अभी हमारे में प्रकृति Predominant है २१

३. भगवान के मार्ग में दंभ नहीं चलेगा २२

४. भक्ति लगे तो भगवान का भाव टिके २२

५. जागे हुए नर का सेवन करो २३

६. भगवान के भाव से आप अपने को नापो २३

७. सद्‌गुरु के प्रति भाव विकसित करो २४

८. चेतन की सभानता के लिए कोई साधन करो २५

९. पद्य रचनाएँ Autobiography of
my Sadhana है २५

१०. सद्‌गुरु को चिपके हुए ही सद्‌गुरु का खून करते ह्ख ... २६

११. या तो साधना करो या तो सद्‌गुरु को चिपको २७

१२. भगवान पाप-पुण्य देखते नहीं २८

१३. पैसे कमाना आसान है, भक्ति करना कठिन है २८

१४. भगवान को कोई लेबल नहीं है २९

१५. कर्म करते भगवान की सभानता रखो ३०

१६. स्वार्थ में किसीका Negativeपन हम देखते नहीं ३०

१७. भगवान का नाम लेकर छलनेवाले से नास्तिक अच्छे हैं . ३१

१८. मैं पैसे का पूजारी नहीं, भगवान का पूजारी हूँ............ ३१

१९. भगवान का अनुभव अंदर होता है ३२

२०. सद्‌गुरु घर बैठे सिखाते हैं ३३

२१. सद्‌गुरु को हमारे में जीवित करने की रीत ३४

२२. गुजरात के लिए मुझे प्रेम है ३५

२३. मनादिकरण को भक्ति में लगाओ...............................३६

२४. भगवान को कोई आकार नहीं,
आकार सब सभी कल्पित है ३७

२५. प्रेमभक्तिपूर्वक के हुक्मपालन से
साधना में गति मिलती है...३८

२६. भक्त ज्ञानी भी होता है और ज्ञानी भक्त भी होता है ३९

२७. भगवान का भाव जगाने के लिए साधना.....................४०

२८. भगवान के मार्ग के साधन—
अभय, नम्रता, मौन और एकांत ४१

२९. पहले कठिन साधना, फिर भगवत्-कृपा......................४२

३०. भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन का अनुभव........................४३

३१. ज्वालामुखी समान दहकती जिज्ञासा प्रगटाओ................४३

३२. भगवान के नाम से सब मिलता है ४४

३३. भगवान की समग्रता का अनुभव
हमारे लिए असंभव है ४४

• • •

॥ हरि:ॐ ॥

• पू. श्रीमोटा का अप्रगट पत्र •

श्रीदोरास्वामी जो श्रीअरविंद के निजी स्नेही और प्रेमी थे । उनके पुत्र का युद्ध में अवसान होने के बाद पूज्य श्रीमोटा ने उनको लिखा हुआ पत्र ।

प्रभु की रचना में जो अत्यंत भयंकर लगता हो, वह भी उनके विकास के हेतु लिए ही होता है । **भारत के समग्र समाज के घोर तामसयुक्त जीवन को जगाने, उठाने के लिए ऐसी भयंकर मुसिबतें, मुश्किलें, आफतें, दुःख ऐसा सब अनिवार्य है ।** भगवान हमारा कल्याण किस तरह करना चाहते हैं, उसकी हमें कोई सूझबूझ नहीं होती है ।

प्रभु पर चाहे श्रद्धा, विश्वास किसी को जरा सा भी न हो, फिर भी प्रभु कुछ थोड़ा ही उसे छोड़ देते हैं ? जीवन कुछ अभी जितना और जैसा है उतना ही होता है ऐसा कुछ नहीं । जीवन तो पहले भी था और अभी भी है और फिर भी होगा ही । जीवन के अनंत पहलू हैं । और उस प्रत्येक पहलू में उनके दर्शन का उसका अनुभव होने की आवश्यकता रहती ही है । सोने को या लोहे को आकार देने के लिए उसे जिस भयंकर गरमी से गुजरना पड़ता है और उसे भारी से भारी हथोड़े का मार निदाई पर सहना पड़ता है । ऐसी उसकी स्थिति वह भी उसे उसका आकार देने की ही भूमिका होती है । किन्तु उसका हमें जीता-जागता भान प्रगट हुआ होता नहीं है । हम जीवन की भयंकर से भयंकर परिस्थिति में फँस जाते हैं, और उससे जीवन जो भारी अंघड़ों से पटक-पटक कर जिस दुःख

के कुएँ में गिरकर वहाँ जो उसकी भयंकर निराशाजनक दशा प्रगट होती है, वैसी दशा में कहीं भी कोई भी आश्वासन दिल को काम में आता नहीं है । दिल दिल से दिल में एकदम अनाथ अकेला-अकेला हो जाता है । और तब जीवन एक भाररूप भी कईयों को लगे वह स्वाभाविक है ।

प्रत्येक जीवन जिसे समझ उस-उस काल में जिस तरह की समझ प्रचलित होती है, उस-उस प्रकार की समझ उसके जीवन के आगे के भाग में उसी तरह ही प्रवर्तीत होती है, ऐसा कुछ नहीं है ।

कुदरत के कायदे में हरएक में परिवर्तन हुआ ही करता है । परिवर्तन वह तो उसका सनातन अधिमय कायदा है । ऐसे परिवर्तन द्वारा ही कुदरत प्रत्येक को आकार देती है । जगत में कुछ भी परिवर्तित हुए बिना नहीं रह सकता है । अंधेरा चाहे जितना गहरा होता है, फिर भी प्रकाश फिर प्रगट होनेवाला होता ही है । इतना ही नहीं, किन्तु गहरा अंधेरा होता ही है । किन्तु जिस प्रकार वह परखा जाता नहीं । वह प्रकाश परखा जाता नहीं । उसमें कुछ प्रकाश का दोष होता नहीं है । हम प्रकाश के प्रति ज्ञानभक्तिपूर्वक स्वीकार और सभानता की भूमिका वाले होते नहीं है ।

हरएक जीव की जिस-जिस समय पर जो-जो समझ की स्थिति प्रगट होती है, उसमें से यदि मुक्त होने की उसे अदम्य प्रेरणा जागे तो वैसी समझ की दशा से भी वह प्रभुकृपा से मुक्त जरूर हो सकता है । अन्यथा तो मनुष्य वैसी की वैसी उसकी वैसी ही दशा में पड़ा ही रहा करेगा और जो उठे ही नहीं, जागे ही नहीं, जो जागकर उठकर प्रयत्न करे ही नहीं, उसे तो कौन उठा सके और जगा सके ! प्रभु तो सदैव हमारे साथ ही रहे हुए होते हैं और हमारे जीवन में सराबोर बुने हुए ही होते हैं ।

समग्र समाज को उस तरह व्यक्ति को भी वह उसे आकार देने की प्रक्रिया में होते हैं ।

समाज के जीवन में जब-जब गहरा तामस फैला हुआ होता है, तब-तब स्वयं जब आलस छोड़कर बैठा नहीं हो सकता, तब-तब कुदरत ऐसे समाज को अपार मुश्किलों, घोर वेदना, दुःख, समस्याओं इत्यादि जीवन में ला-ला कर उसे जागृत करने का प्रयत्न करती है । उसी तरह व्यक्ति का है ।

किसी भी शरीरधारी चेतनात्मक आत्मा के साथ किसी अनजाने ऐसे कारण से प्रभुकृपा से किसी भी तरह मददकर्ता हो चुके होते हैं तो वैसा हमारे जीवन में अंकुरित हुए बिना नहीं रह सकता है । हम ज्ञानभक्तिपूर्वक का स्वीकार और सभानता की भूमिका वाले यदि नहीं हो सकते तो इससे भी वह बैठा नहीं रह सकता ।

वह तो जीवन में अनेक उलटपुलट कराया ही करेगा । **उस**की जगाने की, उठाने की और प्रयत्न कराने की रीति वह **उस**की स्वयं की अलग और स्वतंत्र होती है । जो हमारी समझ के चौकठा में बराबर आती ना हो, उसके कारण वह कुछ भी यथार्थ नहीं ऐसा तो नहीं कह सकते । एक बार हमारा काम यदि ऐसे के साथ हो गया तो हम चाहे कितने हिले डुले नहीं और चाहे थोड़ी देर ऐसा मान लो कि उससे विमुख हो चुके हो तो भी **वह** तो **उस**का काम करता ही रहने वाला है । वह तो अनेक प्रकार के अलग-अलग आघात दे-देकर अंतःकरण की भूमिका को जागृत करने का प्रयत्न करते ही रहने वाला है । वह प्रभुकृपा से हमारे अनजाने में भी हमें किसी न किसी रीति से मंथन करवाते रहने वाला है । इस प्रकार के अंधेरे के संपूर्ण आधार को भी उलटपुलट कर ड़ाले वैसे प्रसंग भी जीवन में प्रगट होने वाले ही हैं । जहाँ तक हम उसे ज्ञानभक्तिपूर्वक भाव से प्रत्युत्तर देते नहीं हो जायेंगे, वहाँ तक ऐसी प्रगट हुई

प्रक्रिया को अब हम किसी भी उपाय से रोक नहीं सकेंगे । ऐसा सब हमें पसंद हो या नहीं, फिर भी हमारी रुचि या अरुचि का प्रश्न रहता नहीं है ।

कई बार तो उस मानव को दुःख के गर्त में डालकर भी आकार देता है । कई बार आघात-प्रत्याघात द्वारा भी आकार दे सकता है । कई बार तो की उच्च कक्षा पर साधना की भूमिका में प्रकट हुए जीवन को भी घोर तामस की घाटी में प्रवेश करवाकर वहाँ उसे पड़ा रहने देकर और उस तरह भी उसे तैयार करते हैं । यह विधान शायद विरोधी लगे, फिर भी वह अनुभव की हकीकत है । किसी-किसी जीवों को वैभवविलास की स्थिति में प्रगट कर उन-उन जीवों को तैयार भी उसके द्वारा वह करता होता है । कई जीव को तो जीवदशा की नकारात्मक tendency में प्रगट करके भी वह वैसे जीव का कल्याण कर सकता है सही । ऐसे सभी किस्सो में जो कोई जीव को मिली हुई परिस्थिति के बारे में हेतु की सभानता प्रगट होती है, वैसे जीव का उठाव जल्दी होता है ।

ऐसे चेतनानिष्ठ – चेतन प्राप्त किए हुए शरीरधारी आत्मा में हमारे हृदय के ज्ञानभक्तिपूर्वक के हेतुमूलक श्रद्धा, विश्वास यदि जीते जागते हुए प्रगट हो गये हो तो वैसे जीव का कल्याण निश्चित है ।

मनुष्यमात्र के जीवन में भगवान स्वयं भाग ले ही रहा होता है । किन्तु उसके प्रति उसे (मनुष्य को) सभानता प्रकट हुई होती नहीं है । वही एक मनुष्य के लिए सब से बड़ा दोष है । जड़ जैसी चीजों पर वनस्पति, प्राणीमात्र पर श्रीप्रभु का – चेतन का असर तो होता ही है । मनुष्य भगवान को भजता नहीं होता । इतना ही नहीं, परंतु श्रीभगवान का जो शत्रु बना हुआ है या विरोधी होता है अथवा तो जो उसका अस्तित्व बिलकुल स्वीकार नहीं करता है,

उसमें भी श्रीप्रभु भूमिका अदा कर रहे होते हैं ही । जड़ पर, वनस्पति पर, प्राणी पर, इन सब पर सूर्य, चंद्र का असर है ही और बारिश भी उन पर गिरती है । यह तो इतना स्पष्ट है कि मनुष्य की बुद्धि को कबूल करना पड़े वैसा है । मनुष्य को भी प्राणीमात्र को, वनस्पति को भी प्रकाश, हवा, पानी बिना चल ही नहीं सकता और उससे ही उनका जीवन टिकता है । पोषण पाते हैं । जीवन के लिए वे अत्यंत मूल्यवान हैं; अति महत्त्व के हैं । फिर भी मनुष्य के दिल में उनका कोई भी महत्त्व जागता ही नहीं है । यह तो दीये के समान खुला हुआ है । हवा, तेज (अग्नि), पानी, जमीन (पृथ्वी) बिना तो मानव को, प्राणी को, वनस्पति को कभी भी चल ही नहीं सकता । पल-पल पर तो उन-उन सब की जरूरत है । जिसके द्वारा यह सब जीवित रहता है । फिर भी उन सब में मनुष्य ज्यादा अज्ञान है । फिर भी मानव के दिल में उसके प्रति कदरदानी के साथ ज्ञान कभी भी जागा होता नहीं है । बल्कि उसके प्रति, सदा सर्वदा बिलकुल अज्ञान है । ऐसा होने पर भी भगवान की करुणा तो अपरंपार है ।

जीवन का विकास होने के लिए चेतन के प्रति सभानता प्रकट होनी यह अत्यंत आवश्यक कदम है । उसके बिना विकास कभी भी संभव नहीं है । **हम उसके संबंध में रहा करते हैं, लेकिन वह रहता नहीं है ।** जीवन में चेतन को सक्रिय रूप से कार्य करते यदि हमने अनुभव किया हो तो चेतन के प्रति हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहं, एकाग्रता से केन्द्रित रूप में सतत जीते-जागते पिरोये हुए होने चाहिए । तो ही जीवन में भी हम वैसा जरूर अनुभव कर सकते हैं ही ।

उपर जो वर्णन किए हुए ऐसे शरीरधारी आत्मा हैं, उनके सिर पर किसी भी प्रकार का ऋण तो होता नहीं है । उनको हुई मदद

चाहे बाद में तो अज्ञानता से हुई हो, उस मदद का वैसे-वैसे आत्मा स्वीकार करते हैं और वैसी उनको हुई मदद उनका भगवान स्वंय भगवान के भक्त को हुई मदद का ऋण चुकाये बिना रहता नहीं है । भक्त तो कुछ भी वापस दे सके वैसा नहीं है । उसका तो जो सब है, उसके भगवान पर ही छोड़ देता है । भगवान की बदला देने की रीत उसकी अपनी अनोखी होती है । भगवान के गढ़न का ढंग भी उसका अपना स्वतंत्र बिलकुल निराला, अगम्य, अलग और अनोखा होता है । भगवान स्वयं अनेक अलग-अलग रीति से मनुष्य को गढ़ता है । उसकी गढ़ने की क्रिया मनुष्य के मन, बुद्धि तो अनेक कठिन गांठ़ो से, पूर्वग्रहों से और संक्षिप्त अज्ञानयुक्त समझों से मर्यादित हुई होती है । ऐसी बुद्धि से मनुष्य भगवान को या उसकी कृपा को या भगवान की मनुष्य को गढ़ने की कला को कभी समझ सकने की संभावना में होता ही नहीं है । ऐसा होने पर भी भक्त को या ऐसे शरीरधारी आत्मा को की हुई किसी भी प्रकार की मदद कभी निष्फल नहीं जा सकती है । कब कैसे फल देगी उसकी रीति तो उसकी स्वयं की ही है । मदद की रीति से मदद की तरह ही फल दे वैसा भी होता नहीं है । हरएक व्यक्ति के विषय में वह अलग-अलग ही होने वाली है ।

– मोटा

॥ हरिःॐ ॥

• उद्घोषक •

दिनांक ८-८-१९७४ के दिन श्री के. एम. काँटावाला साहब के वहाँ (अहमदाबाद में) पू. श्रीमोटा ने श्री अनुपराम भट्ट साहब ने पूछे हुए प्रश्नों द्वारा हुए सत्संग का यह वृत्तांत इसके बाद दिया जा रहा है ।

• सभी समझ पहले अंदर होती हैं •

श्रीमोटा : हाँ, कहो साहब, कुछ अच्छा । ए भई, जरा सब शांत रहना । अब यह एक सत्संग का विषय चल रहा है, इससे थोड़ी शांति रखोगे तो थोड़ा मुझे एस दमे में और बोलने में मदद हो सकेगी । कहिए साहब ।

जिज्ञासु : मोटा, आप कहते थे, अद्वैत अंदर और द्वैत बाहर । ऐसी आप बात करते थे ।

श्रीमोटा : नहीं, मैं बात ऐसी करता था कि जो कुछ अनुभव होता है । द्वैत या अद्वैत कुछ भी कहो । संसार-व्यवहार के किसी भी प्रसंग का । कुछ भी जो हमें मालूम होता है, समझ होती है, वह पहले अंदर होती है । क्योंकि जिसके द्वारा जो समझना है, वह मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् । उसके पीछे की बात सब करना फालतू है । किन्तु यह तो सब समझ सकते हैं कि मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् इनके द्वारा इस संसार की सभी घटना हमें समझ में आती हैं । वह जो समझ आती है, वह पहले अंदर ।

देखो तब, जो भी कुछ दृश्यमान हुआ इन्द्रियों से, ज्ञानेन्द्रियों से, कर्मेन्द्रियों, वो दस । और फिर मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् । इन सब से जो कुछ हुआ, वह अंदर होता है । बाहर नहीं । अंदर होने के बाद, स्फोट होने के बाद कि यह फलाना व्यक्ति है । ये मेरे ठाकोरभाई है । यह मैंने व्यक्त किया । किन्तु पहले अंदर हुआ । यह

.... वह यदि आपकी बुद्धि में कबूल होता हो तो वही नियम उसमें भगवान की बात, चेतन की बाबत में लागू पड़ती है । इस चेतना का अनुभव पहले अंदर होता है । लेकिन वह अंदर ।

• अभी हमारे में प्रकृति Predominant है •

अब जो चेतन का अंदर जो अनुभव होता है, वह एक पूरा अलग विषय माँगता है । अंदर का अनुभव ऐसे ही नहीं होगा । ये हम अभी हमारे में प्रकृति Predominant है । यह प्रकृति Predominant है । वे प्रकृति के गुणधर्म हैं और प्रकृति के विषय में है, यह सभी समझ उस समझ के अनुसार जो कुछ हमें लगता है । अंदर.... पहले अंदर । फिर बाहर व्यक्त होता है । लेकिन वह.... वह हरएक मनुष्य को अलग-अलग । एक ही व्यक्ति आपको अच्छा लगता हो । वही मनुष्य दूसरे को बुरा लगे । वही मनुष्य दूसरे को परोपकारी लगे । एक मनुष्य के अनेक पहलू । यह कबूल हमारी बुद्धि करे । वे अनेक पहलूओं का अलग मनुष्यों को अलग-अलग अनुभव होता है । क्योंकि उसी तरह वह परिचय में आया है ।

तो चेतन के संबंध में भी ऐसा ही है । चेतन के संबंध में । चेतन ऐसा नहीं है । चेतन को कहो या उस संसारी मनुष्य जैसे अनेक पहलू हो वह बात नहीं है । किन्तु मनुष्य जो है । जो उसकी भक्ति करता है । वह उसके प्रश्न अलग-अलग । उसकी समझ अलग-अलग । उसके गुणधर्म अलग-अलग । उसकी प्रकृति अलग-अलग । इससे वह उसकी साधना करते-करते जब द्वन्द्वातीत या गुणातीत होता है । अर्थात् प्रकृति अग्रभाग से निकल जाय, गौण हो जाय और भगवान का भाव । भगवान अग्र भाग में नहीं रहता है । प्रारंभ में बाह्य साधना करते-करते भगवान की भावना । भावना जिसे कहें । भाव अग्र भाग में हो । और भाव अग्र भाग में हो तो दिन में कितने घंटे में, कितने समय तक आपमें वह रहता है । वह आपको समझ आती है न ?

• भगवान के मार्ग में दंभ नहीं चलेगा •

इस संसार में कोई स्वार्थ में हो तो वह स्वार्थ कितना समय आपके दिमाग में रहता है, वह आपको समझ में आता है। कोई आपकी शिक्षा का विषय समझ में आता है। कोई आपकी दुनियादारी की, संसार की बात आपको समझ आती है कि कितने समय तक आपके मन में रहती है। **और यह भगवान का भाव या तो भगवान के बारे की हकीकत यदि आपके मन में टिकती न हो तो आप समझ लेना कि इस मार्ग के आप प्रवासी नहीं है। गलत बात है। निकल जाओ जल्दी दंभ मत करो । सब चलेगा इस भगवान के मार्ग में । दंभ नहीं चलेगा । Complete transaprent Frankness, Sincerity, Honesty and Devotion ये चार वस्तु इसमें चाहिए । अन्यथा नहीं चलेगा आपका दूसरा बिलकुल कुछ भी नहीं चलेगा ।**

तब एक साधन को पकड़कर आप कितना समय रहते हो, यह तो परीक्षा करो । इस मार्ग पर चलने निकले हुए मेरे बेटे, लेकर जुटे हुए। कोई कर नहीं सकते। आप प्रयोग करो। एक साधन को लेकर आप देखो कि कितने समय तक, कितने काल तक पाँच, छ, सात घंटे तक— दो घंटे, चार घंटे, कितने घंटे तक एक साधन को लेकर चिपककर आप रह सकते हो। अच्छा, वह छोड़ दो।

• भक्ति लगे तो भगवान का भाव टिके •

ये तो भगवान का भाव कैसे टिके उस पर बोलता हूँ। तब.... तब भगवान का भाव अपने आप नहीं टिकेगा। भक्ति लगेगी। अब तो भक्ति कैसे लगे ? अनुराग हुए बिना तो लगेगी नहीं । राग अलग। अनुराग अलग। आपके संस्कृत शब्द में डिक्षनरी में खोज लेना। राग से अनुराग ज्यादा है। दूसरे सामान्य मनुष्यों को समझ में नहीं आयगा यह । किन्तु राग की अपेक्षा अनुराग बढ़ता है । उसकी मात्रा भी भारी। असरकारक भी अनुराग भारी। तो उसका अनुराग लगना चाहिए।

• जागे हुए नर का सेवन करो •

अब वे साधन तो साले प्रापंचिक तो नहीं होंगे हम से। तब किसी जीवित जागृत नर का संग करो . जागते नर का सेवन करो। कबीर साहब ने कहा है यह। तो कौन ऐसे को पड़ी हैं ? जागते नर को। उसके मन में कोई अनेक मुझे पाँव पड़ते हैं। गुरु करते हैं। बाप ऐसा करो, वैसा करो, फलाना करो। मुझे सब। यह वेश बहुरूपिया का मैंने लिया है। यह मुझे मालूम पड़ता है। किन्तु मेरी सास के आप कितने काल इस गुरु को रखते हो तुम्हारे मन में ? इस चौबीस घंटे के अंदर। इन चौबीस घंटे के अंदर कितने घंटे रखा ? कितनी मिनट रखा ? उसका हिसाब तो थोड़ा निकालो। मुझे बताओ।

मैं कबूल करुँगा और मैं गलत होऊँगा तो जगत में जाहिर करुँगा कि मैं झूठा हूँ। दयारामभाईने एक बार गाया है, *''मैं झूठा जगदीश लाज मेरी रखोगे तो रहेगी।''* वह किसी भी प्रसंग में उसने कहा हो, किन्तु दयारामभाई ने गाया है सही। *'मैं झूठा जगदीश लाज मेरी रखोगे तो रहेगी।'* मैं ऐसा नहीं कहूँगा। मेरे भगवान के पास मैं कहूँगा कि आज तक मैंने तुझे छला है, ऐसा मैं कहूँगा। मेरे भगवान को साफ दिल से कहूँगा कि इतने सारे के इस मनुष्यने इस काल तक मेरे बारे में अनन्य भाव से और उसके बाद भी कुछ हुआ नहीं, इसलिए मैं झूठा। और मैं स्वयं को किसी भी काल में छुपाऊँगा नहीं। बिलकुल नहीं छुपाऊँगा। लेकिन यह मेरी बात सच है। (बीच में एक भाई को: भाई वहाँ बैठो आप)

• भगवान के भाव से आप अपने को नापो •

वह कितना समय आप एक साधन लेकर पकड़ लेते हो। वह तो आप स्वयं देखो। अनेक मुझे कहते हैं ***मोटा*, आपने ऐसा नहीं किया। ऐसा नहीं किया। अरे मरे हुए, साले *मोटा* को जाने दो न। आप कौन हो ? आपको स्वयं को इसमें, आपको भगवान के मार्ग पर जाना हो तो दूसरों के आश्रय लेना छोड़ दो। आप स्वयं कितने**

मजबूत हैं ? आप स्वयं कितना कर सको ऐसा हो ? आपमें स्वयं में कितनी शक्ति है ? आपमें स्वयं में आगे बढ़ने के लिए की तमन्ना ज्वालामुखी के समान कितनी प्रगट हुई है, वह आप देख लो । यह आपको मालूम ।

साला क्रोध आये तो मालूम पड़ता है । मोह होता है तो मालूम पड़ता है । स्वार्थ लगता तो मालूम पड़ता है । उसकी सभानता, उसकी सभानता आपको रहती है । स्वार्थ की किसे सभानता नहीं रहती ? मुझे कहे । आगे आकर । यदि स्वार्थ की आपको सभानता रहती है तो भगवान के भाव की ना रहे ऐसा । ऐसा आपको यह कैसे हो सके ? किसी भी सायकोलोजीस्ट को लाओ मेरे पास । यदि स्वार्थ की आपको सभानता रहती है तो भगवान का भाव है । तो कि वह तो **मोटा** पलभर थोड़ी देर रहती है । अच्छा भाई, कबूल है । भले थोड़े पल । हाँ, किन्तु चौबीस घंटे के अंदर उसका जोड़ तो करो कि पाँच मिनट रही, दो मिनट रही ऐसा करके पूरे दिन के चौबीस घंटो में कितना समय रहती है ? उसके उपर से आप नाप निकालो कि इस मार्ग के आप प्रवासी हो या नहीं?

• सद्‌गुरु के प्रति भाव विकसित करो •

अब साधन ना हो सके तो सद्‌गुरु को चिपको । सद्‌गुरु वह पाँच तत्त्वों का– शरीर का बक्सा है । यह बात सच है । किन्तु *''सन्तो जागते नर का सेवन करो ।''* किन्तु आपके पास कोई परीक्षा नहीं है कि यह जागता है या मेरी सास का सोया है । यह कामी है या क्रोधी है या फलाना है । यह आपके पास कोई परीक्षा थरमामीटर उसके पास है नहीं । तो किस तरह समझना ? कोई निमित्त संजोग से आ मिला हमें । और फिर आपको आपके पास बुद्धि रखो । कुछ भावना रखो । समझ लो । उसके काम समझ लो । उसे समझ लो । परंतु उसे एक मनुष्य के रूप में आप समझे । किन्तु आपको भाव नहीं बैठेगा उस पर । आपको यदि उसे सद्‌गुरु स्वीकार करना हो तो भाव रखना पड़ेगा । वह किस दिन कहकर निकला है नारियल देने लेकर । वरयात्रा निकाल कर निकला नहीं है कि मुझे सद्‌गुरु करो भाई । किन्तु यदि आपको करना हो तो भाव आपको विकसित करना हो तो भाव आपको विकसित करना पड़ेगा । अन्यथा छोड़ो माथापच्ची । यह बात पक्की है ।

• चेतन की सभानता के लिए कोई साधन करो •

तो चेतन की सभानता हमारे में रहे इसके लिए या तो एक साधन करो और उस साधन में कितने काल तक आप टिके रहते हो उसका अभ्यास करो । आपको यदि लगे कि दिन के चौबीस घंटे में चार घंटे तक भी उस साधन में आपक टिक रहे हो । तो उस मनुष्य के लिए संभावना है । आगे बढ़ा सकेगा बाद में । समय उसे बढ़ाते जाना चाहिए । पंद्रह, सोलह घंटे तक आप ले जाओ । बाकी का काम भगवान करेंगे या सद्गुरु आपके करेंगे । फिर आगे शक्ति नहीं है अपनी । दूसरे किसीकी होगी । मेरी नहीं है ।

मैंने यह अनुभवपूर्वक समझ समझ कर, दिमाग में बुद्धि दौड़ा कर मैंने किया । पंद्रह, सोलह घंटे तक ले गया था । फिर मेरे जाने का संभव न था । बहुत प्रार्थना भी की है । बहुत मथन किया है । अलग-अलग साधन गुरुमहाराज ने बताये थे, वे करके दिखाये हैं । ऐसा नहीं कि नहीं । करके दिखाकर उसके परिणाम सहित जानकर पक्का करके ये किया है ।

• पद्य रचनाएँ Autobiography of my Sadhana हैं •

ये सब मेरे जो गीत लिखता हूँ । वे Autobiography of my Sadhana हैं । आज नहीं उसे समझ पड़ेगी । परंतु सौ वर्ष बाद कोई मनुष्य अभ्यासी निकलेगा । उसे समझ पड़ेगी । मैंने लिखा है इसलिए नहीं । परंतु मानवीय हेतु से लिखता हूँ । **और मुझे ये गद्य से पद्य मुझे ज्यादा आसान और सरल लगता है ।** उस एक आठ पंक्तिओं में एक भाव दिखा देना । दूसरी आठ पंक्तिओं में दूसरा भाव । यह उसमें मेरे से होता नहीं है ।

वह भले ना बिके । उसकी मुझे चिंता नहीं है । परंतु इस काल में मैं पैसा खर्च करता नहीं हूँ । कोई मुझे पैसे देते हैं और मैं छपाते रहता हूँ । इन्दुकाका । (श्री इन्द्रवदनभाई शेरदलाल, गुरुकृपा गेस्ट हाउस, टाउन हॉल के पीछे, एलिसब्रिज, अहमदाबाद-३८०००६)

उसके घर में भरकर रखते हैं । कभी भी बिकेंगे तो बिकेंगे । नहीं बिकेंगे तो मेरे जीवन की यह एक बड़ी बात है । वह मुझे कह देना है । मरते-मरते अनेक लोग कह गये हैं । वह मैं तो पराये के पैसे से करता हूँ । मेरे घर के पैसे तो कि आश्रम के पैसे भी खर्च नहीं करता हूँ । और मुझे मिलते हैं पैसे । मिलते हैं । भगवान की कृपा से देते हैं । तो मैं छपाते रहता हूँ । Autobiography of my Sadhana । उसे पढ़ेंगे लोग । तो मैं तो लस्टम-पस्टम लिखता हूँ। क्योंकि मैं अनेकों के जीवन में घनचक्कर जैसा काम किया हो । मूर्खतापूर्ण । घनचक्कर जैसा । वह साला साहित्य की दृष्टि से शब्द योग्य न हो, परंतु मैं उसकी परवाह नहीं करता । मुझे साहित्य के साथ क्या ? साहित्य में मैंने ओनर्स लिया था साहब । बी.ए. में तो संस्कृत में तो .... प्रतिशत मार्क लाता था । तो चाहूँ तो सुंदर साहित्य मैं लिख सकता हूँ। परंतु मेरा वह काम नहीं है । मुझे तो गुरुमहाराज का हुक्म पालना है कि सादे में सादा, सरल में सरल, अनपढ़ मनुष्य भी समझ सके वैसा लिखना । तो परीक्षा भी करता हूँ । इससे ये सब लिखता हूँ ।

• सद्गुरु से चिपके हुए ही सद्गुरु का खून करते हैं •

परंतु मूल बात तो यह है कि भगवान का भाव हमारे अंतर में प्रगट हुए बिना वह भगवान की awareness, भगवान की सभानता कभी आ सकेगी impossible । या तो आप साधन करो और साधन को चौदह-पंद्रह घंटे तक ले जाओ । वह एक मार्ग । दूसरा मार्ग है । या तो सद्गुरु करो । तो उसमें प्रेमभक्तिपूर्वक करो । यह तो चाहे उतने खून कर देते हैं । ये मेरे साथ चिपके हुए को मैं देखता हूँ । **कि चाहे उतने खून कर दे । ऐसा सोचते हैं कि भविष्य में मैं तो उसके सामने भी ना देखूँ । मुझे अनुभव है । परंतु मैंने ऐसा किया नहीं है । मेरा धर्म है चाहने का । कि सभी को चाहता हूँ ।**

मैं ऐसा नहीं कहता कि जिसे अनुभव कर लेना हो वह कर ले । जीते जीते । ऐसे मनुष्यों के पास गया हूँ कि जिन्होंने मेरे लिये बहुत

उलटा सोचा है । अन्यथा रूप से तो कुछ कह सकते नहीं । आज मैं तो मुझे कोई संकोच नहीं है । मैं तो कह सकता हूँ । परंतु उस व्यक्ति के लिए कहना ठीक नहीं । अविवेक कहा जाएगा न । उसके लिए, किसी के लिए कहना सब में, जाहिर में, अविवेक कहा जाएगा । मेरा धर्म, मेरे शरीर का धर्म गृहस्थाश्रमी है । इससे मुझे पालन करना चाहिए । किन्तु फिर भी कई बार वह मर्यादा लाँघ जाता हूँ । और मुझे परवाह भी नहीं है । और कोई कुछ भी क्या मान ले ! **साले को मान लेने दो न । मेरे बाप का क्या जानेवाला है ? उसके बाप का जाएगा ।**

• या तो साधना करो या तो सद्‌गुरु को चिपको •

इससे मूल बात मैं कहता था कि भगवान का भाव हमारे में टिके तो दो बात । या तो आप साधना करो, और साधना करते-करते सद्‌गुरु को धारण करो । **भगवान के मार्ग पर जाना हो या सद्‌गुरु ना हो और साधना करनी हो तो हरएक कर्म होते-होते हरि की सभानता अग्रभाग में आप में रहनी चाहिए । तो ही वह योग । तो ही वह भक्ति, तो ही वह ज्ञान । अन्यथा नहीं साहब । सभानता *उस*की पहली । कर्म बाद में, कर्म बाद में ।**

तब वह सभानता रहते-रहते ये सब कर्म हो और समर्पण हो तो सहज रूप से समर्पण होगा । उसे करना नहीं पड़ेगा । जैसा हमारे पास कोई माँगता हो और पैसे दें । यह तो हमारा धर्म है । देना ही चाहिए । तब हमें अपने आप सूझ जाता है । यह तो सब **उस**का ही है । और **उस**को ही देने का है । तब भगवान की सभानता । वह वैसे ही नहीं रहेगी साहब ।

जैसे बड़े हुए और परिचय में आते-आते बालक परिचय में आते-आते सब के संबंध में आता है । परिचय बिना नहीं आएगा । पागल हुआ मनुष्य सब के परिचय में नहीं आयेगा । क्योंकि मन की ऐसी स्थिति नहीं है । तब हमें भी ऐसा परिचय होना चाहिए । साधना के संबंध में । उसका अभ्यास होना चाहिए । अभ्यास में बहुत समय जाना चाहिए । तब वह हुए बिना कुछ भी बनना संभव नहीं है ।

या तो सद्‌गुरु में रखो। किन्तु सद्‌गुरु में मन रखो तो वह पा घंटा, आधा घंटा नहीं साहब। वह भी नहीं चलेगा। सतत चाहिए। गीताजी का मूल ...... गीताजी की मूल .... सातत्य है। सातत्य के बिना नहीं चलेगा इस में। जिसे जाना हो वह जाय। और न जाना हो तो भगवान कहता नहीं कि मेरे साथ तुम आओ।

• भगवान पाप-पुण्य देखते नहीं •

उसने तो रख दिये हैं हमें खुले। स्वतंत्र हो। पाप करने के लिए और पुण्य करने के लिए। और यह भूल जाओ। इतने सारे लोगों ने गप्पे मारे हैं। शास्त्रोंने मारे हो तो भले और संन्यासिओंने मारे। भगवान पाप-पुण्य देखता ही नहीं। कर्म के परिणाम हैं, यह बात सच। किन्तु भगवान के कारण है, यह बात गलत। भगवान पाप-पुण्य बिलकुल देखता नहीं है साहब। ये मैं आपको मेरी हकीकत कहता हूँ। अन्यथा हमने कितने ही जन्म में कैसे कर्म किये होंगे कि जिसके बारे में आज जाने तो थरथरा उठेंगे। यह करुणा है भगवान की। और वह देखता नहीं पाप-पुण्य। अन्यथा तो वह स्वीकार ही नहीं सकता। अनेक पापिओं का स्वीकार किया है। भक्त..... और कैसे पावन हो गये हैं! भक्तों में शिरोमणि हो गये हैं। भगवान पाप-पुण्य देखता नहीं है। यह भूल जाओ आप। और तो भी उसकी भक्ति तो करो भाई!

• पैसे कमाना आसान है, भक्ति करना कठिन है •

परंतु कौन करे? राम तेरी माया। वह करना सरल नहीं है। **अभी पैसे कमाना सरल है। इस दुनिया में पैसे कमाना अभी सरल है। किन्तु भगवान की भक्ति करना सरल नहीं है। कठिन है। वह नहीं होगी। स्वार्थ होगा। पति को चाह सकोगे। बेटे को चाहोगे, मा को, बाप को, इस संसार को चाहेंगे लोग। गले तक और सिर तक और पाँव तक। नसनस में, रगरग में है वह। परंतु भगवान तो कहे साला, मेरा साला भले एक तरफ पड़ा रहे। भगवान के लिए ऐसा किसीको है नहीं साहब।**

भगवान के लिए वैसा भाव नहीं है । जितना संसार के लिए है । प्रतिष्ठा के लिए, आबरू के लिए । ये जो है वैसा भगवान के लिए किसीको है नहीं । और भगवान को फिर पाने के लिए, अनुभव करने के लिए हम बाते करें वह मिथ्या है । वह भगवान को हमारे द्वारा छलने जैसा है । यह नहीं होगा । यह नहीं हो सकेगा । किसी काल में नहीं हो सकेगा । जीता जागता होता तो डंडे ठोकता । मेरे गुरुमहाराज अनेकों को कहता था । मेरे गुरुमहाराज अनेकों को डंडा मारता था । **साले को ना मारे तो करे क्या उसे ? उसे तो गला दबाकर मार डालूँ । कहते हैं । ऐसा ऐसा करता है । तो उसके कर्म वह देखता था ।**

• भगवान को कोई *लेबल* नहीं है •

इससे..... किन्तु भगवान तो बहुत दयालु है । बहुत कृपालु । उसके नाम सब दिये हैं । ये सहस्रनाम या जो कहो वह । वह कुछ भगवान ने नहीं दिये हैं । वह तो लोगों ने किसीको दयालु लगा । किसी को करुणालु लगा । किसीको समत्व वाला लगा । किसीको साक्षीभाव वाला लगा । यानी जिसको जैसा लगा वैसा उसने लिखा । ऐसे उसके नाम पड़े । उस भगवान को नाम नहीं है । कोई उसे सहस्त्रनाम कहे । भले कहे सब । और हमारे में हमारे में किताब भी है । आज ही मुझे किसी ने भेंट दी । विनोबाजी ने लिखी हुई विष्णुसहस्त्रनाम ! वह कोई भगवान ने कोई अपने मेरे ये नाम मेरे ये है । मैं ये हूँ । ये हूँ । ऐसा भगवानने कहा नहीं है । यह तो लोगों ने उसे सजा दिया है । मैंने कहा मेरे साले, आप *लेबल* क्यों लगाते हो उसे ? उसे कोई *लेबल* नहीं उसे । किन्तु कौन समझे भाई ? तो भी ठोकते हैं *लेबल* । भगवान को कोई *लेबल* नहीं है ।

किन्तु उसे अंदर अनुभव करने के लिए दो ही साधन । या साधना और या तो सद्‌गुरु । साधना सद्‌गुरु के बिना हो सकती है । किन्तु वहाँ भगवान को आगे रखना चाहिए । वह धीरे-धीरे रख सकोगे । धीरे-धीरे रख सकोगे । जैसे-जैसे गरज लगती जाय न । साधना में जहाँ तक आपको स्वार्थ जागता नहीं वहाँ तक नहीं होगा । चाहे जितना अभ्यास करोगे । आज ढ़ाई घंटे, फिर पाँच मिनट जोडी, दस मिनट, पंद्रह मिनट...

• कर्म करते समय भगवान की सभानता रखो •

कर्म essential है साहब । साधना भी करना हो । चाहे जितने महात्मा लोगों को मैं बात जानता नहीं हूँ । मैं तो मेरी बात जानता हूँ कि कर्म essential है । **कर्म करते-करते भगवान की awareness आपको रहनी चाहिए । भगवान की स्मरण-भावना रहनी चाहिए । कर्म करते-करते ।** क्योंकि यह संसार ही कर्म से— कर्म का प्राधान्य है । इस संसार में किसी क्षेत्र में— ज्ञान के क्षेत्र में भी कर्म का प्राधान्य है । किन्तु तब उसे कर्म नहीं रहता । तब उसे भक्ति रहती है भगवान की । किन्तु कर्म है उसे । कर्म नहीं है ऐसा नहीं । तब वह कर्म जो है, वह जो है उस कर्म को । कर्म करते-करते होना चाहिए । मैं कोई ये गप मारता नहीं हूँ । इस संसार में रहकर किया है । मेरे *कलीग्स* अभी सब जीवित हैं । तो यह कर्म करते-करते वस्तु बननी चाहिए । वह essential । किन्तु वह कर्म वह कर्म खाली नहीं । परंतु कर्म करते समय भगवान की भावना हमारे में प्रगट रहे । जीती जागती रहे । यह एक तीसरा रास्ता । सरलता वाला । किन्तु यह तो हो नहीं सकता ऐसे ।

• स्वार्थ में किसी का Negative पन हम देखते नहीं •

जैसे हमें स्वार्थ लगा हो, तब स्वार्थ का कर्म करते-करते स्वार्थ की सभानता आपको तब रहती है । उस तरह भगवान के विषय में आपको स्वार्थ लग जाय तो बन सकेगा । तो वह स्वार्थ लगाने के लिए ही साधना । नित्य का नित्य का परिचय हमें साधना द्वारा ही हो सकेगा और रह सकता है । इससे आप साधना करो । जो कोई आपकी प्रकृति को अनुकूल हो वह । साधना हुए बिना सद्‌गुरु भी नहीं कर सकेंगे । क्योंकि सद्‌गुरु को चौबीस घंटे आपके मनमें आप नहीं रख सकोगे । आपका संसार है । व्यवहार है । यह है । वह है । इससे सद्‌गुरु आप में जीयेगा नहीं । सद्‌गुरु के लिए ऐसी भक्ति प्रगट नहीं हुई है । भक्ति प्रगट होगी तो जीता है हमारे में । अपने आप आता है । मेरा स्वयं का अनुभव है । भक्ति उसकी प्रगट करनी चाहिए । गरज हो तो गधे को बाप नहीं कहते हैं ? यह कोई गलत बात

नहीं है । Psychological truth है । उस समय गरज लगी है । साहब, आप देखने जाते हो ? वह साला ऐसा है ? वह तो इसमें ऐसा है और इस में ऐसा इसमें ऐसा हे और वैसा है। ऐसा सोचते हो ? आप सोचो सब इतने बैठे हो। पूछो कि आपको सब सचमुच उसकी गरज लगी हो, उसका स्वार्थ लगा हो, तब किसी दिन ऐसा सोचते हो Negative पन? किसी दिन भी सोचकर देखो आप ।

• भगवान का नाम लेकर छलने वाले से नास्तिक ज्यादा अच्छे हैं •

यह मेरा तो चाहे जितनों ने खून किया है । भयंकर से भयंकर रीत से । तो भी मैं उनको चाहता रहता हूँ । अबे, किन्तु बिना लेनेदेने के मैंने आपको कुछ किया नहीं है । आपके बुलाने पर आया हूँ । मैं अपने आप पधारा नहीं आपके घर । कि आइये माबाप, मुझे रोट दो, पैसे दो । आपने बुलाया है तो मेरे साले मेरा खून क्यों करते हो ? तो फिर किस तरह होगा ? मैं तो देखता हूँ कि इस संसार में किसी को भगवान की गरज ही नहीं है । बिलकुल भगवान की गरज नहीं है । व्यर्थ भगवान को छलते हैं । दूसरा सब करना हो तो करो, किन्तु इस भगवान को मत छलो । अकारण मौखिक रीति से या अकारण रीति से भगवान का नाम छोड़ दो । वह ज्यादा राजी है । हमारे से ज्यादा जो भगवान को— नास्तिक है— भगवान को मानता नहीं कि साला, *हम्बग* है, वह ज्यादा अच्छा है । मैं उसे स्वीकार करता हूँ । किन्तु भगवान का नाम लेनेवाले लिखा है—

बहुत बहुत कामना वाले, बहुत लोलुपता वाले,
हरि भजने क्या निकले ! हरि का नाम लजाते हैं ।

मैंने लिखा है । किसी जगह भजन में लिखा है । वह यह मैं आपको अनुभव से कहता हूँ । ये व्यर्थ गप मारता नहीं ।

• मैं पैसे का पूजारी नहीं, भगवान का पूजारी हूँ •

मैं तो सच ही कहने वाला । मुए साले, मुझे नहीं बुलाएँगे तो । हजार हाथवाला मेरा भगवान है । वह मदद करेगा । इस साहब

को मैंने पत्र लिखा । मुझे आप मदद मत करना । भगवान करेगा । आपको अनुभव तो होगा न ! अनेकों को अनुभव होता है । और वह भी मुझे भगवान ने भेजा हुआ होता है । अपने आप कुछ वह अपने आप खींचे हुए आये नहीं है । मेरा भगवान मुझे मदद करने के लिए भेजता ही रहता है । कोई न कोई । आज मैं ये इतने वर्ष जीया कोई न कोई ऐसा भेजा करता है । मुझे ऐसा मुझे मिला देता है कि मुझे मदद करते ही रहते हैं । ये मुझे जाना नहीं था । मेरा शरीर चले ऐसा नहीं है । गाँव में । मैं जाता था रहने दो । अब मैंने मना कर दिया । इन्दुकाका आया । **मोटा**, ये तो जाना पड़े ऐसा है । मैंने कहा, ''भाई, मेरे से नहीं बनेगा । इसलिए मैं नहीं आऊँगा । मुझे यह दमा चढ़ता है और मुझे ..... मैं कोई पैसा का पूजारी नहीं । **में तो भगवान का पूजारी हूँ ।**'' तो मेरे भगवान के लिए मैंने किया है मेरे से । ऐसा तीनके जैसा था । किन्तु मेरे से हुआ वैसा सब किया है । मैंने कोई आलस-प्रमाद का सेवन नहीं किया है । और बीमार होते हुए भी बैठे-बैठे मैं मेरे भगवान का नाम लिखा करता हूँ । भगवान का भजन करता हूँ । बैठे-बैठे भी । मरते-मरते भी ऐसी बीमारी में भी मैंने भगवान को छोड़ा नहीं । लिखा करता हूँ । इतना सारा प्रत्यक्ष है कि उसे मुझे साबित करने की जरूरत नहीं है । सतत मेरे साथ होती है *पेन* । और यह लिखा ही करता हूँ । आश्रम में रहने वाले भी देखते हैं । इसलिए मुझे मेरे लिए कुछ कहना नहीं है ।

• भगवान का अनुभव अंदर होता है •

किन्तु आपको यदि भगवान का अनुभव करना हो तो वह भगवान तो पहले अंदर ही होता है । वह अंदर साधनाभ्यास के बिना होगा नहीं । साधना १४-१५ घंटे तक ले जाओ । आ जाओ । मेरे बेटे, मैदान में आप पड़ो । यह मुँह कि बात नहीं है । आप । ये करने की बात । वह शास्त्र से नहीं मिलेगा । प्रवचन से नहीं मिलेगा । उपदेशों से नहीं मिलेगा । किसी काल नहीं मिलेगा । भूल जाओ लोग सब । प्रयत्न से

ही मिलेगा । पुरुषार्थ से ही मिलेगा । उस पुरुषार्थ में भावना आपका स्वार्थ उसमें लगे बिना होगा नहीं ।

तो कि स्वार्थ किस तरह लगाना ? कि अभ्यास करो । बुद्धि से समझ लो कि करने जैसा यही है । इसके सिवा दूसरा करने जैसा नहीं है । उत्तम से उत्तम यही करो । **यह संसार-बंसार करो आप । वह भगवान का समझ कर करो ।** किन्तु उसमें से यह निष्काम होते जाओ । आसक्ति निकालते जाओ । मोह निकालते जाओ । लोभ निकालते जाओ । धीरे-धीरे करके और ऐसे सब आप हो जाओ । फिर आपको आपके साधन में भी जोर आएगा ।

अभी हम साधन करते हैं सही, किन्तु उस साधन में प्राण प्रवर्तनमान नहीं है । उसका कारण कि हमारा मन तो संसार में रहा हुआ है । निरा स्वार्थ में भरा पड़ा है और फिर हम बोलें वह सब निरर्थक है । किस तरह भगवान में आयेगा ? यह आपका स्वार्थ आपका संसार में कितना घटा है, वह आपको समझ आयेगा न ! बार-बार आपका मन ही आपको कह देगा । मन जहाँ-जहाँ जैसे-जैसे जिस तरह स्पर्श करता है, उस तरह आपका संसार है । इससे आप सद्‌गुरु को—या तो साधन के अभ्यास में गड़ जाओ या तो सद्‌गुरु को—या तो साधन के अभ्यास में गड़ जाओ । या तो सद्‌गुरु को पकड़ो । किन्तु सद्‌गुरु को पा-आधा घंटा आप बात करो । उसे रखो । अरे ! वह भी नहीं रहता है साहब । पा-आधे घंटे की बात छोड़ दो । कुछ झलक लगे । मिनट-आधी मिनट, कुछ थोड़ी देर लगेगी । झलक लगेगी, किन्तु वह झलक लगे तब । ऐसी जब भक्ति हो । ऐसी । यह भी आपको कहता हूँ अनुभव की बात । ऐसी भक्ति, ज्ञान उसके संबंध में प्रगट हुए हो तो उस झलक में भी आपको कुछ मिलता है ।

• सद्‌गुरु घर बैठे सिखाते हैं •

मुझे साधन घर बैठे, मैं कोई गया नहीं था । मेरे गुरुमहाराज के पास । घर बैठे उन्होंने मुझे सिखाया है । मुझे ऐसा लगा । उसने पहले

सपने में सिखाया है। सपने तो मैं समझता था मिथ्या साले ये तो। सपने तो मिथ्या। दूसरे दिन वह का वह ही आया। Detail से। सपने तो मिथ्या। तीसरी बार आया। मिथ्या। चौथी बारा आया। मिथ्या। पाँचवी बार। मिथ्या। वह कितना संस्कार हमारे में दृढ हो गया है। फिर मैंने सोचा कि साला करके तो देखने दो। छठवे दिन ज्ञान प्रगट हुआ कि साला हररोज ऐसा आता है सपने में तो हमें कर देखने में चाहे मिथ्या हो, किन्तु ये कर देखने में क्या जाता है? करके तो देखो। इतनी सभानता आई। भगवान की कृपा से। तो किया तो अच्छा लगा। साला, ये तो अच्छा है।

• सद्‌गुरु को हमारे में जीवित करने की रीति •

फिर मुझे ऐसा लगा कि ये योग्य नहीं साला। दो-चार बार यह सपने में फिर उसने मुझे। फिर तो मैं कुछ ऐसा नहीं मानता था कि ये मिथ्या है। सच्चा ही मानता था। Reality उसके बाद.... बाद में उसे मैंने जागृत किया। मेरे स्वयं में। प्रयत्न से साहब। ऐसे वैसे नहीं। मुझे कोई भक्ति नहीं लग गई थी। ये तो वह साधन आपसे नहीं हो सकता तो प्रत्यक्ष साधन किस तरह हो सकता है। **सद्‌गुरु में *जीव* किस तरह आप दाखिल कर सकोगे। इस साधना की रीति मैंने की थी, वह बताता हूँ। यह प्रश्न ऐसा है कि ये मुझे खुला होना ही पड़ेगा।**

इससे बार-बार दिनमें उसे मेरे सामने लाता। पचास बार, साठ बार, सत्तर बार, सौ बार, दो सौ बार ऐसा करते-करते देढ़ साल में continuity हुई। फिर सब बात करुँ उसे। जो भी सभी बात करता। साधना का भी पूछता। सब बताते। सब कहते। कान से सुन सकता। किसी समय प्रत्यक्ष दिखे नहीं, किन्तु कान से सुन सकता। सब बातें सुन सकते। और साहब उस समय जो सहाय हमें मिलती है। जो प्राण प्रगट होते हैं हमारे में। जो चेतन प्रगट होता है। कोई नया प्रकार का है। किन्तु अनुभव से जो समझ आती है। इस तरह गुरु में चित्त लगाकर देखो। मैं तैयार हूँ अभी। मरते-मरते इस शरीर को भले छिहत्तर हो गये। यह सतहत्तरवाँ बैठेगा।

किन्तु अभी मैं तैयार हूँ । कोई आये मर्द बच्चा सामने मैदान में । मेरी तैयारी है । किन्तु मेरी शक्ति नहीं भगवान की शक्ति से । भगवान की शक्ति से मेरी तैयारी है । **किन्तु अभी तक कोई *जीव* ऐसा मिला नहीं है, कि मेरे में जिसने चौबीसो घंटे मन रखा हो ।** काम कोई मेरा करता है । यह मैं कबूल करता हूँ । किन्तु वह तो हथियार है । उसे पता नहीं है । वह भले ऐसा मन से मानता हो कि मैं भगत । **मोटा** का इतना सारा काम करता हूँ । किन्तु वह सिर्फ मेरे भगवान का हथियार है । वह तो mechanical हथियार है । **उस समय उसके मन में काम करते समय *मोटा* की या भगवान की कोई किसी की सद्‌गुरु की सभानता कहाँ है ? तो काम करता हैं । और काम तो प्रकृति के वश होकर, स्वभाववश होकर करता रहता है । यह नहीं करेगा तो दूसरा करेगा ।** आप बुद्धि से सोचें । मेरा गलत हो तो मुझे कहना । मुझे मदद करता है । उसका मैं आभार मानता हूँ और मेरे भगवान से मैं प्रार्थना करता हूँ, उसे कल्याण कि गति दे । उसे भगवान प्रति प्रेरित करे । **कोई कर्म करता है, इससे मैं एक ज्ञानी की तरह उसमें क्या है ? उसका धर्म है । वह करता है, ऐसा नहीं कहता हूँ ।** मैं कहता हूँ सही ।

• गुजरात के लिए मुझे प्रेम है •

मेरे काम सब गुजरात के लिए । मेरे निजी नहीं है । मुझे आज कोई निजी देता है । वह लेता हूँ । मुझे उसकी जरूर भी है । मेरे आश्रम को तो मिला करेगा । अब उसकी मुझे निश्चिंतता हो गई है । करोड़ तक भी हो जायगा । और मुझे पक्की निश्चिंतता है । इतनी सारी गले तक की । किन्तु निजी रूप से भी मुझे चाहिए पैसे । क्यों चाहिए यह मुझे कोई पूछना मत । आपको देना हो तो देना । और ना देना हो तो मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है मुझे । मैंने तप किया है गुजरात के लिए । वह कोई मना कर सके ऐसा नहीं है साहब । इतने सारे सालों तक मैंने तप किया है । तप का फल मैं माँगता नहीं । किन्तु गुजरात के लिए मुझे प्रेम है । तो गुजरात को मेरा पोषण करना चाहिए । साला, आपके कुटुंब

को कोई कमा कर दे । आपको बहुत संपन्न करे । तो आप उसको दो या ना दो ? तो गुजरात का धर्म है कि मुझे दे । मेरे आश्रम को तो मिला है और अब मिला करेगा ।

ये कल आये भाई । मुझे मैं गद्‌गद हो गया कि इस आदमी को मैं मना कर बैठा । इतनी सारी जिसने मुझे मदद की । मेरा शरीर चले ऐसा नहीं है । हाँ, किन्तु भगवान मुझे मदद करेगा । चलो आऊँगा किन्तु भाई, तुम दस हजार देना । जाइये, जरूर दूँगा **मोटा** । इस काल में एकदम कह देना और एक हजार उपर दिये । ग्यारह हजार दिये । तो मैं देखता हूँ । भगवान कैसा है । अनेक जगह ये देढ़-दो साल में साहब मेरा अनुभव है कि मैंने चाहा हो तीन हजार और मिले हो ग्यारह हजार । सोचा हो सात हजार और मिले पंद्रह हजार । ये मेरी पीढ़ी है जो प्रति वर्ष ४०-५० हजार । इस साल एक लाख रुपये दे दिये । ऐसे मुंबई में भी मुझे अनुभव मिले हैं । भगवान तो मुझे दिया करता है कि यह लड़का ऐसे शरीर से घुमता है और फिर भजन किये बिना मैं जीता नहीं । प्रतिदिन लिखा करता हूँ भजन और भगवान की कृपा से छपवाने वाले भी मिलते हैं । इससे मुझे आनंद है ।

• मनादिकरण को भक्ति में लगाओ •

इससे मैंने जिस तरह वर्ताव किया है और जैसा कर रहा हूँ वैसा मैं सभी को कहता हूँ कि भगवान को अंदर प्रगट करने के लिए आपको मन आदि करणों को आदत डालनी पड़ती है । वह जानता है मनादिकरण ही । मन, बुद्धि, चित्त और अहम् ये उसके साधन हैं । वे जानेंगे । संसार-व्यवहार का भी सब वे ही जानते हैं । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम्— दूसरे कोई जानते नहीं ... दूसरे किसीकी जानने की ताकत नहीं । वे जानते हैं अंदर .... उसी तरह यह भी वे जानेंगे । कब ? ये मन, बुद्धि, चित्त और प्राण । ये संसार की सभी समझ है । उसे समझ आ गई है । उसका अभ्यास हो गया है पक्का । उसी तरह जब चेतन का मन, बुद्धि, चित्त और प्राण का ऐसा पक्का अभ्यास होता है, तब अपने

आप सब जानता है। साधन तो उसके वही हैं। किन्तु उसे भक्ति लगनी चाहिए । भक्ति लगे बिना ज्ञान में कोई ज्ञान कहे, ज्ञान वह शुष्क नहीं । कहने वाले मूर्ख मनुष्य हैं ।

ज्ञान में जो अनुराग है, ज्ञान में अनुराग है । ज्ञान वह जितना चिपकता है। ज्ञान वह चिपक जाता है। स्पष्ट दर्शन उसका। भक्ति का अतः धूँधला होता है ऐसा मेरा नहीं कहना है। किन्तु भक्ति का प्रदेश अलग है। ज्ञान का प्रदेश अलग है। दोनों आपस में मिश्रित है। एक दूसरे से अलग है बिलकुल वैसा नहीं है । दोनों आपस में मिश्रित हैं । किन्तु ज्ञान में जो अनुराग है ।

एक आदमी को तो आप जानते हो। संसार-व्यवहार में कुटिल से कुटिल, लुच्चे से लुच्चा। किन्तु किसी प्रकार हमारा संसार-व्यवहार में उसका संग हुआ हो। किन्तु आपका मन उसमें नहीं चिपकेगा। हकीकत की बात है । आपकी pyschology, बुद्धि कबूल करे । किन्तु एक आदमी ऐसा हो कि जिसे आपको बहुत प्रेम हो। जिसमें सद्‌गुण है, नीति है, अच्छा काम करने वाला है। उसकी प्रसंशा होती है सब जगह। और ऐसे का संग होता है। उसके साथ बहुत प्रेम होता है आपको। यह प्रत्यक्ष बात है। खुली बात है। उसी तरह हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् ये सब जब भगवान में लगे, तब भगवान तो दिखता तो है नहीं। हमारे सामने ऐसा कोई खुला तो है नहीं ।

• भगवान को कोई आकार नहीं, आकार सभी कल्पित हैं •

कोई उसे आकार नहीं। सब आकार बनाये हैं, वे कल्पित हैं। सच्चे तो कोई है ही नहीं। **मैं तो कहता हूँ कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश वे भी काल्पनिक है। उस भगवान के तीन functions। तीन functions के deity हमने कल्पना की । सिर्फ लोगों की समझ के लिए । सचमुच में वे हैं नहीं। बिलकुल नहीं है साहब। मेरी समझ।** I may be right or wrong। किन्तु मैंने उनको शायद कभी भी स्वतंत्र रीति से देव के रूप में मैंने माने नहीं है उनको ।

किन्तु मूल मेरी बात ऐसी है कि हमारे अंत:करण में भगवान को उतारने के लिए दो वस्तु चाहिए। साधना। कठोर साधना। या तो सद्‌गुरु के लिए ऐसी भक्ति। वह भक्ति घंटे, दो घंटे की नहीं चलेगी और चौबीसो घंटे आपके मन में वह खेले फिर देखो खूबी।

• प्रेमपूर्वक के हुक्मपालन से साधना में गति मिलती है •

और आपमें शक्ति चाहिए। चाहे जैसा हुक्म दे आपको। वह हुक्म का पालन किये बिना। बिना सोचे संकल्प-विकल्प बिना। कोई विचार नहीं होना चाहिए। वृत्ति नहीं।

आज हम मैं मेरे साहब को काँटावाला कि यहाँ से बस में नडियाद आना। किन्तु नहीं आया जायगा उनसे। वे तो मोटर लेकर ही आवे कि नहीं, नहीं, इस तरह आया जा सकता है **मोटा** ? अबे, कुछ भी हो जाय। नहीं क्या ? चलकर आने का कहे तो चलकर आया जा सकता है। भक्ति लगे तो न ! इससे मुझे समझ आयेगी कि अभी साहब को भक्ति लगी नहीं है। उनके मुँह पर ही मुझे कहना पड़े। **गुरुमहाराज कहते किसी के मुँह पर कहना, पीछे नहीं। अबे, उसमें क्या है। बस में बैठ़कर आये। साली प्रतिष्ठा को तो हमें धूल में डाल देना है। प्रतिष्ठा का तो खून कर देना का है। उखाड़कर मूल में से। इस संसार के मूल में से प्रतिष्ठा को तो तोड़फोड़ कर चुरा कर देना है। किन्तु किस से होगा वह ? साहब नहीं होगा। बहुत कठिन है साहब।**

ये आपको कहे कि ये कोट-बोट निकाल कर खुले शरीर से जाओ। नहीं जाया जायगा आपसे। जा सकोगे भट्ट साहब ? हिम्मत रखना थोड़ी। छोटा सा काम है। हुक्म का पालन करना है। हुक्म का पालन करने का काम बहुत छोटा है। किन्तु वह प्रेमभक्तिपूर्वक यदि पालन करो, उसमें से गति मिल जाती है। मैंने स्वयं अनुभव किया है। और मैंने हुक्म का पालन किया है। एक भी संकल्प-विकल्प किये बगैर। कितने सारे हैं। इससे आप अभी तो बोलते हो, किन्तु तब आपको नहीं हुआ होगा उसका क्या प्रमाण ? तो वह तो मेरे पास है नहीं। वह साबित करने देने की बात नहीं

है। किन्तु एक बात कहूँ। Psychology का मुझे थोड़ा बहुत अभ्यास है। मैंने कोई शास्त्र पढ़े नहीं है। Psychology का। किन्तु जब जो हुक्म मिले और यदि डगमग हो तो वह जो प्रेमभक्तिपूर्वक एकदम भागने का जो हो। कूद पड़ने का हो, वह कभी होगा नहीं। तो साहब, आप कोई भी pschology वाले को पूछ लो। उस प्रकार मैंने किया है। और साक्षी है आज। **सिंहों के साथ रहा हूँ। सात दिन मेरा मित्र वजु साथ में था। तब उसे आशंका हो तो किस तरह वहाँ रह सकते हैं ? उसको तो दस्त लग गये थे। और पिशाब हो गया था। दो दिन तक। तीसरे दिन मिट गये, साहब।**

तो मैं जो कहता हूँ, वह अनुभव की बात कहता हूँ। और इतनी समझ इसलिए देता हूँ कि आप पढ़े लिखे लोगों को मेरी बात समझ में आ सके कि बात सच है। **मोटा** की बात। इस तरह मैंने हुक्म का पालन किया है।

मूल बात पर अब फिर से आ जाता हूँ। अब समापन कर लेता हूँ। कि भगवान का भाव अंदर उदय होता है। संसार की वृत्ति भी अंदर उदय होती है। आप मेरा गलत हो तो मुझे कहना। संसार के संस्कार भी अंदर उदय होते हैं। वृत्तियाँ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये सभी वृत्तियाँ मेरे में अंदर उदय होती हैं। मेरे में क्या सब में। एक-एक में। ये अंदर उदय होती हैं। अंदर से बाहर व्यक्त होती हैं। उसको कोई मना नहीं कर सकेगा।

उसी तरह यह भगवान का भाव अंदर व्यक्त होता है। और अंदर व्यक्त होता है, तब वह एक ईश्वर है। अंदर व्यक्त होता है। अंदर व्यक्त होता है, जिस समय व्यक्त हुआ, तब एक है और अंदर ही अंदर फिर द्वैत भी होता है। अंदर ही द्वैत होता है और बाहर फिर आता है, तब द्वैत रूप ही होता है। किन्तु अंदर दो स्वरूप हैं।

• भक्त ज्ञानी भी होता है और ज्ञानी भक्त भी होता है •

सब से पहले भक्त हो, मीरांबाई हो। नरसिंह मेहता हो। नरसिंह मेहता भक्त और दोनो हैं। मीरां का भी है। मीरां के ऐसे भजन हैं कि

जो उसके ज्ञान को व्यक्त करते हैं । एक ही उदाहरण दूँ कि भजन है उसका । अभी याद ना आये किन्तु

उँच उँच महल बनाऊँ
बीच बीच राखूँ बारी
साँवरियाँ का दर्शन पाउँ
पहर कसुँबी साड़ी । यानी भक्ति पहने बगैर ।

(बीच में एक भक्त । मैंने चाकर राखोजी । पू. श्री कहे हाँ वह बात सच । किन्तु उसका काम नहीं है ।)

परंतु यहाँ कसुँबी साड़ी पहनी यानी भक्ति । भक्ति पहनकर फिर उँचे उँचे महल बनाऊँ यानी ज्ञान । वह ज्ञान है । इस ज्ञान की दशा में– ज्ञान की दशा में मनुष्य चाहे जितना ज्ञानी हो, किन्तु ये सब मिश्रण है जैसे । हमारे में भी मिश्रण है । जो उस तरह उसमें भक्ति मिली हुई है, तो कि **बीच बीच राखुं बारी ।** ऐसे ज्ञान के महल तो बनाती हूँ, किन्तु खिड़की बीच में रखती हूँ । तो **उस**के दर्शन पाऊँ । पहन कसुंबी साड़ी उसकी भक्ति । उसकी भक्तिरूपी खिड़कीओं द्वारा मैं दर्शन करती हूँ । इससे मीरां भी ज्ञानी थी । और भक्त भी थी । नरसिंह मेहता भी भक्त और ज्ञानी ।

किन्तु उसका अर्थ इतना ही है कि आप भक्त हो या ज्ञानी हो, किन्तु वह दोनों हो । कोई ज्ञानी हो तो भक्त है । गीता में उसका प्रमाण है । कि मेरे भक्त को मैं बुद्धियोग देता हूँ । यह तो बोलने की रीति से लिखा है । किन्तु परिणाम है वह ।

• भगवान का भाव जगाने के लिए साधना •

तो मूल बात थी कि भगवान जो भी कोई संसार-व्यवहार जो भी कुछ सब अंदर-अंदर ही व्यक्त होता है । फिर बाहर व्यक्त होता है । पहले अंदर व्यक्त होता है । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् में । वह व्यक्त होता है । सब साथ में हैं । एक नाम दिया है । सच में तो वे सब अंदर व्यक्त होते हैं । भगवान भी अंदर व्यक्त होते हैं । और बाहर फिर आते हैं । वह जैसे बात सच है, वैसी ही यह है ।

किन्तु उसके लिए संसारव्यवहार में तो हररोज का हमारा अभ्यास जागे– जन्मे तब से ही । हररोज के चौबीस घंटे का । तो चौबीस घंटे का व्यवसाय कहाँ है आपका भगवान के बारे में ? वह हो जाने दो । फिर देखो । तो उसके लिए साधना ।

साधना मैंने की है। अभी मेरा भाई जिंदा है। मेरे.... मेरे वृद्ध भाभी हैं । मेरे से ४ साल बड़े उनको पूछकर देखो । एक दिन घर में सोया नहीं हूँ। इस शरीर को बुखार आया था भयंकर। पाँच पाँच डीग्री बुखार, फिर भी घर में सोया नहीं हूँ । मेरी माँ को कैसा हुआ होगा ? सोचो । माँ है उसे । किन्तु वह मैंने रखा नहीं । कि उसे भाव माँ का है । यह अच्छी बात है, माँ को होता है यह सच है । मैंने तब माँ की अवहेलना नहीं की थी। जाते समय मैंने मेरी मेरे धर्म की बात मैंने आगे रखी है। उसकी अवहेलना मैंने कभी की नहीं है। उसे लगता था, यह बात सच है। किन्तु मेरे मन में वह नहीं था भाव। धर्म का भाव मुख्य था । मेरे मन में । किन्तु एक दिन मैं ऐसी कितनी बीमारियाँ मुझे आई है, किन्तु घर में मैं सोया नही हूँ ।

• भगवान के मार्ग के साधन– अभय, नम्रता, मौन, एकांत •

अभय विकसित हुए बिना, अभय, नम्रता, मौन और एकांत। अभय और नम्रता वह ऐसे हैं कि introvert करते हैं । आप कोई भी psychologist को, आपके शास्त्र को जाँचो । **मौन और एकांत introvert. और मौन, अभय, नम्रता । और मौन और एकांत वह बहिर्मुखता कम करते हैं । तो ये चार साधन किये बिना आप भगवान के मार्ग पर जाओ यह मुझे किसी काल में संभव नहीं लगता है ।** ये आने ही चाहिए। आपमें वह शक्ति नहीं होगी तो नहीं चलेगा। भयंकर जगह पर जाओ। भयंकरता का सामना करो। मुश्किल आवें तो सामना करो । मुश्किल के समय में आप कैसे अड़िग रहते हो । स्वस्थ रहते हो । यह सब आप जाँचो । नहीं तो नहीं चलेगा ।

• पहले कठिन साधना फिर भगवत्-कृपा •

यह एक ज्ञानमार्ग है । भक्ति में भी । तो पहले अंदर हमें अनुभव होने के लिए साधना कठिन और चौदह-पंद्रह घंटे तक ले जाओ । फिर ... फिर the Grace of the Lord will work with you । Not till then । पंद्रह-सोलह घंटे काम करते हो । यह भी भगवान की कृपा तो है ही । उसकी Grace वहाँ है ही । अन्यथा वह संभव ही न होता । किन्तु वह आप ले जाओ वहाँ तक । फिर आगे भगवान आपको ले जायेंगे । वह आपको समझ में आयेगा । परंतु वहाँ तक ठिकाना नहीं पड़ेगा । घंटा आधा घंटा करोगे, उसका संस्कार पड़ेगा । किन्तु वह संस्कार के असर की बात जो ये विद्वान और शास्त्रकार और ये संन्यासी कर रहे हैं, वह भी गलत है । वह संस्कार कैसे ..... आपकी प्रकृति कैसी है ? उस प्रकृति के उपर ही असर होगा न ।

आपके संस्कार जो करोगे आप वह संस्कार करने वाली आपकी प्रकृति है न अभी तो । तो वह प्रकृति कैसी है ? तब प्रकृति प्रकार के संस्कार पड़ेंगे न ? वह सनक जागे । प्रकृति में भक्ति की सनक जागे तब और उस समय जो हो उसके संस्कार कोई न्यारे हैं । वह सनक जागनी चाहिए । वह सनक जागे बिना काम नहीं होगा इसमें और भगवान की कृपा से मेरे से ऐसा हुआ है ।

अब अभी कहना बात फालतू है । किन्तु किसीको नडियाद में जाकर सगेसंबंधी अनेक हैं । तलाश करना हो तो कोई करके आये । मेरी तैयारी है, और यह कहता हूँ वह मेरे अनुभव की बात सब कहता हूँ ।

तो पहले अंदर व्यक्त होता है । संसार या भगवान । वह अंदर व्यक्त होता है । संसार व्यक्त होता है । क्योंकि चौबीसो घंटे का उसके साथ हमारा परिचय है । एक पल भी उससे अलग नहीं है ।

• भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन का अनुभव •

स्थल, संयोग कुछ भी नहीं अनुभवी को। इससे भी सर्वप्रथम होता है उसे अद्वैत। फिर द्वैत उसका भक्त होने से। उसकी प्रकृति होने से। वह कृष्ण का भक्त हो तो कृष्ण जैसे दर्शन होते हैं। किन्तु वह कृष्ण जो दर्शन होते हैं। वह कोई इस चित्र के समान। वह कृष्ण कोई न्यारा है। वह कोई ऐसा सूक्ष्म प्रकार का है कि वह वर्णनातीत है। वह शब्द से कहा जाय ऐसा नहीं है। वह स्वरूप कुछ इतना सारा सुंदर है कि तेज तेज का अंबार किन्तु गरमी नहीं बिलकुल। इतना सारा आह्लादक... इतना सारा आह्लादक और आगे-पीछे का वातावरण और हम स्वयं ऐसे सुगंधीमय हो जाते हैं और इतना सारा वह स्वरूप दिखता है। दैदीप्यमान कि हम चौंधिया जाते हैं, साहब।

मैंने 'जीवनदर्शन' में लिखा है। किसी जगह। लिखता नहीं मैं तो ऐसी बाबत। किन्तु ये नंदलाल ने प्रश्न पूछे थे। अब उसे जवाब मैं बराबर न दूँ, तो उसे बराबर ना लगे। इसलिए मैंने जवाब उसे दिये थे। वे फिर छप गये तो भले छप गये। क्योंकि मेरे दिल की यह सच्ची बात है।

तो मूल हमारी बात जो बात हुई थी कि अंदर ही पहले जो कुछ व्यक्त होता है। जो भी कुछ व्यक्त वह भगवान हो या संसार हो। वह सब अंदर। पहले अंदर व्यक्त होता है। और ये संसार का नित्य का चौबीस घंटे का हमें परिचय है। वह परिचय होने से सहज रूप से बनता है।

• ज्वालामुखी समान दहकती जिज्ञासा प्रकटाओ •

जब भगवान का हमें परिचय नहीं है। उसके लिए कठिन साधना नहीं है। किसी साधन को पकड़कर हम कितने घंटे तक रख सकते हैं, वह भी परीक्षा हमने की नहीं है। सद्गुरु में हमारी भक्ति नहीं है। इससे यह बनना संभव नहीं है। ज्यादा से ज्यादा तो आप संस्कार विकसित कर सकते हो। किन्तु वह संस्कार भी सिर्फ प्रकृति के ही होंगे। क्योंकि

प्रकृति—प्रकृति की छाया पर—प्रकृति की भूमिका पर यह आप साधन करते हो । उस साधन में कोई सनक नहीं है । किसी प्रकार का कोई टेम्पो (tempo) नहीं है । किसी प्रकार का । प्रकृति में भी ।

प्रकृति तो हरएक की । भक्त, ज्ञानी ये सब हो गये जो । वे सब मूल में तो प्रकृति में ही थे न ! किन्तु उसका जो उछाल था । Volcanic aspiration थी । वह उछाल हमारे में हो तो हमारे संस्कार अलग होंगे । किन्तु ऐसा उछाल न हो और आप कर्म करो तो वह संस्कार प्रकृति के ही रहेंगे । उच्च प्रकार के होंगे वह बात सच्ची । इससे ज्यादा से ज्यादा तो इसमें आप संस्कार विकसित कर सकेंगे । इसके अलावा कोई कुछ कर सके । ये साधना की बात तो सब गलत है ।

• भगवान के नाम से सब मिलता है •

आप करो स्वयं । आपको स्वयं को आत्मविश्वास आना चाहिए । वह आत्मविश्वास यदि आपको न आये तो व्यर्थ है । मैं तो कहता हूँ कि गुरु को भी छोड़ देना । साले झूठे हैं । गप्पेबाज हैं मेरे बेटे ।

मैं तो गुरु नहीं हूँ । मैं किसीको चेला बनाता नहीं हूँ । किन्तु मैं कहता हूँ सही कि भैया, भगवान का नाम बहुत उपयोगी है और संसार में उपयोग में आता है । (पधारीए साहब !) संसार में उपयोग में आता है । ये सब मुझे मिले हैं, वह भगवान के नाम से न ! (क्यों बहन?) मुझे कहाँ से मिले वर्ना ?

मेरा भगवान तो सचमुच ! आज मुझे ग्यारह हजार रुपये दिये । मुझे क्या देगा कोई ? राम, राम करो बाप । पाँच हजार के लिए तैयार हुए थे । वह भी सभी संबंधिओं के कारण । संबंधी थे ऐसे ।

• भगवान की समग्रता का अनुभव हमारे लिए असंभव है •

ये सब बात अब बंद कर देता हूँ । भक्ति जागृत हुई हो तो भी उसके समग्र पहलूओं को नहीं समझ सकोगे । भगवान के भी । भगवान के हम संपूर्ण भक्त हो जाँय । संपूर्ण कहता हूँ । तब भी उसके समग्र पहलूओं को हम भगवान को अनुभव में नहीं ला सकेंगे । Impossible । अनंत

पहलूओं । उसके पहलू ही नहीं हैं मैं तो कहता हूँ । वह तो गलत बात बोलते हैं हम । **उस**को पहलूओं कैसे फिर ? किन्तु उसे समग्र रूप से हम नहीं अनुभव कर सकेंगे । भगवान को भी । भक्ति जागृत हुई हो तो भी । संपूर्ण रूप से ।

क्योंकि **वह** तो ऐसा न्यारा है, इतनी सारी कला-लीला वाला है कि **उस**की समग्रता हमारे में समा नहीं सकती । कारण.... कारण समा नहीं सकेगी । उसका कारण हम हैं । हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण इतनी समग्रता वाले हुए नहीं हैं । हमारा शरीर भी ऐसी समग्रता वाला हुआ नहीं है । शरीर तो बाद में आता है । किन्तु हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण भी ऐसी समग्रता वाले प्रेमभक्तिज्ञानपूर्वक का **उस**के संबंध में हुए नहीं हैं । इसलिए **उस**की समग्रता हमें स्पर्श नहीं करती है । अमुक भाग स्पर्श करता है । **उस**का कारण नहीं है । कारण हम हैं । कि हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण ऐसे समग्रता वाले हुए नहीं हैं । ज्ञानभक्तिपूर्वक के । इसलिए **उस**की समग्रता हमें स्पर्श करती नहीं है । अमुक भाग ही स्पर्श करता है ।

जिज्ञासु : अनुभवी को..... होता ही नहीं न !

श्रीमोटा : देखिये फिर भूल की । अनुभवी है कि कौन है ? अनुभवी मैं कहता हूँ कि उसके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् रंग गये हैं सही । किन्तु उसके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् उसकी समग्रता भगवान की समग्रता उसमें अभी प्रकट नहीं हुई है । अनुभवी हुआ सही । चौबीसो घंटे वह भगवान में ही है । किन्तु उसके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् जो भगवान की समग्रता है, ऐसी समग्रता वाले हुए नहीं हैं ।

यह मेरी हककीत । वे समग्रता वाले होते तो भगवान भी समग्र । **यह जो समग्रता भगवान की समग्रता मैं अनुभव नहीं कर सकता हूँ । मैं अनुभव करता हूँ सही भगवान को । अनेक रीत से, अनेक विचार में, अनेक कर्म में, अनेक तरह से अनुभव करता हूँ सही । किन्तु वह समग्रता नहीं अनुभव करता हूँ । यह मैं कबूल करता हूँ । मुझे जैसा मानना हो वैसा मानो ।**

जिज्ञासु : ऐसा कोई व्यक्ति हो सही जिसने समग्रता का अनुभव किया हो ?

श्रीमोटा : नहीं । मुझे ख्याल में नहीं है । यह ख्याल श्रीअरविंद ने भी स्वयं हाँ कही है । किन्तु उन्होंने अनुभव किया हो तो वे जाने । किन्तु मेरे ख्याल में नहीं है । मुझ स्वयं को । वे हमारे जब मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् ऐसे समग्रता वाले हो जायेंगे कि उसी पल ही । देर नहीं है उस में । उसमें पल भर नहीं है । **किन्तु वैसे सब कुछ जानता हूँ । कर्म में, व्यवहार में, किसीको कहता करता नहीं हूँ । या बोलता भी नहीं हूँ । मैं तो सब सामान्य ही बात करता हूँ । ये ज्ञान की बात तो आज आप आये और उस दिन मैं स्वयं बोला था, इससे ये सब कहा ।**

जिज्ञासु : नाश हो गया है ऐसा तो कहने में आता है कि द्वैतभाव नाश हो जाय फिर कौन किस को उद्देश कर देखे ? कौन किस को उद्देश कर स्पर्श करे ? वह अनुभवी कर्म करता है, वह किसको उद्देश कर करता है ?

श्रीमोटा : जो अनुभवी है, वह अद्वैत के अनुभव में टिकता नहीं है । रहता नहीं है । वह द्वैत का ही अनुभव होता है । द्वैत में ही आनंद हैं और आप या चौहाण साहब को, हम या काँटावाला साहब हों और अलग हों और आनंद-आनंद हो और एक ही हों । आनंद-आनंद में फर्क आ जाता है ।

द्वैत का आनंद कोई अनुपम होता है और जाने-अनजाने में जगत साकार को ही भजता है । बारहवाँ अध्याय आप गीता का लो । जाने-अनजाने में लोग साकार का ही स्तवन करते होते हैं ।

इससे अद्वैत का अनुभव होने के बाद अद्वैत में— अद्वैत में ही पड़ा रहता है । ऐसा नहीं रहता । अधिकतर मेरे हिसाब से तो ९९.९९% द्वैत में ही आ जाते हैं ।

तो अद्वैत का अनुभव भगवान की सभानता का टूटे नहीं उसकी— अखंड अखंडाकार भगवान और मैं अलग नहीं वैसा भी उसे है । किन्तु भगवान जैसे स्वयं स्वतंत्ररूप से सब में खेल रहा है । उसमें अकेला होने पर भी ऐसी उसकी स्थिति होती है ।

जिज्ञासु : तो ऐसा होगा कि दो difference पड़े । *स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव !* (गीता २/५४) ऐसा कहा इससे वह समाधि अवस्था में हो वहाँ तक वह बिलकुल अद्वैत की अवस्था हो और व्युत्थान दशा में आप कहते हो वैसी दशा में ऐसा बने सही ?

श्रीमोटा : नहीं । नहीं । ये सब शब्द की... सही रीत से तो सर्वत्र अद्वैत ही है । यह तो हमें बोलने में लगता है । जिसे अद्वैत का अनुभव हो गया और दीखने में वह द्वैत में खेलता लगे, किन्तु उसे तो अद्वैत ही है सब । क्योंकि जो भी सब करता हो, वह भगवान ही है सब उसे । निमित्त में कार्यरत होता है सही ।

मैं ये हरि को कई बार दिन में पचास बार याद करता हूँ । किन्तु हरि यह शरीर चाहे रहा हो परंतु वह भगवान सिवा बात नहीं । भगवान ही जिसमें और तिसमें । आरोपण उसका भगवान का ही है । आरोपण करना नहीं है । सहजरूपसे हो जाता है उसे । इससे यों दिखे भले अलग, किन्तु उसके मन में अद्वैत ही रहता है जो हो वह ।

नहीं तो क्या होगा ? मानो कि यदि वह न हो तो वह संपूर्ण तद्रुप ना हो उसके साथ । निमित्त के साथ तद्रूप नहीं हो सकेगा । जैसे चेतन पेड़ के साथ पेड़ रूप, आकाश में आकाश रूप, तेज में तेज, हवा में हवा, पृथ्वी में पृथ्वी तद्रूप है और उसी तरह अनुभवी भी उस-उस निमित्त में तद्रुप । वह यदि संपूर्ण अद्वैत की स्थिति उसकी ना हो तो नहीं होगा, साहब ।

मैंने वैसे भक्तों को पहचाने हैं । अच्छी तरह से । बातचीत से, प्रसंग से, कि वे ये निमित्त की बात बराबर स्वीकार नहीं करते थे । किन्तु अनुभव होने के बाद ही निमित्त आये उसे निमित्त के साथ वह तद्रुप होता है । वह ऐक्य होने से ही । अद्वैत होने से ही । किन्तु अकेला सिर्फ कुछ ही कुछ नहीं है । शून्यावस्था । Nothing exist । कुछ भी बनता होने पर भी कुछ भी उसे बिलकुल सभानता नहीं । स्वयं के एकेले की ही । वह भी एक काल में ऐसी पल आती है कि वह भी चली जाती है ।

जिज्ञासु : स्वयं की इच्छा हो ही नहीं ।

श्रीमोटा : इच्छा का सवाल ही नहीं है । इच्छा तो रहती ही नहीं यहाँ पर । किन्तु ऐसी एक स्थिति आती है कि कहीं पर कुछ नहीं । शून्यावस्था । यह शून्यावस्था जो है, वह मेरे हिसाब से उत्तम से उत्तम अवस्था है ।

उनके कोई कहेंगे कि भाई फलाना लोगों ने ईश्वर को नकार दिया है । तो ईश्वर ही नहीं है और उसका स्वयं का अस्तित्व नहीं है । तब उसका । उस अवस्था में उसे स्वयं का भी अस्तित्व नहीं है । ईश्वर का भी नहीं है । कुछ किसी का नहीं । कुछ ही नहीं हंअ....Complete Oblivious । ऐसी स्थिति रहती है । वह फिर टिकती नहीं लम्बी अवधि । किन्तु बाद में अवतरण होने के बाद अद्वैत । वह निमित्त के साथ तद्रुप होता है । यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि वह अद्वैत है ।

अन्यथा द्वैत का अनुभव हुआ हो, कोई भक्त हो तो उसे अद्वैत का अनुभव हुआ हो । और एक अद्वैत का अनुभवी है और द्वैत का भी अनुभवी है । दोनों एक साथ । वह तद्रूप हो और वह तद्रूप हो । दोनों में प्रकार में फर्क है ।

अब बह तो मुझे तो मुँह से बोलना है.... अनुभवी की बात करता हूँ ।

श्रीमोटा : (एक भक्त को) वहाँ बैठो प्रभु, अब जगह नहीं है । आगे, वहाँ से राम-राम करो ।

जिज्ञासु : ज्ञान और ध्यान इन दोनें में difference है ऐसा मानता हूँ ।

श्रीमोटा : ध्यान तो साधन है । ज्ञान साधन नहीं । ज्ञान तो आम के पेड़ का पका हुआ फल । अनुभव की स्थिति से ज्ञान । दूसरा ज्ञान नहीं । ध्यान तो साधन ।

जिज्ञासु : अब मेरा ऐसा कहना था । इससे कर्म की बात । मेरी ऐसी समझ, इस प्रकार की है कि सुषुप्ति अवस्था में जो मनुष्य कर्म करता नहीं है ।

श्रीमोटा : ये सब उड़ जाता है ।

जिज्ञासु : चला जाता है ।

श्रीमोटा : हाँ । साधक भी ।

जिज्ञासु : इस तरह ज्ञान होने के बाद कर्म उसे छोड़ देता है, कर्म को वह नहीं छोड़ देता । ऐसी मेरी मान्यता है ।

श्रीमोटा : कर्म चला जाता है न । बिलकुल चला जाता है उसे । Mastery है उसकी । वह कर्म करे भी सही और न भी करे । करना हो तो करे । ना भी करे । और वह स्थूल का आधार लेता है । किन्तु स्थूल का आधार भी लेने की उसे जरूरत नहीं है । किन्तु क्यों लेता है अनुभवी कि उसे उस निमित्त के साथ काम पूरा करना है । **और सच्चे निमित्त का एक ही हेतु कि किसी भी उपाय से उसमें अभिमुखता प्रगट हो । भगवान के लिए अभिमुखता उसको प्रगट हो । तब ये सामान्य जीवों से तो यह होनेवाला नहीं है । किसी काल में । अपने आप उनको अभिमुखता भगवान की प्रगट हो वह होनेवाला नहीं हैं ।**

तब उसके कोषों में उसे (अनुभवी को) उतरना पड़े । और कोषों में उतरता है । तो भी वहाँ इन्कार है उसके लिए । इससे जैसे निम्न कोटि निमित्त की वैसे उसे (अनुभवी को) ज्यादा से ज्यादा गहरा उतरना पड़ता है । इतना ही नहीं शरीर से भी सहन करना पड़ता है अनुभवी को । किन्तु वह सब कह सके ऐसा नहीं है । किन्तु वह तो सब **मोटा** को .... **मोटा** को अपने को बड़ा दिखाने के लिए ये सब बात करते है । अमुक बात स्पष्ट कह सकते नहीं । अकेले हों तो कही जा सकती हैं । खुले में कही नहीं जा सकती हम से ।

जिज्ञासु : दूसरों की वृत्ति, मनोवृत्ति भी ।

श्रीमोटा : आये.... आये ही ।

जिज्ञासु : किन्तु उस प्रकार से जो निमित्त के साथ जुड़ने का कारण होता है, उसमें पूर्व के कारण हैं ?

श्रीमोटा : वह सही । मानो कि अनुभवी होने के बाद काल चला जाता है उसे । काल नहीं रहता है । वह काल चला जाता है । काल की गणना नहीं रहती । दूसरा सब चला जाता है । संबंधों उसके साथ के । ऐसा ऐसा हुआ था । वह सब चला जाता है । सिर्फ एक ही निमित्त के

किसी कारण से पूर्व जन्मों के अनेक कर्मों के कारण यह निमित्त मिला है। वह उसे ज्ञानपूर्वक की समझ है। इससे एक ही धर्म उसका कि **उसमें किसी भी प्रकार से भगवान की अभिमुखता प्रकटे । वही मुख्य उसका idea । वह idea उतारने के लिए उसे निमित्त के कारण जितनी निम्न कोटि उतना उसे ज्यादा से ज्यादा गहरा उतरना पड़ता है ।**

जिज्ञासु : तो फिर अनुभवी का भी एक प्रकार का अवतरण नहीं कह सकेंगे ?

श्रीमोटा : अवतरण तो कहा जायगा। किन्तु उसे स्वीकार करे तब।

जिज्ञासु : अवतारों की बात है हमारे यहाँ ।

श्रीमोटा : हाँ वह होता ही है । **अनुभवी इतने सारे हजारों निमित्त के साथ अवतरण हुआ करता होता है । और एक ही पल में फिर एक ही समय पर मैं यहाँ बोला करता होऊँ और कहाँ का कहाँ जाऊँ ? कितनी सारी जगह पर जाऊँ । किन्तु वह तो बोलना निरर्थक है ना ? वह सब बोलने का अर्थ क्या ?**

जिज्ञासु : यानी **अमुक ही अवतार होते हैं कि वह राम, कृष्ण इत्यादि जो कहते हैं, ऐसे अनेक अवतार होते रहते हैं ।**

श्रीमोटा : अनेक अवतार होते ही रहते हैं ।

जिज्ञासु : ऐसा ही ना !

श्रीमोटा : भाई, जरा जगह देना जयंतीभाई को ।

जिज्ञासु : मुझे घर जाते-जाते थोड़ा ऐसा विचार आया। *मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि भारत (पाण्डव)* (गीता. १६/५) । ऐसा आपने explanation दिया था कि तू शोक मत करना । तू दैवी संपत्ति लेकर जन्मे हो । तो उसमें फिर मुझे विचार हुआ कि *अभिजात* शब्द उपयोग किया है । इससे मुझे हुआ कि तुम एक रस की predominant tendencies लेकर जन्मे हो । ऐसा एक idea आया ।

श्रीमोटा : अभि अर्थात् पहले ।

जिज्ञासु : या प्रति । उसके प्रति ।

श्रीमोटा : सही है ।

जिज्ञासु : यानी pre-tendencies....

श्रीमोटा : मेरे साथ दोस्ती इसलिए ही हुई है ।

जिज्ञासु : तो उसमें ऐसा कहते हैं श्रीकृष्ण कि जो जो रूप से मुझे भजता है, उसे उस रूप से मैं भजता हूँ । *ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्* (गीता. ४/११) ।

श्रीमोटा : ये खास महत्त्व शब्द **यथा** पर है । कोई किसी पर नहीं है । **यथा** पर महत्त्व है । **'ये यथा'** के अनेक अर्थ होते हैं ।

एक **यथा** का अर्थ जितने-जितने धर्म हैं । उस धर्म की भावना अनुसार जिस प्रकार भजे मुझे । उस धर्म की उस भावना अनुसार उसके सामने हाजिर होता हूँ । उसके सामने उस प्रकार साकार होता हूँ । ईशु ख्रिस्त ख्रिस्ती हैं । ख्रिस्ती की भावना अनुसार मुझे भजे उसके सामने ख्रिस्त रूप से मैं हाजिर होता हूँ ।

मीरा हैं, वह कृष्ण को भजती थीं । वह कृष्णरूप से भजतीं हैं, इससे कृष्ण रूप में हाजिर होता हूँ । उस प्रकार **यथा** यानी कि जितने-जितने धर्म हैं, उन धर्मों की भावना अनुसार जो कोई मुझे भजता है, उस प्रकार मैं उसे व्यक्त होता हूँ । ऐसा **वे** कहते हैं ।

दूसरा अर्थ **यथा** का । वह अनेक प्रकार की भक्ति के साधन । ज्ञान के साधन, योग के साधन । कर्मयोग, लययोग, ध्यानयोग, ये सब साधन । जिसके द्वारा **हरि** को हम पा सकें । वे सब साधन दूसरे वर्ग में आते हैं । उन साधनों के अनुसार जो साधन हम लें, उसके अनुसार हमारे सामने **वे** व्यक्त हो । **यथा... यथा** का दूसरा अर्थ यह । इससे इतने सारे साधन हैं ।

श्रीमोटा : (एक बहन जो दूर बैठे हैं, उनको संबोधन करके) **बेटी ! क्यों ? एम.सी. में हो ? तो इसके पर आकर बैठो न । हाँ .... जगह बहुत है किन्तु ....**

बीच में भक्तों को संबोधन करते हुए पूज्यश्री कहते हैं कि मैं तो कई बार कहता हूँ लोगों को । मुझे यह दर्द नहीं गिन सकते । किन्तु ये जो कई लोग मुझे स्पर्श करते हैं, वह मुझे बिलकुल पसंद नहीं है । उससे मेरे शरीर को नुकसान होता है । किन्तु वह तो किसी

के मानने में आये ऐसी बात नहीं है । तो अनेक बार कहता हूँ भाई, छुओ मत । मैं तो एम. सी. में हूँ ! अनेक बार साहब, कहता हूँ । कई बार एक दो बार नहीं ।

यथा पर पहला तो धर्म सब आ गये। हमारी पृथ्वी पर जितने धर्म हैं, उन धर्मों के अनुसार जिसे **यथा** वहाँ अर्थ एक आया। दूसरा **यथा** साधन। जो साधन को महत्त्व देकर हमने **उस**को भजने का किया। उस साधन के अनुसार उस साधन में जो हेतु और भाव है, उसके अनुसार **यथा**।

'तांस्तथैव भजाम्यहम्' उस प्रकार ही उसमें से आप यदि उसकी समग्रता आप स्वयं लाओ तो वह समग्रता में आये। कि सब होकर मुझे भगवान की समग्रता में नहीं आये यह ख्याल रखने का है हमें ।

यथा मां प्रपद्यन्ते ।

यथा में यदि आप समग्रता ला सके हो तो समग्रता— अन्यथा नहीं साहब। इससे दूसरा प्रकार साधन आये। वे साधन सब-सब की प्रकृति के अनुसार हैं। किन्तु इस कलियुग में या इस काल में भक्ति के सिवा दूसरा कोई सरल मार्ग नहीं है ।

ज्ञान की भी मना की है कि ज्ञान में साधना रही नहीं है ऐसा नहीं। हाँ। वह जैसे मानते कि मन के साथ संबध है। मनादिकरण के साथ इन सब को संबंध है, यह बात सच है। किन्तु उसमें साधना रही हुई है। ज्ञान में कहते हैं साधना नहीं है, ऐसा नहीं है। Complete **उस**के साथ awareness रखने के लिए कोई न कोई साधन रहा हुआ है। उसमें भी वे सभी **साधन माँग लेते हैं शुद्धि । अंतःकरण की ।**

ज्ञान के मार्ग पर यदि जाना हो आपको । तो शुद्धि अनिवार्य। उसके सिवा नहीं चल सकेगा । मैं तो दिखाता ही नहीं किसी को। कहता हूँ भाई, मुझे तो आता ही नहीं । भगवान का नाम ही आता है ।

किन्तु मैं तो .... मैं तो ये जो कहते हैं न कि श्वास के... जो कहते हैं न। प्राण। वह भी मना ही करता हूँ। कि हमारे ये जो असल तो हमारा धर्म। प्राणायाम का मूल जो हेतु है। **कि जिसने बिलकुल संसार भोगा नहीं है । जिसके फेफड़े उसी तरह के मजबूत है, उसके लिए**

ही । ब्रह्मचारी के लिए प्राणायाम हैं। किसी भी संसारी के फेफड़ें उसके लिए लायक ही नहीं है। किन्तु आज तो सब पीछे पड़ गये हैं। संसारिओं के लिए । साधु-संन्यासिओं प्राणायाम करने लगें हैं ।

किन्तु उसका मूल सिद्धांत ही यह है कि संपूर्ण नैष्टिक ब्रह्मचर्य है । तो कि नैष्टिक ब्रह्मचर्य है । भगवान मिल गये हैं तो गलत बात । सर्वगुणसम्पन्न हो तो भी उसे भगवान नहीं मिले होते हैं। उसे साधना करते देर नहीं लगेगी। भगवान को प्राप्त कर लेते उसे देर नहीं लगेगी। उसे भक्ति, ज्ञान जल्दी हो जाय। किन्तु उसे साधना तो करनी ही पड़ेगी। **और ब्रह्मचर्य हो तो तेजी से कर सके । किन्तु उसके (ब्रह्मचारी के) लिए प्राणायाम । दूसरों के लिए ये फेफड़े लायक ही नहीं है ।**

जिज्ञासु : यानी ब्रह्मचर्य अनिवार्य ?

श्रीमोटा : अनिवार्य !

जिज्ञासु : Condition सही ?

श्रीमोटा : Condition सही किन्तु संसारी के लिए नहीं है । वह भगवान की भक्ति कर सकता है । किन्तु वह महिने में एक बार या दो बार ही । कि वह पति-पत्नी का कर्म कर सकता है । किन्तु **उसे यदि छटपटी हुआ करती हो तो वह नालायक है भक्ति करने के लिए । क्योंकि संबंध हुआ ना मनुष्य को । कि ना गिरा ? तो वह नालायक है ऐसा समझ लेना । क्योंकि वह छटपटी उम्र के साथ रही हुई नहीं है। चाहे जितनी उम्र हो गई हो तो भी वह छटपटी रहती है। वृद्धावस्था में ज्यादा होती है । ऐसा मैंने कईओं को मेरे साथ इकरार करते मैंने अनुभव किया है । इकरार करते हैं ।**

तो मूल बात समापन कर लूँ। **यथा....** तब समग्रता उसमें है नहीं साधन में । तो कि समग्र रूप से ख्याल नहीं आयेगा ।

जिज्ञासु : *मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः* (गीता ४/११) । हे पार्थ, सर्व प्रकार से मनुष्य मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं । तो उस पंक्ति के साथ वह किस तरह जुड़ता है ?

श्रीमोटा : वह उस अर्जुन को संबोधन करके कहा है । वह उसे ललचाने के लिए । कि सभी मेरा अनुसरण करते हैं । और अकेला तू

किनारा कर गया ? मेरा दोस्त होकर ! मैं ऐसा कहूँ कि मेरे ईश्वरभाई हैं। मेरे दोस्त। अनेक वर्ष हम साथ में रहे थे आश्रम में। अबे, ईश्वरभाई, मुझे हजारों लोग मदद करते हैं और तू मुझे मदद नहीं करता ऐसा कहूँ न उसे ? उस तरह भगवान कहते हैं यह ।

कि दो जनों की बातचीत रखी है यह। भगवान को अर्जुन को अपने प्रति खींचना है । दोस्ती तो नहीं थी । साधारण थी । नहीं थी नहीं । किन्तु ऐसी जबरदस्त नहीं थी कि एकदूसरे को ऐसी पल-पल मन में आकर्षण जीता जागता सभानता वाला रहा करता हो चेतनात्मक। ऐसा न था । इतनी मित्रता थी सही । उसकी ना नहीं है । किन्तु जो उसका पिछला भाग आता है कि सभी लोग..... आप ही विचार करो कि हम अनुसरण करते हैं ? उस प्रकार करते हैं ?

श्रीमोटा : दूसरा श्लोक बोलो आप ।

जिज्ञासु : *ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्*
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः (गीता ४/११).

श्रीमोटा : तो ऐसा हो तब न ! ऐसा साधन करके मुझे मैं उसे ... जिस तरह जो कोई मुझे भजता है, उसे मैं उस तरह भजता हूँ। तब... तब ऐसे लोग मुझे जानते हैं। ऐसा.... ऐसा करके उसे बिठाया जाय । जो लोग जिस तरह मुझे भजते हैं, उस तरह उसे मैं भजता हूँ। ऐसा उस मनुष्य को अनुभव हो जाय । सामनेवाले मनुष्य को । तब वह भगवान को अनुसरण करता हो जाता है । संसार में, व्यवहार में, कर्म में सब में । कर्म किये बिना किस तरह आपको समझ में आने वाला है? कर्म किये बिना ।

जिज्ञासु : आपने **यथा** का जो पहला अर्थ किया है, वह बहुत अच्छा लगा और उसके साथ। उसकी संगति मुझे अभी इस तरह लगती है । सच्चा या गलत आप कहोगे कि क्राईस्ट यानी ये क्रिश्चानिटी वाले। हम चाहे जिस धर्म के हो, जिस तरह आते हैं, उसे मैं उस प्रकार से भजता हूँ। वे सभी मार्ग वे **मुझे** ही मिलने के मार्ग हैं ।

श्रीमोटा : अवश्य ।

जिज्ञासु : ऐसा फलित नहीं होता इसमें से ?

श्रीमोटा : इसमें होता है ही । सभी मार्ग **मुझे** ही मिलने के हैं । अनेक नदियाँ ।

जिज्ञासु : हाँ । ऐसा ही लगता है ।

श्रीमोटा : समुद्र में ही मिलती हैं ।

जिज्ञासु : अभी यह स्फुरण होता है ।

श्रीमोटा : अनेक नदियाँ समुद्र में ही मिलती हैं । उस तरह अलग-अलग धर्म जो हुए उसके कारण ही । क्योंकि उस-उस काल में । वे-वे लोग जो थे । उनके जो भी वातावरण में मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् वह जितनी संभावना थी । ग्रहण करने की मर्यादा थी । उतने ही प्रमाण में उन लोगों ने कहा ।

उसका अर्थ ऐसा नहीं कि हमारे धर्म में जो ज्ञान है, उतना ज्ञान उनमें नहीं था । किन्तु संपूर्ण ज्ञानी । किन्तु जैसे हम संसारव्यवहार में किसी को पाँच चाहिए हो तो पाँच ही दें । उनको कोई पाँच लाख नहीं दे देंगे । जिसे जितना चाहिए और हजम कर सके उतना ही हम दे सकते हैं । उस तरह इन ज्ञानी पुरुषों ने उस देश के लोगों को उस काल की उसकी जो मर्यादा थी उसी अनुसार लोगों को ज्ञान दिया ।

महंमद पयगंबर साहब हो गये । उस प्रकार व्यवस्था की । तो जो भी किया । तो उस काल के संजोग, उस काल के समाज का वर्तमान मानस, जो उसकी आदतें, अभ्यास, उसके संजोग, उसके रीतिरिवाज और उसका मानस कितना ग्रहण कर सकता है, उतने प्रमाण में कहा । वह ज्यादा तो ग्रहण नहीं कर सकते ।

और मुझे इतने सारे धर्मों का अभ्यास नहीं है । किन्तु साधारण सा ऐसा अभ्यास है । उस पर से कहता हूँ **कि हमारे देश का मानस बहुत ऊँचे प्रकार का । बहुत ऊँचे प्रकार का । आज भी आंतरिक रीति से हमें जितना समझने की ..... समझने की हमारी प्रेमभक्तिपूर्वक की तत्परता है, वैसी आज किसी देश में नहीं है ।**

ऊँचे से ऊँचा ज्ञान आज भले हम अनुभव करते न हों। हम उसका अभ्यास करते हों। साधन न करते हों, किन्तु उसे समझ सकने की हमारी तैयारी है। ऐसे अनेक आदमी हैं हमारे देश में। दूसरे देशों में ऐसे आदमी शायद कोई। प्रमाण तो बहुत ही कम। और वह प्रमाण भी हमारे प्रमाण के साथ तुलना नहीं कर सकते हैं उस प्रकार का। यह मेरे मन में इस बारे में दो मत नहीं है। किन्तु मुझे स्वयं को ऐसा लगता है कि मेरे देश की ऐसी परिस्थिति है। उसका कारण कि धर्म की भावना जीवंत नहीं है। सुषुप्त है। मर गई नहीं है साहब ! सुषुप्त है। धर्म मर जाता नहीं।

फिर **यथा** पर आयें। इससे सभी धर्मों की बात की। दूसरा साधन आये। और तीसरा भाई, सब तो ऐसे साधन कर सकते नहीं कुछ। ये तीसरा संसार आये। तो संसार में पुत्र, मित्र, पत्नी, परिवार, दादा, मामा, चाचा जो संबंध हो तो साला उस रीति से भी भगवान को भजा जा सकेगा। कोई कहे की मेरी पत्नी, कोई कहे मेरे पिता, कोई कहे मेरा मित्र, कोई कहे कि मेरा बेटा। जिसे जो समझ वैसा करे न ! उस तरह करे। तो उसे उस प्रकार से समझ में आएगा। इसलिए वह इतना है और ऐसा ही है ऐसा नहीं।

समाप्त

● ● ●

जिज्ञासु : विचार की कतार हो जाय उसे trace back करना या नहीं ? अलग-अलग समय पर अलग-अलग स्थल पर पड़े हुए संस्कार सब एक साँकल में जुड़ जाते हैं।

श्रीमोटा : इसमें हो सके उतनी स्वस्थता हमें रखनी है। जो आये, उगे उसे अखंड आकार दिये बिना या उसमें आये हुए या उगे हुए विचार को दूसरे उसकी जाति के विचार का अंक हमें स्वयं से जोड़ना नहीं है। अलबत्ता, ऐसा होना कठि़न है, किन्तु ऐसा जीवंत प्रयास विकसित करना है।

विचारों को trace back करने की तो जीवन की एक कला है। और इसी पद्धति के कारण बौद्ध मार्ग में पूर्वजन्मों को जानने की योग की पद्धति खोजी हुई है।

जिज्ञासु : रात को गुरु की भावात्मक चेतनाशक्ति में लक्ष्य हृदय से रखते हुए सो जाएँ। इसके concrete अनुभव के लिए ज्यादा स्पष्टता मुझे चाहिए।

श्रीमोटा : रात को सोते समय हृदय में गुरु की चेतनाशक्ति भावात्मक रूप से रहे, इससे हृदय में उसका सन्निवास है, वह जीवन में जागृत हो, सावधान हो, प्रगट हो, सर्वकर्म अंदर बाहर में चेतना रूप से शक्ति के आविर्भाव रूप से और भाव के वहनात्मक रूप में या गति रूप अनुभव हो सके ऐसा बनो। और उसका चेतनात्मक प्रेरणात्मक हो सके ऐसा सूक्ष्म चेतना देह का अनुभव होने के लिए प्रार्थनाभाव में सोएँ। उनकी भावचेतनाशक्ति हमारे आधार में जहाँ-जहाँ अशुद्धि हो, वहाँ स्पर्श करे। जहाँ-जहाँ जो-जो भाग में अशुद्धि का स्पष्ट भान हो, वहाँ-वहाँ ध्यान द्वारा उस शक्ति का स्पर्श अनुभव करने के लिए वहाँ लक्ष्य एकाग्रता से– केन्द्रितरूप से उस जगह पर प्रार्थना भाव में रखा करें। ऐसे अनेक प्रकार से उसका भक्तिज्ञानभाव से उपयोग किया करना।

सूक्ष्म चेतना देह से भी बराबर स्पष्टता न आ सके तो उसके स्थूल भी– केवल स्थूल संबंध से भी उसमें रही हुई जो चेतनाशक्ति है और जो भावमय है, उसके साथ स्थूल स्वरूप से रात को सोते समय या किसी भी पल में नकारात्मक विचारों की पल में उसे हृदय समक्ष प्रगट करना।

जिज्ञासु : आपके साथ के संबंध ने मुझे सिखाया है कि अखंड, अविरत रूप से, अनन्यभाव से, अव्यभिचारी रूप से और सर्वभाव से परमात्मा का स्मरण होता हो वह प्रथम सीढ़ी है, उसमें संकल्प-विकल्प उठते बंद हो जाते होंगे न ?

श्रीमोटा : उसमें तो फिर ऐसी स्थिति उपजे कि शब्दमात्र में हरिःॐ सुनाया करे वैसी सहज स्थिति बन जाय।

● ● ●

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [६]

पू. श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

(दिनांक ३-५-१९७४ के दिन पंचशील सोसायटी अहमदाबाद में श्रीजयंतीभाई पटेल के घर पर पू. श्रीमोटा के साथ श्रीअनुपरामभाई भट्ट ने पू. श्रीमोटा के साथ की हुई सत्-चर्चा की पावन ध्वनिमुद्रित-वाणी का वृत्तांत)

● श्रीमोटाआदेश ●

लीक पर मत चलो । समाज में जो लीक पर चलते हुए काम होते हैं वैसे काम नहीं; परंतु मौलिक काम करने चाहिए ।

जहाँ तक समाज में गुण और भाव विकसित नहीं होंगे, वहाँ तक समाज उन्नत नहीं होगा । इसलिए हमें तो गुण और भाव के उत्कर्ष के लिए ही प्रयत्न करना चाहिए ।

अनाज-पानी के अकाल के लिए समाज में रही हुई दयावृत्ति से लोग मदद करेंगे ही । किन्तु गुण और भाव के अकाल को समाज नहीं समज सकता है । तो गुण और भाव के अकाल के निवारण के लिए प्रवृत्तियाँ ही आरंभ करना चाहिए ।

(पू श्रीमोटा के साथ की बातचीत से)

अनुवादक :

भास्कर भट्ट

संपादक :

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

॥ हरिःॐ ॥

• अनुक्रमणिका •

१. पू. श्रीमोटा के साथ श्रीअनुपराम भट्ट साहब की सत्-चर्चा ....

२. जल और पृथ्वीतत्त्व में चेतन का अवतरण नहीं होता ....

३. योग की भाषा में संयम ....

४. स्वार्थ की सभानता की तरह सद्गुरु की सभानता प्रत्येक कर्म में रखो ....

५. सद्गुरु का स्मरण रखने के लिए उपाय ....

६. नकारात्मक वृत्तियाँ उठे उस समय प्रार्थना, भजन, स्मरण करो ....

७. **मोटा** को पैर पड़नेवाले **मोटा** का काम करे तो सच्चे पैर में पड़े ....

८. **मोटा** का काम **मोटा** को स्वयं में जीवित करने के लिए करो ....

९. गीताजी के श्लोक की समझ ....

१०. भगवान के साथ संबंध बाँधने के लिए साधन करो ....

११. दूसरों के बारे में सोचना छोड़कर स्वयं के बारे में सोचो ....

१२. अभ्यास और वैराग ....

१३. सर्वारंभपरित्यागी का अर्थ ....

१४. गीताजी के श्लोक की समझ ....

॥ हरिःॐ ॥

उद्घोषक : दिनांक ३-५-१९७४ के दिन पू. श्रीमोटाने श्रीइन्दुकुमार देसाई द्वारा श्रीअनुपराम भट्ट साहब को संदेश भेजकर सत्चर्चा के लिए बुलाये थे । तब पंचशील सोसायटी, अहमदाबाद में श्रीजयंतीभाई पटेल के घर पर श्रीअनुपराम भट्ट ने पूछे हुए प्रश्नों द्वारा पू.श्रीमोटा के साथ की हुई सत्-चर्चा का यह वृत्तांत है ।

जिज्ञासु : अनुभवी को शरीर के सुख-दुःख भोगने पड़ते हैं क्या ?

श्रीमोटा : रामानुजाचार्य या वैष्णव संप्रदाय के आचार्य ऐसा कहते हैं कि देह है, वहाँ तक सुख-दुःख है । अर्थात् उसको मुक्ति नहीं है । किससे मुक्ति नहीं हैं ? सुख-दुःख से । इसका अर्थ ऐसा नहीं कि काम, क्रोधादि या प्रकृति नहीं है । ऐसा अर्थ नहीं ले सकते और शंकराचार्य ने किसी जगह लिखने में ऐसा नहीं बताया होगा । मैं तो मानता हूँ शंकराचार्य भी देह है । स्वयं देहावस्था है उसकी और विदेहावस्था कहते हैं वह बात बाद में हम करेंगे ।

किन्तु देहअवस्था है .... वह देहअवस्था है, वहाँ तक प्रकृति है और प्रकृति के गुणधर्म उसे हैं । सिर्फ ज्यादा से ज्यादा क्या कि लिप्त न हो जाय । उसमें डूब न जाय । शहद के अंदर मक्खियाँ डूब जाती हैं वैसा डूब न जाय । उसमें लिप्त न हो जाय । तद्रुप न हो जाय और मानो कि तद्रुप हो जाय– तद्रुप । तो अनुभवी पुरुष तद्रुप नहीं होगा तो अनुभवी नहीं ।

संसारी मनुष्य इतना तद्रुप नहीं होगा । संसारी मनुष्य की शक्ति, ताकत नहीं तद्रुप होने की । अनुभवी की वह शक्ति है । जैसे चेतन पेड़ के साथ पेड़रूप हो जाता है । जल के साथ जलरूप, पशु के साथ पशु । उसी तरह अनुभवी पुरुष संपूर्ण तद्रुप हो जाय उसके साथ । फिर भी अलग रहता है ।

उस तरह अनुभवी तद्रुप हो जाय । किसीके साथ । तो तद्रुप हो जाँय हम किसी के साथ तो दूसरा क्या बनता है ? कि एक संसारी मनुष्य

तद्रुप हो और वह अनुभवी तद्रुप हो तो दोनों के तद्रुप होने में क्रिया एक की एक है । किसी को कुछ बदलाव तो लगना चाहिए । जबरदस्त बड़ा प्रसिद्ध से प्रसिद्ध सटोरिया हो और धंधा ले हाथ में किन्तु कह देता है.... या तो व्यवहार में .... उसी तरह अनुभवी पुरुष तद्रुप होता है । किन्तु तद्रुप होता है ।

प्रकृति में द्वन्द्व और गुण आये । अब द्वन्द्व और गुण यदि आये तो फिर सुख-दुःख आये या नहीं ? नीति-अनीति । ये सब युग्म । द्वन्द्व के युग्म आये या नहीं ? तो अब शंकराचार्य क्या कहते हैं, वह जानता नहीं हूँ । वे विदेहमुक्ति किसे कहते हैं, वह मैं नहीं जानता हूँ ।

विदेहमुक्ति यानी जीवित-जागृत चेतन के जैसा अनुभव स्वयं करना । होती है उसे । किन्तु विदेहमुक्ति यानी मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि विदेहमुक्ति यानी शरीर की कोई भी प्रकृति का लक्षण उसमें हो नहीं । वह यदि विदेहमुक्ति कहलाती हो तो वह सिर्फ काल्पनिक है । Reality उस में किसी दिन आ सकती नहीं और **शंकराचार्य की मुक्ति का अर्थ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहम्, रागद्वेष से मुक्ति । यानि की प्रकृति की पकड़ से मुक्ति, किन्तु उसका अर्थ उसमें से प्रकृति चली ही जाय ऐसा मुझे तो लगता नहीं है । क्योंकि संभव ही नहीं । अनुभवी को शरीर है ।**

शरीर का वह गुलाम नहीं फिर हंअ.... शरीर । होना.... उसका शरीर होते हुए भी शरीर का गुलाम नहीं है । वहाँ तक ठीक है । किन्तु ऐसा कि अनुभवी हुआ ।

शंकराचार्य भगवान ऐसा कहते हैं कि अनुभवी हो, उसे सुख-दुःख ही नहीं हो । सुख-दुःख में हो, किन्तु उसमें डूबता नहीं ऐसा बन सकता है । उसमें उसे ज्यादा लगे नहीं । लगे नहीं यानी कि उसे दुःख आदि हो, इससे व्यथित न हो, चिल्लाता नहीं । ओ बाप रे ... मर गया । मर गया ऐसे चिल्लाता नहीं । वह सब सही किन्तु वे यदि मोक्ष को ऐसा कहते हो कि उसमें सुख-दुःख ही नहीं शरीर के हाँ .... क्योंकि आखिर तो हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् जो हैं, वे मनादि..... उस

आधार से भी जुड़े हुए हैं । आधार से जुड़े हुए न हों, तो कोई कुछ कर्म हो ही नहीं न ! वे आधार से जुड़े हुए हैं । ऊर्ध्व में भी जुड़े हुए हैं और अनुभव होने से समत्व धारण किया हुआ है ।

समत्व जीवंत रखकर उभय का सिंचन करता है ।

इससे शंकराचार्य भगवान ने अनुभव की कक्षा में सुख-दुःख आदि ही नहीं होते । मेरे मन में कि उसे मनुष्य है । उसके मनादिकरण हैं । अनुभवी के । **वे सुख-दुःख होते हुए भी सुख-दुःख होते हुए भी सुख-दुःख से लिप्त नहीं होते । उसका उसे बंधन नहीं है । या तो दूसरी तरह हम विचार करें । गीता का आधार लें कि वह द्दष्टा है । साक्षी है । कि किसका साक्षी हो वह ? कहीं कुछ हो तो साक्षी या ऐसे ही साक्षी ? कहीं कुछ होना चाहिए न ? तो वह साक्षी ।**

तो अब आप यदि पूरा concept कहो कि शंकराचार्य भगवान यों कहते हैं । मुझे वह बात याद आती है उनकी । शरीर है, वहाँ तक सुख-दुःखादि रहेंगे । ऐसा हमारे भक्ति संप्रदाय के आचार्य कहते हैं । यह सौ प्रतिशत की बात सच्ची । चाहे जैसा बड़े से बड़े अनुभवी अभी तक हो गये हैं । सभी को है । **रामकृष्ण को तो स्वयं देखा हुआ केन्सर । रमण महर्षि को दर्द होता था, तब मुँह पर आने वाले बदलाव मैंने देखे हैं । गया था । दर्शन करने ।** एक साधु ले गये थे । नारायण स्वामी हिमालय के थे । आप ठीक नहीं करते । हम नहीं जायेंगे ऐसे लोगों के दर्शन को दूसरे लोग किस तरह जायेंगे ? तो हमें उदाहरण रखना चाहिए । कि आप तो पाँच-दस मोटर लेकर निकलोगे और मुझे कोई मोटर-बोटर देगा नहीं । आज की बात अलग है । आज फिर भी माँगु तो कोई दे भी । इससे मुझे अनुकूलता नहीं प्रभु । और काम मेरा मन में पहले । हम उसमें सिखे थे कि **भगवान भी कर्म करते हैं । तब उनको भी दर्द होते मैंने स्वयं देखा है । मुँह पर बदलाव दर्द से । किन्तु वह बदलाव होते हैं, शरीर के कारण से । किन्तु वे बदलाव होते हैं शरीर के कारण से किन्तु उससे मन उनका .... सभानता से अलग है ऐसा नहीं गिना जा सकता ।**

आज मुझे भयंकर से भयंकर दर्द हो रहा हो तो मैं भजन लिख डालूँ। फिर मैंने अनेक इसके प्रयोग किये। कि ये मैं गप मार रहा हूँ या सचमुच ये हकीकत हैं ? मैं लिख डालूँ। दो-चार-पाँच लिख डालूँ। यह मेरा स्वयं का अनुभव है। सख्त से सख्त दर्द होता हो। इस साहब को मैं धन्यवाद देता हूँ। उसने मेरी कदर की .... मेरा ओपरेशन करने का था, तब साहब को मैंने लिखवाया था। तब मैं सद्‌गुरु पर लिख रहा था। **यानी कि सभानता उसकी *हरि* के साथ किसी काल उस सुख-दुःखादि के कारण टूटती नहीं है।** किन्तु उससे सुख-दुःखादि हो ही नहीं ऐसा प्रश्न शंकराचार्य भगवान कहते हो .....

जिज्ञासु : मैं आपको यह कहता था की श्रीरामानुचाजार्य ऐसा कहते हैं कि जीवनमुक्ति जो शंकर मानते हैं, वह है ही नहीं। क्योंकि कर्म के निमित्त से जो शरीर धारण करना पड़ता है, वह शरीर उसने धारण किया होता है अनुभवी ने भी। इससे सुख-दुःख उसे अनिवार्य रूप से होते ही हैं, ऐसा रामानुचाजार्य कहते हैं और यह होने के कारण वह जीवनमुक्ति नहीं है उसकी। क्यों नहीं ? वे बाद में ऐसे उपनिषदों इत्यादि के क्वोटेशन ऐसे करते हैं। तो वे कहते हैं—

अशरीरम् वा वसंतम् नप्रियाप्रिय पुषतः ।

जो अशरीर बनते हैं, वे तो मुक्त बनते हैं और प्रिय और अप्रिय, सुख और दुःख का स्पर्श होता नहीं। यह क्वोटेशन लेते हैं।

उपनिषद् का वाक्य मैं बोलता हूँ। ये उपनिषद् का ऊपर है वह क्वोटेशन देकर फिर बात करते हैं। मुक्तावस्था क्या ? तो उपनिषद् का क्वोटेशन दिया।

अशरीरम् वा वसंतम् नप्रियाप्रिय पुषतः ।

जहाँ तक शरीर है; वहाँ तक प्रिय और अप्रिय का नाश होता नहीं है। अर्थात् सुख-दुःख का sensation नाश होता नहीं है। उस प्रकार दूसरा कहा है कि —

अशरीरम् वा वसंतम् नप्रियाप्रिय पुषतः ।

जो अशरीर बनता है, उसे प्रिय और अप्रिय अर्थात् सुख और दुःख का स्पर्श होता नहीं। इस प्रकार कहा।

अब जब अशरीर अवस्था का लक्ष्य ऐसा है, वैसा रामानुजाचार्य कहते हैं । तब जीवनमुक्त दशा वह संभव ही नहीं । क्योंकि शरीर तो होता ही है । अनुभव । शरीर तो होता ही है । और शरीर होने के कारण उसे सुख–दुःख होता ही है । इसलिए विदेहमुक्ति संभवित है । विदेहमुक्तावस्था संभवित है । किन्तु यह अवस्था जीवनमुक्ति की संभवित नहीं है ऐसा रामानुजाचार्य कहते हैं ।

अब शंकराचार्य ऐसा कहते हैं कि नहीं ..... जीवनमुक्ति की अवस्था संभव है । जीवनमुक्ति यानी क्या ? यानी वे ऐसा कहते हैं कि देहाभिमान का नाश । यह ऐसा शंकराचार्य कहते हैं । यानी देह है सही । किन्तु उसमें देह मैं हूँ, देह मेरा है, इस प्रकार का ध्यास या अभिमान उसका नाश हुआ होता है ।

श्रीमोटा : बराबर है साहब ।

जिज्ञासु : वह शंकराचार्य का stand है । फिर वे कहते हैं । उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति है । वह बहुत धनवान है । अब उसने संन्यास ले लिया । धनवान है बहुत । और उसका धन चोरी हो गया । लूंट लिया गया । इससे उसे दुःख होता है । क्योंकि धन में उसका अभिमान है । ममत्व इत्यादि है । किन्तु जब संन्यास लेता है । संन्यास लेता है, उसके बाद उसे उस धनापहार.... धन चला जाय उसके कारण दुःख होता नहीं है । क्योंकि उसमें उसका अभिमान उस बारे में रहता नहीं है । उसी तरह किसी भी वस्तु, किसी भी व्यक्ति ने कुंडल पहने हुए हैं । कुंडल पहने हुए हैं उसने । अब मैं कुंडली हूँ । मैं कुंडलवाला हूं । ऐसा उसे अभिमान रहा करता है । और उसका सुख रहा करता है । तो कुंडल चले गये उसके और उसके बाद उसे उस प्रकार का दुःख होता नहीं है । इससे सुख–दुःख वह देहाभिमान के कारण है, ऐसा वह कहता है । **इससे देहाभिमान चला जाता है जीवनमुक्त को । उसके बाद वह सुख–दुःख रहित अर्थात् अशरीरावस्था ही है । शरीर हो वही शरीरावस्था नहीं, किन्तु शरीर हो फिर भी देहाभिमान चला गया हो, वह मनुष्य अशरीरावस्थावाला है यानी मुक्त ही है ऐसा श्रीशंकर का कहना है ।**

श्रीमोटा : वह बराबर ।

जिज्ञासु : और उसे वे जीवनमुक्त दशा कहते हैं ।

श्रीमोटा : ये ऐसा शंकराचार्य नहीं कहते हंअ.... उसे सुख-दुःख न हो ।

जिज्ञासु : अर्थात् यह बात अर्थात् स्पर्श होता नहीं ।

श्रीमोटा : स्पर्श न हो । किन्तु सुख-दुःख तो होता ही है । सुख-दुःख होता है ।

दूसरी बात जो कहता हूँ कि शायद उसने न की हो । शंकराचार्य ने जाहिर में न की हो । क्योंकि अनुभवी पुरुष हो । संपूर्ण अद्वैत का जिसे अनुभव है, उसे आकाशतत्त्व आगे होता है हमेशा । और आकाशतत्त्व के कारण जहाँ-जहाँ निमित्त हो, वहाँ जाय अपना-अपना शरीर लेकर भी जाता है । किन्तु वह जो शरीर को लेकर जाता है, उसे सुख-दुःखादि नहीं है । उदाहरण के लिए मेरा शरीर यहाँ जयंतीभाई साहब के घर पर है । और यहाँ से मेरे आश्रम में काम पड़ा और गया तो उसे कुछ ही नहीं । बिलकुल नहीं । और ओपरेशन कराऊँ उसका वह भी रह जाय । दाग-बाग-चिह्न रह जाँय । किन्तु इसे कुछ ही नहीं ।

जिज्ञासु : यह तो समझ सकता हूँ ।

श्रीमोटा : नहीं यह तो है । बनी हुई हकीकत । सच्ची हकीकत । यह कुछ जाहिर में रख नहीं सकते हम । गप मारते हो । लाईए । साबित करो । वह कुछ उनके लिए यह कोई सिनेमा का खेल नहीं कि साबित कर सके । किन्तु हकीकत की बात है यह । कि आकाशतत्त्व वाले होने से वे शरीर को कहीं भी ले जा सकते हैं । हाजिर कर सकते हैं । स्वयं । और ऐसे कई महात्मा गुजर गये हैं । फिर हाजिर हुए हैं । ऐसा कईयों का अनुभव है । तो वे अशरीरी । उसे मैं अशरीरी कहता हूँ । ऐसा सही । शरीर होते हुए देहाध्यास जिसका चला गया है बिलकुल । शरीर, किन्तु उसे सुख-दुःखादि ना हो । हमेशा सुखदुःखादि में लिप्त भी नहीं ।

उदाहरण के लिए मेरे जैसा मनुष्य । मैं तो दवा कराने में मानता हूँ पहले से । दवा करता हूँ । शरीर है । अभी तो प्रत्यक्ष रूप से प्रवृत्ति तो शरीर से ही होती है । मेरी आत्मा को और मन को कौन काका जानता

है ? मैं जानता नहीं हूँ। इससे उदाहरण के लिए इतने सारे काम भगवान की कृपा से तिहत्तर लाख के हुए हैं। तो कोई एक हमें जाने। काम के कारण जानते हैं। काम के कारण नाम है। तो उस तरह शरीर है अनुभवी का। प्रकृति fully transform हुई नहीं है। वह जब होगी। **जल और पृथ्वी तत्त्व में चेतन का अवतरण संपूर्णरूप से होगा, तब रोग भी नहीं होगा।**

जिज्ञासु : इसमें से एक प्रश्न ऐसा उत्पन्न होता है कि जो शरीरधारी अनुभवी है। जो शरीर है। जो शरीर में से निकल नहीं गया है। ऐसा अनुभवी है तो उसकी.... मैं ऐसा पूछता था कि वह दूसरे **जीव** से किस तरह अलग होता है ? उसे मन, बुद्धि, इत्यादि होते हैं या नहीं ? यह प्रश्न उठता है।

श्रीमोटा : उसे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् आदि सभी हैं। उस **जीव** से और इस **जीव** से कुछ अलग नहीं कर सकते। तुलना नहीं कर सकते। **किन्तु हरएक के भोगने-भोगने की रीति में फर्क। संसारी मनुष्य सुख-दुःखादि भोगे और यह भोगे मन, बुद्धि, चित्त द्वारा ही। किन्तु उस संसारी मनुष्य के मन, बुद्धि, भगवान में लय हुए नहीं है। इसके लय हो गये हैं। लय हो गये हैं और उसके साथ तद्रुप होते हैं। भगवान के साथ। ब्रह्म के साथ। जो शब्द कहना हो वह। स्वयं का अंतरात्मा कहो। आत्मा कहो। वह आत्मा के साथ संलग्न है और संलग्न होकर भोगता है।**

मैं करोडाधिपति होऊँ और पाँच-पचास लाख का कर्ज हुआ तो मुझे कोई हिसाब नहीं। और सामान्य मनुष्य हो और पचास लाख का कर्ज हुआ तो खलास। उसी तरह सामान्य मनुष्य भोगता है और एक अनुभवी भोगता हैं। दोनों की भोगने की रीति में आसमान जमीन का फर्क है। यह यदि ख्याल में रखें तो तो अनुभवी को बिलकुल हम नहीं समझ सकेंगे। अनुभवी भोगता है सही। किन्तु दूसरी एक समझने जैसी बात है कि **जीव**दशा वाला मनुष्य शरीर से भोगता है। उसके अंदर आशा, इच्छा, कामना, तृष्णा, लोलुपता, अनेक प्रकार की छटपटी, कामक्रोधादि

उसमें नींव में रहते हैं और सब कुछ भोगने के पीछे उसके हेतु की उसकी समझ है । जबकि अनुभवी के पास ऐसा नहीं है ।

तो क्यों क्या करने भोगता है मेरा साला ? अनुभवी मन या चित्त का गुलाम नहीं है । हम गुलाम हैं । संसारी मनुष्य भोगता है, वह मन, बुद्धि, चित्त, प्राण से करके भोगता है । गुलाम की तरह, दास की तरह, जब.... जब वह जो अनुभवी है, उसके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण उसमें से चले नहीं गये हैं । Sublimation हुए हैं और वह उसके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण का भी वह गुलाम नहीं है । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण इत्यादि ऐसी जो कोई स्थिति है, किन्तु वह सब लम्बा होगा । ये सब समझते नहीं उसमें । किन्तु ये आप लिखना । तो **किसी समय मैं कहूँगा आपको, कि ऐसी स्थिति है कि मन, बुद्धि, चित्त, प्राण के बगैर भी कर्म हो सकते हैं । करते हैं ।** मन, बुद्धि, चित्त, प्राण का बिलकुल आश्रय नहीं । किन्तु यह जो अनुभवी वह तो आश्रय लेता है । **मन, बुद्धि, चित्त, प्राण का और वह (जीवदशा वाला) भी आश्रय लेता है । किन्तु वह गुलाम के रूप में । यह (अनुभवी) एक स्वामी के रूप में ।**

स्वंय इंजन ड्राईवर हो, तब इंजन को ४० मील, ५० मील, ६० मील, ७० मील की स्पीड से चलाने की वह सभी कला जानता होता है । वह मास्टर है उसका । इस तरह ये मास्टर के रूप में काम । उसे उपयोग करता है । उपयोग करता है मैं कहता हूँ हंअ.... और वह (**जीव**दशा वाला) तो उपयोग में आ जाता है । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, सभी में सही । प्रकृत्ति है और जहाँ तक शरीर है, और प्रकृति है, वहाँ तक मन, बुद्धि, चित्त, प्राण हैं और हैं और **संसारी का मानस अखंड काल संसार में और अनुभवी का मानस अखंडकाल भगवान में ।**

जिज्ञासु : अब यह तो एक बहुत अच्छा अलग तरह से समाधान मिला । आपने कहा उसमें । शंकराचार्य ऐसा कहते हैं । जीवनमुक्तदशा की बात करते हैं कि जो अनुभवी है, जीवनमुक्तदशा में वह बुद्धि में प्रतिबिंबित मैं चैतन्य हूँ ऐसा वह जानता है । जब कि जो **जीव**भाव में है, वह मैं प्रतिबिंब उसका प्रतिबिंब हूँ, ऐसा जानता नहीं है । यह उसका

बड़ा difference उसने रखा है । वह इस तरह इससे वह उपाधि उसे होती है । बुद्धि के बिना वह हो ही कैसे ऐसा शंकर स्वीकारते हैं और विदेहमुक्त होने के बाद यानी यह देह खत्म होने के बाद वह लय पाता है ऐसा कहते हैं ।

श्रीमोटा : वह बराबर है ।

जिज्ञासु : बुद्धि इत्यादि..... ऐसा वे कहते हैं ।

श्रीमोटा : स्वयं वह खुद भी लय हो जाता है । वह भगवान के एक अखंडकाल एक पूरे ब्रह्मांड के अंदर उसका जो लेयर है, उसके बोलने में, उसके अंदर लय हो जाता है। फिर भी उसका स्वतंत्र अस्तित्व रहता है । क्यों रहता है ? कि जो उसके आगे-पीछे के सब हो, भक्त लोग उसका चिंतन करते हो, चिंतन करते हो उसके कारण स्वतंत्र अस्तित्व उसका है । अन्यथा है नहीं । अन्यथा नहीं है स्वतंत्र ।

हैं नहीं उनका स्वतंत्र अस्तित्व । भगवान के सिवा । **उस**के साथ मिल गये वह मिल गये । किन्तु वे भक्त लोग हैं । जो-जो उसे प्रेमभक्ति से याद करते हैं और उसका भी है कि चाहे जितने ज्ञानी, अनुभवी हुए हो प्रत्येक के काल के तबके अलग वह हम तय नहीं कर सकते । कर सकते हैं सही । अब सब माथापच्ची में क्यों उसमें हमें घूसने से कुछ लाभ नहीं भाई, किन्तु ऐसा है ।

मेरा स्वामीनारायण संप्रदाय लगभग चारसौ, सवा चारसौ वर्ष चलेगा । राम तेरी माया । फिर उसका नूर उतर जाएगा । हमारे वैष्णव धर्म का नूर उतर गया । समर्थ पुरुष अनुभवी पुरुष थे । विठ्ठल नायकजी तक थे । फिर नहीं है । इसी तरह ये जो पुरुष हुए वे लय होते हुए भी उनका (एक भाई को **:** बैठो न भाई वहाँ। वहाँ पीछे बैठ सकोगे ।) लय होते हुई भी स्वतंत्र existence हो ऐसा लगता है । किन्तु वह भक्तों के कारण । हाजिर भी हुए हैं ऐसे उदाहरण हैं । रामकृष्ण परमहंस शरीर के अवसान के बाद दिखे हैं । रमण महर्षि दिखे हैं । मेरे गुरुमहाराज दिखे तो मुझे प्रत्यक्ष अनुभव इतना सारा कि कहने में कमी नहीं कि बच्चों को भी साक्षी हो सके इतना सारा अनुभव ।

इससे ऐसे लोग अशरीरी हैं, वह सच बात हैं । ये तो शरीर के साथ होते हुए अशरीरी । फिर भी कई बार मैंने मेरी साधना में मुश्किल में देखे हैं । मिला हूँ । स्वयं में । वह शरीर लेकर आता है, उसमें उसे स्पर्शमात्रा नहीं । स्पर्श की मात्रा नहीं उसे । स्पर्शमात्रा जैसे कहें और जैसे गीता में है वह भी नहीं । अलौकिक । शरीर भी अलौकिक । हमारे समान दिखता है, किन्तु तेज से आलोकित । सूक्ष्मदर्शक, आरपारदर्शक और अन्य प्रकार का शरीर वह शरीर । वहाँ पड़ा हो । आये वह दूसरे शरीर से । वह जो शरीर लाते वह दैवी शरीर । वह आपको बराबर उसे नहीं । किन्तु यह जो शरीर में रहा । जन्म लिया । अनुभव हो तो भी वह सही ।

जिज्ञासु : मोक्ष वह तो नित्य प्राप्त अवस्था है प्रत्येक व्यक्ति को । वह कोई प्राप्त करने की अवस्था नहीं है ।

श्रीमोटा : सामान्य जनमानस में जो प्रचलित बात है कि जन्ममृत्यु नहीं, वह गलत बात । काम, क्रोध, लोभ, मोह, रागद्वेष अहम् इत्यादि से मुक्ति । ऐसा मैं समझता हूँ ।

जिज्ञासु : आत्मानुसंधान वह मोक्ष कहलायगा या नहीं ?

श्रीमोटा : उसके सिवा तो किस तरह से होगा मोक्ष ?

जिज्ञासु : मैं यह प्रश्न करता हूँ कि आत्मानुसंधान यानी आत्मस्वरूप की पहचान जिसे कहते हैं । जो नहीं है । उसके कारण बंधन की अवस्था है । तो उसमें कर्म का क्या उपयोग है ? आत्मानुसंधान की बाबत में उस कर्म की उपासना वह कितने अंश तक useful है इसमें ?

श्रीमोटा : यों जिसे कि आत्मा कहें । हम बोलते हैं वह कोई एक स्थल या कुछ नहीं दिखता या आकार नहीं है । किन्तु ऐसी एक जो परिस्थिति कि जिसमें मन आदि अमुक तरह से सब में मिले हुए होते हुए भी स्वतंत्र रीति से सब का साथ लिए बिना स्वतंत्र रूप से जी सकते हैं । और उसे स्वयं को यों होता है कि अभी जो मैं हूँ, वह मैं नहीं । मेरा स्वरूप अलग है । और इन सब के साथ प्रकृति, पृथ्वी, मनुष्य, कर्मव्यवहार सब के साथ जुड़ा हुआ हूँ । सब से अलग हूँ ।

वैसे भी हम व्यवहार में जिन विचारों के साथ सब मिलते हो, रहते हो। सब से अलग हो सही। ऐसा आपको लगता है। सब से अलग हो, ऐसा आपको लगेगा ही। किन्तु **जीव**दशा से लगता है। उस तरह उसे अनुभव होता है। तो अनुभवी का कर्म उसके साथ क्या लेना देना ?

जिज्ञासु : मेरा प्रश्न ऐसा है कि **जीव**दशा वाला व्यक्ति है उसको वह प्राप्त करना है। उसमें उसे कर्म की उपासना कितने अंश तक उपयोगी होती है ? वह कहाँ तक होती है ? अर्थात् आत्मानुसंधान करने में **जीव**दशा वाले मनुष्य को कर्म किस प्रकार उपयोगी होता है ? कर्म का क्या हिस्सा है ?

श्रीमोटा : मैं तो शास्त्र पढ़ा नहीं हूं। सामान्य ग्रामीण की बात करता हूँ। एक आपको tendency हुई। वृत्ति। कहीं कुछ भोगने की। वह tendency हुई वह बैठी रहेगी ? कि उस दिशा में ही गति रहती है न ! वह आप उसे खाओगे तब शांत होगी वह। सामान्य **जीव**दशा में यह होता है। तो उस तरह हम यदि सामान्य रीति से हरएक मनुष्य को ऐसा ही हो कि वृत्ति जागे वह स्वरूप वाली हो— साकार हो। भोगें। उसके बाद दूसरा। उसमें लग जाय। ऐसे अनंत काल चलता ही रहता है। उसे बदलने की हमारी ताकत नहीं है।

तो अब ये कर्म रहे। किस तरह उनको अनुभव करना। किन्तु उसका सार हम समझे। कि वृत्ति हुई। तो वह साकार हो। वह गतिशील है। सर्जनशील है। वह बुद्धि स्वीकार करती है या नहीं ? अब हम ऐसे होते हुई भी हमें चेतन होना है। आत्मा होना है।

अब आत्मा होना है तो मनुष्य को विचार करना चाहिए। स्वयं की प्रकृति का विचार कर लेना चाहिए। कि इस प्रकृति का क्या ? मेरे साले बैठो न अब माथापच्ची क्या ? अब जो है वह क्या गलत है ? किन्तु ऐसे सब विचार आये। यह बराबर नहीं है। सुख-दुःख, मानहानि यह और वह सब क्लेश और कलह और मुश्किलों का अंत नहीं होता है। परेशान-परेशान। मर गये। मुझे ये नहीं चाहिए.... चला जाएगा। तो इस

बारे में तो पर होने की बात की है। अब उससे पर होना हो हमें तो प्रकृति के अलावा-प्रकृति का विषय नहीं। प्रकृति के ऊर्ध्व प्रकार के विषय में हमारा मनन-चिंतन होना चाहिए। हमारे सहज रूप से मन आदि करण में ये सब प्रवृत्ति चला करेगी ऐसा नहीं होगा। मन आदि करण हैं। वह तो कोई ही exceptional **जीव** हो वह करोड़ो में कोई ही होगा। प्रहल्लाद जैसा हुआ कि बचपन से उसे राग लगा। ये मेरे से आप से ऐसा होगा नहीं। तो हमें सचमुच जिज्ञासा जागी हो अंदर तो वृत्ति जैसे साकार होती है न या नहीं होती ? तो आपकी यदि भगवान को मिलने की लगन लगी होगी तो वह आकार..... उसका गुणधर्म वह आकार न ले तो ऐसा समझना कि आपकी मंद गति है। जिज्ञासा की।

आपकी जिज्ञासा हो तो आपको विश्वास होता है कि पाँच-सात बार विचार तो आता है। जिज्ञासा है मेरी उसका भरोसा हो जाय या न हो ? किन्तु तीव्र जिज्ञासा जागी या तीव्र वासना जागे। तो वह जिस तरह साकार होकर भोग कराती है, उसी तरह यह जिज्ञासा। तो वह गतिशील, सर्जनशील और क्रियाशील हो। वह उसका स्वभाव। नदी के पानी के पाट में बहे उस तरह उसका ये स्वभाव।

अब श्रेयार्थी को, प्रयत्नशील व्यक्ति को सचमुच रीत से जो प्रयत्नशील है, उसे भी मूल में तो जिज्ञासा है ही। यह कोई भी मना कर सकता ही नहीं। और वह जिज्ञासा जैसे-जैसे करके अखंड हो तो उसे कर्म में भी प्रेरित करती है। और दूसरा एक Psychology तो मैं पढ़ा नहीं हूँ। किन्तु जिसका मनन-चिंतन एकसा, एक ही प्रकार का उसके कर्म में भी वही प्रकार आये। कर्म-कर्म को स्थूल क्यों कहा ? तो मनादिकरण से ही होते हैं। मनादिकरण के बगैर होते नहीं, यह बात तो सब को कबूल करनी पड़ेगी। चाहे कोई भी हो उसे। जब वह मनादि है। तब एक तरफ से मनादि को श्रेयार्थी ब्रह्म के या आत्मा के मनन-चिंतन में रोकता रहे।

अब मनन-चिंतन रहे वह तो कुछ abstract है। पढ़े लिखे हुए। जानते नहीं है। इससे abstract है। तो आपकी वृत्ति abstract होती है। वह कुछ दिखती नहीं है। वृत्ति साकार होती है। तो यह भी

आपकी होगी तो साकार होगी ही । Inspite of yourself यह अलग कर सके ऐसा नहीं है । जैसे श्वासोच्छ्वास । उसे आप किसी भी संजोग में बीमारी- स्वस्थता में चालू ही रहेगा । आपको कैसा रहता है ? कुदरत का स्वभाव उसका । सहज गुणधर्म उसका । इस तरह इसका सहज गुणधर्म कि जिज्ञासा हुई इससे उस प्रकार गतिशीलता रहने की ।

और दूसरा कि सतत जिसका और जिसका विचार या कर्म कर्म में भी वह जो विचार है मानसिक । मन के अंदर । उसमें चाहे जितना श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वाला मन हो तो भी उसे आप साकार नहीं करोगे, वहाँ तक ढीला रहेगा । इससे मनादिकरण से आप idea जितना साकार करो, उतनी दृढ़ता बढ़ेगी । मन में रहा हुआ जो है उसे गतिशील, क्रियाशील होकर वह साकार होगा । तब उसकी दृढ़ता पक्की ।

तो इस तरह से श्रेयार्थी जब प्रयत्न करता हो तो उसकी जिज्ञासा होने से ही उस प्रकार उसके कर्म होंगे .... ही । उसमें बदलाव नहीं । और उसके कल्याण में कर्म नहीं होगा तो मनादिकरण की वृत्ति सर्जन नहीं होगी । किन्तु भावना को साकार करने के लिए कर्म essential हैं ।

कोई कहेगा आपके लिए बहुत प्रेम, बहुत प्रेम । अनेकों मुझे कहते हैं, **मोटा,** आपकी बहुत कृपा ! गप मारते हैं लोग । उसके मन में तो बिलकुल न हों । बोल नहीं सकता मैं । मूए, मुझे कहने दो न लोगों को । अकारण बोला करते हैं साहब । आशीर्वाद चाहते हैं । किन्तु मन में सभानता उसकी रखकर करो । तो मुझे एतराझ नहीं है ।

तब यह नमन करने की प्रथा भी हमारे में बहुत लोग । मैं तो खुश होऊँगा कि भाई ये सब प्रथा प्रारंभ की है । किन्तु लोग अब यह काल बिगड़ा है । कोई समाधान, कोई समझाने जाँय तो भी किसीको करना नहीं है । इससे क्या समझे ? किन्तु **नमन करे उस समय सभानतापूर्वक और सही रूप में मेरे हेतु और अहम् को बिलकुल कमजोर करना है । अहम् को मुझे संपूर्ण कमजोर करना है । इसलिए उसकी यह प्रक्रिया है । उस तरह नमन करता हूँ या तो दूसरे जो सत्पुरुष हैं, उसके प्रति सभानतापूर्वक की आप में भक्ति उस समय प्रगट हुई**

होनी चाहिए । उसकी सभानता होनी चाहिए । कोई भी कर्म सभानता के बगैर निरर्थक है । संसार-व्यवहार में कर्म करते हो तो उस कर्म के पीछे की आपकी सभानता रहती है । स्वार्थ कुछ हो तो वह काम करना हो तो स्वार्थ की– उस स्वार्थ की सभानता रहती है । उस तरह इसमें रहनी चाहिए । नहीं रहती हो तो मैं उसे बराबर नहीं गिनता । रहनी चाहिए ।

प्रत्येक श्रेयार्थी को आत्मा का अनुभव करने के लिए जैसे मन की अंदर जिज्ञासा, वह जैसे essential तो यदि वह जिज्ञासा हुई तो उसका second परिणाम वह साकार होना ही चाहिए । न हो तो जिज्ञासा नहीं । जैसे वृत्ति होकर साकार होती है । तो वह भी साकार होना ही चाहिए । कोई न कोई कर्म द्वारा उसका आपको मनन-चिंतन कराया ही करे । उसका अभ्यास कराया ही करे । वर्ना ठिकाना नहीं रहेगा । तू मेरे साथ जुड़ जा । **भगवान तो हमेशा जुड़ा हुआ ही है । हम भूल गये हैं । हम अलग नहीं हैं भगवान से । बिलकुल अलग नहीं है । वह हमें उसका जो सातत्य है । जो अज्ञान के कारण भूल गये हैं । उस अज्ञान को दूर करने के लिए ज्ञान का उपाय है । ज्ञानरूपी तलवार धारण करनी पड़ती है ।**

तो कहते हैं भई **मोटा**, आपने contradiction की बात की । बिलकुल humbug । मैंने कहा, बात सच है भई । अज्ञान में है, वह ज्ञान किस तरह आये ? किन्तु हमें बुद्धि है, वह ज्ञान का भाग है । बुद्धि से विचार करके सोच करके हमें कार्य करना है । किन्तु **जो भी कुछ करें उसकी सभानता पहले रखने की । सभानता के बगैर कर्म किया हुआ हो, वह ऐसा कहते हैं कि ऊर्ध्व पंथ में आगे नहीं आता है ।**

जिज्ञासु : मेरा प्रश्न फिर आगे आता है कि कहाँ तक कर्म का उपयोग है ? To be stop at a particular point अर्थात् अमुक स्टेज आने के बाद ।

श्रीमोटा : कर्म का अब विचार कर लो । अनुभवी है संपूर्ण । यहाँ तक आपको समझ में आ गया । कर्म वहाँ तक सही । **उस**का अनुभव

करने तक। उसमें शंका नहीं रही है न ? चलो, अब यह रहा कि अनुभव हुआ । किन्तु उसे शरीर रहा या नहीं ?

जिज्ञासु : नहीं। मैं वह बात **जीव**दशा वाले की बात पूछता हूँ।

श्रीमोटा : ओ... हो.... **जीव**दशा वाले ।

जिज्ञासु : अनुभवी की बात नहीं है ।

श्रीमोटा : **जीव**दशा वाले को तो कर्म है है है ही ।

जिज्ञासु : इससे वह आत्मानुसंधान के मार्ग पर गया । वहाँ जाते-जाते ऐसी एक स्टेईज आती है कि जब कर्म और उपासना या जो कुछ करता हो, उसे छोड़ देने की अवस्था आती है ।

श्रीमोटा : आती है ।

जिज्ञासु : उसकी बात है ।

श्रीमोटा : आती है ।

जिज्ञासु : How far?

श्रीमोटा : वह आती है सही और छोड़ देता है सही । किन्तु बाद में अपनेआप automatically चालू हो जाती है । किन्तु आती है सही और छोड़ देता है । इतना ही नहीं साहब । यह तो पहली बार बात कहता हूँ कि अनुभवी पुरुष Master of all कहा गया है । उसे स्वामी कहा गया है । वह भूख, प्यास के ऊपर भी स्वामी । उसे ऐसे संजोग मिल जाते हैं । तब ८-१० दिन भूख बिना-खाये बिना चलता है । पानी बगैर साहब मेरा अनुभव है । छ दिन तक पानी बिलकुल मिले नहीं । तब भजन-कीर्तन, ये शौच-पिशाब इत्यादि से मुक्ति । किन्तु हमेशा के लिए नहीं । उसे अनुभव हो जाय कि इस बात का मैं स्वामी हूँ— मैं स्वामी हूँ । जैसे हमारे घर हैं । हम स्वामी हों तो उसे तालेबाले मार देतें हैं न ? जब भी खोलना हो, तब खोलते हैं । उस तरह इसे अनुभव होता है सही । साधना के उच्चतर स्तर पर भूख-प्यास आदि से मुक्त रह सकता है ऐसा उसे अनुभव होता है ।

जिज्ञासु : भगवद्‌गीता में नैष्कर्म्यसिद्धि शब्द का उपयोग है कि नैष्कर्म्यवस्था आती है । कर्म करते-करते तब नैष्कर्म्यवस्था को ही मोक्षावस्था कहते हैं ।

श्रीमोटा : बराबर ।

जिज्ञासु : वह स्पष्ट रीति से कहता है। मुझे कुछ ऐसा स्फुरित हुआ था कि मनुष्य pole-jump करता है। वह पोल लेकर दौड़ता है न ? फिर अमुक तक आता है। इससे बाँस रखकर फिर कूद पड़ता है। वैसे कर्म और उपासना में मेरी बुद्धि अनुसार अमुक तक उपयोगी होते हुए होना चाहिए ।

श्रीमोटा : छूट जाते हैं ।

जिज्ञासु : उस बारे की बात पूछता हूँ ।

श्रीमोटा : छूट जाते हैं। उसके स्थूल कर्म फिर । पहले के कर्म तो आत्मा के अनुभव के लिए। अब कुछ ऐसा है नहीं उसे। उसे कर्म अनिवार्य नहीं हैं, किन्तु उसे कर्म हैं सही। वह ब्रह्म है। पल-पल सक्रिय है। निष्काम की भूमिका पर सकाम है। ब्रह्म भी। आत्मा की बात करें तो भी वह स्थिति उसकी होती है। तब वह निष्काम होते हुए भी काम करे या ना करे सब समान है ।

जिज्ञासु : तो ऐसा सही ?

श्रीमोटा : कई पड़े रहते हैं हों .... किन्तु साहब कई ऐसे होते हैं, कर्म बिना ऐसे ही पड़े रहे होते हैं । फिर भी महान ज्ञानी ऐसे होते हैं ।

मुझे याद है एक प्रसंग। इन सब को समझ में आयेगा। डाकोर में गोमती के किनारे एक बाजार में जाते हुए कुआँ आता है। उसके पीछे पड़े रहते थे वे। बिलकुल पागल ही सब कहते उसे। बहुत समय तक। मेरे गुरुमहाराज ने मुझे कहा कि मगरमच्छ के पास ले जा। तब पैसे तो थे नहीं। पैर में पड़ा कि हुक्म उठाने की तैयारी है। मेरे पास पैसे नहीं हैं। बिलकुल नहीं है ? तो कहा नहीं। तो माँग कर ले आ। मैंने कहा, मैं गरीब आदमी मुझे कौन देगा ? इतनी सारी गरीब अवस्था कि मेरे घर में आओ और मैं दिखाऊँ। तो बिना पैसे मेरे से। तो कि मुफ्त आऊँ आपके साथ। आप बैठो और मैं भी बैठूँ। तो कि नहीं। पैसे चाहिए। तो पैसे मेरे पास नहीं हैं। मेरे पास गहना आदि नहीं कि बेचकर आपको ले

जाऊँ । पैसे चाहिए । जगह दिखाइये मुझे दे ऐसी । पैसे मेरे पास नहीं है । साहब, उस दिन ८-१० आदमी आये और पैसे छियानबे रुपये हो गये । किसी दिन आते नहीं आदमी । क्योंकि मैं और वे दो जनें अकेले ही रहते थे । गाँव बाहर बँगला रखकर । दूसरा कोई आनेवाला नहीं । मना ही कर दिया था । किसीको आने ही नहीं देने का । दो ही जनें हम । तब दूसरे दिन आदमी आये और पैसे छियानबे रुपये रखे । लिजीये, मुझे कहा, ''बच्चा, देखो पैसा आ गया । अभी तू ले चल ।'' तो कि मगरमच्छ दिखाने ले जा ।

वडोदरा में कमाटीबाग में बड़े मगरमच्छ हैं और खंभात समुद्र है वहाँ शायद हो । कहाँ ले जाऊँ ? वे कहे नहीं दूसरा । वे तो बार-बार बालक के समान सौ बार बोले होंगे । अब मुझे चिढ़ तो चढ़ी थी । बोला करते हो, किन्तु जगह का नाम तो देते नहीं हो । कहाँ मुझे ले जाना है ? नहीं । बस ले चलो अभी । इतना आग्रह करते रहे । चलो, अब चलो । स्टेशन पर आकर आणंद तक की टिकट ली ।

फिर आणंद आया । इससे मैंने महाराज को कहा, कि यहाँ से बड़ा समुद्र आता है । समुद्र में तो मगरमच्छ होते ही हैं । इस तरफ मुम्बई जाता है । वडोदरा है । वहाँ बड़े-बड़े पानी के कुंड हैं । उसमें बड़े-बड़े जबरदस्त मगर हैं । और इस तरफ रणछोडजी का मंदिर है, उस, रणछोडजी को मगरमच्छ कहते हो तो वह वहाँ है । फिर भी जवाब नहीं दिया । यहाँ ले जा ऐसा कहे ही नहीं । वह तो बहुत मुश्किल है, ऐसे लोगों के साथ काम निकालना, हाँ साहब ।

मुझे तो गुरुमहाराजने सिखाया था । उस तरह हम रहते हैं । इसलिए तकलीफ नहीं आती । **यदि असली हमारी रीति के अनुसार रहूँ तो पलभर भी लोग रखे नहीं साहब मुझे । बिलकुल नहीं रखे साहब । सच कहता हूँ ।** हमें मालूम नहीं था । किसे मगरमच्छ कहते हैं, वह भी मुझे पता नहीं । फिर घुमते-घुमते हम गोमती के किनारे पर कुआँ है । उसके पास उस पर एक आदमी मैला-कुचैला जैसा पड़ा हुआ था । बराबर वहीं पर । बारिश में, ठंड़ में, धूप में वहाँ पर ही रहता था वह । बारिश में

भी। उसके साथ मेरे गुरुमहाराज ने देश-विदेश की बातें की। हमें समझ में नहीं आई थी साहब। कुछ आकाश की और ऐसी सब बातें करे। आप कहाँ सोते हो ? मेरे गुरुमहाराज ने कहा, "मैं तो आकाश में सोता हूँ। कि आप कहाँ सोते हो ?" कहने लगे, "कभी वायु पर, तेज पर, कभी पृथ्वी पर, जल पर, हमेशा का आकाश में सोना अभी हुआ नहीं है।" ऐसी सब बात करे। आज तो मैं समझता हूँ, तब नहीं समझता था। फिर मुझे कहे, देखो यह मगरमच्छ है। मैंने तो कहा। यह तो मनुष्य है। किन्तु अनुभव की दृष्टि से मगरमच्छ। अब उसे कौन पहचाने ? कितने सारे वर्ष तक वह डाकोर में था।

वह कर्म करता है सही। उसे फिर कह गये। मेरी सिफारिश कर गये। इस लड़के को इसलिए आपके पास लाया हूँ कि हमारे पास आ सके ऐसी स्थिति नहीं है उसकी। पैसे नहीं हैं। यहाँ डाकोर पास में है। इससे आपको पूछने करने आये तो सीधा जवाब दिजीयेगा। बेढंग भाषा में जवाब मत देना। तो कहने लगे दूँगा। तीनेक बार गया था। बहुत सुंदर जवाब दिये थे। किन्तु अब उसे कौन जाने ? ऐसा अनुभवी है कौन जाने ? कोई मानेगा यह ? पढ़े लिखे की तो बुद्धि की पहुँच ही नहीं वहाँ तक।

अब ऐसा सब करते। किन्तु वह है। ऐसों के कर्म दिखते नहीं लगते। कर्म दिखते नहीं। किन्तु उसे कर्म है सही। उसे कर्म हैं। मनादिकरण द्वारा वह कर्म करता होता है। उसे अनेकों के साथ संबंध है। निमित्त के कारण। इससे भेद रहता है। **जीव**दशा में कर्म essential। उसमें किसीको भेद नहीं है। किन्तु अनुभव की स्थिति में categoriesमें फर्क है। कोई लगातार कर्म करता रहता है। कोई न भी हो। तो कि उसे ऐसे ही कर्म चाहिए वैसा भी नहीं।

जिज्ञासु : अनुभवी के लिए कर्म compulsory नहीं है।

श्रीमोटा : कर्म हैं सही। किन्तु अमुक ही कर्म। मनादिकरण आये, निमित्त आया, इससे कर्म आया। निमित्त की बात हम स्वीकार करें, इससे कर्म आया उसे। किन्तु कई मनुष्यों द्वारा करते हो। कई प्रत्यक्ष रूप से

करे । और कई अपने आप करे । सूक्ष्म भाव से । सिर्फ भाव से होता है । मनादिकरण भी उड़ जाँय । सिर्फ एक भाव रहता उसमें । निमित्त की व्यक्ति रहती और स्वयं का भाव उसमें रहता । उस तरह भी करते हैं कर्म । ये अनुभवी पुरुष । तब कर्म रहता है सही । किसी न किसी प्रकार से कर्म रहता है । किन्तु essential नहीं । बिलकुल essential नहीं । **उसे कपड़े पहनने essential नहीं । वह तो पहने वह कपड़े । लोगों को पसंद ना पड़े इसलिए । वर्ना उसे कपड़े पहनने चाहिए ऐसा कुछ नहीं ।**

● ● ●

उद्‌घोषक : पू. श्रीमोटा ने अमेरिका निवासी भाई श्री जयरणछोड सेवक को ध्वनिमुद्रित करके भेजा हुआ यह संदेश है ।

श्रीमोटा : हरि:ॐ आश्रम की शुरू शुरू में प्रवृत्ति हुई, तब मुझे लगा कि इस तरह की प्रवृत्ति तो चला ही करती है, वह तो मन आदि के साथ सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से जुड़ी हुई है । भावना के साथ उसे आप सामान्य जनसमाज को किस तरह जुड़ पाओगे ? सामान्य जनसमाज इसमें जुड़े वह किस तरह हो सकेगा ?

आजकल लोग भगवान का नाम ले, धुन चलाये, भजन गाये और इतना सारा सामान्य हो गया है कि उसमें से नये प्राण स्फुरित नहीं होते हैं । अगर अभी समाज में ये भजन, धुन, ये सब सप्ताह और सब चल रहा है, ये यदि सचमुच उसके हेतु की सभानता के साथ भजन की भावना के साथ, जीवन के उठाव का संचार करने के हेतु के साथ यदि यह सब होता तो समाज कभी का ऊपर उठ गया होता । किन्तु सब रूढ़ि के अनुसार होता है । रूढ़ि अनुसार होता है ।

तब मुझे लगा कि हमारे देश में युवानी खिले और उस युवानी में मर्दानगी, साहस, हिम्मत, पराक्रम, धैर्य, सहनशक्ति ऐसे सारे गुण खिले वैसे हम काम लें ।

उसके बाद दूसरे भी ऐसे कई काम किये । किन्तु तब भी तब समृद्धि और कुछ भाषण से नहीं होगी या बोलने से नहीं होगी या लिखने से

नहीं होगी । किन्तु **यदि देश को सचमुच समृद्ध करना हो तो रीसर्च, संशोधन होने चाहिए और ऐसा हुआ है । पश्चिम के अनेक देशों में ये जापान, रशिया सभी देशों में जो समृद्धि हुई है, वह इन संशोधनों के कारण ही । वह मेरे मन को इतना सारा सच लग गया है । इससे भगवान की कृपा से ऐसे संशोधन के काम हो ऐसा सोचा है ।**

इस साल भी ऐसे पंद्रह लाख के सभी संशोधन के ही, रीसर्च के ही विषय के काम लिए हैं । इससे आप भाईओं को वहाँ सब हमारे भाईओं उनको मेरी विनती है कि अपने देश को हमें यदि समृद्ध बनाने में हिस्सा लेना हो । हम भी देश के एक नागरिक हैं और नागरिक के रूप में हमारा भी एक धर्म है । यह यदि आप सचमुच आपके हृदय से मानते हो तो ऐसे काम में मदद करना ।

अमेरिका से भी कई लोग कई विद्यार्थी भाई मुझे मदद करते हैं और जयरणछोड हैं वे तो मेरे भगवान के भक्त। हमारे डाकोर में रणछोडरायजी का बहुत बड़ा मंदिर । उसमें ये सेवक भी है । कोई दिन प्रसाद-ब्रसाद देते नहीं हंअ.... । किन्तु जयरणछोड वहाँ है, इससे मुझे आनंद है । कई बार जयरणछोड को मैं याद करता हूँ । क्योंकि नाम ही ऐसा है कि याद आये ही । याद आये ऐसा है । वहाँ बिराजे हैं । आप सब के बीच और हमारा संदेश वे सब को कहेंगे तो सही ।

और हमारे देश को समृद्ध होने के लिए ये जो हम से जो कुछ छोटा बड़ा कम ज्यादा यत्किंचित् जो भगवान की कृपा से काम होता है । **एक हिमालय पर्वत के आगे तिल जितना भी काम होता है, उसमें आप के हृदय की सहानुभूति, सहाय, शक्ति और ठोस मदद मिले ऐसी मेरी आप सब को प्रार्थना है ।**

● ● ●

श्रीमोटा : उसे हम जब प्रार्थना करे, तब बहुत मदद मिलती है । और ना करे तो भी । जैसे हमारा पुत्र हो, वह बीमार हो गया हो और जब हम प्रार्थना करते हैं । वह बीमार पड़ा हो । वह हमारे साथ नहीं रहता हो । किन्तु कॉलेज में रहता हो, हॉस्टेल में । किन्तु पता लगे तब

तुरत दौड़कर जाते है न ? उसने कहलवाया न हो फिर भी । कहलवाने वाला तो होना चाहिए । उस तरह तब सद्गुरु मदद करते हैं । सचमुच, तब उनकी मदद की जरूरत ।

इससे देवासुर संग्राम या बाहर के forces भी है । और वह हमारे पर असर करते हैं और अवरोध करने के लिए प्रयत्न भी करते हैं । इससे अवरोध करने का हेतु नहीं होता, किन्तु उदाहरण के लिए फूल खिले हुए हों, उसकी सुगंध अपने आप फैलती है न ? अपने आप । उसी तरह ये दो तत्त्व हैं । देव और असुर । वे सब सब के स्वभाव के अनुसार ही व्यवहार करते हैं । हम भी क्यों मान लें कि अवरोधकर्ता है । किन्तु हमारे में से कोई being, हमारे मनादिकरण का कोई तत्त्व इतना अभी शुद्ध हुआ होता नहीं है कि जिससे उसे वह पकड़ लेता है । उसे चूस लेता है । यह तत्त्व जो होता है न ! और बाहर के भी इस वातावरण में **इतनी सारी वृत्तियाँ हमें अभी यह आगे जाकर science सिद्ध भी करेगा । कि इस वातावरण में कितने सारे विचार हैं । कितनी सारी वृत्तियाँ हैं । यह मेरे हिसाब से तो सौ प्रतिशत सच है ।**

वह कई बार हमारे दिमाग पर कब्जा कर लेता है । किन्तु शुरूआत के समय में नहीं । आगे जाने पर । तब हमें ऐसा होता है आदमी को, जो श्रेयार्थी है वह हमेशा स्वयं का पृथक्करण करने वाला होना ही चाहिए । कि यह क्यों वृत्ति हुई ? ऐसी वृत्ति नहीं होनी चाहिए । वह tendency हुई तो विचार करे न ? ऐसी वृत्ति मुझे नहीं होनी चाहिए । इसलिए इस तरह मुश्किल ।

इससे तब वह या तो प्रार्थना करे । या तो दूसरा आसरा ले या तो भजन-कीर्तन में जाय । कारण कि जो हो उससे ऊर्ध्व की तरफ वह गति करे । या तो ध्यान करे । दूसरी रीत से practical ऐसा करे । बैठा न रहे । किन्तु वह..... वह अगली भूमिकाओं में ऐसे सब आते हैं ।

अनेक लोग तो ऐसा कहते हैं कि ऐसे सब हमले आते हैं, हमले आते नहीं । वह तो है ही वातावरण में । किन्तु उसके मनादिकरण में और उसकी भूमिकाओं में कहीं ऐसा कच्चापन होता है । वह सब

कच्चापन होने से उसे संग्रह कर लेता हैं । जैसे हमारे स्थूल शरीर का स्थूल चित्त वह द्वंद्व और गुण के संस्कार चूस लेता है । आप इच्छा करे या इच्छा ना करे उसका सवाल नहीं है । Inspite of yourself । जैसे हम श्वासोच्छ्वास लेते ही रहे । इसमें आपके साथ का संबध नहीं हैं । जीवन के साथ का संबंध है । उस तरह वह चूसा जाता है । संस्कार । उस तरह वह चूसा जाता है । और आता है ।

इस बारे में श्रेय साधक है सच्चा वह हमेशा पृथक्करण करता है । यह क्यों मुझे विचार आया ? आना ही नहीं चाहिए । मैं जो कक्षा में ... जो धारणा ..... कि यहाँ से मुझे स्टेशन जाना है कि उलटे रास्ते पर चले गये तो कि यह तो कोई रास्ता न हो कि इस आदमी को पूछकर आगे जाय । उस समय वह आदमी ज्यादा जागृत होता है । Alert होता है और alert होकर उसको निकाल देता है ।

वह मुझे एक बार हुआ ..... सही रीति **से तो कुदरत की कला और यह हेतु है उसमें । वह इस तरह आपको सामना करने का मौका दे दे कर आपमें उसका अभी सुषुप्त पड़ा हुआ आत्मिक बल उसे प्रगट करना है । यह तो बहुत बड़ी से बड़ी कुदरत की कृपा है कि आपको इस तरह सामना उसका करने का एक मौका देकर आपमें रहे हुए आत्मिक बल को वह प्रगट करता है ।** मैं तो इस तरह लेता रहता हूँ ।

वह वातावरण में है सही । देव और असुर दोनों तत्त्व हैं । अनेक प्रकार के विचार, वृत्तियाँ वह भी सब है । वह सब है सही । किन्तु जो सचमुच प्रयत्नशील है उसे आता है । सौ प्रतिशत सब किसीको यह सब शुद्ध हो गया होता नहीं किसीका । समर्पण किया करे । सब किया करे । तो भी । जैसे हमारा शरीर है । मन, बुद्धि, चित्त, प्राण तक चेतन उतर सकता है । किन्तु शरीर के अंदर नहीं उतर सकता है । शरीर के रोम-रोम में, अणु-अणु में, नस-नस में वह नहीं उतर सकता ।

• जल और पृथ्वीतत्त्व में चेतन का अवतरण नहीं होता •

वहाँ उसे अब जो सब लोग अन्य लोग कहते हैं, वैसा मैं नहीं कहता । अवरोध नहीं है । चेतन को अवरोध क्या ? मेरे में अक्ल है

या नहीं है ? चेतन को अवरोध क्या ? मैं नहीं कहता उसे। किन्तु उसके मनपसंद जहाँ.... नरक के लोंदे पड़े हो दो दो फीट ऊँचे और वहाँ बिठायें तो वहाँ आपको बैठने का मन होगा ? तो चेतन वहाँ किस तरह बैठेगा ! उसका अधिकार, भूमिका होनी चाहिए। कि शरीर के जल और पृथ्वी तत्त्व में नहीं है वह ।

क्योंकि .... उसका दूसरा भी कारण है। हम लोग बुद्धि से ज्यादा सोचते नहीं लोग। भगवान की कृपा से मुझे और आपको निमित्त है। कि जल और पृथ्वी तत्त्व वह भोग तत्त्व है। जल और पृथ्वी तत्त्व के सिवा कोई भी कुछ भोग नहीं सकोगे। Impossible। देव को भी मनुष्य योनि ही लेनी पड़े, भोगने के लिए ।

यह सब शास्त्र पुराण बोला करते हैं, वह गलत हैं। जल और पृथ्वी तत्त्व के सिवा कहीं कुछ भोग नहीं सकते। तब यह भोगयोनि है। जल और पृथ्वी तत्त्व वह भोग है। वे अनेक प्रकार के भोग भोगते हैं। एक प्रकार के नहीं। अनंतानंत वृत्तियाँ, अनंतानंत कर्म। वह सब भोगा हो वह भूमिका कैसी हो ?

तो आप चाहे जितनी भक्ति में ऊँचे हो, किन्तु जल और पृथ्वी तत्त्व दोनें में से खिसकना बहुत कठ़िन। क्योंकि उसे जो असर हुआ है। क्योंकि मूल ..... मूल धर्म कि आकाश का धर्म शब्द। कि उसमें से दूर हो ही नहीं। तेज का रूप दूर हो नहीं। जल में रस और पृथ्वी में से सुगंघ★। ये दो जेसै दूर ना हो उस तरह इस जल और पृथ्वी तत्त्व के कारण ही आप भोग सकते हो। उसका निर्माण पूरा ।

अब वह निर्माण से अलग होना चाहिए। या तो वह निर्माण बंद हो जाना चाहिए। इससे यह बहुत कठिन है। उसकी पूरी natural रचना है। उसका constitution है। वह नेचरल श्वासोच्छ्वास है कि अपना कुदरती निर्माण। अब वह बंद हो जाय या समाधि अवस्था हो जाय उस समय में कुछ समय समाधि रहे बराबर की शून्यावस्था की स्थिति में रहे।

★गंध। पू. मोटा के उच्चार में सुगंध शब्द होने से उपर वह शब्द है। सही में गंध या वास शब्द है।

• योग की भाषा में संयम •

या तो प्राणायाम में अमुक प्रकार का होता है । वह तो संयम की स्थिति में । संयम हम यह भाषा बोलते हैं, उसमें नहीं हंअ.... भाषा में संयम बोलते हैं वह नहीं । योग की भाषा का संयम ।

जिज्ञासु : निरोध जिसे कहते हैं ।

श्रीमोटा : हाँ । वह अलग संयम हं..... वह उसका अलग शब्द मुझे आता नहीं है । तब यह पूरा उसका यह श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया बंद हो जाय । पूरेपूरी । नाड़ी-बाड़ी भी चले नहीं । बिलकुल । वह एक ऐसी स्थिति हो तब । किन्तु उस स्थिति में आने पर ये आकाश, तेज और वायु में से.... पृथ्वी और जल जड़ है । क्योंकि inertia भी है उसमें । जल और पृथ्वी में बहुत inertia है और दूसरा भोग तत्त्व वाले । वह भोग तत्त्व वाले उसने अनेक भोगे । वह उसका स्वभाव ही वह । दूसरा स्वभाव ही नहीं । वही स्वभाव । इससे वहाँ आकर वह अटक गया । वह उतरता नहीं उसमें ।

अब उसका अर्थ कि नहीं निकलेगा ऐसा नहीं कह सकते । क्योंकि दूसरे पाँच तत्त्व वाले ऐसे हमारे मनुष्य हैं । अनेक हैं । वहाँ पर उतरे हुए हैं वैसे है ।

किन्तु मूल वस्तु ये विरोध करने वाले तत्त्व हैं । किन्तु प्रारंभ के समय में नहीं । प्रारंभ में तो आपकी मंदाग्नि है । यही मूल बात है । सचमुच आपको वह तीव्र अभिलाषा हुई ही नहीं । वर्ना आप तीव्र अभिलाषा- तीव्र अभिलाषा हुई हो तो एक साधन को पकड़ कर आप स्वयं ही परीक्षा कर लो । एक साधन को पकड़कर कितने समय तक आप टिक सकते हो । तो आप समझ लो आपकी लायकी है ।

• स्वार्थ की सभानता की तरह सद्‌गुरु की सभानता प्रत्येक कर्म में रखो •

और ये सब सद्‌गुरु की बात करते हैं, वह मेरे गले उतरती नहीं है । सद्‌गुरु की बात सच है । ठोस है । हवा की तरह ठोस है । तेज की तरह ठोस

है। हमारी हस्ती है, उससे भी ठोस है। किन्तु उसमें दिन में चौबीस घंटे। उन चौबीसो घंटे हमारा अभ्यास कहाँ है? .... आपको किसी भी ऐसे संयोगों में रहेगी, रहेगी और रहेगी। या चली जाती है ? बोलो आप। आपके संसार-व्यवहार में देखो आप।

जिज्ञासु : रहती है ।

श्रीमोटा : कि स्वार्थ की awareness आपको रहती है । किन्तु उतनी awareness आपके संसारव्यवहार में काम करते भगवान की रहती नहीं है । तो आप समझ लो कि अभी इसके लिए हमारी अभी पक्की भूमिका नहीं है । इसलिए अभ्यास अभी पक्का ज्यादा किया करो । कि दो घंटा रखो, तीन घंटा रखो, साढ़े तीन घंटा बढ़ाया करो । ऐसा करके बराबर उसका तो उसमें headlong कूद पड़ो ।

हाँ। उसका काम करे वह उत्तम है। हंअ..... हालाँकि मेरी ना नहीं है .... यह तो science है। जैसा जो हो वह सच बात करना। किन्तु वह उसे आप मन में जो रखो । उसका काम सब करो । उसका करते हो, किन्तु वह मन में उस समय हरपल जीवित ना हो कि किया हुआ काम अच्छा है । अब उसकी कद्र भी वह तब किया करे । किन्तु मन में वह जीवित होना चाहिए । और हो तो उत्तम है । वह फलदायी है ।

और वह **उसका काम जो करते हों, वह काम नहीं, किन्तु उसके स्मरण को अपने में जीवित जागृत चेतनात्मक रूप से रखने के लिए ये करते हैं ।** आपको समझ में आता है । इसमें ?

• सद्गुरु का स्मरण रखने के लिए उपाय •

जिज्ञासु : हाँ । बिलकुल सच बात है ।

श्रीमोटा : यह मेरे स्वयं के समर्थन के लिए नहीं कहता .... कहता हूँ । तो ऐसा करने वाले कितने ?

तो शुरूआत के समय में तो बिलकुल मनुष्य की मंदाग्नि । और मंदाग्नि को फिर मंदाग्नि हो उसका भी हर्ज नहीं । किन्तु उसका निर्णय करके कैसे भी मर जाय तो भले । कि खाऊँगा नहीं और पानी भी

नहीं । किन्तु ढ़ाई घंटा तो करना । पंद्रह दिन में पा घंटा जोड़ो । वैसा करते-करते आपकी वृत्ति को बढ़ा सकते हो । कि आपको उसमें आगे बढ़ना है । यह निश्चय पक्का चाहिए । और निश्चय को अमल में लाना पड़ेगा तो कहते हैं यह सब है ना । सब चलता है । कहीं कुछ अटकता नहीं है । हिमालय के जंगल में रहकर मैंने नहीं किया है । अभी मेरी बड़ी भाभी है .... और जवाबदारी वाले काम किये हैं ।

मेरे गुरुमहाराज कहे ये ठक्करबापा की प्रस्तावना ले । मैंने कहा, ठक्करबापा की प्रस्तावना लेकर क्या करना ?

भगवान के मार्ग पर जाता हो तो कर्म किस तरह से करना उस पर मैंने पत्र लिखे थे, हेमंतभाई को और नंदुभाई को । वे 'कर्मगाथा' बाद में लिखी । उन्होंने लिखा हो, वह मुझे आज उपयोग में आता है । वह लिखा है । मेरे बारे में लिखा है उन लोगों ने । परीक्षितलाल की ली थी रविशंकर महाराज ने । मैं तो .... मुझे खास मन नहीं होता । किन्तु उन लोगों के कहने से कि **मोटा** ऐसा काम करते थे । **तो काम का एतराज नहीं है । काम वह बाधारूप नहीं है । वह तो आपकी करने की ज्योत नहीं जली हुई है ।**

• नकारात्मक वृत्तियाँ उठे उस समय प्रार्थना, भजन, स्मरण करो •

जिज्ञासु : ऐसा सही है कि जिसे असद्‌वृत्ति के हमले कहते हैं, वे हमारी ही प्रकृति का कोई परिणाम हो सकता है ?

श्रीमोटा : नहीं । आगे जाते हुए ऐसा कुछ नहीं होता । आगे जाते उदाहरण के लिए चौदह भूमिका लें .... कोई वृत्ति आ गई तो उसका दोष नहीं । तो उसके चित्त में संस्कार पड़े या नहीं पड़े ? और ऐसी वृत्तियाँ होती हैं उसके सामने जागृत रह सके और उसे रोक सकूँ यानी कि उसे resist नहीं करना ।

उस समय जब वृत्तियाँ जागृत हो, तब या तो भजन में जाना, या तो स्मरण करना, या तो प्रार्थना करना, या तो ध्यान में जाना । उस तरह आगे बढ़ना । **उस समय आप उसको resist करोगे तो तो गलत**

बात । क्योंकि वह तो जितना resist किया आपने । क्योंकि वह तो प्रकृति का विषय है । संस्कार, वृत्तियाँ होना वह प्रकृति है । तब आप प्रकृति का सामना प्रकृति से करोगे तो नहीं चलेगा । उसका सामना करना हो तो उससे ऊर्ध्व पर चढ़ो । कि उस समय मैं प्रार्थना करूँ । भजन गाऊँ । ध्यान करना ऐसे साधन मैं करता और फिर प्रार्थना करता । तो फिर सहज हो । उसके साथ ..... कर दो । किसी भी तरह । इस जीवन की हमारी भूमिका पर ।

• *मोटा* के पैर मैं पड़ने वाले *मोटा* का काम करे तो सच्चा पैर में पड़े •

आप काम करो । काम करो । अच्छा काम करो आप साहब । आप इतना बोलते रहोगे वह नहीं चलेगा । मैं इसलिए कहता हूँ कि मेरा काम है, इसलिए नहीं हंअ । उदाहरण के लिए ये मेरे इन्दु★ के घर पर पूरा कमरा भर गया है । मेरा विचार है कि किताबें बिक जाय । **तो पैर में पड़ते हो और ये सब करते हो कि बेचना । मेरी मरजी सही । तो आपका भाव है ऐसा सिद्ध होगा । बाकी गलत बात । ये पैर में पड़ते हो वह गलत लगते हो । यह दंभ है एक प्रकार का । मैं sincerely ऐसा मानता हूँ ।**

आप यदि सचमुच कहते हो तो उसके लिए मान सम्मान हो और पैर में पड़ते हो तो इतना काम करो । किन्तु वह .... वह करते नहीं । किन्तु आप उसे यदि उसका लाभ लेना चाहते हो तो सक्रिय रूप से उसका काम करो । और काम करते समय उसकी सभानता रहनी चाहिए । और सभानता के समय उसका आपका जो हेतु हो वह भी साथ चाहिए ।

आपके संसारव्यवहार में कोई व्यक्ति है । बिलकुल खराब में खराब । जिसे देखना पसंद न हो ऐसा । उसके साथ स्वार्थ हो तो सब दूर कर देते हो या नहीं ?

★ श्री इन्द्रवदनभाई शेरदलाल, गुरुकृपा गेस्ट हाउस, टाउन हॉल के पीछे, एलिसब्रीज, अहमदाबाद-३८० ००६.

• *मोटा* का काम *मोटा* को स्वयं में जीवित करने के लिए करो •

क्योंकि आपका स्वार्थ predominant होता है । उस तरह इस में भी यदि हमें उसके पास से जीवन का उत्तम से उत्तम लाभ लेना है । जैसे-तैसा नहीं । **उत्तम से उत्तम लाभ यदि लेना हो तो वह लाभ लेने की sense को जीवित रखनी पड़ेगी । ऐसे ही नहीं चलेगा साहब । और उसे जीवित रखकर उस हेतु की सभानता रख कर... x, y, z की या उसके स्वरूप की या जो कुछ कल्पना हो आपके मन, बुद्धि, चित्त, प्राण के अंदर रहती हो वैसी सभानता रखो । और उसको मेरे में जीवित करने के लिए यह कर्म करता हूँ । नहीं कि *मोटा* को मदद करने के लिए और आप नहीं होंगे तो भी *मोटा* को मदद हो जाएगी ।**

अभी तक में लाखों के काम हुए हैं । कितने सारे पैसे मिले है न ! वे सब x, y, z ने ही मदद की है न ! वह तो हजार हाथवाला मालिक करेगा । और नहीं होगा उसका कोई हर्ज नहीं । ये करते हो, वह आपके स्वयं के स्वार्थ के लिए करते हो । आपके स्वयं के कल्याण के लिए करते हो । और उसे **मोटा** को इसके द्वारा मन में जीवित करना है .... जीवित जागृत भाव .... जैसा आपका तो आपको देखो ।

यह प्रयोगात्मक विषय है । आपने एक मणिनगर में मेरे लिए एक प्रार्थना लिखी थी । वह भाव भी सही है । सब कुछ अच्छा है । किन्तु एक बार मेरे में fancy आई, mood आया और आपने लिखा । यह नहीं चलेगा साहब ! यह कुछ मेरा गलत नहीं है । मेरा कहना सच है या नहीं ?

जिज्ञासु : सच । सच ।

• *मोटा* का काम *मोटा* की भावना जगाने के लिए करो •

श्रीमोटा : और गलत हो तो मुझे कहो । आप तो शास्त्र पढ़े हो ।

जिज्ञासु : हकीकत में यह टिकाये ही है । मुझे स्वयं prestige का ऐसा नहीं है । भाव को टिकाये रखने के लिए आखिर में मुझे वह

साधन लगता है । कई बार .... जैसे आप कहते हो और कुछ भी काम करें हालाँकि काम यह तो कुछ हम कोई गुरु का या ऐसा कुछ नहीं है । काम हमारे स्वयं के विकास के लिए करते हों तो कर देना चाहिए । कि कुछ हमें प्राप्त करना हो तो कुछ प्रयत्न तो करते ही रहना चाहिए न ?

श्रीमोटा : करना ही चाहिए ।

जिज्ञासु : फिर यह प्रयत्न इस भाव को टिकाये रखने का !

श्रीमोटा : साधन है । उस तरह किया । ऐसा कहता हूँ । आप कहते हो वैसा ही मैंने कहा कि काम सिर्फ काम के रूप में नहीं, किन्तु हमारे भाव को उसके संबंध के आकर्षण को जीवित–जागृत रखने के लिए ही है ।

जिज्ञासु : अब मानो की कोई व्यक्ति हो, और उसका काम करने की इच्छा रखें । तो उसका अर्थ यह कि उसके और हमारे बीच एक सद्‌भाव टिका रहे वह ही ....

श्रीमोटा : वही, वही, वही ख्याल में रखना चाहिए । वही मैंने कहा । वही कहा मैंने ।

जिज्ञासु : .... किन्तु उसमें भी मनुष्य की प्रकृति की मर्यादा होती है । कितनी सारी कि शायद उस मार्ग पर जाता नहीं है । स्वयं वह रख भी देता है । तो इस मार्ग में भी स्वयं की प्राकृतिक मर्यादाओं से मनुष्य इतना बँधा हुआ है कि उसकी sincerity हो, अभिप्सा भी हो, किन्तु वह लक्ष्य में बहुत आता हो ऐसा लगता है ?

श्रीमोटा : .... जब आपने गरज करके उसके संबंध की । उसके बारे की .... वह परिस्थिति आई । उस परिस्थिति को किस हेतु से ? किस समझ से आप स्वीकारते हो, उसके पर बड़ा आधार है और विचार तो सच में जाते ही नहीं रहते । शास्त्रसंमत विचार हम करें, उस तरह यदि उसे लें, स्वीकार करें, तो विचार जाते नहीं हैं ।

• गीता के श्लोक की समझ •

जिज्ञासु : यह आपने गीता में कहा ....

श्रीमोटा : .... विचार किस तरह होता है ? क्यों होता है ? उसके लिए मूल पर आना पड़ेगा हमें । यदि विचार जगाने वाली वस्तु हो तो भी वह किसे जगाती है और किसे नहीं जगाती वह फिर पृथक्करण करना पड़े हमें । हरएक को विचार नहीं जगाता है । चाहे जिसको नहीं जागेगा । अग्नि होती तो सब को गरमी लगेगी । ऐसा इसमें नहीं होगा । ऐसा विचार में नहीं होगा । सब को विचार नहीं जगायेगा । जिसमें उस प्रकार की वृत्ति है । अर्थात् एक प्रकार की भूमिका है, उसे वह शुरूआत कराता है । सिर्फ शुरूआत कराये किन्तु फिर उसे सक्रिय बनाओ किसी साधन द्वारा । तो वह सक्रिय होगा । सिर्फ आपको विकास कराने के लिए ही पैदा कराता उतना ही । तो विचार हुआ तो आपको जगा दे वैसा नहीं ।

कृष्ण भगवान ने अर्जुन को उपदेश .... उस समय पर अर्जुन कहते हैं कि **नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा ।** (गीता १८/७३) तो यहाँ पर *स्मृति* यानी कहते हैं Consciousness of the Divine । वह *स्मृति* आपकी स्मृति नहीं और मोह यानी की प्रकृति के संबंध में सर्व प्रकार की मनोवृत्ति हमारी लय हो जाय । भगवान की भक्ति में । **नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा** कि भगवान की स्मृति उसे होती है, तब **करिष्ये वचनं तव** (१८/७३) । तब वचन की शरणागति उस में आई । शरणागति जागे तब ये हो जाय । उसकी व्याख्या यह है । तो उसकी सभानता जागे बिना संसारव्यवहार में भी किसीके साथ हमें प्रेम हो जाय उसकी बात करता हूँ । हमें कुछ उसके लिए अच्छा भाव हो या तो हमारे लिए वह बहुत उपयोगी व्यक्ति हो । संसारव्यवहार में बहुत उपयोगी । तो ही उसका काम करते हैं हम साहब । वर्ना ना करो साहब ।

• भगवान के साथ संबंध बाँधने के लिए साधन करो •

उस तरह भगवान के लिए भी ऐसा ही है । वह यदि हमारा लग जाय .... किन्तु जब उसके सगपन का जब हमें पता लगे उसके उपयोग का । कितना बड़ा

उपयोगी है हमें ! और जीवन का सर्वस्व है अपना । वैसा इस गले में से बोलना वह नहीं, किन्तु reality यह । तत्त्व ही यह । ऐसा हमें लगे, तब साहब उसके साथ का– उसके साथ की बातचीत । आज ही एक भजन लिखा गया है ।

हरि के पदकमल की .... बादशाही अरे ! वह बादशाही भी सचमुच तुच्छ है, **उस** के पास । यह भक्त गा सकेगा । क्योंकि आपस में उसका मिलन हो गया है । सगपन हो गया है । उसके साथ । ऐसी उसके साथ की relationship जुड़ जाय और .... किन्तु वह तो कुछ ऐसे ही जुड़ नहीं जाएगी साहब ।

इससे कोई साधन करना और उस साधन को पकड़ कर लगातार उससे जुड़ा रहना । कुछ भी उपाय करके । मैंने Planning किया था, कि प्रतिदिन ढ़ाई घंटे लेना शुरूआत में । फिर प्रत्येक पंद्रह दिन में दस दस मिनट बढ़ाना । खाना भी नहीं और पीना भी नहीं । जिस दिन नहीं लिया गया, उस दिन खाना नहीं और चाय भी नहीं पीना ।

जिज्ञासु : स्मरण और भजन ।

श्रीमोटा : नहीं । स्मरण तो सही ही फिर भी ।

जिज्ञासु : स्मरण और भजन ।

श्रीमोटा : भजन भी किया करता था । किन्तु वह पसंद नहीं था । भजन पसंद नहीं था ।

• • •

श्रीमोटा : मेरे जीवन में अनेक प्रसंग दिखा सकूँ ऐसा है । खुले रूप से । गरीब मनुष्य को पैसे की तो बहुत ही तंगी होती है । आज मुझे तंगी पड़े तो कि यह मुँगफली माँगने के लिए तो अचानक कहाँ से माँगने लगे ? माँगने का नहीं । इस माता ने मुझे शुरूआत....... एक बार मुझे बीस रुपये रख दिये थे और तब मुझे जरूरत थी । आश्रम में से अमुक समय पर ऐसे ....

अब मुझे ऐसा हुआ कि मुझे आराम लेना है और मुझे रहना है कोडाईकेनाल । किसी आश्रम में । वहाँ आश्रम में आराम है मुझे कुंभकोणम में । वहाँ साहब, मच्छर बहुत । इससे मुझे नींद न आये रात को । अनिद्रा का रोग । ऐसा ही कहो न हम दूसरा तो बोल नहीं सकते । अनिद्रा का रोग इससे नींद न आये और मच्छर काटे । मजा नहीं आती मुझे । वह अनिद्रा का रोग और परेशानी ज्यादा ।

भई लालाजी, ले जा मुझे कोडाईकेनाल । कहा कि ले जाऊँगा । किन्तु मैंने कहा खर्च आपका नहीं । वह सेठ लोगों को ज्यादा पता लगे । किन्तु पचड़ा पड़ा था किसीका । अब उनको तो मालूम नहीं पड़ता । तो यह तो मैं ही पैसे खर्च करुँगा । किन्तु मुझे ले जाओ

....

.... पैसे खर्च करके मुझे ले जाते हैं । सात दिन के ग्यारह हजार रुपये । कोडाईकेनाल भगवान मुझे ले जाना चाहते थे, ले जाते हैं । तो मुझे पैसे चाहिए न ! कि आपको पाँच सात हजार मदद करुँगा । अब उसके दस–बार हजार रुपये कहाँ से लाऊँ ? कहाँ से लाकर देना ? आश्रम में से .... तो कि ऐसा आपको किस लिए करना ? अब यह तो मेरा प्रश्न है । निजी है साहब । और कोई माँगता हो वह मेरी लड़की को मैंने कहा हो, वह मालूम है, इससे देती है मुझे । वहाँ शंका रह जाती है । मेरे साले को करने दो न । वह तो करते ही रहेंगे । **किसीको छोड़ा नहीं है । कृष्ण भगवान को नहीं छोड़ा और किसीको छोड़े नहीं हैं । तो भले न बोला करने दो लोगों को । हम हमारे स्वयं पर दृढ़ रहें तो बस ।**

क्योंकि हमने कुछ रखा नहीं है । ये मेरे पैसे सब खर्च कर दिये । यदि उतने रखे होते तो मेरे पास तो तो खूब खर्च करूँ । चाहे जैसे खर्च करुँ । अभी तक खर्च नहीं किये हैं । कहा है ना भई, अनेक प्रकार से आप जगत में चाहे जितने सबूत दो, किन्तु वह किसीको भक्ति लगे बगैर आपको भक्ति लगे बगैर उसका कोई importance नहीं होगा । ये मुख्य बात कहता हूँ । भक्ति लगे तो ही उसकी आपको उसका

importance, उसका महत्त्व आपके दिल में उगेगा। उसके सिवा नहीं उगेगा। सौ प्रतिशत होगा तो भी। किन्तु मैं ऐसा नहीं कहूँगा।

• दूसरों के बारे में सोचना छोड़कर, स्वयं के बारे में सोचो •

भजन में लिखा है, 'अबे, हम कैसे हैं। आप क्यों फिक्र करते हो ? आप कैसे हो, उसकी फिक्र करो।''

हम कैसे हैं उसकी फिक्र लेकर क्यों आप घुमा करते हो ? आप कैसे हो यह तो विचार करो। तो कोई नहीं करता है विचार। मनुष्य दूसरों के बारे में ही विचार करता है। यदि मनुष्य विचार करे, मनुष्य यदि विचार करे तो स्वयं के बदले दूसरों के बारे में ही ज्यादा से ज्यादा विचार करता है। यदि मनुष्य विचार करे, पृथक्करण करके देखे तो स्वयं के बदले दूसरों के लिए ही ज्यादा से ज्यादा ही विचार करता होता है। तो नहीं काम चलेगा।

आपको इस मार्ग पर जाना है तो ये सब छोड़ना ही पड़ेगा। नहीं चलेगा। वह तो कहे नहीं है। तो मैं तो कहूँगा रहने दे भई। माथापच्ची मत करो। धीरे-धीरे अभ्यास करो। और यह वैराग्य ऐसे ही नहीं आता है।

• अभ्यास और वैराग्य •

अभ्यास और वैराग्य गीता में कहे सही। वैराग्य तो किसीको फूट निकलता है। प्रहल्लाद जैसे को, ध्रुव जैसे को। हमें मेरे आपके जैसे को नहीं आयेगा। अभ्यास का सातत्य हो तो वैराग्य फूटता है। वह भी मैंने लिखा है। अभ्यास की सातत्यता से वैराग्य फूटता है। किन्तु वैराग्य तहाँ तक नहीं आयेगा। यह सब मिथ्या है ऐसा नहीं साहब। वैराग्य यानी यह सब मिथ्या है ऐसा नहीं। किन्तु **वैराग्य का अर्थ मैं ऐसा कहता हूँ कि निष्काम, निर्मोह, निरहंकार। यह सब इकट्ठा करके एक समटोटल एक सूक्ष्म एनर्जी है।** उसमें निष्कामता, संपूर्ण निर्मोह, निर्लोभ, निरहंकार, निराग्रह ऐसा सभी इसमें इकट्ठा है। इन सब का

समटोटल एक सूक्ष्म में सूक्ष्म ऐसी जो *एनर्जी* वह वैराग्य । यह तो मेरी समझ । मैंने इस प्रकार तब यह तो उस प्रकार की वैराग्य की भावना तो तुरंत फूटे नहीं वह ।

जिज्ञासु : गीता में तो ऐसा कहा है कि अभ्यास करने से वैराग्य तो सिक्के का दूसरा पहलू है ।

श्रीमोटा : हाँ, ऐसा करते-करते हो जाय । वह करते-करते आता है । मैंने कहीं लिखा है सही ।

जिज्ञासु : लिखा है ।

श्रीमोटा : हाँ, जी ।

जिज्ञासु : .... कि भई, ये वैराग्य यानी अलग कुछ दूसरा नहीं है । किन्तु अभ्यास करते-करते ही यह सिक्के की दूसरी तरफ आपका वैराग्य धीरे से छप जाएगा ।

श्रीमोटा : छप जाएगा ।

जिज्ञासु : अब वह जो अभ्यास पर ही कहता है ।

श्रीमोटा : वैराग्य आये इससे भगवान में हमारा चित्त ज्यादा से ज्यादा जुड़ा हुआ हो तो जुड़ा हुआ रहे । ये जो सब गलत है ऐसा नहीं । ये सब मिथ्या है ऐसा नहीं ।

• सर्वारंभपरित्यागी का अर्थ •

जिज्ञासु : सर्वारंभपरित्यागी जो कहते हैं अर्थात् सर्वारंभपरित्यागी यानी किस तरह का त्याग ?

श्रीमोटा : यह जो उदाहरण के लिए हमने यहाँ काम कुछ किया हो तो हम संसारी आशा, इच्छा के बगैर शुरूआत होती नहीं । क्योंकि .... किन्तु उसे जो कर्म करने का है, वह कर्म और जो भक्त है, ज्ञानी है, योगी है, उसे तो भगवान के सिवा बात ही नहीं, कर्म में पलपल पर जीवित जागृत alert भगवान अग्रभाग में हैं । उसे कर्म अग्रभाग में नहीं है ।

जैसे हम हमारे गुरु की चेतना की भावना हमारे में जुड़ने के लिए कर्म है। हमारे लिए। उसी तरह उसको जो कर्म है, वह कर्म तो अनुभवी के निमित्त के कारण ही है। कर्म की कोई स्वतंत्र उसके मानस में कोई व्याख्या या समझ है नहीं। निमित्त के कारण– कर्म निमित्त के कारण ही है।

तो निमित्त वह आरंभ हुआ न ? ऐसा कोई कहेगा न ? 'निमित्त' वह भी आरंभ हुआ न ? तो हम उसके विज्ञान की साहब, बात करें।

कि realization जो stage है। वह realizationकी stage वह चेतन की stage है। और उसमें आदि नहीं और अंत भी नहीं। वह हमने जैसे कहा न भूमिति .... कि भूमिति है। उसे ऐसे सीधी लकीर। उसे breadth नहीं है। किन्तु हम बोलते है सही। किन्तु हमारे conception में।

जिज्ञासु : .... ऐसा कहा वह हम *एक्सीअम* के रूप में हम ले लेते हैं।

श्रीमोटा : हाँ। ऐसा होता है। यह तो कुछ .... भगवान की बाबत में उसे आदि नहीं और अंत भी नहीं। किन्तु हम जब ..... जब कुछ सोचने बैठें, तब हम स्वयं की प्रकृति हो उसी तरह सोचेगें न ! आदि अंत लाये बगैर हो ही नहीं।

तो उसका विचार करो। आपने जो गीता में लिखा कि उसे (अनुभवी को) कोई आरंभ नहीं है। अनारंभ है तो उसकी जो मानसिक स्थिति है उसका विचार करो। उस समय वह जो Divine Consciousness की स्थिति में है, उसे कोई आरंभ नहीं और अंत भी नहीं। इससे उसने ऐसा लिखा, तब निमित्त है। निमित्त उसका एक।

वह निमित्त का गुलाम भी नहीं साहब। अनुभवी पुरुष निमित्त का गुलाम नहीं। निमित्त में है तो सही वह। वह परिस्थिति का भी गुलाम नहीं, अनुभवी। किसी भी परिस्थिति का वह गुलाम नहीं है।

तो....... इससे उसका जब हम गीता ने कहा उसका विचार जो करें तब वह परिस्थिति चेतन का .... चेतन की psychology... हो ही नहीं । psychology की बात करना वह मूर्खता होगी । किन्तु यह तो हम *जीवदशा* में एक समझने की दृष्टि से कहते हैं कि उसे यह है। उस स्थिति में आरंभ भी नहीं और अंत भी नहीं कोई ।

इससे फिर उसे जिसे आरंभ ही नहीं है, उसे अंत कहाँ से हो ? सर्वारंभपरित्यागी । दिखता सही आरंभ करने वाला मनुष्य जगत में । किन्तु उसे कोई आरंभ नहीं उसे। क्योंकि उसे तो पूरा उसका मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, पल-पल एकतार सतत **उस**के साथ ही बँधे हुए हैं। उसकी (अनुभवी की) awareness (भगवान के बारे में) अखंड है। वह किसी काल में टूटे ही नहीं बिलकुल। जैसे अभी हमारा-हमारा जीवन है, किन्तु उसकी हमें awareness नहीं है। हम खाते हैं, पीते हैं, सब करते हैं, कामकाज करते हैं, पैसे कमाते हैं, घर-बार, बाल-बच्चे सब चलाते हैं, किन्तु वह जीवन के लिए। किन्तु उस जीवन की उसकी कोई awareness हमें है नहीं । एक भेड़चाल की तरह ज्ञान की बातें भले न सब करते हों । इसकी (जीवन की) किसी प्रकार की awareness नहीं होती है । जब कि उसको (अनुभवी को) ऐसा नहीं है ।

जिज्ञासु : निष्क्रिय होने का कोई .... नहीं वह ।

श्रीमोटा : नहीं ।

जिज्ञासु : .... जिस वस्तु का आरंभ ही न करना चाहिए इससे ।

श्रीमोटा : वह तो हो नहीं सकता । क्योंकि चेतन ही पल-पल सक्रिय है ।

• गीता के श्लोक का अर्थ •

जिज्ञासु : *मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पांडव ।* (१६/५)

अब चित्तशुद्धि के बगैर तो मोह, आसक्ति इत्यादि हो, वहाँ तक चित्तशुद्धि हुई नहीं कह सकते । अब .... तो सोलहवे अध्याय में श्रीकृष्ण ऐसा कहते हैं कि तू शोक मत कर । तू दैवी संपत्ति लेकर आया है । तो दैवी संपत्ति का अर्जुन को उस समय कहाँ से उदय हुआ ?

श्रीमोटा : उसका कारण है हम सब **जीव**दशा में हैं । ये जो श्रीकृष्ण भगवान .... संबंध में बात करते हैं, वह बात की है । हम सब **जीव**दशा में हों, उसमें भी कोई समय पर आप यदि विचार करो तो कितने सुंदर भावना के विचार हमें आते हैं ।

जिज्ञासु : हाँ..... हाँ...... हाँ......

श्रीमोटा : सुंदर । उस समय आप एकाग्र भी हो जाते हो । भले थोड़े पल हो । किन्तु वह पूरे जीवन में किसीको किसी समय शायद ऐसा हो सकता हो, किन्तु होता है । प्रत्येक के ।

जिज्ञासु : हाँ । हाँ । हाँ ।

श्रीमोटा : हरएक के जीवन में । और मूल हम देखें तो हम मूल में तो .... हैं । उसमें तो चेतन ही है । और क्यों ऐसे-ऐसे क्यों दिखते नहीं, यह दूसरा सवाल है फिर ।

जिज्ञासु : हाँ । वह दूसरा ।

श्रीमोटा : वह तो बाद में किन्तु मूल में तो एक ही है । यानी वह जो ये .... के लिए झंझट .... होने की जरूरत नहीं है भई । दैवी संपत्ति लेकर ही आया है इससे हम भी । हमें ही कहते हैं वह । भगवान हमें कहते हैं, कि इन सब में तू । इन सब में क्यों मोह हुआ ? इन सब में क्यों तू डूबा ? जान बूझकर ही क्यों तू स्वयं दुःखी होता है ?

॥ हरिःॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [७]

पू. श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

(१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत में जल्द सवेरे टहलने जाते उस समय की बातचीत ।

(२) उत्सव समय की पावन वाणी का एक अंश ।

(३) विद्यार्थिओं क पढ़ाते-पढ़ाते और गांधीबापु के साबरमती आश्रम में कार्यालय का काम करते-करते साधना चालू रखने की कला के बारे में जिज्ञासु साधक की प्रश्नोत्तरी ।

अनुवाद + संपादन :

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

॥ हरि:ॐ ॥

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सुरत-३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६८, २७७१०४९
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ मूल्य : ₹. ..../- (.... रूपये)

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम,
पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.

❑ अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी,
अवनिकापार्क सोसायटी, खानपुर,
अहमदाबाद-३८०००१.
फोन : (०७९) २५५०२६२३

❑ मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड,
कांकरीया रोड, अहमदाबाद-३८००२२.
फोन : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरि:ॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम आवृत्ति)

पू. श्रीमोटा कवचित् ही प्रवचन करते थे। उनकी पावन वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजनने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी। ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने अक्षरशः सुनकर उसकी हस्तप्रत अथाह परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यतः स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था। वे सभी पुस्तकों का पुनः प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्टने संभाल लिया है।

पू. श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिन गुजरातीभाषिओं को भी मिल सके, उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है। इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी। आपश्री कहते थे के 'मेरे लेखमें अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं। और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही रहने देना। इस आज्ञा को ध्यान में लेकर श्रीमोटा की यह ध्वनिमुद्रित वाणी आपश्री जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है। इस में कोई सुधार नहीं किया गया है।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुनः प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावालाने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरशः वाणी अनुसार है यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी के हेसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य चतुरंगी मुखपृष्ठ सहित श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक, प्रेमभाव से किया है। हम उनका खूब खूब आभार मानते हैं।

समाज का विशाल वर्ग पू. श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और पू. श्रीमोटा का आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं।

॥ हरि:ॐ ॥

दि. १४-१-२०१४ — **ट्रस्टीमंडल**

वि.सं. २०७०, उत्तरायण — हरि:ॐ आश्रम, सुरत

॥ हरि:ॐ ॥

• अनुक्रमणिका •

१. स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा सचमुच है ६
२. श्रीधूनीवाले दादाजी का प्रयोगात्मक प्रसंग ७
३. प्रेम का लक्षण : उमंग ७
४. सचमुच प्रेम के जीवन बारे में मृत्यु कभी नहीं है.......... ८
५. प्रेम के लक्षण : ज्ञान, सामर्थ्य और आनंद ९
६. शरीर होने पर भी अशरीरी ९
७. कराची में मिले ओलिया का अनुभव......................... १०
८. शरीर होने पर भी अशरीरीपन— उसके लक्षण............. १२
९. **मोटा** की चेतनाशक्ति के अनुभव १३
१०. यज्ञ करके पैसे प्राप्त नहीं करना १७
११. श्रीशांतिभाई को तमाकू का धंधा छोड़ देने की सलाह ... १७
१२. **मोटा** को आर्थिक जरूरियात के प्रसंगो में मिलती रहती गेबी सहाय १९
१३. ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम स्वयं है २१
१४. मिले हुए को हृदय-सटकर चाह-चाहकर दिल चाँपकर .. २२
१५. स्मरण का कितना बड़ा सचमुड क्या प्रताप ही वह ! ... २२
१६. शरीर का रोग मिटाने स्मरण लेते कराया है................ २३
१७. निरंतर के ही अभ्यास से बाद में वे माने हैं २४
१८. साक्षात्कारी व्यक्ति के लक्षण— शरीर की स्थिति से निर्लेपता, तटस्थता, समता... २४
१९. गंजेरी साधुओं के बीच में २५
२०. हरिपथ में ही लोटकर शरण **उस**का स्वीकार किया है.... २६

२१. श्रीरमाकांतभाई जोषी का अनुभव २६
२२. **मोटा** के खर्च से **मोटा** के जीवन के प्रसंग इकट्ठे करने श्रीधनसुखभाई को **मोटा** की टोक २७
२३. अनुभवी का प्रत्येक कार्य हेतुपूर्वक का होता है २९
२४. हरि की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है ३०
२५. कला, लीला हरि की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है ३०
२६. प्रेरणा अनुसार बरतते दुर्घटना में से बचाव ३१
२७. शिल्पकार श्रीकांतिभाई पटेल की कदर ३३
२८. मौलिक साहित्य के उत्कर्ष के लिए **मोटा** का दान ३३
२८. **मोटा** की शर्त— बिना दक्षिणा पधरावनी नहीं ३४
३०. योजना का कारभार संबंधी खर्च दान की रकम में से न हो ३५
३१. **मोटा** भगवान के मुनीम हैं ३६
३२ **मोटा** की आगाही— पैसे कलम के धक्के से चले जाएँगे .. ३६
३३. परमार्थ के लिए चरोतरी भाषा में **मोटा** की अपील ३८
३४. **मोटा** की दृष्टि— शिक्षण के बारे में — विद्यार्थी स्वयं सिखे ३९
३५. विद्यार्थिओं स्वयं का कार्यक्रम स्वयं ही प्रबंध करे ४२
३६. विद्यार्थिओं अपनी रुचि अनुसार दैनिक अभ्यास करे ४३
३७. हरिजन सेवक संघ के कार्यालय में काम करते-करते साधना ४५
३८. गरजमंद स्वार्थी बाबत में अपने-आप ध्यान रहता है ४६
३९. श्रीठक्करबापा और श्रीपरीक्षितलाल की प्रस्तावनाएँ **मोटा** के कर्मों की आरसी है ४८
४०. भक्ति की एकाग्रता गतिशील है ४९
४१. **मोटा** के भजन कर्म, ज्ञान और भक्ति का निचोड़ है... ४९

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [७]

पू. श्रीमोटा की ध्वनिमुद्रित पावन वाणी

(हरि:ॐ आश्रम, सुरत में पू. श्रीमोटा पधारते, तब प्रतिदिन जल्द सवेरे टहलने जाते । उस समय स्वजनों के साथ ध्वनिमुद्रित हुई बातचीत)

हरि:ॐ हरि:ॐ हरि:ॐ **(श्री चूनीभाई तमाकूवाला)**

श्रीमोटा : जीवन की मिजबानी है ।

स्मरण-सरिता **हरि** के जीवन की मिजबानी है,
तो किसे उसकी खबर पड़े? ..... मिजबानी है ।
मोटा को क्या ? **मोटा** गप हाँकते रहते बैठे बैठे ।

• स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा सचमुच है •

हरि की यादगीरी वह हृदय महोबत की लज्ज़त है,
हरि को दिल स्मरण कर-करके, कमाया क्या उस जीवन को !
स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा-सचमुच है,
स्मरण करने का कैसा जीवनधंधा हमारा है !
हरि को दिल में मानकर हृदय मनादि में स्मरण-स्मरण करके,
हरि को दिल जीवंत हमने कैसा किया हुआ है !
हरि बिना जीवन जीना कभी एक पल न बनता,
हरि वही हमारा है सही आधार मूल का ।
जीवन का सब कुछ हमने वह बेच डालकर,
पूरेपूरा ही बदले में हमने हरि को खरीदा है !
स्मरण हरि का चला करे, जीवन की खुशनसीबी वह ।

• श्रीधूनीवाले दादा का प्रयोगात्मक प्रसंग •

दूसरी बार मैं गया, तब बारह वर्ष के बाद एक साधु आये थे । उन्होंने कुछ कहा होगा । इतना-इतना कर के आओ । तू निष्काम होकर मेरे पास आना । इससे बाद में साधु तो आये । आये और पैर पड़े । फिर क्यों आ गया भई ? तो कि हाँ । काम पूरा हो गया ? काम पूरो हो गया । तो कि सौ का सौ प्रतिशत ? तो सौ का सौ प्रतिशत । तो कि पूरेपूरा निष्काम ? तो कि बात नहीं । अब फिर महाराज ने तो कहा कि कदाचित् देखना हंअ..... तू कच्चा है । अरे ! क्या बापजी ? बिलकुल कच्चा नहीं ।

हमेशा वहाँ २५०-३०० व्यक्ति आते । महाराज के पास । मेरे गुरुमहाराज के पास । फिर एक मोड़ी मोड़ी यानी कि लड़की । उसको उठाया वहाँ से । कि तू यहाँ आ जा । चबूतरे पर बैठते वह भी टूटा हुआ । उपर भी कुछ नहीं छप्पर । टूटा हुआ छप्पर । गाँव से दूर और पास में धूनी तपती । तो बुलाई मोड़ी । मोड़ी यानी एक लड़की । यहाँ आ, तू ये सब कपडे निकाल दे तेरे और यहाँ सो जा । और लड़की कपड़े निकाल कर सो गई । मैं तो तब गजब का ऐसा हो गया कि धन्यवाद है इसे । इस महिला को । ऐसे तो इस महिला की आत्मा को धन्यवाद है । उसको कहा कि तू यहाँ आ । यहाँ सो जा साला, देखें अब तू । हिम्मत नहीं हुई उसकी तो । उस-उस महात्मा की । उनकी हिम्मत नहीं हुई । कहा कि साला, अभी तेरा बहुत कच्चा है ।

इससे मेरे गुरुमहाराज की तो प्रयोग की ही बात । मान लेने की बात नहीं । प्रत्यक्ष । अनुभव से और प्रयोग से ही सच बात ।

• प्रेम का लक्षण– उमंग •

उमंग प्रेम का कैसा उछलते प्रपात जैसा,
भयंकर पूर के जैसा सचमुच प्रेम का है क्या !

हृदय के प्रेम का सच्चा व्यक्त लक्षण उमंग है ।

(मेरे बेटे, कौन करते हैं ? ऐसे ये सब भूतवाला-बूतवाला व्यर्थ)

हृदय के प्रेम का स्पर्श उमंग से क्या पता लगे !
जो कुछ बिना उमंग का न वह प्रेम सच्चा है ।
हृदय के प्रेम की उष्मा उमंग से नापते,
परम्परा जैसी कोई किसी रीति प्रेम में है नहीं ।

समझ आयी भई ? Mechanical way है नहीं इसमें कोई ।

नवल, मौलिक, नूतन, पलपल अनुपम प्रेम नौतम है,
मुहब्बत प्रेम की लज्जत उमंग में रही है !

यह उमंग का अर्थ लज्जत से, उमंग प्रेम का गंगा जैसा जीवन उजालता है । प्रेम का उमंग गंगा के समान जीवन को उजाल देता है ।

साहब, जो कुछ सब ये लोग जानते ? मेरे बेटे, व्यर्थ ले बैठे हैं ।

श्रीमोटा : आपकी दासी है ये कुछ ?

एक भक्त : नहीं ......

• सचमुच प्रेम के जीवन बारे में मृत्यु कभी नहीं है •

प्रभु की भावना का जीवन जीने हृदय मुझ को,
तलप लगी थी गहरी जो, जिसने मुझे मथाया है ।
बस एक की एक ही हृदय लगी धुनने जो,
***हरि** की भावना में क्या सतत **उस**ने टिकाया है ।*
जरा सी खंडित होते कैसी हृदय मैं धड़क गहरी
सचमुच तीव्र लगी थी, कृपा से इससे सावधान हुआ ।
*हृदय सावधानी ऐसीसे, **हरि** की भावना बारे में,*
पिरोते लगातार हृदय का प्रेम जागा है ।
सचमुच प्रेम के जीवन बारे में मृत्यु कभी नहीं है ।
चिरंजीव, नवजीवन, नौतम खिलता प्रेम में नित्य है ।

• प्रेम के लक्षण– ज्ञान, सामर्थ्य और आनंद •

सभी को जोड़कर परस्पर में परस्पर से,
समग्र सर्व जीवन को, कराता एक वह दिल से ।
नूतन भाव नित्य, नित्य क्या स्फुरते रहते जीवन बारे में !
क्या इससे जीने जैसा जीवन लगे मधुरा जो ।
हृदय के प्रेम से ज्ञान, अतुल सामर्थ्य, आनंद,
प्रगट होते हैं जीवन कैसे ! जिससे होता जीवन सार्थक ।

हृदय का प्रेम मिले तो उसका यह लक्षण सही कि ज्ञान, अतुल सामर्थ्य और आनंद प्रगट होते हैं । तब सही । ज्यों का त्यों नहीं । मेरा बेटा । प्रेम-बेम कहते हैं तो यह होना चाहिए ।

हृदय के प्रेम से ज्ञान, अतुल सामर्थ्य जो सामर्थ्य की तुलना न हो सके और आनंद । ये जीवन में जब प्रगट हो, तब जीवन भी सार्थक हो जाय हमारा । और जीवन के प्रेम बारे में कोई दिन मृत्यु नहीं है । बस, उसमें तो क्या है कि चिरंजीव । हमेशा टिके ऐसा नवजीवन, नौतम ऐसा खिलंता प्रेम में नित्य और वह फिर कैसा ? सदा ही खिलता रहता ।

सभी को जोड़कर परस्पर में परस्पर से,
समग्र सर्व जीवन को, कराता एक वह दिल से ।
नूतन भाव नित्य नित्य क्या स्फुरते रहते जीवन बारे में !
क्या इससे जीने जैसा जीवन लगे मधुरा जो ।

• शरीर होने पर भी अशरीरी •

शरीर का अनुभव होता है इसके द्वारा । शरीर में ऐसे रोग होने पर भी, शरीर होने पर भी अशरीरी हैं । ऐसे अनुभव के प्रयोगात्मक अनुभव हैं । किन्तु यह किसीको नहीं कह सकते । शांतिभाई ।

क्योंकि पूरी पकड़ में ही न आये न ! बिल्कुल न पकड़ सके । मानो कि मुझे और किसीका संबंध हुआ । कुछ ऐसा निमित्त जागा

और कोई स्त्री साथ के मुझे बालक भाव है। वह कोई मानेगा नहीं, किन्तु उसे साबित करके दिखा सके दूध चोखकर ही। प्रत्यक्ष दिखाकर। एक की हाजरी में नहीं। वे दौ और उसके रिश्तेदार जो कोई उसकी उपस्थिति में प्रत्यक्ष करके दिखाये हम तो भी वे माने नहीं।

... अबे किन्तु देख यह स्तन में से निकलता है। देख ले तू। उसे दिखाऊँ उसे। यह देख स्तन में से निकलता है ! देख यह। अंतरिक्ष में से नहीं आता। देख तू अपने स्वयं देख। उसे भी दिखाऊँ। किन्तु वह भाव टिकता नहीं बाद में कुछ। क्योंकि अंदर उसके भूमिका न हो तो कहाँ से टिके ? और **यह** शरीर है, वह ७६ वर्ष का हुआ हो, वह छोटे बालक जैसा। किन्तु वह किसीकी कल्पना में नहीं आ सकता।

• कराची में मिले ओलिया का अनुभव •

वह इसलिए कि हमारे अनुभविओंने कहा था कि ये परमहंस चार प्रकार के। एक पिशाच जैसा वर्तन करे। वह क्यों ऐसा करे ? कि उसका कारण उसके पास है। आपके पास नहीं है। छोटे बालक हो, वे लस्टम-पस्टम वर्तन नहीं करते ? तब पिशाच जैसा वर्तन करे। एक तो हंसवत्, पिशाचवत्, बालवत् और जड़वत्। पत्थर जैसे पड़े रहते। कुछ किसी से संबंध नहीं।

मैंने ऐसे देखे थे, हंअ..... पत्थर जैसे पड़े रहते। जड़ जैसे। कराची में था और ४० दिन के उपवास किये थे। शांतिभाई साढ़े अड़तीस दिन हुए और रात में गोदडिया महाराज आये। मैं तो पैर पड़ा। साष्टांत दंडवत् प्रणाम किये बाद मैंने कहा बहुत पधारे। कृपा की। तो कहा, अब तुझे यह सब उपवास-बुपवास करने की आवश्यकता ? व्यर्थ...... अब तुझे यह सब करने की जरूर नहीं। तू अब खा ले तब मेरे प्रत्यक्ष। कि जैसा आपका हुक्म तब जीमूँगा। जीम लूँ।

इतने में वे तो चले गये। अदृश्य हो गये। इतने में तो उठकर मैं गया रसोईघर में। वे लोग का बड़ा बंगला। कराची में समुद्र किनारे रहते

थे । तो वहाँ जाकर मैं तो रसोईघर में यह गैस का था । उसे जलाकर मैंने चाय की । चाय करके उस प्याला को लेकर डाइनींग टैबल पर आकर कुरसी पर आकर बैठा । फिर से मुख धोकर आया और रकाबी में डालकर जहाँ ऐसे सीप लगाने जाता हूँ तहाँ कि अभी साला एक दिन तो पूरा । अब एक ही दिन बाकी रहा है, तब एक दिन बाकी रहने के लिए अब महाराजने हुक्म तो किया ! तो मैंने चाय बनाई । यह जरा मैंने ली । एक सीप ली सही । मैंने उसका हुक्म पालन किया सही । अब वह एक सीप लिया है । वह सब पूरा हुआ । पूरा हो गया कह सकते । अब बाकी का है, वह अब एक दिन निकाल दूँगा । ऐसा सोचकर उस जाय को उड़ेल दिया । आकर सो गया रात में ।

सवेरे उठकर मेरे बापु को सब बात की । वे मेनेजर थे । सिंधिया स्टीम नेवीगेशन में । तो कहा अब वह भी ठीक । जैसा लगा ऐसा । तेरे बारे में भी मुझसे कुछ कहा नहीं जाता । अच्छा । और दूसरे दिन सवेरे उनकी..... घूमते करते रहता मैं । उपवास थे । किन्तु बाद में मैं तो गया उनके साथ मोटर में । वहाँ चार रस्ते पर एक मैलाबावरा साधु– ओलिया, बाल बड़े फिर उसके, फटा हुआ कंबल, एकदम मोटर के बीच खड़ा रहा । उसने कहा, 'उतर जा' । इससे मैं तो उतरा । इससे मुझे बापु ने कहा कि चूनीलाल, तुम्हें तो बिलकुल अक्ल नहीं है । मैंने कहा, 'आपकी कही बात सच ।' किन्तु अब कोई भी आदमी कहे और तू उतर जाय । मैंने कहा, 'मुझे तो उतर जाना पड़ेगा । मेरे हृदय में भी ऐसा ही भाव जागता है । उमंग ।' अच्छा । उतर गया । फिर वे उतरे । मैंने कहा, आप जाईये । ऑफिस में समय हो जाएगा । तो कि नहीं । मैं बेकार छोड़कर नहीं जाऊँगा । तू फिर चला जाएगा तो । ऐसे साधु । फिर तुम्हें कोई ले जाय । उसे मेरे पर प्रेम बहुत । वे तो उतर गये ।

बाद में मुझे उस साधु ने कहा, 'साला, अभी तक तेरेकु संकल्प का गुमान है ? संकल्प का अभी भी गुमान तेरेकु ? ले । दो पुड़े तैयार रखे थे । खा ले कहा । कहाँ मैं वहाँ से दस मील दूर समुद्र किनारे रहने वाला

यह फूटपाथ पर पड़ा हुआ ओलिया । जड़ जैसा । कितने समय का मैं देखता । उसे कुछ भी लेना-देना नहीं । बस, पड़ा ही रहा हो । बस ऐसा ही—ऐसा ही । कहाँ कहाँ यह आदमी और मुझे उस (गोदडिया महाराज) के साथ की हुई बातचीत । मैंने कहा, 'प्रभु यह मैंने चाय ली इससे मैंने जाना कि मैंने पूरा किया । कि एक ही दिन बाकी था ।' तो मैंने कहा, 'मैंने नहीं खाया । आप कहो वह बात सच ।' तो खा लिया । वहाँ का वहाँ । खड़े खड़े ।

इतने सब दिन के उपवास थे, तो भी जो आया, वह सब खा गये थे । अब नहीं करुं ऐसा हंअ.... वह खा लेने की बात अलग थी । हमारे वे करते थे हंअ...... आपको याद हो तो । ये गांधीजी के साथ रहते थे । प्रोफेसर थे । भणशालीजी । कितने सारे उपवास किये थे ? बहनों का जब लश्करी लोगों ने ..... वह किया था । तब उसने । वहाँ फिर चलकर जाते, फिर उसे उठाकर ये लोग ले जाकर वहाँ वर्धा छोड़ आते । और वहाँ बाद में जो मिले वह खाते थे । कुछ ऐसा गाँधीजी की तरह रखा न था उन्होंने । और कितनी बार । नहीं ..... तब तो खाते भी नहीं । उपवास किये थे ।

पहली बार खाया जब मुन्शी को उसके या सरकार ने उसे जमानत दी कि हम जाँच-पड़ताल करेंगे और योग्य लगे वह करेंगे तब ।

शांतिभाई : यह तो **मोटा** .... उसका था ।

श्रीमोटा : जाहिर कराया था ।

• शरीर होने पर भी अशरीरीपन— उसके लक्षण •

श्रीमोटा : वे शरीर होने पर भी अशरीरी है । क्योंकि आकाशतत्त्व में फैले हुए होने से वे कहीं भी जा सकते हैं । शरीर होने पर भी अशरीरी । सारी.... इससे ये मुझे इतने सारे दर्द हैं । वेदना भयंकर है । फिर भी इस तरह रह सकता हूँ । वह अशरीरीपन का यह प्रयोग है । प्रयोगात्मक अनुभव है यह । गले बात नहीं उतरेगी ।

कि मेरे में निष्कामभाव है । वासना नहीं है । कब कि संपूर्ण वासना की स्थिति में ऐसे निमित्त के कारण आ गये, तब हमें समझ पड़े न ! अन्यथा ज्यों का त्यों आप किस तरह समझ सको ? कि नहीं ही है । ऐसा कहने से कुछ चलता है ? यह तो प्रयोगात्मक स्थिति ऐसी कोई एक कारण से प्रगट हो । उसके अंदर आप हो । और तब आपको पूर्णरूप से निष्काम हो ऐसा आपको भी लगे और दूसरों को भी प्रत्यक्षरूप से आपके द्वारा दिखा सको । ऐसा नहीं कि नहीं । तब सही ।

ये तो सब निकल पड़े हैं । दूसरे सब तो लोग । वे तो ऐसा ही कहते फिर इसमें तो प्रयोग कैसा ? अनुभव में प्रयोग क्या ? ऐसा ही कहते हैं । ये साधु, संन्यासी और दूसरे सब आदमी जो हैं न वे कोई दिन ऐसा नहीं कहते । हमारे तो गुरुमहाराज कहते, साला......... प्रयोग क्यों नहीं ? एक व्यक्ति करोड़ाधिपति हुआ । तो करोड़ का उसे मद होता है या नहीं ? उसे उसकी सत्ता होती है या नहीं ? उसे उसका आनंद होता है या नहीं ? तब वह आपको अनुभव हुआ हो तो उसका कैफ आपके जीवन में दिखे बिना रहता है ? वह क्यों ......

कोई रास्ते में जानेवाला : हरि:ॐ ।

श्रीमोटा : हरि:ॐ भई ।

श्रीमोटा : तीन एकसाथ फूटते हैं उसमें । ज्ञान, आनंद और सामर्थ्य ।

हमारा श्वास कहते हैं कि जरा देर अटक जाय, अगर बंद हो जाय तो मृत्यु । फिर भी हमें उसकी awareness–उसकी सभानता नहीं है । जाग्रति नहीं है । जब उसको जाग्रति है ।

• मोटा की चेतनाशक्ति के अनुभव •

... उसके बेटे की बहु अंधी हो गई थी । मेनिन्जाइटिस में । क्या ? बिलकुल अंधी । वह भी हुई है देखती ।

श्रीशांतिभाई : कहते हैं कि उस लवाछा वाला लड़का का भी ऐसा।

श्रीमोटा : हाँ। लवाछा वाला लड़का का देखो न।

श्रीशांतिभाई : और **मोटा** नडियाद का फिर नडियाद में वह एक लड़की मैं था उस समय पर ....

श्रीमोटा : रमण, रमण तमाकू वाला। वह भगवान का नाम कितना लेता था ? क्लोरोफार्म दिया था, तब भी नाम चलता था और सतत बोला करता था। वह कुछ वह बोलता था ? भई ! देखो कितने उदाहरण हैं ? भई धनसुख।

श्रीधनसुखभाई : हाँ।

श्रीमोटा : तुम्हें जरा प्राप्त करना। इकट्ठे कर तू। कोई एक ऐसा निकलना चाहिए। बायोग्राफी और भविष्य में हो। कोई ऐसा है नहीं हमारे में। ऐसा कोई निकला नहीं आदमी। जो ऐसा सब उदाहरण इकट्ठे तो करके रखे।

श्रीमोटा : चूनी..... हाजिर रहा हूँ। चूनीभाई हाँ हंअ...... शांतिभाई। यह चूनी चूनी को ऑपरेशन किया, तब कितनी बार हाजिर रहा हूँ वहाँ।

वेदना बारे में हरि की सभानता होनी टिकनी अशक्य

वह हकीकत है।

कि ऐसी सतत वेदना के समय में भगवान की awareness उसकी भावना टिक सके वह अशक्य बात है। यह तो सब को बुद्धिपूर्वक जो लगा वह कह दिया इस लेखक ने।

बाद में कहता है कि भई बात आपकी कही सच यार। बुद्धि को और बुद्धि को फिर कहता है यह।

जीवन में कितनी बार अशक्य बिलकुल जो लगे,
कृपाबल के सहारे तो होता वह शक्य लगता है।

भगवान की कृपा से यह शक्य हो जाता है। अशक्य वह शक्य हो जाता है। किन्तु भाई ऐसे आप उड़ा दो वह ठीक ठोस पाया पर बात

करो । ऐसे आप कृपा होने की बात करते हो । तो ठोस पाया की बात करो । इससे पाया की बात करता है कि—

जीवन में आग जैसी तमन्ना ने मथाकर
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है !

इससे ठोसपन पर आता है वापस । कि भई ऐसी आग जैसी तमन्ना जागी है । उसने मथाकर प्रबल और भगीरथ पुरुषार्थ कराया है । तो कि यह इससे क्या ? इससे कुछ हरि की सभानता आगे टिकती ? कहता है बाद में—

सतत अभ्यास वैसे से । सतत यानी continuous उसमें break नहीं है ।

सतत अभ्यास वैसे से जीवंत एकसी वह,
हृदय में अखंडित धारणा हृदय में क्या बन गई है !

इससे उसके साथ अब पूरा भजन पढ़े तो उसे बिलकुल ऐसा न लगे । मुझे ऐसा लगे कि गप मारा है ऐसा लगे ही नहीं । किसी को भी । और बहुत कठिन बात है साहब वह । तो फिर से बोलूँ देखो ।

जीवन में क्रोस की तीव्र सतत उस वेदना बारे में,
हरि की सभानता होनी अशक्य वह हकीकत है ।

हरि की सभानता टिकनी

ऐसा कह दिया । यह तो अशक्य ही है । किन्तु फिर कहता है—

जीवन में कितनी बार/बात अशक्य बिलकुल जो लगे,
कृपाबल के सहारे तो होता वह शक्य लगता ।

भई, ऐसे आप गप मारो वह नहीं चलेगा । यहाँ हमें तो ठोस सबूत चाहिए । तो कि सबूत कहता है—

जीवन में आग जैसी तमन्ना ने मथाकर,
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है ।

यह तो मेरे जीवन की हकीकत है और हिमालय की गुफा में से कोई साधु आकर गप लगाता हो तो आपको साबिती मिलने की कोई शक्यता ही नहीं रहती । उसे आप कहाँ सबूत लेने जाओगे ? मेरे जीवन में तो आज सभी व्यक्ति जीवित हैं । यह सब कहा उसकी साबितियाँ हैं । मिल सके ऐसी है शांतिभाई बात । दूसरे कोई साधु की मिल सके नहीं आपको । हंअ...... वह हकीकत की बात है यह । तब कहा भाई ठोस पाया की बात कहता है .....

जीवन में आग जैसी तमन्ना ने मथाकर,
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है !
सतत अभ्यास वैसे से जीवंत एकसी वह,
हृदय में अखंडित धारणा हृदय में क्या बन गई है !

सुंदर लिखा गया भगवान की कृपा से ।

यह तो हकीकत की बनी हुई बात है । और ऐसा नहीं कि । उस भाई तो मुझे पहले **मोटा** को कि आप कहो वह करो । वह सही किन्तु अब इसमें इतनी सब पुस्तकें रखेंगे कहाँ? हमारे आश्रम में जगह नहीं है । और कितनी अलमारी बनायेंगे ? और यह तो बहुत कठिन हो जाएगा मैंने कहा, 'अपनी मुश्किल की बात मत करो । वह तो सब वह हमारे इन्दु का (श्री इन्द्रवदन शेरदलाल, गुरुकृपा गेस्ट हाउस, टाउन हॉल के पीछे, एलिसब्रीज, अहमदाबाद-३८०००६) बड़ा, कमरा बड़ा ।

श्रीशांतिभाई : जबरदस्त बड़ा ।

श्रीमोटा : सब भर गया है । **मोटा** और लाईये । भले छपाना बंद मत करना । इतना किराये से लेने जाऊँ तो आज तीन सौ रुपये महीना का ले । यह अहमदाबाद में हंअ..... किन्तु सब संभालता है, करता है, बिक्री करता है सब । मेहनत वह करता है बेचारा । अखंड मेहनत करता है । कितनी सारी .... सरलता भगवान मुझे देते हैं ।

• यज्ञ करके पैसे प्राप्त नहीं करना •

नटवरलाल चीनाई के साथ पहले आते थे न प्रति वर्ष में ? कि **मोटा** आपको लाख रुपये कर दें। मैंने कहा, 'बहुत अच्छा भई साहब। मुझे बहुत जरूरत है।' किन्तु आपको यज्ञ। मैंने कहा, 'रहने दो।' सभी व्यवस्था मुझे करने की। एक पैसा आपको खर्च नहीं करना। और आपके नाम से सब मैं छपवाऊँगा– करेगा। सभी व्यवस्था हमारी और लाख रुपये नगद इस यज्ञ में से आपको दिला देना। मैंने कहा, 'मुझे इस प्रकार पैसे प्राप्त नहीं करना भाई।' और सचमुच sincerely कहता था वह आदमी। कि हमने ऐसे सब किये हैं। वे गंगेश्वरानंद महाराज सही न ? प्रज्ञाचक्षु है। मैंने ऐसे यज्ञ किये हैं। उसकी व्यवस्था की है। Propaganda जानता हूँ। सब करुँगा आपका। आपको कुछ तकलीफ। लाख रुपये लेने की तकलीफ। मैंने कहा, 'मुझे नहीं चाहिए। लाख क्या। पाँच लाख तू दे तब भी मुझे उस रीति से पैसे नहीं चाहिए।

मैंने अभी मेरे जीवन में आचरण किया है भई

परम्परा जैसी कोई कुछ रीति प्रेम में नहीं है।

सतत वेदना के बारे में भगवान का awareness of the Lord भगवान की सभानता होनी वह कुछ शक्य नहीं बनता।

• शांतिभाई को तमाकू का धंधा छोड़ देने की सलाह •

श्रीमोटा : भीखुकाका के कारण। वह भीखुकाका के कारण आप सब के साथ संबंध। उनकी बैठक आप सब के वहाँ। तब हमारी जरा स्थिति थोड़े समय पीछे जरा गरम-नरम। तब मैंने भीखुकाका को कहा हुआ था और यह चूनी हो या तू हो या शांतिभाई हो। मैंने कहा, 'भई, यह तो नरम-गरम तो सब की रहा करे। फिर हम तेज हो जायेंगे .... हमारी अभी ज्यादा अच्छी तेज स्थिति हमारी होगी। मुझे तो ऐसी श्रद्धा है। उस समय कहा हुआ था, वह बराबर याद है। किन्तु वह मात्र वह

बोला नहीं, किन्तु मेरा भाव ऐसा ही ऐसा रहता और उसके लिए प्रार्थना भी की थी ।

कोई भक्त★ : मुझे पता नहीं । किन्तु ऐसा तो कहा था आपने ।

श्रीमोटा : ना । इससे तूने कहा इससे मुझे यह याद आया । पुरानी बात क्योंकि पहले तो ऐसी बात कहता नहीं । खुली करके नहीं कहता । किन्तु अब यह शरीर छूटने का होगा तो कह दो न यार । मुश्किल होन ।

श्रीचंपकभाई भूतवाला : हम यहाँ आश्रम आने निकले थे । पुल पर चलते थे । तब आपने ऐसा कहा था शांतिभाई को । शांतिभाई, आप दूसरा कोई भी धंधा । तमाकू के धंधे में आपको । दूसरा कोई भी धंधा करो तो भगवान आपको मदद करेंगे ।

श्रीमोटा : हाँ । मैंने कहा था उनको । चौकस । तमाकू का धंधा छोड़ दो । मैंने कहा ।

भयंकर वेदना तीव्र असह्य सहन करने लगती जो,
जीवन के क्रोस की भव्य प्रसादी वह मिली है ।
***हरि** कोई दूत तेरे से चमत्कारिक शांति जो,*
शरीर प्रेरित करके मुझको अनुपम प्राण देता है ।
शरीर प्रेरित करके कैसी हृदय में ताजगी दे !
जाती पल एक ना कोई सचमुच वेदना बिना ।
*मह्द अचरज टिके उसमें **हरि** की सभानता दिल में ।*

कहता है कि जाती पल एक ना कोई सचमुच वेदना बिना । एक पल वेदना बिना जाती नहीं कहता है । किन्तु उसमें अचरज है कि महद् अचरज ।

रहने देना प्रभु, लिखना नहीं हंअ.... यह तो है न । इसमें देखकर लिखेंगे । ज्यों का त्यों रख दो ।

*महद अचरज टिके उसमें **हरि** की सभानता दिल में ।*

★ श्रीचंपकभाई भूतवाला

टिके ना इतना मात्र,

इतना पर्याप्त नहीं है ।

टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन ।

अब ऐसी वेदना में,

टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन ।

दशा वेदनाग्रस्त बारे में वह क्या होता व्यक्त ।

यहाँ सर्जन व्यक्त होता है । ऐसी वेदनाग्रस्त दशा बारे में भी ।

टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन

दशा वह वेदनाग्रस्त बारे में वे क्या होते व्यक्त !

जीवन के सत-असत बारे में जगत के सुख-दुःख बीच में

जीवंत एकसा क्या बहता प्रेम प्रत्यक्ष ।

कहता है जीवन के सत-असत के बारे में और जगत के सुख-दुःख के बीच में भी ऐसा जीवंत एकसा क्या बहता प्रेम प्रत्यक्ष ।

बंद कर देना बहन हंअ......

कृपा से भेज दी .... आता है । वह बोला था तो मैं । अब नहीं बोलना चाहिए । हं....... अ ।

..... में कोई भी एक और कोई भी एक मुझे संभालनेवाला जो,

कृपा से भेजकर आराम ही क्या देता है !

सरकारी आदमी ...... थे । वहाँ भी आये थे । हमारा खून लिया था और पीछे उसका रीझल्ट बताया था भट्ट साहब को । किन्तु अभी थोड़ी सी कम हुई । वेदना कम हुई हंअ..... और अब भी एकसा पेशाब होता है ।

• मोटा को आर्थिक जरूरियात के प्रसंगों में मिलती रहती गेबी सहाय •

एक बार ठक्करबापा ने । ठक्करबापा के लिए गांधीजी ने लिखा था उनके जन्मदिन पर कि सत्तर हजार । तो कि इतने बड़े आदमी के लिए

सत्तर हजार तो बहुत छोटी रकम कह सकते । किन्तु मुझे तब ऐसा हुआ कि भई, मैं तब कुछ नहीं । कोई हरिजन संघबंघ में नहीं । किन्तु मुझे हुआ था कि मुझे कुछ देना चाहिए । ठक्करबापा के साथ मेरा इतना सारा निकट का संबंध वह मैंने किताब में छपा हुआ है प्रसंग ।

तो रास्ते में जाता था । नये वर्ष का दिन । उस दिन हम मिलने जाते थे मेयर के वहाँ । कराची में चागला साहब के वहाँ । बराबर याद है । वह साहब, रास्ते इतने सारे साफ कुछ– कागज-बागज मिले ही नहीं । कोई जगह में । इतने सब जमशेदजी मेहता थे । मेयर । बहुत स्वच्छ रखते ।

किन्तु रास्ते में हम जहाँ गए और मुझे नोट हाथ में आई, इससे उस कुरंगीबहनने कहा **मोटा,** आपको तो जब पैसे चाहिए, तब मिले । एक बार उनके बंगले के पास से निकलते थे और मुझे कुछ काम के लिए पैसे जरूरी थे और पैसे मिले ।

एक बार कुंभकोणम् में मेरे पर कर्ज हो गया था और सोने की chain मिली थी । पुड़िया में । उसमें लिखा था । तामिल में हंअ...... साहब । कि यह तेरे उपयोग के लिए है । तामिल में ऐसा लिखा था ।

जब-जब मुझे पैसे की ऐसी जरूर पड़ी है, तब भगवान ने मुझे चमत्कारिक रीति से पैसा भेज दिये बैं । अनेक प्रसंग मेरे जीवन में ऐसे हैं ।

श्रीशांतिभाई : इससे **मोटा** अभी जो 'जीवनस्फुल्लिंग' छपा उसमें जो उसका क्या नाम उनका ? जो शिक्षक थे आपके ? वहाँ सावली में या कालोल में । उनका बेटा कराची में आपके साथ रहता था ।

श्रीमोटा : हाँ, हाँ । विभाकर मेहता है वह ।

श्रीशांतिभाई : वे कहते हमको । अनेक-अनेक बार रेत में से ..... पैसे ऐसा कि जरूरत होती तब मिलते रहते ।

श्रीमोटा : उन्होंने खुद देखा था ।

श्रीशांतिभाई : आपके जन्मदिन पर उन्होंने । आप अहमदाबाद आये थे और कहा था कि जरूर आना । चूनीभाई ! नहीं आ सकेंगे ।

श्रीमोटा : हाँ ।

श्रीशांतिभाई : किन्तु बाद में आप ऐसा कि विमान में ।

श्रीधनसुखभाई : विमान में आपको टिकट मिली थी ।

श्रीमोटा : वह तो किसी ओलिया ने भेजे थे । पैसे भेजे थे और पर्शियन में लिखा था । उर्दू में लिखा था, वह हमारे आश्रम में कुरेशी साहब रहते हैं न उनके पास पढ़वाया था ।

• ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम स्वयं है •

जीवन में कोई भी एक और कोई भी एक मुझे संभालने वाला जो,
कृपा से भेजकर आराम ही क्या देता है !
असल जादूई गुरु सूक्ष्म चमत्कारिक अद्‌भुत जो,
हृदय प्रेरित करके प्राण और शक्ति **तू** *देता है ।*
न खाली खाली व्यर्थ कुछ पड़ा स्वयं रहता है,
सचमुच प्रेम निष्क्रिय और सक्रिय पलपल है ।
जीवन को प्रेरित करने वाला वह, जीवन सीने वाला वह
जीवन को वह, जीवन को राह दिखाने वाला वह ।
जीवन का प्रेम प्रत्यक्ष क्या सचराचररूप से वह है !
ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम व्याप्त है !

जैसे का तैसा नहीं याद करने का ।

हृदय से याद करने का उमंग से चाह-चाह कर ।

रसिक व्यापार जीवन का ।

यह व्यापार कैसा फिर ? रसिक ।

*'रसिक व्यापार जीवन का **हरि**ने दिया है'* हम सिर पर लेकर नहीं चले हैं– व्यापार भगवानने हमें दिया है ।

किसका व्यापार ?

• मिले हुए को हृदय-सटकर चाह-चाहकर दिल चाँपकर •

कि

हृदय से याद करने का उमंग से चाह-चाहकर,
रसिक व्यापार जीवन का ***हरि*** *ने दिया है ।*
मिले हुए को हृदय-सटकर चाह-चाहकर दिल चाँपकर,
हृदय अपने बनाने, जीवन व्यापार शुरू किया है ।
परंतु उसके बारे में सदा रास अभी पूरी न आई है,
वफादार फिर भी कैसे, रहे हुए हैं ***उसे*** *!*
माना है !
हृदय से चाहने का, जीवनधर्म स्वीकार किया है,
हृदय से पालन करने वह, जीवन का व्रत लिया है ।

• स्मरण का कितना बड़ा सचमुच क्या प्रताप ही वह ! •

स्मरण में भाव उछलते, स्मरण में रंग जमता है,
स्मृतिभाव उगकर ***हरि*** *का, फूटती क्या सभानता तब !*
जीवन में अग्र जब ***हरि*** *की सभानता रहती है,*
प्रकृति का सब जो भी फिर गौणत्व पाता है ।

उस स्थिति में क्या होता है ?

सर्वत्र जिसमें और तिसमें ***हरि****रस का अनुभव है,*
प्रकृति वहाँ क्या माध्यम है ! ***हरि****रस को बहने*
स्मरण का कितना बड़ा सचमुच क्या प्रताप ही वह !
जीवन को कहाँ से उखाड़कर गगन में कहीं पहुँचाता है !

श्रीमोटा : 'पूगवे छे' बोलते है ?

श्रीचूनीभाई : चलता है **मोटा,** 'पूगाडवुं' चलता है ।

श्रीमोटा : नहीं चलता । बराबर शब्द नहीं है । सुधारना पड़ेगा । पहुँचाता गगन में वह ।

जीवन को कहाँ से उखाड़कर ***<u>पहुँचाता गगन में वह</u>***
<u>उड़ाता है गगन में वह</u>
<u>गगन में वह उड़ाता है</u>

अब फिर से पढ़ना। मेल बैठा कि नहीं इसका ?

हरि की सभानता जीवन में अग्र रहे, तब प्रकृति का जो भी हो, वह सब पीछे, गौणत्व हो जाता है। अपने-आप। भक्ति का रंग जागता है, तब पता लगता है। जैसा का तैसा कुछ यह बोलने की बात थोड़ी है कुछ ?

• शरीर का रोग मिटाने स्मरण लेते कराया है •

स्मरण की दोस्ती किस तरह मुझे हुई है !
कृपा की वह करामत की अगम्य ही क्या हकीकत है !

शरीर को रोग प्रगट कर, गरज मुझे जो जगाकर,
शरीर का रोग मिटाने, स्मरण लेते मुझे कराया है।

स्मरण का दिल में, सच्चा, गहरा अभ्यास होने,
क्या कठोर व्रत, नियम, टेक जीवन में लेवाते है।

अब एक पद्यांश रहा।

सतत व्रत, नियम, टेक पालन करते, पालन करते वह,
स्मरण में प्रपात का झुकाव, हृदय बहता कराया है।

• • •

हमें पाप या पुण्य न किसी के भी देखने हैं,
हमारा वह न कर्तव्य, हमारा धर्म भी न वह।

किसीको कहें अगर, हृदय उसे ही चेत करने,
कृपा से अगर वापस लौटे, हृदय का इरादा वैसा वहाँ।

• निरंतर के ही अभ्यास से फिर वे माने हैं •

स्मरण में जोतने उमंग से मनादि को,
अनेक रीति से जो किया है, गहरा समझाना वह ।
सरलता से सभी वे न मान जाँय ऐसे जो,
सतत अभ्यास में जोड़कर उस विषय में तालीम दी हैं ।
तालीम देने की प्रक्रिया बारे में भी सीधे न वे,
उछल-कूद क्या ! मैं जानूँ अकेला वह ।
सरल शीघ्र से शीघ्र में, हृदय सहकार वे सभी का,
बहुत मथते, बहुत मथते, मिला न पूरा-पूरा ।
कृपा से पूँछ मैंने तो सतत पकड़ ही रखी,
निरंतर के ही अभ्यास से फिर वे माने हैं ।

• साक्षात्कारी व्यक्ति के लक्षण— शरीर की स्थिति से निर्लेपता, तटस्थता, समता •

तो **मोटा** ये तो सब आपके बारे में कहते हैं न कि आपको साक्षात्कार हुआ, दर्शन हो गये । Realized हो न । तो कुछ यह सूर्य दिखता है और तो प्रकाश आता है । आप लक्षण पर अधिक झुकाव देते हो न । मैंने कहा, 'हाँ, मैं देता हूँ । तब आप सच-सच बात कर दो । मैंने कहा, भाई दे । सच बात । दक्षिणा दे पहले । फिर तुझे सच बात कर दूँ । तो कि मेरे तो थोड़े अभी ग्यारह रुपये हैं । मैंने कहा, 'बस, चलेगा । ग्यारह रुपये दे दे चल भाई !'

फिर मैंने कहा, 'देख भई, यह मुझे रोग हैं । पता है तुम्हें कुछ ? या काल्पनिक है । तो कि ना । आपके रोग यह तो सब पता लगे ऐसे हैं । डाक्टर कह सके ऐसे ही हैं । तब मैंने कहा, 'इतने सारे रोग के साथ आनंद में रह सकते ? तो कि ना । सब के साथ हँसता ...बातें करता हूँ ।

अब एक रोग हो तो आदमी हमेशा का रोगी हो जाय । सात-आठ वर्ष से रोग हैं ये । मैं चिड़चिड़ा हुआ लगता हूँ तुम्हें ? तो कहा ना, नहीं लगते । तब मैंने कहा, देख इसके बाद दो वर्ष मैं– दो ढ़ाई वर्ष में कितने सारे भजन लिख दिये ! कितनी सारी पुस्तकें लिखी हैं । कोई बीमार आदमी उसका मन तो बीमारी में ही और उसमें ही लगा रहता और और उसे कुछ रास नहीं आता । वह तो बहुत चिड़चिड़ा हो जाय । ऐसा तो सर्जन कुछ हो सके उससे ? नहीं हो सके । तो **मोटा** बात आपकी सच । अब कबूल है मुझे । मैंने कहा, 'अच्छा भई ।'

मोटा दूसरी बात तो नहीं है । यह एक मेरे मन में कि इतने सारे रोग फिर भी आप चिड़चिड़े नहीं हुए हो, यह मुझे पसंद पड़ा ! अबे, मैंने कहा, ये सारी पुस्तकें लिखी हैं, वह सच बात हैं । वह गप की बात ? तो कि वह सारा कुछ मेरे गले नहीं उतरा । अबे, पर यह हुआ है । फिर भी कहता **मोटा** मुझे नहीं आप बड़े कवि हो, होशियार तो लिख दो । किन्तु ये चिड़चिड़े नहीं हुए हो वह मुझे गले उतर गया है । तो सब सब को ऐसा है न । तो किसीको ऐसा चाहिए । किसीको कुछ उतर जाय । किसीको कभी उतर जाय । किसीको कुछ उतरता हंअ...

• गंजेरी साधुओं के बीच में •

बारी-बारी से बारी-बारी से वे तो यह गाँजा पी-पीकर मेरे हाथ में आई तो मुझे तो मैंने तो ली । मैंने तो दो-चार लगा दी । हमारी सब मज़ा बिगाड़ दी । खलास । उसने तो निकाल दी । हंअ...... उस चिलम फिर दूसरी भरी । नहीं बैठो । कहा अब तुम्हें पिलाता ही हूँ । अरे फिर से आयी । कमबख्ती यह तो बिना लेने-देते ।

मैं समझा ये कुछ सत्संग की बात करते होंगे । ये तो गाँजे की बात आई । फिर आया । मैंने तो ली । मुझे पीने को आये तब न ! खाँसी आई । वह खाँसी हुई तो फिर से अच्छी तरह से पीटा । और उठाकर डाल

दिया । फेंका हंअ..... जैसे गठरी फैंकते हैं न उस तरह फैंका मेरे बेटेओं ने । अबे, मैंने कहा, आप साधु-महाराज होकर मैंने कहा, इतनी आप सहानुभूति नहीं रखते ? मुझे नहीं आती तो मैं कैसे पीऊँ ? इतनी आपको समझ नहीं हैं ? यानी मतलब कि सब साथ हों और प्रेमी आदमी साथ हो तो मजा आती उसकी मज़ा आती हंअ.... रंगत जामती ।

• *हरिपद में ही लोटकर, शरण उसका स्वीकार किया है* •

स्मरण अभ्यास पड़ने से स्मरण के मध्य दरिया में,
वहाँ डूबकी लगाकर बाद में जीवट से कूदा हूँ ।
सभी जोखिम और साहस की कीमत चूका देकर,
***हरि**पद में ही लोटकर, शरण **उस**का स्वीकार किया है ।*
पथ में क्या आ आ आकर, भयंकर रगड़ बीच में,
धोखे में ही डालकर, कुछ उलटा भटकाया है ।
परंतु नित्य अभ्यास के कारण जो जाग्रति दिल है,
हृदय उस जाग्रति के कारण जीवन जीता जी सके हैं ।

• श्रीरमाकांतभाई जोषी का अनुभव •

श्रीरमाकांतभाई जोषी : उस समय मुझे नडियाद में मौन में बैठने का था । उसके बाद **मोटा** कुंभकोणम् जाने वाले थे । इससे मैंने **मोटा** को कहा कि मुझे आपके दर्शन मौनमंदिर में हो । तो **मोटा** ने कहा तुम्हें मेरे दर्शन तो नहीं होंगे । परंतु तू अभी योग्य हुआ नहीं है । तो फिर मैंने उनको ऐसा कहा, आपकी स्वयं चेतना के अंदर दर्शन ...... तो **मोटा**ने कहा अच्छा भई, होगा मेरी चेतना का अनुभव । फिर मौन में बैठा था ।

थोड़े दिन बाद रात को नौ बजे सोने की शय्या करके मैं सोया । तब अचानक बाघ का घुरघुराना सुना । मैंने कहा, बाघ कहाँ से यहाँ आया ? फिर भी मैं सुनता रहा । फिर थोड़ी देर बाद देखा तो मेरे दाहिनी ओर सो

रहा था । पूर्व तरफ ...... अचानक एक भाग ऊँचा होने लगा । मुझे हुआ कि भूकंप हुआ कि क्या ? किन्तु चारों ओर देखा तो सब दीवार पर की वस्तुएँ । मेरी थैली टंगी हुई थी वह सभी कुछ भी हिलता नहीं । भूकंप...... उसके बाद तो फर्श टट्टी हुई देखी । दाहिनी ओर देखा, बाँयी ओर देखा, तो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तो चारों दिशा की ओर से चबूतरा हिलने लगा । मुझे लगा कि यह भूकंप नहीं है । किन्तु बाप **मोटा** को बाद की थी । तब बात याद आई । इससे फिर मैंने उनको प्रार्थना की ..... फिर पाँच, सात मिनट तक ऐसा अनुभव चालू रहा ।

उस समय में ज्ञानेश्वर महाराज भी याद आये । चांगदेव आये थे । उनका चबूतरा हिला था । चांगदेव को मिले थे । वह सब याद आता ।

इतना सारा होने पर भी जो भक्ति मेरे में प्रगट होनी चाहिए वह अभी भी प्रगट हुई नहीं हैं ।

श्रीमोटा : और चमत्कार से भक्ति प्रकट होती है, यह बात नहीं है । किन्तु इसमें है दूसरी बात, वह कि अगर भूकंप था चारों दिशा में नहीं ..... चारों दिशा में हो नहीं और धरती पर दूसरा सब हिलता दिखे । साथ-साथ में । वह भी उसने । थैलियाँ लटकाई हुई थी यह वह कुछ क्या ......

श्रीरमाकांतभाई : केलेन्डर-बेलेन्डर सब मैंने देखा था । किन्तु कुछ हिलता न था । मैं और मेरा चबूतरा इतना ही हिला करता ।

• *मोटा* के खर्च से *मोटा* के जीवन के प्रसंग इकट्ठे करने श्री धनसुखभाई को *मोटा* की टोक •

श्रीमोटा : बस और चारों दिशा में फिर । तब वह आदमी । मैं तो ऐसा कहता हूँ भई, आप सब साथ में हो तो सोच लो, कि ज्यों का त्यों मेरा बेटा हिलता होगा ऐसा वह चबूतरा ? कोई ज्ञानेश्वर महाराज को तो आज कितने सारे प्रतिष्ठा करते और बात सब करते और कितने बड़े मानते हैं ! तो इस जीवित आदमी की बात करते हैं तो उससे हमें समझना कि

भई इस आदमी में कुछ तथ्य होगा सही मेरा बेटा । अन्यथा यह कुछ बनता नहीं ऐसा ।

इससे कुछ उलटा-सीधा मैं चलूँ या बरतूँ तो समझ लेना कि भई उसके पीछे कोई रहस्य होगा । वह रहस्य अगर हमें समझ पड़ती हो तो भी वह रहस्य समझाये तो भी समझना हमारे हाथ में है न । कि भी, यह कारण है भई उसका । कि यह **मोटा** के शरीर को ऐसा है और यह वेदना है । उस वेदना को कुछ राहत मिले और भगवान की कृपा से यह साधन मिला है ऐसा । इससे उस रीति से वह अगर समझे न आदमी तो मेरे जीवन में अनेक ऐसे उदाहरण हैं । मैं तो किसीको कहूँ कि जाओ । कि मैं आपको सरनामा सभी का दूँ । वहाँ जाकर मिलो । पैसे मेरे । जाओ भई । धनसुख ।

श्रीधनसुखभाई : हाँ, जी ।

श्रीमोटा : जा, तू निकल प्रवास में । पैसे मेरे । जा । और सभी को मिलकर आ । तो तुम्हें विश्वास हो । क्योंकि विश्वास बिना तो फिर पता नहीं लगेगा । क्योंकि हम जीवदशा वाले ठहरे । वह तो इधर भी झुके और उधर भी झुके । उसमें मजा नहीं आये फिर । भले हम जीवदशा के ठहरे । किन्तु विश्वास । आदमी कहते हैं कि लक्षाधिपति है वह गरीब हो जाएगा कोई दिन भी ?

श्रीधनसुखभाई : कोई एक समय तो हो जाय ।

श्रीमोटा : नहीं होता लक्षाधिपति किस तरह हो ? मानो कि सट्टा खेलता हो तो हो जाय । लक्षाधिपति हो और सट्टा का व्यापार करता हो और सट्टा खेलता हो तो गरीब हो जाय । किन्तु सट्टा खेलता ही न हो तो ?

श्रीधनसुखभाई : तो वह लक्षाधिपति ही रहता ।

श्रीमोटा : हाँ ऐसा । कहते धंधे में घाटा जाय । कि मान लो । किन्तु धंधा ऐसा न हो कि घाटा जाय ऐसा । धंधा उसका ऐसा न हो कि घाटा जाय उसे । इससे फिर वह तो हो ही नहीं । ऐसा समझने की बात रही इसमें ।

इसके पीछे का ऐसा है कि आदमी का भाग्य या तो उसकी अलग-अलग स्थिति बदलती रहती । दिन नहीं बदलता ।

श्रीधनसुखभाई : हा । पर इससे **मोटा** ऐसी स्थिति बदलती रहती ।

• अनुभवी का प्रत्येक कार्य हेतुपूर्वक का होता है •

श्रीमोटा : स्थिति बदलती रहती, किन्तु वह जीवदशा के कारण जिसे ऐसा भगवान का अनुभव हुआ है, उसकी स्थिति बदलती दिखती सही उपर-उपर से किन्तु भीतर का तो टनाटन जीता होता है। उसमें कुछ बदलाव नहीं होता। ऐसे दिखता परिस्थिति बदलती दिखती कि यह .... इस ठिकाने वाघेचा गये और दौड़े आये और ये क्या करने दौड़े और गये ? ऐसा हो आदमी को। या तो दूसरे कहीं गये और तीसरे कहीं गये और यह दौड़ादौड़ किस लिए ? उनको तो उस स्थिति में बदलाव लगता। किन्तु उसके पीछे का हेतु है, उसे सब को कुछ कहा करता होता है ?

हम भी जीवदशा के ठहरे, किन्तु हम क्या करते हैं और क्यों करते हैं, उसे सब को कहा करते हैं कुछ ? वह तो हम ही जानते हैं न !

श्रीधनसुखभाई : अपने-आप ही ।

श्रीमोटा : घर की महिलायें भी मेरी महिलायें नहीं जानती मेरे बेटे बड़बड़ाहट करते होते हैं । क्या ? किन्तु उनको कुछ हमारे सब का पता होता नहीं या उसकी कहाँ समझ और किस हेतु से हम सब करते हैं ?

जो वह अनुभवी पुरुष भी इस तरह ही व्याप्त होता है। किन्तु वह हमारी तरह व्यर्थ दौड़ादौड़ नहीं करता। उसके पीछे हेतु है, किन्तु हेतु की उसे स्वयं को पक्की समझ है । उसमें बिलकुल फर्क नहीं । थोड़ा सा भी। तिलमात्र जितना। हेतु की उसकी जो अग्नि जैसी सभानता है। जिस दिन ना हो उस दिन । इस भजन में ही लिखाया है कि यह है वह रगड़ आयी थी कहता है, तब मुझे धोखे में डाल दिया ।

धोखे में ही डालकर कुछ उलटा भटकाया है ।

परंतु नित्य अभ्यास के कारण जो जाग्रति थी । उस जाग्रति के कारण वह सब ठिकाने पड़ा है कि जाग्रति उसकी कभी जाती नहीं ।

जैसे आदमी है, वह मेरे पास पाँच हजार रुपये हो, वह पाँच हजार के मालिकीपन की जाग्रति जाती नहीं । कि है । हमारा तो है । कोई हर्ज नहीं । हिम्मत है हमें ।

• *हरि* की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है •

स्मरण का सरल अभ्यास हृदय संग किया जो है,
गहरे सद्‌भाव से दीर्घ समय तक क्या नित्य !
सतत अभ्यास से, वह मनन-चिंतन की गहरी,
जीवन में एकसी क्या, जीवंत धारण टिकती !
*निरंतर धारणा से **हरि** की सभानता निथरती,*
***हरि** की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है ।*
*जीवन की वास्तविकता में हृदय **हरि** का भाव अवतरण करके,*
जीवन को नवजीवन, मौलिक, रसिक, महकता बनाया हैं ।

• लीला *हरि* की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है •

***हरि** की सभानतायुक्त जीवन वह मात्र रस रस है,*
कथा ऐसे निराले वह रसिक जीवन की अद्‌भुत है ।
***हरि** की सभानता में तो कुछ सत-असत कुछ नहीं है,*
***हरि** की सभानता में तो न द्वंद्व या गुण भी है ।*
आगे-पीछे का भले अस्तित्व जहाँतहाँ है,
***हरि** की सभानता में भी न अस्तित्व किसीका है ।*
***हरि** की सभानता में तो **हरि** का भावमात्र है,*
*सब जो है उस विषयक वह **हरि** कैसा खेलता स्वयं !*

*कला लीला **हरि** की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है,*
कभी ना मानवी मति से न समझ सके ऐसी वह है ।

• प्रेरणा अनुसार बरतते दुर्घटना से बचाव •

पहेले मेरा ऐसा रिवाज भई कि दिल में जैसी प्रेरणा हो, उस प्रेरणा अनुसार बरतता । फिर उसमें मैं कोई दिन मेरी बुद्धि का उपयोग न करता । प्रेरणा हो, तब और प्रेरणा में बुद्धि रही नहीं है । उसमें दिव्यता का अंश है । वह एक हमारे में refined हुई जो एक शक्ति है । वह द्वंद्व और गुण जिसमें नहीं है । **जिसमें जीवदशा की कुछ भी वृत्ति नहीं है । ऐसी जो भीतर की विकसित शक्ति उसके द्वारा जो सूचन हो, उसे प्रेरणा कहते हैं ।**

वह प्रेरणा कोई भी हो । और कोई भी प्रकार की हो और **जीव**दशा की दृष्टि से वह सच हो या गलत हो या भली हो या बुरी हो या गंदी हो । **जीव**दशा की दृष्टि से मैं कहूँ यह । तो भी मैं उसका पालन करता ।

किसीको अचरज लगे, किन्तु एक बार हरिजन सेवक संघ का मंत्री था । तब मेरे पैसे रखने का स्थान शहर में । बैंको में रखते । पैसे आश्रम में नहीं रखते हम । इससे मात्र दो सौ–चार सौ रुपये जो अधिक से अधिक पाँच सौ रुपये जितनी रकम मैं रखता । अधिक रखता नहीं ।

तब एक समय पर पैसे की जरूर पड़ी, इससे मैं बैंक में लेने गया । लेने निकला । तैयारी कर के । चेक–बेक लेकर और हमारे आश्रम पास से बस जाती । तब एस.टी. की बस नहीं । किराये की फिरती । वह बस आई । और मुझे प्रेरणा हुई की तू मत जा । तू मत जा । इसमें जाना नहीं । इसमें जाना नहीं । उस बस में मैं तो नहीं गया । और वापस आया ।

वे मेरे मित्र भई (मेरे कलीग) कहे परीक्षितलाल, चूनीभाई, आप कैसे आदमी यार ! बस गई न ! काम के लिए आप गये नहीं और एकदम वापस आये । मैंने कहा, साहब मुझे ऐसा हुआ मत जा । मत जा । ऐसा कहा । मैंने ऐसा तो नहीं कहा कि मुझे इसकी प्रेरणा हुई । अन्यथा तो वे

मानते नहीं । ये लोग तो । मैंने कहा अंदर आदमी बैठे हुए थे, उन्होंने कहा कि इसमें आना नहीं, इसमें आना नहीं ऐसा कहा । वह तो कुछ भी कहे । आप ऐसा माननेवाले कैसे ? मैंने कहा, अब परीक्षितभाई, मेरी बुद्धि इस प्रकार की हो गई है तो क्या करुं ? किन्तु मैं साइकिल लेकर जाता हूँ । और शीघ्रता से वापस आता हूँ । अब कितनी सब देर होगी ?

मैं मानो कि बस में गया होता तो मेरे को भद्र में बदलनी पड़ती । वहाँ से दूसरी बस में बैठना पड़ता । तो देर लगती है । और फिर जाकर पैसे लेकर आने की तो तत्काल बस मिलती । किन्तु भद्र से वापस आते साबरमती की बस तत्काल मिले ऐसा कुछ है नहीं । बहुत देर लगती है । तब उसकी अपेक्षा तो मैं जाऊँगा और आऊँगा वह उसकी अपेक्षा जल्दी आ पहुँचूँगा । भई आपके साथ दलील करना व्यर्थ है । ऐसा परीक्षितभाई तो बेचारा ऊब कर कहा ।

मैं तो साइकिल पर गया । तब विद्यापीठ के आगे जाता हूँ, वहीं बस को एक्सीडन्ट हुआ था और बस खड्डे में गिरी थी । और सब को चोट लगी थी । अब तक कोई आदमी सब चीख-पुकार करते किन्तु कोई आदमी बाहर । अतः मैं दौड़कर गया विद्यापीठ में । सब को खबर दी कि भई, जाओ आप । यह एक बस गिरी है । आदमी बेचारे चीख-पुकार करते हैं और आप मदद करो । और मुझे तो बैंक में जाना है । अतः मैं तो रूक सकूँ ऐसा नहीं है । इसलिए आप सब जाओ ।

इससे एकदम विद्यापीठ के आदमी आये । मैं तो सीधा चला गया । बैंक में से पैसे लेकर आया, तब वहाँ, अभी तो सब को बाहर निकाल कर सूलाते थे । उतने में बसवाले को फोन करके बुलाया था और पुलिस भी आ पहुँची थी और यह सब होता था । मैं तो सीधा निकल गया । अन्यथा मेरे बेटे मुझे यहाँ रोकते फिर ।

॥ हरिःॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

(पू. श्रीमोटा की ध्वनिमुद्रित पावन वाणी का थोड़ा अंश— उत्सव समय का)

• शिल्पकार श्री कांतिभाई पटेल की कदर •

श्रीमोटा : तो कदर करें यह आवश्यक। यह गुजरात में सर्वप्रथम यह एक ही लड़का निकला कि जो प्रामाणिकरूप से अनेक गुणों की जिसने कदर की है। वह अभी नहीं वह होगा। पाँच पचास वर्ष होंगे बाद कहेंगे।

यह भाई को मेरा जिसको सुवर्णचंद्रक मेरे आश्रम के प्रमुख साहब मेरे रावजीकाका ने पहनाया। चंद्रक। वह आप देखो। क्या कहते भई ? उसका स्टुडियो देखो तो पूरे हिन्दुस्तान में नहीं मिले ऐसा। किन्तु यह सब किसे जानने की फिक्र है ? उसकी शिल्प की कला कितनी उत्तम है ? यह सब किसे पड़ी है हम सब को। ऐसे आदमी की तो कदर करनी चाहिए। मैं तो गरीब आदमी हूँ तो करता हूँ। धनी लोगों को— मेरी सास के धनी लोगों का काम है यह तो। किन्तु उनको वह कुछ जागता है ? बुद्धि कहाँ जागती है ? कुछ हर्ज नहीं। नहीं जागे तो।

• मौलिक साहित्य के उत्कर्ष के लिए *मोटा* का दान •

हम उनमें के एक हैं न ? यह गुजरात का बेटा मैं कहता था। इस तरह कितने सारे चंद्रक मैंने दिये। साहित्य के क्षेत्र में मेरे से जो हुआ है वह किया है और साहित्य के क्षेत्र में भी जो मौलिक सर्जन हुए हैं। यहाँ साहब बैठे हैं। पीतांबर साहब। जो सर्जन हुए हैं। Book of Knowledge। मैं कॉलेज में B.A. में था तब पढ़ता। तभी का मेरा संकल्प कि इस प्रकार की पीढ़ी गुजरात में होनी ही चाहिए। तब मेरे पास पैसे नहीं। एक लाख से शुरू किया और दूसरे पैसे भी दे देने का। और आज उसे बखानते हैं। इस तरह किशोरभारती। भले आज ना कहते,

किन्तु वह काल आयेगा तब कहेंगे । बालभारती भी वैसे ही । अतः इतना ही नहीं, किन्तु साहित्य परिषद को भी मैंने दिये हैं पैसे । ऐसे के लिए ।

• मोटा की शर्त— बिना दक्षिणा नहीं पधरावनी •

अतः सभी को मेरी विनती आपको है कि यह एक अंतिम काम है । रोट खाने भी कुछ नहीं तो आखिर मुझे बुलाओ । रोट खाने भी मुझे बुलाकर रकम अच्छी दो । दूसरे कहीं से दिलाओ । अब कोई अकेला दे, वह अब मेरा शरीर आगे चले वैसा नहीं भई । वह मैं आपको कह दूँ । जो किसीको मुझे बुलाना हो, वह मुझे दक्षिणा अच्छी दे । इतना ही नहीं, किन्तु आगे-पीछे से चंदा करके भी दो । तो मैं आऊँगा ।

मैं ..... मेरे आश्रम में कि ए भई सब **मोटा** पैसे किस तरह करोगे ? अरे ! आप चिंता मत करो भई । उसकी चिंता मेरे भगवान के हाथ में सौंपो । मुझ अकेले को सौंपो । आपको कोई चिंता करने की जरूर नहीं है । किन्तु अगर मुझे बुलाना हो तो एक हजार से कम रकम नहीं और अन्य चंदा करके देने की आपकी वृत्ति हो तो बुलाना । अन्यथा मैं मेरे आश्रम में भले पड़ा रहा । तो कोई ऐसा कहेंगे, **मोटा** जब आपकी मरजी हो तब आना । मेरी कोई मरजी नहीं है । तुम्हें बुलाना हो, तब कहना भाई । और यह शर्त है । तब फिर से .... हाँ पधारना ।

तब फिर से मेरी आप सब को प्रार्थना है कि यह एक ऐसी बाबत है और आखिर तो यह शरीर गिरता है । गिरने का है, उस समय का यह संकल्प है । मेरा शरीर नहीं होगा तो मुझे विश्वास है कि मेरा यह— नंदु है वह काम करेगा । किन्तु वह संकल्प पूर्ण करे । वह मिला है । बारह-बारह एक को कल ढ़ाई बजे सोया था वह । इतना काम करता है, साहब । और मुझे बिलकुल मुक्त किया है । मैं मेरे लेखन में । **सब ये चार वर्ष में पंद्रह किताबें लिखी और मौलिक साहब । कोई यह जो कोई पढ़ेगा तब । सौ वर्ष बाद उसकी कदर करेगा ।**

तब यह ऐसा काम हाथ में लिया है कि मेरे साथ भाववाले जो भाइ हैं । मेरे साथ जुड़े हुए हैं । प्रतिदिन बारी-बारी से आते हैं । उनको मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे मदद कीजिये । इसमें गुजरात उनकी समृद्धि वृद्धि होगी । और एक पैसा भी मेरे आश्रम में जाने का नहीं है । और फिर खूबी देखो साहब कि भविष्य में कोई विचारक मेरे बारे में लिखेगा तब लिखेगा कि **मोटा**ने बहुत अच्छा काम किया ।

• योजना का कारबार-संबंधी खर्च दान की रकम में से न हो •

मेरा एक-एक पैसा कायम । पैसे सब कायम । व्याज ही खर्च कर सकते । एक पैसा प्रजा का पैसा । एक पैसा बिगड़े नहीं साहब । कोई दिखाये मुझे गुजरात में से । ऐसा हो तो दिखाना ...... मुझे जानना है । उसके पास सिखना है । एक पैसा गुजरात सरकार को पूरा समुद्र तैरने की स्पर्धा का सवा लाख दिये । कायम रहेगा । उसका व्याज तो सब को दे देने का । उसका कारबार-संबंधी खर्च सरकार भोगेगी । एक पैसा उसमें से जाय नहीं । एक पैसा भी बिगड़े नहीं, साहब । इतना सब सोच कर-करके इस पैसे का उपयोग— कारबार करता हूँ ।

इसलिए यह कहता हूँ । मेरे बखान करने के लिए नहीं । बखान तो कुछ मुझे नहीं चाहिए । और लोग तो निंदा तो भरपूर करते हैं । उसकी मुझे खबर है और पास के भी अधिक करते हैं । किन्तु उसकी मुझे परवा नहीं है । यह मेरे स्वयं के बखान के लिए नहीं कहता । किन्तु यह हकीकत है । जो आप जानो तो आप पैसे दे सको । **मोटा** अच्छा कारबार करेंगे । हमारा एक पैसा भी उसमें से बिगड़ेगा नहीं । कारबार-संबंधी खर्च । यह डेढ़ वर्ष तक तो नंदुभाई ने पत्रव्यवहार किया । University Grants Commission, Indian Medical Research Council वे कहते पैसे लेंगे, किन्तु कारबार— संबंधी खर्च आपको देना पड़ेगा । कि आपको लेना हो तो लो और न लेना हो तो

नहीं । एक पैसा कारबार-संबंधी खर्च में नहीं मिलेगा । कहते हैं कि यह हमारा कायदा है । आपका कायदा आपके पास रहा । हमें .... शर्त हो तो लो, अन्यथा नहीं । साहब अंत में प्रत्येक— हमारी सेन्ट्रल सरकारी स्थापित ये संस्थाएँ हैं । युनिवर्सिटी ग्रान्टस कमिशन, इन्डीयन अेग्रीकल्चरल रीसर्च काउन्सिल, इन्डीयन मेडीकल रीसर्च काउन्सिल सेन्ट्रल सरकार ही है । किन्तु सभी ने लिए पैसे । एक पैसा उसमें से कारबार-संबंधी खर्च जाएगा नहीं और व्याज है वह इस तरह खर्च हो जाएगा । कोई एक पैसा बिगड़ा नहीं साहब । मेरा एक पैसा किसी ठिकाने नहीं ।

• *मोटा* भगवान के मुनीम हैं •

तब इस तरह समझ-समझकर मैं करता हूँ । किन्तु उसमें मेरी समझ है, ऐसा कुछ नहीं । मुझे तो मेरे में अक्ल है ऐसा कई मानते नहीं । मेरे पास के लोग भी नहीं मानते । किन्तु मेरा भगवान मुझे मार डाले साहब । आपके पैसे-पैसे संभालते हो वैसे वह भगवान के पैसे मैं न संभालूँ तो ? अतः इस तरह बहुत समझकर, दीर्घदृष्टि रखकर, इस तरह दान का जो पैसा मिलता है, उसका मैं कारबार करता हूँ । इसलिए यह आपको कहता हूँ कि आपको भी विश्वास बैठे कि **मोटा** को देंगे तो हर्ज नहीं है । किन्तु अंतिम काम है और आप सब कृपा करके और इसमें मुझे पेट भरकर देना । **मोटा,** पेट तो आपका भर सके ऐसा नहीं है । भर सकता है भई, आप देना तो सही । कि **मोटा** प्रति वर्ष देना ? प्रति वर्ष में आपके घर प्रसंग नहीं आते ? तो प्रति वर्ष में खर्च मेरे से बहुत अधिक । आपके बाल-बच्चे .... यह वह ।

• मोटा की आगाही— पैसे कलम के धक्के से चले जाएगे •

.... देश भी है अंदर । पहला है । आपके संसार और गृहस्थाश्रम से देश पहला है । आज भले आपके ख्याल में न आये किन्तु वह हकीकत है । यह देश न होता तो हम कहाँ से होते ? हमारे अणु-अणु हमारा देश है । हमारे देश की भावना है । तब वह सोचना भई साहब ।

काल ऐसा आता है कि अकेले संसार का आपके स्वार्थ का सोचे बिना अब नही ंचलेगा । तब क्या चलेगा इसमें ? नहीं सोचेंगे तो क्या होगा इसमें ? तो वह मुझे कहना नहीं भई । मुझे कुछ मेरा धर्म डराने का नहीं है । डराने का नहीं भाई ।

यह तो सत्य हकीकत । एक बार साहब । बहुत पुराने समय की यह बात कहूँ । *जयाबहन जानतीं हैं । सायला में था । जीमने का था राजदरबार में साहब । मेरे मित्र के साथ में । कि चांदी के थाल और रोट आते । और एक बौना लें तहाँ तो रोट उठाकर वह आदमी ले जाता । अबे भई, मैंने कहा खाने तो दे । तो कहता नहीं, नहीं यह तो ले जाने का । आपको ताजा-ताजा ही देने का । फिर उसमें खड्डा हो रोटके अंदर– बाजरा का तो भर देता घी से । अबे इतना सब ? तो कि वह तो खाना ही पड़े । फिर ले जाता । एक बौना खाया तो तो ले जाता । इतने सब को क्या करोगे भई ? ये सब आदमी हैं न वे खायेंगे ।

तब मैंने कहा भई, यह सब खर्च होता है न यह सब अच्छी तरह से थोड़े काल के लिए है । कर लो । भोग लो सब । यह सभी जाएगा । क्या कहते हो **मोटा** आप ? मैंने कहा, हाँ, साहब सच कहता हूँ । तब का कहता हूँ कि कलम के धक्के से जाएगा भई । यह तो '४४ या '४३ की ऐसी साल की बात है । उसकी बात है साहब ।

तब से कहता आया हूँ कि यह कलम के धक्के से जायगा, वह मेरे बेटे आप सहन करोगे । उसकी अपेक्षा यह परमार्थ करो न । वह हो तो करना । ये सब अनेक बैठे हैं । और आज भी इसके अंदर सब लिफाफे पर नाम, ठिकाना सब लिखना और एक कोने में रकम लिखना । इससे ये सब पुड़ें संभालकर हमें रखने पडेंगे । अन्यथा इन्कमटेक्षवाला तो ६५ प्रतिशत ले लेते हैं । मेरा तो प्राण निकल जाँय । मेरे से यह प्रजा के पैसे, मेरे भगवान के पैसे सरकार को भी नहीं दे सकते । इसमें आप मदद करना । इतने में तो मदद करना ।

---

* श्रीमती जयाबहन वृजलाल जानी (वर्तमान में स्वर्गस्थ)

• परमार्थ के लिए चरोतरी भाषा में *मोटा* की अपील •

ये बैठे हैं, वे कोई धोती झाड़कर उठ न जायेंगे । प्रत्येक जन देंगे । अधिक मत देना । रुपया रुपया मत देना । किन्तु कुछ डाले बिना मत जाना । और यहाँ शाकाहार किया है, वह सब लेकर जायेंगे । पहले बहनें आयें । व्यवस्थित रीति से बहने आयें । एक बाद एक आये । भई आपने स्वयंसेवक रखे हैं ? तो तैयार करो सब । खड़े रख दो । लाओ लाओ जल्दी । तब इसमें कोई बाकी ना रहे । एकदम मत उठ जाना । भई देर है अभी । अभी तो मेरे मंत्री साहब को प्रवचन और जो कुछ कहना है वह कहेंगे । आभारविधि करेंगे । फिर बहनें सभी व्यवस्थित आयें ।

हमें यदि स्वराज पाना हो तो अनुशासन तो सिखो भई । हुडुडुडु करते सब खड़े हो जाओ ? अबे, किन्तु क्या करना है ? अबे, क्या धाड़ है यहाँ ? कुछ आग लगी है ? इसलिए आराम से बैठे रहना । एक बाद एक आना और कोई बाकी न रहे । अपवाद सिवा । सभी इस कठौता पर रखना । मुझे पैर पड़ना मत करना । और यह आरती है वह घुमाने की । अंदर रखना । आरती देनी चाहिए । हार तो पहनाना पड़ता ।

इससे भाइओं और बहनों को विनती है कि प्रत्येक जन देना । भाईओं इतने सब हैं । ओ हो हो हो जे बोल दिया है । ये सभी देना । ज्यों का त्यों धोती झाड़कर उठ मत जाना । इसलिए चरोतर की भाषा में कहता हूँ भई । सब पैर पड़ना नहीं मुझे । हाँ । मैं परेशान होऊँगा । दूर से पैर पड़कर जाना । पैर पड़ो तो जो भावना मैंने कही है वह मन में रखना । भई, बंद करुं अब ?

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

(विद्यार्थिओं को पढ़ाते-पढ़ाते तथा हरिजन सेवक संघ, साबरमती आश्रम के कार्यालय का काम करते-करते पू. श्रीमोटा की साधना किस तरह चालू रहती, उस विषय में जिज्ञासु की प्रश्नोत्तरी)

जिज्ञासु : मोटा, आप लिखते हो कि आप .... में रहते तब साधनाभ्यास में रहते । किन्तु सब काम करते हो, पहले तो ऐसी खबर की आप विद्यार्थिओं को पढ़ाते भी सही । तब ऐसे पढ़ाते करते और आप साधनाभ्यास में रहो, यह कुछ मान सके ऐसा नहीं लगता । इससे आप खुला करके साफ बात करो । कुछ समझ सके ।

फिर आप साबरमती में गांधीजी के आश्रम में रहते और कुछ काम करते थे । हिसाब का काम करते थे । ऐसे करते बातचीत करते सब कामकाज बहुत करते । तब उस समय किस तरह साधनाभ्यास में रहते थे ? और सब आप लिखते हो किस तरह? हमारे कुछ मानने में न आये तो फिर हमारा दोष नहीं ।

• मोटा की दृष्टि— शिक्षण के बारे में विद्यार्थिओं अपने आप सिखे •

श्रीमोटा : भई, आपका दोष किस लिए मुझे कहना ? मैं कहाँ कहता हूँ कि मेरा दोष मैं मानता नहीं । किन्तु आपको समझाउँ अगर आप समझो तो । तो कहो । फिर उनको बात करता मैं । भई, मेरे पास तीन वर्ग रहते । वह कहता तीन वर्ग ? मैंने कहा, हाँ । तीन वर्ग रहते ।

अब मेरी एक पद्धति ऐसी थी । पढ़ाने में भी मेरी अलग पद्धति कि Learn by Thyself । प्रत्येक जन अपने आप सिखे । शिक्षक तो एकमात्र दृष्टारूप से है । जैसे आत्मा स्वयं साक्षी है, दृष्टा है । उस

तरह शिक्षक को रहना चाहिए और विद्यार्थी अपने आप सिखे । तो ही उसे अच्छा आता । ऐसी एक मेरी मान्यता । किन्तु उसे मैंने अमल में इस तरह रखी कि आपको कहूँ ।

कि प्रत्येक पाठमाला हो । वे सभी पढ़ जाता । पढ़कर फिर उसमें से जोड़नी के कठिन-कठिन अक्षर★ ढूँढ निकालता और लिख लूँ और ३X३ तीन बाय तीन फूट ऐसा पुट्ठा लूं । मोटा पूट्ठा लूँ और उसे बढ़िया मोटा कागज लगा दूँ । गोंद लगाकर सरेस से । फिर उस पर लाइन खींचता । इससे एक ऐसे यह खड़ी अठारह और आडी अठारह ऐसी लाईन खींच दूं इससे खाने पड़ जाते । एक में अठारह अक्षर★ । दूसरे में अठारह अक्षर★ । इससे १८X१८ इससे तीन सौ चौबीस शब्द हों । इससे जोड़नी के प्रत्येक पाठमाला के तीन सौ और चौबीस अक्षर★ । कठिन-कठिन आ जाय । एक भी बाकी न रहता । ऐसे तीनों ही किताब । तीनों ही पाठमाला के तीन ही पुट्ठे तैयार कर देता । फिर एक वर्ग हो । सवेरे में जाता अपने आप । तो प्रार्थना तो सही ही । प्रार्थना आदि कर लेने के बाद हमारा अपना काम शुरू होता और वर्ग में एकाध ...... अगर हो तो मुझे भी फायदा हो .... विद्यार्थिओं को भी आता । इससे विद्यार्थिओं को कह देता कि इसमें .... यह तुम्हारा पटिया लगाया है । यह .... यह बोर्ड है । शब्दों का । वह तुम उस प्रकार जोड़नी करके तुम्हारी पाटी में लिखो । उस समय नोटबुक नहीं थी । इससे वह स्लेट आती न ! इससे स्लेट में तुम लाईन खींचकर सब अक्षर लिखो । जोड़नी याद कर-कर के । तो एक वर्ग तो उसमें हो गया । दूसरे वर्ग को गणित सौंपता । वह जो होशियार लड़का हो गणित में उसे कहता । पूरा यह गणित लो और इस प्रकरण में २० प्रश्न हैं । वे २० पूरे एक घंटे के अंदर कर देना । जिसे नहीं आता, वह इस लड़के को पूछ लेना । दूसरा वर्ग इस तरह । तीसरे वर्ग को नकशा सौंपकर और भूगोल की किताब देकर

★ शब्द

नकशा देखने कहता । यह प्रतिदिन सवेरे बदल देता । किन्तु स्वयं अपने आप ही विद्यार्थी सिखता ।

पाठ हो पढ़ने का और नया चलाने का । कि भई तुम पढ़ जाओ । पढ़कर फिर पाटी में लिखो । कि यह क्या ? इस पाठ में आज नया क्या तुम्हारे ध्यान में आया ? वह लिखो । फिर किसीको यह कि भई अंदर देखकर तुम पाठ में देखकर दस लाइन अच्छे अक्षर से लिखो । अक्षर अच्छे आये उसके लिए । कि हरएक जन अच्छे अक्षर से दस लाइन देखकर लिखें । उस तरह तीसरे वर्ग को ऐसा दूसरा काम सौंपता । इससे हर एक वर्ग स्वयं अपने आप अपने काम में लगे रहते और मैं मेरा भजन गाता । कभी-कभी तो ध्यानावस्था भी हो जाती । बेहोश हो जाऊँ मैं । भजन गाते-गाते समाधि हो जाती मुझे । भजन गाते-गाते । यह हेमंतभाई ने देखी थी । बोदाल आश्रम में वे और हम साथ में । फिर तो वहाँ तो कोई मिले नहीं ।

नडियाद में तो कोई थे नहीं । मैं हेड मास्तर । इससे मेरे बारे में कौन फरियाद करे ? फिर भी किसीने लिखा था । इससे हेमंतभाई एक बार आये थे । देखा था । किन्तु सभी को उन्होंने तो डिक्टेशन लिखाया । ये सभी शब्द लिखाये । गणित लिखाया, सभी का सही । कि साला यह तो हमारे किसी ठिकाने ऐसा तो हमने देखा नहीं हैं । वे मंत्री थे तब । तब तो मैं चूनीभाई भगत कहलाता । **मोटा** तो अभी का हुआ । कहा कि भई, यह तो आपका अभ्यासक्रम तो लड़कों का बहुत सुंदर है । एक भी शब्द गलत हो कैसे ? वह हररोज का कितना जोर उस पर । सप्ताह में तीन बार तो वे सभी शब्द लिखना ही । और यह जब हेमंतभाई आये तब वे पटियें उलटे लगा देने का । उलटे कर दूँ । नहीं तो कहेंगे कि यह देखकर लिख लिए । इससे प्रतिदिन प्रत्येक को अपनी स्लेट में से देखकर उसे डिक्टेशन लिखना ही । बीस लाइन-पंद्रह लाइन प्रत्येक को लिखकर लाना । बढ़िया से बढ़िया अक्षरों में । गणित प्रतिदिन गिनना । भूगोल पढ़नी । कोई बाकी नहीं । कि इस तरह । यही

एक एक लेसन थोड़े बहुत प्रमाण में प्रतिदिन विद्यार्थी को करना, करना और करना । और फिर विद्यार्थिओं आपस में पूछ ले कि बोल भई, इतिहास में आज हमने इतना पढ़ा । तो तुम्हें कितना याद रहा ? तो तू बोल । मैं बोल जाऊँ । ऐसे फिर दो-दो तीन-तीन मानो कि आठ लड़के हो वर्ग में तो चार-चार की दो टुकड़ी बना देते । और सब एक-दूसरे का पूछ लेते । इससे यह पक्का हो । और इस तरह हरएक विद्यार्थी स्वयं अपने आप सिखते और पढ़ते । ऐसा मेरा कार्यक्रम रहता ।

• विद्यार्थिओं स्वंय का कार्यक्रम स्वयं ही प्रबंध करे •

हरएक विद्यार्थी स्वयं अपने-आप सिखते, दरकार रखते और एकाग्र होते । यह कब बने ? जिसे उसमें रस हो ! इससे मैं इस तरह कार्यक्रम सब प्रबंध करता और विद्यार्थिओं स्वयं क्ही स्वयं का कार्यक्रम निश्चित करते और स्वयं स्वयं में मस्त रहते और उसे रस हो उसी तरह ही विद्यार्थिओं को .... पूरा आयोजन होता ।

इससे एक वर्ग है उस एक वर्ग को पाठमाला हो उसका प्रत्येक पाठमाला में से कठिन-कठिन जोड़णी के शब्द मैं तय कर लूँ । खोज-खोज कर । और फिर उसे एक बड़े पुट्ठे पर ३ X ३ X ३ फूट चौड़ा और ३ फूल लम्बा ऐसे पुट्ठे पर अढारह लाइन बनाकर आड़ी और खड़ी ऐसा एक-एक लाईन में अढारह शब्द आ जाते । इससे १८ X १८ हो तो ३२४ शब्द होते । ऐसे एक पूरी पाठमाला में से कठिन-कठिन जोडणी के शब्द कठिन जोडणी के ३२४ शब्द मैं लिखूँ, खोज निकालूं और वे उस पुट्ठे मैं बढ़िया अक्षरों से लिखूं । इससे प्रत्येक तीन वर्ग की पाठमाला में से ऐसे तीन सौ चौबीस जोड़णी के कठिन-कठिन शब्द उस बड़े पुट्ठे पर बढ़िया अक्षरो से मैं लिखूं और फिर पुट्ठा वर्ग में रख देता । इससे एक वर्ग है वह उस अक्षरों जो शब्द मैंने लिखे हो पुट्ठे में उसके अनुसार जोड़णी मुख से बोलकर वे लोग लिखते । अपनी पाटी में । और पूरी पाटी हो जायतो एक-दूसरे

को दिखाकर फिर पोंछकर फिर से लिखते । इससे एक वर्ग पूरा एक ये शब्द लिखने में प्रवृत्ति हो । दूसरे वर्ग को इस तरह गणित में रखूँ । तो गणित आये तो पहले उसे नयी उसकी मेथड यानी किस तरह हिसाब हो कि ऐसे हो सब उसकी मेथ् सिखा दूँ । उसे सिखा दूँ । और फिर जो वर्ग का होशियार विद्यार्थी हो उसे उसके साथे दूसरा विद्यार्थी की भई देख यह प्रकरण है । २० प्रश्न हैं । आज हमें पूरा आज हमारा समय में प्रश्न प्रत्येक को पूरा करना है । और जिसे न ाता हो तो उसे वह होशियार विद्यार्थी सिखाता । या तो दूसरा विद्यार्थी जो कर रहे हो वे बीस के बीस प्रश्न । प्रत्येक विद्यार्थी रोज का रोज कर जाय ऐसा नियम रखना । इससे एक वर्ग है वह शब्द लिखने में लगा हो, दूसरा गणित में, तीसरा, तीसरे को वह नकशा लेकल भूगोल का काम सौंपता । इससे हर एक वर्ग स्वयं स्वयं की रीति से स्वयं के अभ्यास में एक सा लगे रहते ।

• विद्यार्थिओं अपनी रुचि अनुसार दैनिक अभ्यास करे •

तीन वर्ग किन्तु एक ही छोटा कमरा । उसके अंदर सब लड़कें हो । फिर भी शांति रहती और हर एक विद्यार्थी स्वयं अपने आप ही तय करते । स्वयं का अभ्यासक्रम किन्तु वे अपने आप तय करते । इस तरह टाइमटेबल – बाइमटेबल रखता नहीं । अगर विद्यार्थी ऐसा कहे कि पूरा दिन हमें गणित ही गिनना हे तो गणित ही गिनो । कोई कहते कि आज हमें शब्दों ही पक्के करना है तो शब्द पक्के करते । कोई कहेगा आज हमें कविता ही याद करनी है तो कविता याद करते । वर्ष के छ महीने या तीन महीने के अंत में जितना अभ्यास सामान्यरूप से होना उतना होना चाहिए । वह नियम मैं मेरे मन से रखता । किन्तु दैनिक का जिसे फिक्स्ड तय किया हुआ वह कोई नियम आदि मैंने नहीं रखा था । **विद्यार्थी की पसंदगी पर सब निश्ति कर रखा था ।**

इससे इस तरह तीनों ही वर्ग अपनी अपनी रीति से लगे रहते । इससे मैं स्वयं मेरे स्वयं के साधन में तब । मैं भजन तब लिखा करता । प्रार्थना करता । आत्मनिवेदन करता । कभी-कभी भजन गाते-गाते वर्ग चलता हो तो भी मुझे भावावस्था हो जाती । शाला में अनेक बार । और आश्रम चलाता तब हेमंतभाई मेरे साथ थे । उन्होंने अनेक बार ऐसा देखा हुआ था ।

इससे इस तरह कितने ही फरियाद करते सही । कि यह चूनीलाल भगत है । वे तो पढ़ाते नहीं । और भजन गाते रहते हैं किन्तु आकर कोई उपरी हमारे मंत्री साहब आकर जाँच कर जाय तो मेरे वहाँ विद्यार्थिओं का किसीका एक अक्षर भी एक शब्द भी गलत नहीं होता । एक शब्द कहो । क्योंकि कठिन में कठिन जोड़नी के शब्द हो, वह तो प्रतिदिन सप्ताह में तीन बार तो उसे लिखना ही । सप्ताह में तीन बार लिखना । इससे उसे तो गलत होना ही नहीं और प्रतिदिन डिक्टेशन यानी पुस्तक में देखकर बढ़िया अक्षरों से पंद्रह लाइन लिखनी, लिखनी और लिखनी ही । प्रत्येक जन को । या घर में ना लिखे तो हमारी शाला में ना लिखे तो घर से लिखकर लाओ पाटी में । दोनों तरफ में । इससे ऐसा पक्का नियम किया था । इससे उसे पुस्तक में देखकर कोई लिखाये कोई परीक्षक तो भी सही । सही होता । गणित भी सभी को आता । प्रत्येक ऐसा नहीं कि वहाँ बैठकर प्रत्येक को प्रत्येक दैनिक प्रत्येक प्रकरण प्रतिदिन को २० प्रश्न करने का करने का ही । उसमें बिलकुल फर्क नहीं । भूगोल तो प्रत्येक को जिसे सब दिखाया हो, वह प्रत्येक उसे खुद प्रत्येक विद्यार्थी कोई एक दिन इस की बारी, एक दिन इसकी बारी, इसकी बारी ! वह प्रत्येक की बारी, बारी-बारी से आ जाय । सभी शहर, नदीयाँ इत्यादि पहाड़ों सभी कहाँ आये हैं, वह सभी को पता । इससे कुछ भी पूछे तो तुरंत कह दे ।

इससे इस तरह अभ्यास में विद्यार्थिओं बहुत आगे रहते । और स्वयं अपनी अपनी रीति से लगे रहते । मैं मेरे भजन में हंअ........ ।

कितनी बार ध्यान में भी जाऊँ । मुझे हर्ज नहीं । मेरा तो लड़कें पढ़ाई में होशियार हो और उनका ..... उनका अभ्यास न बिगड़े । बल्कि अभ्यास में आगे और आगे ऊँचे रहे यह इरादा था । टेक था । उसके अनुसार सब चला करता । और इस तरह मैं मेरे साधन में रहता ।

जैसे आगे मुझे जो भाईने प्रश्न किया था कि भई, **मोटा,** आप कहते हो मैं सतत साधनाभ्यास में रहता । आप ऐसे वर्ग चलाते और आप कहते हो आप तीन वर्ग हैं मेरे पास वह कैसे हो सकता? उसके जवाब में मैंने दिया ।

• हरिजन संघ के कार्यालय में काम करते-करते साधना •

फिर दूसरा सवाल उसने पूछा कि वह सब ठीक है **मोटा ।** यह तो समझ सके ऐसी बात । किन्तु आप मंत्री थे और गाँधीजी के आश्रम में रहते, तब आप आपको अनेक-अनेक काम करने के थे । टाइप करते थे । यह सब बचत रखते थे, हिसाब लिखते, वाउचर लिखते, फाइल करते, ड्राफ्टींग करते । लोग आते उनके साथ बातचीत करना । दूसरी संस्थाओं के हिसाब नोंध करना । ये सब काम थे । उस समय आपने शाला की यह तो आपने सब बात आपने समझाई थी । यह समझ में आयी । वर्ग की तो । और वह मान सके ऐसी बात है ।

किन्तु यह आप उसमें रहते थे और नरहरिभाई थे और दूसरे सब थे, तब उन लोगों ने क्यों यह सब चलने दिया ? आप किस तरह साधनाभ्यास में उसमें रहते थे ? मैंने कहा तुम्हें यह बात समझाऊँ । समझ आये तो ।

कि मुझे भई जिसकी लगन लगी हो, जिसे गरज लगी हो, जिसे स्वार्थ बहुत लगा हो, वह हमेशा predominant हमारे मानस में रहता है । जिसकी हमें तलब लगी हो, गरज लगी हो, जिसमें हमें बहुत रस हो, वह हमारे दिमाग में, हमारे मन में predominant—आगे रहती है वह बात सच्ची है । किन्तु मैंने कहा, यह सब किया करता । मेरी बात, मेरा भजन करता होता वह सब गुनगुनाता रहता । बोला करता ।

कितनीक बार परीक्षितभाई मुझे कहते **मोटा** चूनीभाई । तब तो **मोटा** कोई कहता नहीं । चूनीभाई मुझे कहते, या तो चूनीभाई नहीं कहते तो भगत कहते । क्योंकि मेरा उपनाम भगत । हमारी पीछे छोटा कमरा । अंदर सामने परीक्षितलाल बैठते, उसके सामने मैं बैठता । उसके बाद तो .... और कोई बोलता .... कोई मेरी टीका करते तो मैं बदता नहीं, कुछ । मैं तब .... *'हाथी चलत है अपनी गति में'* तो दूसरा ऐसा तो नहीं कहता, *'कूतर भौंकतवा तो भौंकवा दे ।'* ऐसा तो नहीं कहता । क्योंकि उसे disturbance हो यह बात सच्ची । मैं बोला करता भजन और वह काम में हो तो उसकी एकरागता या तो उसमें उसे शांति का भंग हो वह सच्ची बात । हम कबूल करते आपकी ।

किन्तु मुझे यह टेव पड़ गई भाई । यह कुटेव है । आप मानो नहीं, किन्तु वह मेरा चलाये रखता । फिर तो धीरे-धीरे सब ठीक हो जाता । टाइप करना होता तो भी भजन गाता था । भजन जोड़ता । बनाता । प्रार्थना करता । बोलता । सब करता । तो कितनीक बार दूसरे कहते कि अरे ! चूनीभाई आपको टाइप में भूल आयेगी । कितनी तकलीफ होगी सब । मैंने कहा, भाई, अब आपको क्या जवाब देना? आप हो जाय तब देखना । मैं .... भी काम में भगवान की कृपा से मुझे आपत्ति नहीं है ।

एकाग्रता होती है । तब एकाग्रता वह भी ऐसी वस्तु है । जैसे वृत्ति हो हमें कि वृत्ति गतिशील है । गतिशील है । Active है । सर्जनशील है । और क्रियाशील है । जो प्रति जैसी गति हुई वह उसे साकार करती है । यदि वृत्ति का ऐसा है तो भगवान का भी ऐसा ही है ।

• गरजवाली स्वार्थवाली बाबत में अपने आप ध्यान रहता है •

इससे ऐसे मैं वहाँ मथन करता भई । वह मेरे दिमाग में वह हो, वह चलता ही रहता । प्रत्येक काम हो तो भी । कितनेक सवाल पूछते हैं कि भई **मोटा** यह बात आप कहते हो, भई, मानने में आती नहीं ।

कि ये सब करते आप का सब भीतर ध्यान रहता था । वह कुछ मानने में आता नहीं भई । आपकी यह अत्युक्ति लगती है ।

मैंने कहा, भई, श्रीमद् राजचन्द्र ने प्रयोग करके दिखाया है कि एक साथ मनुष्य १०८ का विचार कर सकता है और यह बात आप मत मानो तो संतबालजी अभी जीवित हैं । उन्होंने ये प्रयोग कि थे । फिर कहा कि .... यह तो अहम् बढ़ाने वाली वस्तु है । हम छोड़ दें । ऐसा करके उन्होंने छोड़ दिया था । किन्तु यह बात सच्ची है ।

भई, वह तो होगा **मोटा,** किन्तु अब आप कहते हो वह कुछ मानने में आये ऐसी बात नहीं है । आप मुझे १०८ में आपका मन १०८ में रह सके वे प्रयोग आपने कुछ किये नहीं । मैंने कहा, मुझे करने की जरूरत नहीं हैं । मुझे किसीको साबित कर देने की जरूरत नहीं है । किन्तु ना, ना, **मोटा** ऐसा नहीं, किन्तु rationally बुद्धि स्वीकार कर सके ऐसी कुछ बात करो । तो वैसी बात करें । लो न भई ।

मैंने कहा, तुम काम में हो । और तुम्हारी तिजोरी में से कोई तुम्हें पैसे निकालने का काम आया और पैसे निकालते और फिर कुछ भूल-बूल में तुम्हारी चाबियाँ कहीं रख दी । इधर-उधर । और बाद में ख्याल आया कि .... चाबियाँ कहाँ गई ? खूब ढूँढते, किन्तु मिलती नहीं । इतने में पाँच आदमी आये तो फिर उसके साथ आपको बात करनी पड़ती । किन्तु वह बात करने में व्यस्त हो तो भी उस चाबियाँ, तिजोरी की चाबियाँ की बात आपके मन में ही मन में रहेगी । यह आप पूछो । किसीको पूछो । तो आप कहो, **मोटा** यह बात तो समझ सके ऐसी है ।

वह बात जो है महत्त्व की, आगे । चाबियाँ की बात आपके दिमाग में predominantly आगे रहती है । उसके साथ बातचीत करते हो । वहाँ दुकान का काम आया हो तो भी करते हो, डाक आयी तो भी पढ़ते हो, किन्तु उस चाबियाँ की बात उस समय में जाती नहीं, आपके मन में से । तो कहा, **मोटा,** यह उदाहरण आपका ठीक है । तो

इस तरह भई मुझे बहुत गरज थी । बहुत स्वार्थ इसका था । इससे मेरे मन में वही खेला करता था । और मैं यह सब बाहर के दूसरे काम बढ़िया करता ।

• श्रीठक्करबापा और परीक्षितलाल की प्रस्तावनाएँ *मोटा* के कर्मों की आरसी हैं •

और आप मत मानो ऐसा हो तो ठक्करबापा की 'कर्मगाथा' में मेरी प्रस्तावना उन्होंने लिखी है, वह देखो । परीक्षितलालने लिखी है, वह देखो । मेरे गुरुमहाराजने कहा, इनकी अबे, तू प्रस्तावना ले इनकी । अरे मैंने कहा । इसमें यह 'कर्मगाथा' तो मैंने कर्म किस तरह भगवान के मार्ग पर जाँये, तब किस तरह कर्म कर सकते हैं, उसके बारे में पूरा शास्त्र लिखा है, वह ये ठक्करबापा तो नहीं उसके पर तो उसमें, तो कहा, नहीं तू ले । तो फिर वे सब पूरी पढ़ गये थे । ठक्करबापा फिर ज्यों का त्यों लिखते नहीं । ऐसे व्यक्ति वे । एक अक्षर मर्यादा से अधिक कोई दिन बोलते नहीं ऐसे व्यक्ति । कंजूस शब्द खर्च करने में । वह ली मैंने । और वे भी राजी हुए । और परीक्षितलाल के पास लिखा ली । भई, **मोटा** मेरा यह कोई विषय नहीं । मेरा तो हरिजन की सेवा का विषय । यह आप सब मेरे पास लिखाते हो, मैंने कहा, भई, कोई कारणवशात् लिखाता हूँ । लिखो आप । जो लिखना हो वह लिखो न आप । आपके पास इतने सारे वर्ष रहा । वह आपको जो समझ हो वह लिखो मेरे बारे में । मुझे ऐसा नहीं कहना मेरे बारे में अच्छा लिखो । किन्तु आपके दिलमें जिस प्रकार से जो असर पड़ा हो वह लिखो । किन्तु उन्होंने भी लिखा । वह आज किसी को कहना पड़ता है कि भई किस तरह काम करता था वह देखो, यह लिखा है । ठक्करबापा ने ।

• भक्ति की एकाग्रता गतिशील है •

तब जो भगवान के मार्ग पर जाता है, उसकी जो एकाग्रता जमती है, वह एकाग्रता कुछ एक में कुंठित होकर एक में ही एक में पिरोती है, ऐसा नहीं । वह एकाग्रता है, वह एक में से दूसरे में गुजरती हुई गतिशील है । वह एक में ही एकाग्रता रहती नहीं । वह एकाग्रता दूसरे बारे में हमें प्रेरित करती है और वहाँ भी हमें एकाग्र करती है । फिर भी हमारे मूल विषय में से पीछे हटती नहीं । यह उसकी खूबी है ।

इससे मूल भाईने मुझे सवाल पूछे थे । उसे मैंने इस तरह उत्तर दिये थे । और उन लोगों को संतोष भी हुआ । **मोटा,** आपने अच्छे मुझे जवाब दिये । उड़ा नहीं दिया मुझे ।

अब यह प्रश्न पूरा होता है ।

• *मोटा* के भजन कर्म, ज्ञान और भक्ति का निचोड़ है •

ये भजन जो लिखे हुए हैं, उसका साहित्य की दृष्टि से बहुत मूल्यांकन नहीं है । साहित्य का मुझे कुछ अभ्यास सही । और साहित्य की कुछ समझ भी सही । काव्य की समझ भी सही । क्योंकि बी.ए. पढ़ता था । तब मेरा विषय गुजराती था । गुजराती ऑनर्स मैंने लिया था । इससे मुझे समझ तो पड़ती । किन्तु मेरा नियम है और मेरे गुरुमहाराज का मुझे हुक्म है कि तुम्हें ऐसा लिखना कि जो सब सामान्य पढ़े हुए और अनपढ़ व्यक्तिओं भी समझ सके । इस हिसाब से तुम्हें लिखना । वह उसे मैं मूल से चिपक के रहा था । जब से लिखने की शुरूआत की, तब से इस नियम को मैं चिपककर रहा हूँ कि जिससे सामान्य व्यक्तिओं भी समझ सके । उस तरह ये लिखे हुए हैं । इससे इन भजनों को मैं कुछ काव्य गिनता नहीं । तुकबंदी हैं ।

श्रेयार्थी को इसके द्वारा बहुत समझने का मिलेगा । अन्य कोई भगवान का अनुभव करने के लिए हृदय से सचमुच श्रम करता होगा,

उसे इसमें से समझने का तो बहुत मिलेगा, इतना ही नहीं ये सब साधना की चाल-ढ़ाल जो है, वे मैंने लिखी है । कितनेक गूढ़ साधन हैं, उनके बारे में मैंने उल्लेख किया नहीं । वे गूढ़ साधन मैंने किये हैं सही, किन्तु उसके बारे में लिखना व्यर्थ है । **क्योंकि अमुक कक्षा तक, अमुक भूमिका तक गये न हों और अमुक प्रकार की योग्य शुद्धि हुई न हो तो वे गूढ़ साधन नहीं हो सकते ।**

वह तो वैसे प्रकार की वैसी हमारी भूमिका हुई हो, परिपक्व भूमिका हुई हो तो ही वे गूढ़ साधन हम से हो सके । मानो कि किसीकी भूमिका हुई हो तो भी ऐसे गूढ़ साधन वे कर सके या क्यों वह भी एक सोचने जैसा प्रश्न है । इससे उसके बारे मैंने कुछ विशेष कुछ उल्लेख मेरे ऐसे आत्मनिवेदनों के भजनों में किया नहीं । किन्तु वे गूढ़ साधनों हैं, बाकी तो सामान्यरूप से भजन, स्मरण, कीर्तन, आत्मनिवेदन, समर्पण, निदिध्यासन ये सभी साधन मैंने किये हैं, उसका उल्लेख अंदर आता है ।

साधन किये बिना और साधनों का जो भाव है, साधन से प्रगट होता जो भाव है, वह कर्म द्वारा ही साकार होगा । वह कर्म । इसलिए **कर्म साधक के लिए अनिवार्य है । किन्तु वह कर्म प्रभुप्रीत्यर्थ । स्वयं के लिए नहीं । किन्तु स्वयं का भाव साकार करने के लिए । भाव को व्यक्त करने के लिए और प्रभुप्रीत्यर्थ वह कर्म हुआ करे और उसमें हृदय का भाव पिरोया हुआ हो, वह मात्र कोरा कर्म नहीं रहता, किन्तु वह कर्म यज्ञ हो जाता है और वह कर्म का – सचमुच रीति से कर्म का योग बन जाता है । कर्मयोग हो जाता है ।**

इससे मेरे जीवन में मैंने भक्ति तो की हुई ही है । मेरे भजन इतने सारे छप गये हैं । इतने सारे गाये हैं । उस पर से लगेगा कि भक्ति तो की है, किन्तु कर्म द्वारा भी मैंने— कर्म भी उसी ही प्रकार से मैंने

भगवान की कृपा से मेरे से हुए हैं । इससे कर्मयोग भी हुए हैं । और मेरा यह साहित्य भी पढ़ते किसी को भी समझ में आयेगा कि **मोटा** को ज्ञान तो है । इससे इसका त्रिवेणीसंगम हुआ है । वह भी वह भी भगवान की बड़ी कृपा है । इतनी बड़ी कृपा कि जिसे साहित्यिक भाषा में वर्णन नहीं हो सकता । ऐसी बड़ी कृपा है ।

क्योंकि मेरे जैसे बिलकुल मूर्ख को ऐसा— ऐसा आना ही पहले तो शक्य न था । बचपन में मुझे जिसने देखा हो या तो मैं जब आश्रम में था और गुजरात हरिजन सेवक संघ का सहमंत्री था, तब भी लोग मुझे ठोट कहते, बुद्धू कहते । यह सब परिचित हकीकत है । किन्तु ऐसा आदमी से तब मेरा वेष भी उस प्रकार का था । क्योंकि मुझे नम्रता की— शून्यता की हद तक लेकर— ले जाकर पहुँचानी थी । क्योंकि यह मेरा यह मेरा मेरे जीवन की शिक्षा का एक बड़े से बड़ा तब एक नम्रता विकसित करने का बड़े से बड़ा तबका था । और इससे सब को मैं ऐसा लगता । केवल जब उस प्रकार की नम्रता विकसित करने का मेरा प्रयास चला करता था, तब उस प्रकार का भाव भी मुख पर प्रवर्तता न था । और इससे लोग मुझे कहते तो बिलकुल वाजिब था । उसमें कुछ किसीका दोष मैं देखता न था । किन्तु वे कहते वह मुझे वाजिब लगता था ।

॥ हरिःॐ ॥ ०

"मैं सर्वत्र विद्यमान हूं ।"

— मोटा

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [८]

पू. श्रीमोटा की ध्वनिमुद्रित पावन वाणी

पू. श्रीमोटा के विधान और परमार्थ की समझ

(१) परमार्थ ऐसा होना चाहिए कि समाज की समग्रता को स्पर्श करे ।

(२) क्रांति को प्रेरित करे वही धर्म ।

(३) गुण और भाव बिना धर्म संभव नहीं ।

(४) पंचमहाभूतों से रचित स्थूल शरीर का नाश होता है, तब सूक्ष्म शरीर निकल जाता है, उसके साथ गुण और भाव दूसरे जन्म में भी जाते हैं । अत: गुण-भाव विकास की प्रवृत्तिओं का दान ही सच्चा, श्रेष्ठ दान है ।

(५) गुण और भाव बिना समाज उन्नत नहीं हो सकता ।

(६) गुण और भाव बिना की लक्ष्मी हमारा मृत्युघंट मोलती है ।

(७) मौन, एकांत, अभय और नम्रता से भगवान प्रति अभिमुखता प्रगट होती है; अंतर्मुखता प्रगट होती है । और इन चार साधनों से गुणभावना प्रगट होती है ।

अनुवादक-संपादक :

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

॥ हरिःॐ ॥

• अनुक्रमणिका •

१. मनुष्यशरीर, मुमुक्षत्व और महापुरुष का आश्रय......... ५६

२. चमत्कार ६१

३. भगवान के नामस्मरण से कामक्रोधादिक जाय ?....... ६७

४. प्रश्न पूछते हैं कि प्राणायाम विषयक आपका मत क्या है ? . ७३

५. कुंडलिनी के बारे में ७५

६. **श्रीमोटा** का अनाग्रह ७८

७. **श्रीमोटा** की कुशलता और व्यवस्थाशक्ति ८०

८. चेतनानिष्ठ शरीरधारी के लक्षणों के बारे में ८१

९. **श्रीमोटा** ने अपने मातुश्री को मृत्यु समय दर्शन दिये ८६

१०. **श्रीमोटा** के मातुश्री का पुनर्जन्म ८८

॥ हरिःॐ ॥

पू. श्रीमोटा का मिशन

(१) हमारे देश में खेती में, दवाओं में, उद्योगों में, हरएक क्षेत्र में वैज्ञानिक ढब से संशोधन होने चाहिए ।

(२) गुण और भाव विकसित हो और उसे प्रोत्साहन मिले ऐसी प्रवृत्तिओं को शुरू करना चाहिए ।

(३) मंदिरों, दवाखानें, अस्पतालों के लिए मदद तथा अकाल राहत जैसी कोई परंपरा अनुसार प्रवृत्ति नहीं ।

(४) व्यक्तिपूजा नहीं करनी चाहिए ।

(५) स्त्रिओं का सम्मान हो– उनका खमीर बढ़े वैसी प्रवृत्तिओं । क्योंकि खमीरहीन प्रजा न तो अपना भला कर सकेगी या न तो समाज का या न तो धर्मपालन कर सकेगी ।

● दिल ●

तनदिही, धैर्य, उत्साह, हिम्मत सभी गुण,
भाव, भावना, मनोभाव जिसमें से प्रेरणा फूट सके ।

चिंतन पर जो उड़ाता है, आकाशगामी ऊर्ध्व में,
ऐसा जो तत्त्व आधार में उसका ही नाम दिल है ।

– मोटा

नोंध : मोटा का अनाग्रह से पृष्ठ नं. .... तक की हकीकत **पू. श्रीमोटा** स्वमुख से ही वर्णन करते हैं । किन्तु वे सब हकीकतों की पेशी श्रीनंदुभाई करते हैं उस तरह बोलते हैं ।

॥ हरिःॐ ॥

पू. श्रीमोटा को किये हुए प्रश्नों के जवाबों द्वारा हुई सत-चर्चा का अहवाल आपश्री के जीवन के प्रसंगो के साथ

• मनुष्यशरीर, मुमुक्षत्व और महापुरुष का आश्रय •

जिज्ञासु : शंकराचार्य महाप्रभुजी ने ऐसा कहा है कि एक तो मनुष्य का शरीर, मनुष्य का मानवपन मिला उसके बाद मुमुक्षत्व यानी कि उसमें से मुक्ति पाने की जिज्ञासा, तीव्रतम ज्वालामुखी जैसी जिज्ञासा और तीसरा महापुरुष का आश्रय । ये तीनों तीन हमारे जीवन में मिले तो भगवान का हमारे पर समूचा संपूर्ण अनुग्रह हुआ है ऐसा समझना । इसके बारे में **मोटा** आप कुछ अधिक विस्तार से समझाईये ।

श्रीमोटा - अब पहला तो मनुष्यत्वम्— यह जो शरीर हमें मिला है । मनुष्य का जीवन और यह जो देह है, वह **जीव**दशा वाला संपूर्ण **जीव**दशा वाला यानी कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहमादि, रागद्वेषादि से भरपूर ऐसा जो **जीव**दशा वाला स्वार्थी जीवन वह मनुष्यत्व नहीं है ।

मनुष्यत्व के भी लक्षण हैं— जिसमें मानवता पनपने लगी है, सर्वोत्तम प्रकार के गुण जिसके जीवन में पनपने लगे हैं, ऐसे उत्तम गुण जिसके जीवन में झलकते हैं, शोभते हैं, प्रकाशवंत ऐसा मनुष्यत्वम् । मनुष्यत्व यानी निरंकुश रीति से मनुष्य के देह वाला अनेक स्वार्थों से रंगा हुआ कामक्रोधादिक में सतत जो आसक्तिवाला है, ऐसा मनुष्यत्व की समझ यहाँ श्रीशंकराचार्य महाप्रभुजी ने नही की है ।

शंकराचार्य जो लिखते हैं वह मनुष्यत्वम् कि जिसमें मानवता पनपने लगती है और जिसमें अनेक बहुत ही उत्तम प्रकार के गुणों से जिसका जीवन देदीप्यमान है । यानी कि ऐसे उत्तम गुणों द्वारा जिसका जीवन देदीप्यमान है । और जिसमें मानवता पनपी है, ऐसा जीवन वह मनुष्यत्वम् ।

और ऐसे ही जीवन में ऐसा मनुष्यत्व जिसे मिला है, उसे ही यह मुमुक्षत्व की भावना जागती है । तब एक शंका उठती है कि अरे भई, आप तो आँख मूंदकर किये जाते हो **मोटा** । किन्तु विचार करो कि यह जो सूरदास, कितना व्यभिचारी जीव बिल्वमंगल हो गया । वह अपनी पत्नी को छोड़कर अंधेरी रात में बादलों से ढकी हुई रात में मूसलाधार बारिश गिरती थी, उसे भी जो बिलकुल गिनती में लेता नहीं और भरपूर नदी में वह कैसा प्रचंड पूर आया था । वह अभी नर्मदामाता में साढ़े इकतालीस फूट ऐसा इस प्रचंड पूर में भी जाने के लिए हिचकता नहीं । इतना ही नहीं, किन्तु जाना किस तरह? वह मुरदा पर बैठकर जाता है । तब भी वह मुरदा होने पर भी मुरदा के रूप में वह देखता भी नहीं । उसकी धारणा तो देखो, साहब । और उस वेश्या के वहाँ जाता है । और वहाँ एक साँप लटकता था । उसके लिए भी अहाहा मेरे लिए चढ़ने के लिए भी कितनी अच्छी यह योजना कर रखी है । उस साँप को भी साँप रूप में देखता नहीं । इतना सारा वह उसमें अंध हो गया हुआ है ।

किन्तु उपर जाकर जब वह देखता है, उस वेश्या कहती है कि अहाहा ! इतनी सारी भयंकर बारिश में इतना भयंकर पूर आया है तो आप आये कैसे ? अरे ! किन्तु तूने उस व्यवस्था की मेरे लिए आने का साधन तूने रखा ! अरे आप मूर्ख हो ! अरे ! वह कहता यहाँ आगे रस्सी बाँध रखी है । मुझे दिखाो । तब वहाँ उसे साँप दिखाती है । उस मुरदा को दिखाती है और बाई कहती है कि भाई, कि आप अगर यह मुझे इस तरह इतना सारा मुझे चाहते हो । मुझे ! उसकी अपेक्षा

भगवान को अगर इस तरह आप करो तो मोक्ष पा जाओ । उसमें से चेत जाता है ।

विचार करो कि बिल्वमंगल भले ऐसा था । किन्तु एक—एक उसके वचन से चेत गया । उसकी भूमिका तो सोचो कोई । तब मानवता थी उसमें । एक वचन से उसका पूरा जीवन पलट गया । तब उसमें भी एक मानवता तो थी, थी और थी ही । किन्तु उसने ऐसे भयंकर तूफ़ानों को भी गिने नहीं । दूसरा कोई होता तो भय से चौंक मरता । ऐसे भयंकर पूर में जाने की जिसकी ताकत ही किसीकी नहीं चलती । सामान्य व्यक्ति होता तो वहाँ नहीं जा सका होता । और इस तरह वह मुरदा को मुरदा रूप से वह देखता नहीं, इतना सारा एकसा मशगूल उसके अंदर था । साँप को साँप रूप से भी देख न सकता था । इतना सारा मशगूल उसमें था ।

तब जो जीव में भले वह **जीव**दशा की व्यक्ति में ऐसी संपूर्ण एकाग्रपन से केन्द्रता से ऐसी एकसी जिस में कूदान लगाकर मरने की तैयारी कर जूझने की और उसमें संपूर्णरूप से एकमय, तन्मय हो जाने की जिसमें जो **जीव** में जो वृत्ति थी, वह बड़ी बात थी । वह उसे पलट जाते । पलट जाते उसे देर नहीं लगती । ऐसे उदाहरण दूसरे भी होते हैं और हैं भी सही, किन्तु उनके जीवन में ऐसे जो गुण थे, उन गुणों को परखने की हमारी मेरे आप जैसेकी ताक़त बहुत लगती नहीं ।

किन्तु वह जो मनुष्यत्व है । ऐसा मनुष्यत्व उसका मानवता जिसमें पनपने लगी है । उत्तम प्रकार के गुणों का आश्रय जिसके जीवन में प्रगट हुआ है और जो खमीर वाला है, सचमुच पराक्रमी है । शूरवीर है । जो कुछ करना चाहे उसके लिए फना हो जाने की संपूर्णरूप से जिसकी तत्परता है, लगन लगी हुई है वैसे व्यक्ति को मुमुक्षुत्व की भावना प्रगट होती है ।

अब मुमुक्षत्व की जब इसमें से मुक्त होने की जो एकसी चेतनायुक्त जीतीजागती ऐसी जब ऐसी जिज्ञासा अत्यंत तीव्र जिज्ञासा जागती है,

तब ऐसी जिज्ञासा भी गतिशील, क्रियाशील और सर्जनशील है । ऐसी जिज्ञासा कभी बैठने नहीं देती ।

और इसीलिए आज सब भगवान की बातें करने वाले निकल पड़े हैं, उन सब को स्वयं की स्थिति का सचमुच भान हो, इसलिए तो मैंने जिज्ञासा पर एक भाई के एक ऐसा मर्मवचन— ताने से लिखने लगा हूँ । और उसे लिखकर छपाई भी सही । किन्तु कुंभकोणम् में था, तब मुझे लगा । रात में मुझे सब पंक्तियाँ स्फुरित होने लगी । तब मुझे लगा । यह तो शास्त्र अभी अधूरा है । और आज लगभग १५०० पंक्तियाँ भी उसकी लिख भी ली हैं और पढ़ेंगे तब उसे पता लगेगा । पाठक जीव को कि जिज्ञासा जागी हो, तब क्या क्या हो और कैसी-कैसी भूमिका में वह खुद कैसा-कैसा हो और उसके भी अलग-अलग अनेक जिज्ञासा के पहलूओं हो और इतना सारा सूक्ष्मता से भगवान की कृपा से लिखाया है कि और मुझे मेरी साधना का अनुभव वह जिज्ञासा अलग-अलग तबकाओं में किस-किस तरह उसमें से गुजरना हुआ भी आया । और उस जिज्ञासा ने किस तरह मुझे गढ़ा, किस तरह मुझे तारा, उपर उठाया । वह सब मुझे बहुत प्रत्यक्ष । आज भी ।

साधना का इतिहास मुझे लिखना हो तो लिख सकूँ ऐसा हूँ । और वह बहुत मार्मिक, हेतुपूर्वक का, इतना सारा सभानतायुक्त मुझे है भगवान की कृपा से, किन्तु वह लिखने का अभी मुझे हुक्म मिला नहीं है ।

हुक्म वह हमारे लोगों के जीवन में एक ऐसी बड़ी वस्तु है कि हुक्म के लिए मुझे फना हो जाते आज भी बिलकुल किंचित्मात्र भी दिल में डर नहीं लगता । मुझे हुक्म मिला तो समुद्र में चला गया हूँ । और हुक्म मिले ऐसे उस हुक्म में उस हुक्म का मैंने प्रेमभक्तिपूर्वक का पालन किया है ।

तब ऐसी जो मनुष्यत्वकला किसे कह सकते उसके पर मैंने कहा । और ऐसा मनुष्यत्व जिसमें खिला हुआ है, उसे मुमुक्षत्व की भावना ऐसी जिज्ञासा जागती है । और ऐसी जिज्ञासा जागती है, तब

उसे सिद्ध करने के लिए, उसे विकसित करने के लिए कोई भी एक आधार भगवान की कृपा से उसे मिल ही जाता है । वह भी उसे खोजने जाना नहीं पड़ता ।

एक तो उसमें— उस— पहले कदम में जिसके जीवन में मनुष्यत्व खिला हुआ है और जिसमें ऐसी मुमुक्षत्व की भावना जिज्ञासा अत्यंत तीव्र ज्वालामुखी के जैसी जागी हुई है, उसे महापुरुष का आश्रय मिल रहता है ।

अब वह महापुरुष का आश्रय मिलता है सही, किन्तु उसे प्रेमभक्तिपूर्वक का स्वयं स्वीकार होना वह भी सामान्य हरएक व्यक्ति से नहीं बनता । क्योंकि उस महापुरुष का जीवन, उसका वर्तन वह उसका खुद का विलक्षण होता है । और उस विलक्षण वर्तमान को झेलना, उसे योग्यता अनुसार स्वंय के हेतु को सिद्ध करने की चेतनायुक्त सभानता साथ उसका स्वीकार करना और स्वीकार करना इतना ही नहीं, किन्तु उसे स्वयं के आधार में पकड़कर स्वयं के आधार के अलग-अलग करणों को ऊर्ध्वगामी रीति से विकास देने के लिए उनको गढ़ना और उसके अनुसार हमारे आधार के— प्रकृति के हमारे आधार के करणों के जो प्रकृति धर्म हैं, उन प्रकृति धर्म को पलटाना उस महापुरुष से महापुरुष की भावना उसमें हमारे में भक्ति जागती है तो उसके अनुसार कर सकते हैं ।

क्योंकि महापुरुष मिलना वह तो कदाचित् आसान बन जाय । किन्तु उसे हमारे जीवन में ध्येय को हमारे आधार में स्वीकार करके, उसे पकड़कर हमारे आधार को चेतना में प्रगट करने के लिए उसे चेतना को पकड़ने— स्वीकार करने— उस अनुसार फलित करने उस आधार को योग्य होने देना । योग्य करने के लिए इस महापुरुष का आश्रय है, ऐसा भारी से भारी स्वार्थ और अत्यंत तीव्र गरज और ऐसी भक्ति जिसे उस महापुरुष प्रति जागी

हुई है, ऐसे जीव ही उन महापुरुषों की चाहना अनुसार स्वयं वर्तन कर सकेंगे ।

यह इस प्रकार इन तीनों ही जिसे मिले हुए हैं, उस पर भगवान का संपूर्ण अनुग्रह और संपूर्ण कृपा है । क्योंकि ऐसा **जीव** चेतनयुक्त हुए बिना नहीं रह सकता । हरिःओ......म् तत् सत् ।

.... और खूबी तो देखो कि हमारे आद्यशंकराचार्य महाप्रभु ने कहा कि ये तीनों दुर्लभ । इसलिए ही कहा कि सामान्य प्रत्येक **जीव** को मनुष्यत्व का देह मिला, किन्तु वे प्रत्येक जन में यह मनुष्यत्व खिला नहीं होता । वही खिला हुआ नहीं होता, इससे मुमुक्षत्व तो हो ही कहाँ से ? और हो नहीं तो ऐसेको महापुरुष का कभी निमित्त के कारण कोई काल के संजोगों के कारण से कोई एक ऐसे महापुरुषों— महापुरुष के जीवन के साथ कोई एक रीति से हम जुड़े हुए कोई एक जीवन में हों और ऐसे को हम मिल जाँय तों भी उससे हमारी कुछ बरकत नहीं होती । क्योंकि एक तो हमारे में ऐसा मनुष्यत्व खिला हुआ होता नहीं । मुमुक्षत्व की भावना तो फिर तो जिज्ञासा ऐसी तीव्र तो जागी नहीं हो । अतः महापुरुषों का होना— महापुरुष हमें मिले हुए होते भी उसका हम योग्य प्रकार का लाभ नहीं ले सकते । इसीलिए आद्यशंकराचार्य महाप्रभुजी ने हमें कहा कि ये तीनों तीन बहुत दुर्लभ हैं ।

• चमत्कार •

अधिकतर लोग समाज का बहुत बड़े से बड़ा हिस्सा चमत्कार से आकर्षित होता है । **चमत्कार का सामान्य जनसमाज में प्रचलित अर्थ या समझ तो यह है कि जो नहीं है वह प्रत्यक्ष करके दिखाना अथवा जो है नहीं, उसे प्रगट करना या तो कुछ अद्‌भुत, हमारी समझ में न बैठ सके ऐसा और फिर भी प्रत्यक्षरूप से हो ऐसा करके दिखाना ।** ऐसे-ऐसे प्रकार का— ऐसे प्रकार की समझ चमत्कार के बारे में समाज में है ।

सचमुच रीति से अगर ऐसे लोग चमत्कार से, चमत्कार करने वाले के प्रति आकर्षित हुए होते तो तो ऐसे पुरुष प्रति उनका...... किन्तु यह तो ऐसा कुछ बनता होता नहीं ..... उनका राग प्रगट हुआ होता, ऐसा जीता-जागता राग प्रगट हुआ होता तो तो सच्ची रीति से मानते कि वे चमत्कार से उनके प्रति आकर्षित हुए हैं । किन्तु वास्तविक रीति से उनके यानी कि समाज के जीवन में ऐसा कुछ राग प्रगट हो गया हो ऐसा अनुभव से जानने में आता नहीं । तब चमत्कार प्रति लोग आकर्षित होते हैं, यह बात तो सत्य । तब अनेक लोग ऐसे चमत्कार करते हैं । वे करते हो तो भले करते हो । किन्तु हमारे भागवत में या तो दूसरे कोई बाईबल में भी ऐसे ऐसे अवतारी महापुरुष के जीवन में चमत्कार किये हुए हैं । ऐसी अनेक हकीकत आती हैं सही ।

ऐसा भागवत में, बाईबल में उसमें जो आता है, उसकी अपेक्षा बहुत कम कुरानेशरीफ में है । ऐसा मुझे कबूल करना चाहिए । किन्तु हरएक संप्रदाय या धर्म के आद्यपुरुषों में ऐसी चमत्कार की हकीकतें होती हैं सही । लिखी होती है । और समाज में वे हकीकतें फैली हुई भी हैं ।

वर्तमान के संप्रदाय हो गये । उदाहरणार्थ स्वामीनारायण संप्रदाय या तो उसके बाद के जो सब संप्रदाय हुए । उस संप्रदाय के आचार्यों में भी यह चमत्कार होने से ही समाज का बहुत बड़ा भाग इस धर्म के प्रति मुड़ा है ।

तब उससे हमें ऐसा फलित यदि करना हो तो कर सकते हैं कि ऐसे यदि धर्म को, धर्म को समाज में जिसे बहुत बड़े प्रमाण में विस्तार में फैलाना है, तो ऐसा फैलावा करने के लिए उनको कोई एक प्रत्यक्ष ऐसा समाज एकदम चकित हो जाय, ऐसा कोई एक साधन की आवश्यकता सही ।

जिसे संप्रदाय या धर्म का फैलावा समाज के बहुत बड़े भाग में करना है ऐसे-ऐसे महात्मा या महापुरुष को ऐसे साधन का आश्रय लेना

रहता है सही । और ऐसे साधन की पृष्ठभूमि का जीताजागता उनका हेतु एकमात्र भगवान की दिव्यतायुक्त जो चेतना है, उस चेतना का भाव समाज के हृदय में जाग्रत हो और वह जाग्रत हो उसके लिए ही ऐसे प्रकार के किसी किसी ऐसे निमित्त के कारण चमत्कार उन लोगों के जीवन में अपने आप प्रगट हुआ करता होता है । अपने आप ।

ऐसा किसी उनको भी ऐसे किसी निमित्त के कारण मिलते हैं, उसके कारण से । उसका हेतु तो यह है कि समाज के बहुत बड़े भाग को अपने प्रति आकर्षित करके उनमें धर्म का भाव उनके जीवन में प्रगट करना । यह उनके जीवन का सब से बड़ा हेतु है । चमत्कार जो उनके जीवन मं प्रगट होता रहता है, उसका ।

इसके अतिरिक्त दूसरा कोई हेतु मेरी समझ में आता नहीं । और यह चमत्कार वे लोग नहीं करते हैं । अगर करने की बात करें तो उसमें करना यानी कि प्रयत्न । प्रयत्न की sense यानी कि एक भाव जागता है, करनेपन में । जब ऐसा हो तो तो वह अज्ञान दशा हुई । वे ज्ञानी या चेतना के अनुभव की भूमिका वाले कभी वैसे **जीव** कह सकते ही नहीं । अतः ऐसे लोग चमत्कार करते हैं, ऐसा बोलना वह गलत है । सही रूप से उनके जीवन में ऐसे किसी निमित्त कारणों के कारण से अपने आप सहज रीति से शक्ति का प्रागट्य— उस रूप से व्यक्त होती जाती है । व्यक्त होती जाती है । इससे वे लोग चमत्कार करते हैं, वह बात तो गलत ही है । ऐसा उनके जीवन में उस तरीके से होता जाता है । निमित्त के कारण से । और उसके पीछे का सब से बड़ा महत्त्व का हेतु तो वही है कि समाज के बहुत बड़े भाग को आकर्षित करके धर्म का भाव उनके हृदय में जगाना । और ऐसा करे तो ही समाज का बहुत बड़ा भाग उनके प्रति आकर्षित हो । उसके प्रति चले । उनके पीछे जाय । समाज का बहुत बड़ा समूह का भाग उनके प्रति मुड़े मुड़े और मुड़े ।

तब कोई एक भाई सवाल पूछता है कि **मोटा** आप कहते हो कि समाज का बहुत बड़ा भाग मुड़े वह बात सत्य । तो हम कहते हैं कि ये महात्मा गांधी थे । उनको तो हमारों लोग इतने सारे समूह जाते कि कुछ हिसाब नहीं । उन्होंने कुछ चत्मकार किया न था ।

तब कि वह बात सच्ची भाई । उसने चमत्कार नहीं किया । किन्तु उसके जीवन में जो त्याग था, उसके जीवन में जो देश प्रति की जीतीजागती एकसी चेतनवंती जो भक्ति थी और समाज के लिए मर मिटना, समाज को स्वराज्य पाने के लिए लायकात वाला करना । उस प्रकार की जो दहकती जिज्ञासा, तमन्ना उसके दिल में जो थी, और समाज को मुक्त करने के लिए– इस समाज को अंग्रेज सरकार की गुलामी में से मुक्त करने के लिए महात्मा गांधी के दिल में जो धधकता उत्साह था । ये सब गुणों के कारण से समाज उसके प्रति आकर्षित हुआ था ।

और वह कोई चमत्कार के कारण से नहीं । महात्मा गांधीजी के जीवन में चमत्कार नहीं हुए हैं ऐसा नहीं, साहब । हुए हैं, किन्तु उसे कौन देखने बैठा है ? इक्कीस दिन के एक समय के उपवास में दिल्ही में हिन्दू-मुस्लिम की ऐक्यता की भावना प्रगट करने के लिए उन्होंने इक्कीस दिन के उपवास किये थे । तब थोड़े दिन के बाद उनके पेशाब में अमुक प्रकार के जहरीले जंतु दिखाई दिये, तब सभी डाक्टर बहुत गहरे सोच-विचार में पड़ गये और गंभीर चिंता करके सब चिंतायुक्त स्थिति में आ गये थे और गांधीजी को पंडित साहब और दूसरे सभी ने विनती भी तब की थी कि आप थोड़ा मोसंबी का रस या ऐसा कुछ लो तो अब अच्छा । क्योंकि यह तो भयंकर स्थिति है । यह.... यह स्थिति रहे तो आदमी कोई जी नहीं सकता ।

तब गांधीजीने कहा कि भाई, अब थोड़ासा समय कल प्रातःकाल में आप देखना । मैं........ भगवान को मैंने प्रार्थना की है । और कल प्रातःकाल में आप देखना । कल प्रातःकाल में दूसरे दिन प्रातःकाल में

पेशाब देखा तो नोर्मल था । सब जहरीले जंतु कहीं उड़ गये । किन्तु गांधीजी के जीवन में ऐसे प्रसंगो को कौन देखता है ? कौन देखने, उसे समझने कौन बेठता हैं ? उसके पीछे जो गांधीजी का भगवान प्रति एकसा अनंत प्रकार का आत्मविश्वास जो जीताजागता चेतनवंत, प्राणयुक्त उसके दिल में धड़कता था । उसकी झनकार कैसी थी वह कौन..... वह इस हकीकत को कौन देखने बैठा है ? तब उसके जीवन में ...... उसके जीवन में चमत्कार तो थे कोई अलग प्रकार के । किन्तु ऐसे जो भगवान के भगवान के रास्ते जाने वाले या तो धर्म और संप्रदाय । समाज में बड़े भाग को जिसे विस्तार करना है, उसे यह चमत्कार का साधन अपने आप प्रगट होते जाता है और वह व्यक्त होता जाता है ।

ऐसा मैंने खुद इसके बारे में ऐसा समन्वय मेरे मन से किया है । सही या गलत मैं जानता नहीं । मुझे-मुझे हमेशा वह होता था कि जब-जब कोई प्रश्न उठे, तब उसका समाधान प्राप्त कर लूँ, कि जिससे प्रश्न फिर मन में टिके नहीं ।

तब कोई एक पूछता है कि भई, ये सत्य सांईबाबा चमत्कार करते हैं उसका क्या ? तब मैं तो उसे ऐसा कहूँ कि भई, सत्य सांईबाबा अभी जीवित हैं । किसीके बारे में मैं न्याय करने कैसे जाऊँ ? आप उसे जाकर पूछो । तो वह आपको समझायेंगे ।

मैं तो अब तक जो धर्म के संप्रदाय इस देश में, इस समाज में जिसे जीतेजागते किये और इतना ही नहीं, किन्तु इन लोगों का प्राण कैसा होता है, देखो साहब कि **इस मध्यकाल में जब हिन्दुस्तान पर ये मुस्लिम वर्ग का राज्य था, तब ये हिन्दूओं– संस्कृति की जो आपातकालीन स्थिति थी । वह जो त्रास– वह जो जुल्म– वह जो हिन्दूओं पर मुस्लिम बनाने के लिए जो त्रास बरता है, वह तो उसका इतिहास नहीं लिखा हुआ है, वह उत्तम है ।**

आज हिन्दू-मुस्लिम मैं हड्डियों तक बैर है, वह उस संस्कार के कारण चला आया है । वे संस्कार जो समाज के चित्त में समग्ररूप

से– totality जो पड़े हुए होते हैं, वे कुछ एकदम मिट जाते नहीं । तब वह जो आपातकालीन स्थिति हिन्दू धर्म की, हिन्दू संस्कृति पर हुई उस काल में हमारे देश में एक-एक भाग में हिमालय से कन्याकुमारी से लेकर और द्वारिका से जगन्नाथपुरी तक बंगाल भी सही उसमें । एक-एक प्रदेश में संतो की परम्परा जागी हुई है ।

उस संत के केवल अस्तित्व द्वारा हम लोग इन लोगों के सामने टिक सके । जीवंत रह सके । वे लोगों ने तो हथियार उठाये नहीं या किसी के सामने विरोध में या उसे अस्वीकार करने में भी कुछ भाग लिया नहीं । कि ये गलत है, ऐसा भी उसने कहा नहीं । केवल उनका इस दुनिया पर के उस-उस भाग के उनका एक स्थूल रूप से अस्तित्व था उसके द्वारा इस समाज में– यह समाज मरता बचा है । हिन्दू समाज उस संस्कृति से मरता बचा । उनके द्वारा संस्कृति मरती मरती भी बच गई है । वह केवल इन लोगों के कारण से ही । यह कितना बड़ा से बड़ा चमत्कार है ! चमत्कार किसे देखना है ? यही सच्चा चमत्कार है ।

वह यह जो संतपरम्परा जागी उस काल में । उस संत परम्परा ने कितना प्राण प्रगट किया ? अरे ! वह तो बात जाने दो आप ! यह बहुत संक्षिप्त अवधि के इतिहास की बात कहूँ । एक ही समर्थ स्वामी रामदास । यह उत्तम उनको । यह जो आगे विशेषण है वह समर्थ– वह बिलकुल सचमुच ही समर्थ । वे तो संन्यासी थे । भगवाधारी थे । **किन्तु एक संस्कृति के लिए उनमें जो चेतनायुक्त गौरव था । वह गौरव उन्होंने केवल शिवाजी को अर्पण किया ।** ***और शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सब की ।*** **उस शिवाजी ने इस हिन्दू धर्म को सचमुच ही बचाया । इस शिवाजी ने अनेक प्रदेश जीते, किन्तु किसी ठिकाने उसने मुस्लिमों को परेशान नहीं किये हैं ।** मुस्लिमों की मा-बहनों को परेशान नहीं की है । उसके विरुद्ध उनका आदर किया । किसी ठिकाने महाराष्ट्रीयन ये जो पेश्वाओं का राज हुआ, तब

भी उन्होंने भी बहुत सारे देश जीते हैं, किन्तु किसी ठिकाने मस्जिद तोड़ी हो ऐसा एक भी उदाहरण दिखाये तो उसे मेरा सिर नमन करने के लिए तैयार ।

वह संस्कृति किसने दी ? एक ही मात्र रामदास स्वामी ने । एक ही । उसका उसको जो विशेषण है, समर्थ वह यथायोग्य है । और वह चमत्कार साहब कि पूरे समाज एक अंदर जिसने चेतना भरी, जिसकी चेतना के प्राण द्वारा पूरा समाज टिक रहे, वह बड़े से बड़ा भारी चमत्कार । ऐसे चमत्कार यदि हम हृदय से, भाव से पहचानें तो ऐसे चमत्कार से हमारी भी आँख खुलती है, बुद्धि खुलती है ।

चमत्कार तो ऐसा कि जो समग्र समाज के हार्द को स्पर्श करता है । वह चमत्कार सच्चा । बाकी धर्म के आचार्यों ने उनके जीवन में जो चमत्कार की बातें होती हैं, उसके पीछे का रहस्य तो मुझे जो समझ में आया या उसके बारे में जो मैंने समाधान मेरे मन से, मेरी बुद्धि से, अक्ल से किया है, वह सभी को आपको समझाया ।

• भगवान के नामस्मरण से कामक्रोधादि जाय ? •

बहुत लोग ऐसा सवाल पूछते हैं कि भाई, भगवान का नाम बोलने से और उसका स्मरण करने से कुछ कामक्रोधादिक जाँय ऐसा सब कहते हैं, वह किस तरह होता है ? यह कुछ संभव है ? कुछ ऐसा कुछ ये महात्मा लोग कहते हो कि जिससे बुद्धि स्वीकार कर सके ऐसा हो तो ठीक । यह तो मानो ऐसा बोलते और ऐसा कहते हैं कि बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती ।

श्रीमोटा : अनेक ऐसा सवाल पूछते हैं, वह बात तो सत्य है भाई और मैंने भी भगवान की कृपा से बुद्धि का दिवाला अब तक तो निकाला नहीं । और पढ़ता था तब भी बुद्धि मेरी तेज थी । किन्तु गरज आगे गरज बेचारी दीन और जहाँ गरज जागती है, तब बुद्धि दिवाला

निकालती है, वह बात मुझे कबूल है । और मुझे भी ऐसा ही हुआ था भाई । मुझे शरीर का रोग हुआ था ऐसा । महिलाओं को होता है वैसा मिरगी का । वह कैसे मिटे मुझे बहुत गरज ।

इससे फिर उस साधु ने कहा कि यह भगवान का **'हरिःॐ'** वह नाम लो । तो उस नाम से मिट जाँय । मुझे ऐसा कि उस मेरे सालेने जंगल की जड़ी बूटी दी होती तो अच्छा होता । तो मुझे विचार हुआ था कि यह साधु सही कि इस जंगल की जड़ी-बूटी जानता है तो शायद उससे मिट जाँय । तो यह भगवान का नाम लेने से फिर यह रोग मिटता होगा ? यह तो क्या घपला ! हमने भाई ने कुछ लिया किया नहीं ।

किन्तु उस समय में हम तो काम करते थे । महात्मा गांधीजी का सब यह अस्पृश्यता निवारण का । मुझे वह । वह तो बहुत बार उनके बारे में भगवान के नामस्मरण पर और भगवान के नाम पर और भगवान पर उनको अनंत आत्मविश्वास । और वे भगवान का स्मरण भी करते । वे भी कहते कि भगवान के स्मरण से रोगमात्र मिटते हैं । वे तो उनकी अंतिम जिंदगी में उस प्रकार का प्रयोग भी करने वाले थे । और यह सब बात बिलकुल सत्य । उनको भी मैंने लिखा था । तब उन्होंने तुरंत जवाब दिया कि भगवान के स्मरण से रोगमात्र मिट सकते हैं । इससे उन साधु से मुझे विश्वास महात्मा गांधी पर बहुत ।

अब ये सब लोग कहा करते हैं वह । हम भी लें तब । गरज मुझे बहुत । इससे गरज के आगे ..... गरज जब । जिसमें गरज लगती है न भाई उसमें बुद्धि मानो कि दिवाला निकालती है । वह बात सच । मैंने अनेक लोगों को देखा है । वह इन महिलाओं को ऐसी लगनी लगा देता है और ये गहनें सोने के हैं, ऐसा करके सस्ते में दे दे कर.... महिलाएँ भी ले लेती हैं और ठगी जाती हैं । वह उस लोभ के कारण । वह गरज जागती है, इससे सब अंधा हो जाता है, वह बात सच । मेरी बुद्धि उस समय अंधी ऐसा कहो तो चले । क्योंकि मुझे

रोग मिटाना था । इससे हम बंदे तो लेने लगे भगवान का नाम । और वह भी planning करके ।

शुरूआत में तो जैसे यह ठीक नहीं । नहीं क्यों रहे ? हमें यह मिटाना है न इससे यह रोग । वह प्रयोग ठीक सच्चा करो ।

जो कुछ करें, कुछ भी करें उसमें honesty, sincerity and devotion for the purpose ये तीन चीज तो होनी ही चाहिए । पूरेपूरा शत से शत प्रतिशत । तो उसके मुझे बहुत समय से अनुभव । क्योंकि मुझे जैसे पढ़ने की गरज जागी थी । तो पढ़ने की गरज इतनी सारी जागी थी कि मेरे पास पैसे नहीं थे । तो दूसरे ठिकाने कालोल में या नागरों के दूसरे फिर पेटलाद में रहा । वहाँ सब मुझे पराये घर में रहने का । इससे पराये घर में रहने का । उसमें से मुझे यह सब सिखने को मिला ।

फिर तो हम राम बोलने लगे । भगवान का नाम भी ठीक से चलता नहीं । फिर तो बुद्धि काम में लगी । भई, क्यों नहीं चलता? गरज तो पक्की है । इससे फिर योजना की कि हररोज ढ़ाई घंटा तो भगवान का नाम लेना और लेना ही । इससे जल्दी उठने लगा । और भगवान का नाम लेने लगा । हिलते, चलते, फिरते, काम करते ले सकूँ उसे गिनता नहीं ।

उसके बाद रोग मिटा । इससे मैं विचार करने लगा कि यह भगवान का नाम लेने से यह रोग क्यों मिटा ? इसका कारण क्या ? हरएक कर्म के पीछे कोई न कोई कारण रहा हुआ है । वह कारण भले छिपा हो, सूक्ष्म हो, किन्तु कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए । तो वह कौन कारण ? उसके बारे में बहुत सोचने लगा । अनेक महात्मा पुरुषों को पूछता । उस काल के विद्यानंदजी हमारे गुजरात में बहुत प्रसिद्ध । गीता वाले । उनको पूछता । दूसरे सब एक हमारे गोदडिया महाराज थे । उनको भी पूछता । फिर प्रज्ञाचक्षु अभी गंगेश्वरानंद महाराज हैं । दूसरे ऐसे ही जानकीदास महाराज थे । ऐसे सभी को पूछ लिया

था । किन्तु वे किसीसे मुझे संतोष नहीं हुआ । जो जवाब मुझे दिया उससे । वे तो कहते श्रद्धा से भगवान का नाम लो और जो भावना हो, वह फलित होती है । सामान्य रूप से तो यही एक stereo typed जवाब मिलता । मुझे उससे संतोष नहीं हुआ ।

.... और उसका जहाँ मुख्य केन्द्र है । शब्द को स्फोट होने का जो केन्द्र है, उस स्थान पर विस्फोट होता है । फिर हमें यह तो सब पलभर में हो जाता है । क्षणमात्र के अंदर हो जाता है । किन्तु जिस स्थान पर यह आवाज स्फोट होती है, व्यक्त होती है, उसके आगे-पीछे भी ज्ञानतंतुओं के अनेक प्रकार के केन्द्र हैं । ज्ञानतंतुओं भी एक प्रकार के नहीं होते । अनेक प्रकार के ज्ञानतंतु होते हैं । उन ज्ञानतंतुओं के केन्द्र आगे-पीछे रहे हुए हैं । वह जो स्फोट, जो आवाज, उस आवाज की तरंगें आगे-पीछे के ज्ञानतंतुओं के अनेक प्रकार के केन्द्रों को भी स्पर्श किया करती है ।

उस कारण से..... हरिःॐ वह मेरा जप मानो मंत्र । उसके सतत उच्चारण द्वारा एक ही प्रकार की जो लहरें उसमें से उत्पन्न हुई, वे लहरें चारों ओर वह जहाँ आवाज स्फोट होती है, उसके आगे-पीछे जो अनेक प्रकार के ज्ञानतंतुओं के जो केन्द्र हें, उन केन्द्रों को सतत स्पर्श करती रहती हैं और उन लहरों के स्पर्श के कारण इन ज्ञानतंतुओं को जो असर होता है, उस असर के कारण से ये ज्ञानतंतुओं tone-up होते होंगे । और उनके कारण से ज्ञानतंतुओं मजबूत हुए । मनोभाव को सहन करने उनमें पूर्ण शक्ति आयी ।

इस तरह यह जब जो शब्द है । वह शब्द केवल शब्द नहीं है । उस शब्द के पीछे तो । शब्द को हमारी संस्कृति में ब्रह्म कहा है और उस ब्रह्म की भावना उस शब्द के हार्द में रही ही होती है । प्रत्येक इस संस्कृति का जो जानकार, समझदार है, समझ है जिसे, और जो भगवान का स्मरण करता है, उस स्मरण के पीछे भगवान की भावना रूढ़ हुई है और विकसित हुई है, उस-उस व्यक्ति के दिल में प्रगट हुआ करती होती है । जप के साथ ही ।

ऐसे करते-करते जब यह शब्द अखंड होता है, तब उस अखंडाकार शब्द की जो भावना प्रगट होती है, वह भी उसके साथ होती है ।

अब मूल बात देखें तो जो पाँच तत्त्व हैं हमारे में– आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल और पृथ्वी । उस तरह तीन गुण सत्त्व, रजस और तमस । अब ये गुण और पाँच तत्त्वों का संबंध है । आकाश का संबंध सत्त्वगुण के साथ और रजस में अत्यंत momentum इतनी सारी गति की हवा से भी अधिक गति है । वह इस तेज (अग्नि)और वायु में भी अत्यंत momentum यानी कि तेज (अग्नि) और वायु इन दो का संबंध रजस के साथ और जल और पृथ्वी में बहुत inertia उस तरह तमस । उस तमस का संबंध जल और पृथ्वी के साथ ।

अब शब्द जब अखंड होता है, तब इस शब्द का संबंध है आकाश के साथ । आकाश वह निराकार तत्त्व और उसका व्यक्त स्वरूप वह शब्द । अब शब्द जब अखंड, अनंत, अखंडाकार हो, तब अपने आप हमारी भूमका में आकाशतत्त्व predominant हो । महत्त्व आगे आ जाता है । आकाशतत्त्व । आकाशतत्त्व जब आगे आ जाता है, तब आकाशतत्त्व का सत्त्वगुण के साथ संबंध होने से सत्त्वगुण आगे आता है । ऐसा जब हमारे समग्र आधार में– अंतःकरण में, सत्त्वगुण की प्रतिष्ठा हो या तो बहुत बड़े भाग में वही महत्त्वरूप से काम करता हो । सत्त्वगुण । तब रजस और तमस गुण गौण बन जाते है ।

और यह काम-क्रोधाधिक विषय है, वह रजस और तमस गुण का है । सत्त्व में वे नहीं होते । तब सत्त्वगुण जब हमारे में predominant महत्त्वरूप से काम करता हो जाय, तब हमारे में कामक्रोधादिक का असर नहीं होता । वह ठीक मेरी बुद्धि की समझ में बैठा कि ठीक है । यह शब्द से मात्र शब्द से किस तरह ये कामक्रोधादिक फीके पड़ जाते हैं, उसका असर कम हो जाय, वह मुझे तब ठीक मेरी समझ में बैठा कि यह ठीक है, किन्तु वह शब्द अखंड होना चाहिये । उसके सिवा नहीं बन सकता । और वह भगवान का स्मरण अखंड होना वह कुछ जैसी-तैसी बात नहीं भाई ।

एक तो हमें गरज जागी नहीं होती । और उसमें याहोम करके कूदने की हमारी तैयारी नहीं होती । और उसका कारण .... कि हमारे सामने ऐसा जीता जागता मरजीया निश्चयवाला ध्येय कहाँ है ? मनुष्य चाहे उतनी प्रवृत्ति करे, किन्तु बिना ध्येय की जो प्रवृत्ति है, उस प्रवृत्ति में । अपनी प्रवृत्ति में ध्येय को सतत, एकसा सामने रखते नहीं होने से हमारी सभी प्रवृत्ति की सभी जो शक्ति है, वह बिखर जाती है । Dissipiate हो जाती है । इससे केन्द्रस्थान पर जो सकल प्रकार की कर्म की उसके हार्द की जो शक्ति और ध्यान, लक्ष, एकतानता ध्येय प्रति नहीं रह सकते ।

इससे सामान्य व्यक्तिओं को भगवान के स्मरण प्रति कभी अखंडाकार वृत्ति हो सकती ही नहीं । अखंडाकार हो तो वह सहज हो सके ऐसा है । वह मुझे लगता था ।

इससे अब आप समझ सके होंगे कि शब्द का कितना सारा महत्त्व है । और संसार में भी है । भाई, कोई आये और व्यक्ति को दो-चार गाली सुना दे तो वह गुस्सा हो जाता है । और उसे अत्यंत प्यारभरे प्रेम से सब बोलो सुंदर रीति से तो भी उसका असर होता है । अरे ! कितने ही दंभी आदमिओं की वाणी तो साहब कितनी बार बडा भाग निभाती होती है ।

ये पोलिटीशीयन्स की बात क्या करो भई । दूसरी बात तो छोड़ दो । वे कुछ शत प्रति शत थोड़े प्रामाणिक होते हैं ? Sincere होते हैं ? किन्तु उनकी भाषा का जादू कोई अनोखा होता है । किन्तु उसका भी असर है । तो फिर यह जो शब्द बोलने वाला आदमी वह तो शत प्रति शत संपूर्ण प्रामाणिक, वफादार और भगवान के भाव में रंगा हुआ आदमी है । उसकी वाणी अजीब है । उसकी वाणी का प्रभाव और असर और महत्त्व तो है ही ।

इस तरह आप समझ सकोगे कि शब्द से कामक्रोधादिक किस तरह मिटे वह अब आपके दिमाग में प्रवेश किया हो । ना प्रवेश किया हो तो ।

• प्रश्न पूछते हैं कि प्राणायाम विषयक आपका क्या मत है? •

उत्तर : प्राणायाम कोई...... प्रकार की योग की प्रक्रिया है, विधि है और प्राणायाम की पद्धति से प्राण को इस तरह उसके संयम में प्रकट कर सकते हैं कि जिससे इस प्रकृति को वश करने में यानी कि द्वंद्व और गुण को। द्वंद्व और गुण वह प्रकृति यानी कि द्वंद्व और गुण वह प्रकृति जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहमादि में राचती होती है, इस प्रकृति का आधार है यह प्राण ..... और प्राण वह श्वास के आधार पर है। इससे यह प्राणायाम से प्राणायाम की एक पद्धति— योग पद्धति ऐसे प्रकार की है कि जिससे प्रकृति को वश करने में यानी की प्रकृति का ऊर्ध्वगमन कराने में यह प्राणायाम बहुत बड़े से बड़ा हिस्सा निभाता है।

यह संक्षिप्त काल में हो सके ऐसा है। किन्तु मेरी अपनी समझ ऐसी है कि यह प्राणायाम वह सरल से सरल मार्ग होने पर भी वह कठिन में कठिन है।

यह प्राणायाम कौन कर सकता है, उसकी मुझे जो समझ है, उसके अनुसार कोई गृहस्थी व्यक्ति जो संसारी सुख भोगता है, पति-पत्नी रूपसे जो कोई यह सांसारिक सुख भोगता है, ऐसा व्यक्ति यह प्राणायाम नहीं कर सकता। एक सामान्य अर्थ में आपको प्राणायाम करना हो तो करो, किन्तु जिसे इस प्रकृति का ऊर्ध्वगमन करना है, प्रकृति को भगवान की चेतना में जिसे प्रस्थापित करनी है। उसमें भगवान के चरणकमल में उस प्रकृति को ऊर्ध्वगमन कराकर उसके चरणकमल में से गंगा को— भगवान की चेतना की धारा को प्रवाहित करानी है, उस ऊर्ध्वगमन के कर्म के लिए यह प्राणायाम जो कि योग्य से योग्य साधन है, किन्तु वह गृहस्थी जीवन के लिए उस प्रकार के प्राणायम की संभावना नहीं है, ऐसी मेरी पक्की समझ है।

तब वह जिसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य एकसा जीवंत प्रकार का, चेतनायुक्त जिसके जीवन में प्रगट हुआ है, वही व्यक्ति इस प्रकार का प्राणायाम करने की संभावना वाला है । कारण क्या कि प्राणायाम में मुख्य आधार है श्वास । तब उसके फेफड़े उस प्रकार के होने चाहिए कि वह श्वास । एकसा एक थोड़ा भी गति में फरक न पड़े । ऐसा लेने में और छोड़ने में । इतना ही नहीं, किन्तु वहाँ फेफड़ों के अंदर भी एकसा टिकने में और इतना ही नहीं, किन्तु फेफड़े बिलकुल श्वास से मुक्त हो जाँय और वहाँ वेक्युम हो जाँय तब भी अमुक प्रकार की एकसी बेलेन्सींग यानी कि समतुलना एक ही प्रकार की बिलकुल उसमें उसकी गति में तनिक सा भी फेरफार न हो सके । ऐसी स्थिति पैदा करने की संभावना इस ब्रह्मचर्य की स्थिति में ही रहती होती है । दूसरी कोई स्थिति में वह संभव नहीं है ।

इन फेफड़ों की गति पर ही यह श्वास पर ही हमारे मनुष्यजीवन का आधार है । और यह श्वास की गति पर ही कामक्रोधादिक हैं । यह किसीको समझ में नहीं आये । किन्तु साहब, आप यह वैज्ञानिक जमाना है । अत्यंत कामातुर हो तो आप आपके फेफडों के श्वास की गति समझ लो । देख लो, जाँच करा सकते हो । आप आपकी नाड़ी से भी आपको समझ में आ जाय । आप आपकी आत्यंतिक अवस्था में । मोह की आत्यंतिक तीव्रता में आप हो तो देखो । उसी तरह जो लोभ की आत्यंतिक तीव्रता में आप हो— गुस्से में, क्रोध में हो तो आपके रक्त का बहना अलग ही प्रकार का । आपकी नाड़ी से समझ में आ जाय । श्वास से भी समझ में आ जाय ।

ऐसे व्यक्ति यह हमारे देश में अभी भी आज भी है कि आपके श्वास पर से आपकी मानसिक स्थिति का उनको पता लग जाता है । अनुमान लगा सकते हैं । किन्तु आपको कुछ वे लोग कहते होते नहीं । किन्तु उन लोगों को सूझ-बूझ हो जाती है ।

तब एक मनुष्य के जीवन का जीने का एक बड़े से बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण तो श्वास है । इस श्वास को ही जिंदगी मानी है । ऐसे श्वास को अमुक प्रकार की नियमितता में किन्तु बह नियमितता जड़तायुक्त नहीं है । चौकठावाली नहीं है, कसी हुई नहीं है । वह श्वास । उस श्वास की अमुक प्रकार की स्थिति पैदा करने में प्राणायाम बहुत बड़ा भाग निभाता है ।

किन्तु वह प्राणायाम मेरे आपके जैसे कोई भी सिखने बैठे तो लाभ के बदले नुकसान ही होगा । क्योंकि श्वास का नियमितपन उसमें वह पैदा नहीं कर सकेगा । क्योंकि उस तरह एकसा लेना, छोड़ना और उसमें भी प्रमाण होता है । दो, चार, आठ, अमुक-अमुक प्रकार का कि वह भी हम योग्य रीति से उस-उस समय, उस उस बार श्वास की वह पद्धति लेने छोड़ने में हम इतने सारे संपूर्णरूप से शत प्रतिशत चौकस नहीं कर सकते । वह हमारी ताकत बाहर की बात है । इससे मेरे पास तो कोई प्राणायाम सिखने आये तो मैं तो मना ही कर देता हूँ कि मुझे आता नहीं । मैं तो किसी भी गृहस्थी व्यक्ति को कि जो कामक्रोधादिक वाला है, उसे कभी भी मैं प्राणायाम सिखाता नहीं । यह बात मेरी निश्चित है । मेरी समझ है, उसके अनुसार मैं तो भाई बरतता हूँ ।

• कुंडलिनी के बारे में •

अब दूसरे कितनेक लोग कुंडलिनी के बारे में वैसा ही पूछते हैं ।

कि कुंडलिनी आप जहाँ तक काम, क्रोध, राग, द्वेष, अहम् आदि आपके फीके हुए नहीं, तहाँ तक कुंडलिनी कुंडलिनी को उसे उठाने का करो तो भयंकर अधःपतन को न्योतने जैसा है भाई । कामक्रोध आदि में आप बहुत ज्यादा राचोगे ।

भगवान की भक्ति में आप, एकरस हो जाओ । भगवान की भक्ति में यह जब हमें रस लगता है, तब अपनेआप भई यह कुंडलिनी तो जाग्रत होती है ।

मुझे स्वयं को ऐसी समझ है । अनुभव की समझ से मैं कहता हूँ । आज तो अनेक लोग चल पड़े हैं, उन्हें चल पड़ने दो । और आज लोगों को मेहनत किये बिना, पसीना बहाये बिना, किसीके आशीर्वाद से तुरंत तुरंत पा लेना है । यह एक पूरी भ्रममूलक हकीकत है ।

कुंडलिनी जाग्रत हो । उस कुंडलिनी का हेतु पहले तो मैं जो समझता हूँ, मेरे स्वयं के छोटे से एक समुद्र के आगे एक बिन्दु जितने अनुभव से मुझे जो समझ आयी है, वह मैं आपको कहता हूँ ।

कि आध्यात्मिक साधना के पंथ में उच्चतर भूमिकाओं में जाते जाते सूक्ष्म प्रकार का एक देव-दानव का युद्ध पैदा होता है । उसमें आप देखो तो हमारे पुराणों में हकीकत है कि अनेक बार देव दानवों से हार जाते हैं । तब उनको विष्णु भगवान के पास जाना पड़ता है । उनका रक्षण– उनकी शक्ति लेकर फिर वापस आते हैं और दानवों को हराते हैं, वह तो मेरे हिसाब से एक symbolic expression एक प्रतीक है ।

तब ऐसी जो उच्च भूमिकाओं में सूक्ष्मरूप से देव-दानवों का यह जो युद्ध खेला जाता है, वहाँ हमारी अभी की जो **जीव**दशा की प्रकृति है, उसका जोर, उसकी शक्ति वहाँ काम नहीं लगती । वहाँ भगवान की शक्ति आवश्यक है । उस युद्ध खेलने में और हमारे में रहे दानवों जो सूक्ष्मरूप से जब यह भयंकर संग्राम जामता है, उस भयंकर संग्राम– उस दावानल संग्राम में इस भगवान की शक्ति आवश्यक । यह भगवान की वह शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति । और भगवान की ऐसी कुंडलिनी शक्ति ऐसी भगवान की शक्ति भक्ति प्रगट हुए बिना भई नहीं जाग सकती ।

पहले तो उसके लिए भक्ति जागनी चाहिए । तब वह जो देव और दानवों का साधना की उच्च भूमिका में जो भयंकर संग्राम जागता है,

उस संग्राम में भगवान की शक्ति के अतिरिक्त सामान्य दूसरी कोई शक्ति काम लग सके ऐसा नहीं है । वहाँ भगवान की शक्ति की ही आवश्यकता है । **यह भगवान की शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति । और वह भगवान की भक्ति जागे सिवा कभी प्राप्त नहीं हो सकती और भगवान की शक्ति तभी जाग्रत हो कि आपमें भक्ति प्रगट हुई हो और भक्ति न भी प्राप्त हो कि जब आपमें काम, क्रोध, रागद्वेष, अहम् आदि बहुत फीके पड़ गये हो । और आपका चित्त भगवान में लगा हो, तब वह बन सकता है । तभी यह कुंडलिनी शक्ति जाग्रत होती है और अपने आप जाग्रत हो वही उत्तम ।**

आज तो जैसे बनावटी जो भी सब निकला है । मिलावट वाला जो भी सब निकला है । उसका तो यह काल है भई । हमारे यहाँ **जिसको और तिसको कुंडलिनी जाग्रत करने का और जाग्रत करा देने का महात्मा लोग कहते हो तो मंजूर है । वे महात्मा लोगों को हमारे हजारों नमस्कार हैं । प्रेमभक्तिभाव से । थोड़ी सी भी अवगणना करके मैं बात कहता नहीं । किन्तु मेरी समझ इस प्रकार की है कि जहाँ तक काम, क्रोध, अहम्, राग-द्वेष आदि फीके नहीं हुए हैं और भगवान में चित्त लगता है, तब अपने आप जब आध्यात्मिक उच्च कक्षा में जायेंगे और वहाँ की उन सूक्ष्म भूमिकाओं में, साधना की ऐसी उच्चतम भूमिकाओं में यह देव-दानव का युद्ध प्रगट होता है, वह कोई अनोखे प्रकार का है ।** उसका वर्णन वर्तमान की हमारी प्राकृतिक दशा में कामक्रोध आदि का जो युद्ध है, वह तो बिलकुल तुच्छ है । वह भयंकर युद्ध । उस युद्ध की कल्पना सामान्य **जीव**दशा के आदमिओं को आनी भी संभव नहीं है । ऐसे संग्राम में भगवान की शक्ति ही काम में आती है । और वे हमारे पुराणों में इस देव-दानव के युद्धों में अंदर हकीकत आती है । देवों हार जाते हैं और विष्णु भगवान के पास उनका रक्षण माँगने, उनकी शक्ति लेने जाते हैं । भगवान उनको अभयवचन, शक्ति देकर

देवों वापस आकर दानवों को हराते हैं । वह प्रतीकात्मक जो वह हकीकत है, वह बिलकुल इस संग्राम में आध्यात्मिक साधना के उच्चतर क्षेत्रों में, उच्चतर भूमिकाओं में यह जो देव और दानव का जो अति सूक्ष्म ऐसा भयंकर संग्राम जो होता है, तब भगवान की शक्ति वहाँ काम लगती है । और भगवान की शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति । हरिः ॐ तत् सत् ।

• *मोटा* का अनाग्रह •

आश्रम के जीवन में भी अनेक के साथ अब तो **मोटा** संबंध में आते रहते हैं । किन्तु उन सब के साथ कभी खुद ने खुद का आग्रह व्यक्त किया हो या अपने मंतव्य का ...... किसीको भी भान कराया हो ऐसा आज तक बना नहीं है ।

हाँ, साधना के लिए जो कोई उनको मिले हैं, वैसे लोगों को साधना में योग्य प्रकार के मार्ग प्रति सभानता प्रगट करने के लिए उन्होंने कहा है सही । किन्तु वह हकीकत अलग प्रदेश की है ।

करने का अमुक समय में ही हो, तब अमुक तरह ही वह काम होना चाहिए । या तो सुतार की अमुक लकड़ी अमुक काम के लिए गढ़ना हो तो उस काम की योग्यता अनुसार ही गढ़ना चाहिए । वैसी समझ **मोटा** में साधना प्रति प्रगट हुई होने से साधना के विकास के लिए जो प्रभुकृपा से मिले हो, उनको उसके लिए की .... की हो सही ।

बाकी जीवन में अनेक प्रकार के क्षेत्र में सदा अनाग्रह का ही सेवन किया है, वह मेरा स्वयं का अनुभव है । अनेक के साथ इस प्रकार वे बरतें हैं । कितनीक बार **मोटा** पूरा कद्दू का कद्दू शाक में जाने देते । और कभी एक छोटा ...... भी सरकने न देते । कहाँ आग्रह रखना और न रखना उसकी सूक्ष्म सूझ उनके जीवन में प्रगट हुई है । ऐसा सूक्ष्म प्रकार का, भावनात्मक ज्ञानभक्तिपूर्वक का विवेक उनके

जीवन में जागा हुआ है । यह उनके जीवन की विशेषता है । **किन्तु वे तो विवेक को भी छोड़ देने वाले है । और विवेक को भी पकड़कर रखते नहीं । कितना सारा अनाग्रह है । जो अश्लील शब्द बोलते हमारी जीभ रूक जाय, ऐसे शब्द भी समाज में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तिओं के समक्ष भी बोलते मैंने सुने हुए हैं । *मोटा* को ।**

इससे अब अश्लील बोलना यह तो सभ्यता को बर्खास्तगी दे दी गिन सकते । किन्तु ऐसा भी कभी कभी बोलते संकोच नहीं है । उनको ऐसा ही बोलना और ऐसा ही बरतना और रहना और करना ऐसे सब चौकठ़ा में वे कभी प्रवर्तित सकते नहीं । वह भी हमारा नित्य रोज–ब–रोज का अनुभव है ।

उनको कुछ किसीका अपना शौक नहीं है । पहनने ओढ़ने का भी विशेष शौक नहीं है । वे गहने पहनते हैं सही । किन्तु वह अपने शरीर के उत्सव प्रसंग समय पर ही । वे तो गहनें माँगते भी हैं सही । और गहने उनको मिले करते भी हैं । और कपड़े भी मिले हैं । किन्तु पहनने का उनका आग्रह नहीं है । अच्छे अच्छे कपड़े या गहनें बेचकर और उनके पैसे प्राप्त करके अच्छे काम में उसका उपयोग करते हैं । स्वयं के पास कोई ऐसे भेंट में चाहिए उससे अधिक मिले हुए हो तो उसे भी बेचकर पैसे इकट्ठे करते हैं और अकेले लंगोटबंद रहना हो तो लँगोट पहनकर वे आराम से रह सकते हैं । कपड़े पहनने का भी उनको आग्रह है ऐसा कुछ नहीं है ।

कराची शहर में कपड़े निकालकर कितने ही घंटों तक फिरे थे । किन्तु पराये देश में और अनजान बस्ती में जहाँ कोई पहचानता न हो, मानो कि तो कर सकते हैं । गाँधी आश्रम में ही मेरे घर के सामने ही । नाथाकाका करके एक भाई थे । सोजीत्रा के । वे अनेक बार हमारे यहाँ आते । और **मोटा** को अनेक बार नागी नागी ऐसे बोला करते ।

मोटा ने कृष्ण भगवान के मुआफिक शिशुपाल की अमुक प्रकार की गाली अमुक हद तक सुनते रहे उस तरह **मोटा** ने भी उनको एक

बार कह दिया कि नाथाकाका अब आप अगर नागी नागी या नग्न बोलोगे तो यह धोती निकालकर आपको ऐसे पकड़ रखूँगा कि आप भईसाहब कहोगे तो भी फिर आपका पीछा नहीं छोड़ूँगा । अब बैठ बैठ तू बड़ी । कपड़े निकालने वाली नागी हो तो । मेरी व्यर्थ की । यों **मोटा** को नाथाकाका ने ऐसा कहा । और **मोटा** ने तो कपड़े निकाल दिये । हमारे ही चबूतरे के पीछे कितनीक महिलायें खड़ी थी । **मोटा** को बिलकुल संकोच नहीं हुआ । अरे ! वे तो नाथाकाका को ऐसे चिपक रहे कि नाथाकाका तो भागते रहे और **मोटा** भी पीछे भागते रहे । और नाथाकाका ने जब माफी माँगी । तो इससे इसका भी उनको आग्रह नहीं है । अनाग्रह है ।

जीवन में सूक्ष्म हकीकतों प्रति या तो अमुक प्रकार के वर्तन प्रति या तो स्थूल जीवन या स्थूल शरीर के प्रति भी उनका अनाग्रह है । ऐसे अनेक प्रसंग उद्धृत कर सकते हैं और लिख भी सकते हैं । किन्तु वह सब लिखने बहुत बड़ा विस्तार हो जाय, इससे इतनी हकीकत ही पर्याप्त है ।

• *मोटा* की कुशलता और व्यवस्था शक्ति •

आज भी **मोटा** को देखकर किसीको ऐसा नहीं हो कि ये **मोटा** में भारी कुशलता होगी । शक्ति होगी, समझ होगी । प्रत्येक व्यक्ति को मेरी सिफारिश है कि मेरी यह समझ सही है या क्यों वह **मोटा** को देखकर खुद अनुमान कर लें ।

उन्होंने आश्रमों स्थापित किये और उन्होंने कारबार चलाया । उस कारबार और उसकी व्यवस्था वही साबिती देने में **मोटा** में कितनी समझशक्ति है, वह साबित कर देने में पर्याप्त है । इतना ही नहीं, किन्तु आश्रम में कितने अलग-अलग प्रकार के स्वभाव के आदमी आते हैं, महिलायें आती हैं, बालकों आते हैं, वयोवृद्ध आते हैं । वे सभी के साथ मैंने **मोटा** का बर्ताव और सब के साथ हिल-मिल कर गल जाने की उनकी वह रीति एक अनोखी थी ।

मोटा की एक विशेषता भी एक है । कि मानो कि भई **मोटा** के लिए मुझे भाव है । ऐसा कोई कहते तो **मोटा** मान ले ऐसे नहीं है । वह भाव **मोटा** प्रति का वे लोगों के मन का भाव है तो वह कर्म में साकार होना चाहिए । भाव जब हो । और यदि सच्चा हो तो किसी न किसी प्रकार से साकार रूप में वह प्रगट होना चाहिए । जैसे कि मोह हो, हमें लोभ हो या हमें काम हो या वासना हो ।

• चेतननिष्ठ शरीरधारी के लक्षणों के बारे में •

चेतनानिष्ठ शरीरधारी जो आत्मा है, उसे परखने को कोई एक लक्षण हैं या नहीं ? ऐसा कोई ...... ऐसा सवाल जो कितनेक पूछते हैं, उनको **मोटा** अपनी मौलिक रीति से जवाब भी देते हैं ।

कि भई यह परखने के लिए जैसे किसीमें कोई एक यंत्र में बिजली लीकेज होती हो तो वह परखने के लिए एक अलग यंत्र मिलता है । ऐसे ही प्रकार का कोई यंत्र हो तो बिजली लीकेज होती हो तो उसे परख सकते हैं । उस प्रकार चेतनानिष्ठ शरीरधारी जो आत्मा है, उसके जीवन में ऐसे कितनेक लक्षण तो होते हैं । किन्तु वे लक्षण प्रत्यक्ष रूप से प्रवर्तमान जीवन में हो, किन्तु सामने वाला आदमी परखते नहीं उसका क्या करना ?

उदाहरणार्थ एक हकीकत **मोटा** ऐसा कहते हैं कि वह संपूर्ण निःस्पृही हो और स्वार्थी भी हो । ऐसे एक दूसरे से बिलकुल बिरोधात्मक पहलूओं । उसका समन्वय कैसे हो सके ? यह हमारी बुद्धि कबूल नहीं करती, किन्तु ऐसा होता है सही ।

उसका एक उदाहरण **मोटा** के जीवन में प्रत्यक्ष देखा हुआ वह हकीकत कहता हूँ । कि **मोटा** का जीवनचरित्र मुंबई की एक बहुत बड़ी पीढ़ी पब्लिशर्स आर. आर. शेठ एन्ड कां. छपाती है । उसका लेख कितनेक भाई लिखते हैं । यह तो **मोटा** के स्वार्थ की बात हुई । किन्तु उसमें भी इतने सारे निःस्पृहता से बरतते कि एक भाई जो

लिखने वाले थे, उस पर गुस्सा करके भी उन्होंने कह दिया। अतः उस भाई को बूरा भी लग गया।

अब जो यह सोचने में आये उसे जो लिखने वाले थे कि भई यह तो **मोटा** ने एक बड़ी बात बता दी। लक्षण बता दिया। कितने निःस्पृही हैं। अगर उसको ऐसा होता कि साला यह तो नहीं तो वे सचमुच यदि स्वार्थी होते तो यह अपना काम करा लेने में दुनियादारी के जैसे व्यावहारिक आदमिओं होते हैं, वे तो अपना काम एकदम निकाल लेने में एकदम चालाक, चतुर हो और उस समय पर नीति पलट देते हैं। तो कि हाँ भई वह बात तो सत्य। यह मानने में आये ऐसी बात।

किन्तु ये **मोटा** के कितने ही ऐसे कितने प्रसंगो में ऐसे लक्षणों मैंने स्वयं देखे हैं कि संपूर्ण निःस्पृह हो। उस निःस्पृहता की यह हमारी बुद्धि कबूल करे ऐसी हकीकत हो, किन्तु उस समय वहाँ कितनेक को अपना अहम् बीच में आड़ा आ जाता है। वह अहम् घायल होता है, इससे वह बात— मूल बात उड़ जाती है।

तो यह एक ऐसे जीवन में एक संपूर्ण निःस्पृह होते हैं। **मोटा** ने कितने ही सेठों को भी ऐसा सुना दिया है। यह मेरी स्वयं माहिती की बात है और स्वयं उसका मैं साक्षी हूँ। मैंने स्वयं देखा है।

तब ऐसा निःस्पृही व्यक्ति होने पर भी फिर वह स्वार्थी, अपना काम को निकालने वाला भी होता है। इन दो वस्तु का समन्वय उसके जीवन में हुआ होता है। इस तरह वह संपूर्ण कामनायुक्त। हें.... ? किसीको ऐसा हो। ओह .... अबे क्या ? यह तो कुछ बात आप करते हो। ओरांग-उटांग जैसी किन्तु यह बिलकुल सच्ची।

इसकी विरुद्ध दिशा के पहलूओं देखने जाँय तो उनको कितनी ही बार लोग **मोटा** को कोई प्राथमिक परिचय वाले रुपये देने आये तो वे ना कहते। भई, ठहरो। अभी देखो। **मोटा** की तो अनेक योजना होती हैं, काम लेकर बैठे हैं। लाखों रुपये के काम लिए हों तो भी ऐसे के पैसे उन्होंने छोड़ दिये हैं। मेरी स्वयं माहिती की बात है।

इससे वे लोभी, अपने स्वार्थ के लिए तो कोई काम कुछ होता नहीं है । समग्र जनसमाज के काम उन्होंने सिर पर लिए हुए हैं । यानी कि परमार्थ के काम होते हैं । किन्तु इन परमार्थ के कामों में भी फिर खुद वे कामी हैं, लोभी, मोही भी हैं । नहीं है ऐसा नहीं । किन्तु उसके साथ सब करते होने पर भी कितने ही प्रसंगो में उनमें संपूर्ण निःस्पृहता फैली देखी हुई है । तब जैसे संपूर्ण कामनायुक्त एवं संपूर्ण निष्कामना-युक्त । संपूर्ण लोभी फिर भी उसके सामने विरोधात्मक पहलू में संपूर्ण निर्लोभी । संपूर्ण मोही और संपूर्ण निर्मोही । ऐसे एक दूसरे से आमने-सामने के पहलूओं का और उन पहलूओं एक दूसरे से बिलकुल विरोधी ऐसे पहलूओं का जिसके जीवन मे समन्वय हुआ है, मेल हुआ है, उसने चेतना में निष्ठा पायी है ऐसा मानना ।

किन्तु ऐसा प्रत्यक्ष जिसके जीवन में प्रवर्तन हो उसे उस-उस पहलू जब व्यक्त होते जाता हो, तब उस पहलू को उसी तरह अनुभव करना वह एक अलग हकीकत है । उस अनुभव करने की कला तो जहाँ तक हमारे में ऐसी भक्ति प्रगट न हो, तहाँ तक हम उसे नहीं पहचान सकते । खुद-ब-खुद बनता होने पर भी प्रत्यक्ष रूप से बनता होने पर भी हम उसे परख नहीं सकते ।

उदाहरणार्थ **मोटा** तो बहुत बार ऐसा कहते हैं कि भई मेरा हजार हाथ वाला भगवान ये सब काम पूर्ण करते हैं । मैंने उनके जीवन में देखा है कि उन्होंने १९६२ की साल से शुरूआत लाख से की । दो लाख, तीन लाख, चार लाख, पाँच लाख, सात लाख और साढ़े नौ लाख और इस साल तो उससे भी बढ़ गये । किन्तु वे काम लिए । उन्होंने वे कर्म करने लिए । उनके जीवन में प्रयोगात्मक अनुभव होते गये हैं । प्रयोगात्मक— मान लेना नहीं, कल्पना से नहीं, बुद्धि से नहीं, किन्तु प्रत्यक्ष रूप से । कि उनको कितने ही ऐसे व्यक्ति अपने आप मिल आते हैं और उनके काम उस तरह से अनेक हाथों द्वारा होते रहते हैं । वह हमने जीती जागती और प्रत्यक्ष अनुभव की हुई हकीकत है ।

तब दूसरा एक भी है । लक्षण । कि कितनें के जीवन में ऐसे चेतना में निष्ठावंत हुए शरीरधारी जो आत्मा है, उनके जीवन की चेतना की धारणा किसी-किसी **जीव** को स्पर्श की हुई हो । और तब वे अपने शरीर की शक्ति की जो मर्यादा है, उसमें उस मर्यादा को पार करके भी वे काम करते, काम कर रहे होते हैं । ऐसे **जीवों** की जीवन की हकीकत भी परिचित है । उनके नाम तो नहीं दे सकता हूँ, किन्तु वे हकीकतों जानने में आयी हैं । किन्तु ऐसा receptive भाव ऐसी उनकी आध्यात्मिक जीवन प्रति महत्त्वाकांक्षा, उनका ध्येय ऐसा धधकता उनके जीवन में प्रवर्तित नहीं होने के कारण ऐसी चेतना की धारणा उनके जीवन में नहीं टिक सकी । विदाय हो गई । किन्तु उसके संस्कार पड़े बिना नहीं रहते । किन्तु वे संस्कार भी जो भक्ति प्रगट हुई हो और उसके जीवन में जो प्राणवान, चेतनावान जीतेजागते बनते हैं वैसे उस **जीव** में जिसकी भूमिका ऐसी योग्य प्रकार की प्रगट नहीं हुई है, जीतीजागती हुई नहीं है, ऐसे **जीव** के **जीव**दशा के प्रवाह में उस चेतना की धारणा के जो संस्कार पड़ते हैं, वे ऐसे प्रबल नहीं पड़ते । तथापि उसका भी हेतु मारा नहीं जाता । समय जाते ऐसे संस्कारों भी— पड़े हुए संस्कारों भी । सत्संग की जो महिमा जो गाई है वह इस रीति की है कि वैसे संस्कार भी उसके जीवन में किसी न किसी समय पर वे संस्कार उदय वर्तमान हो, तब उसे वैसी ही वृत्ति में ले जाय सही । किन्तु जीवन का ध्येय उस प्रकार का तमन्नायुक्त, तीव्र झंखनायुक्त ज्वालामुखी की प्रगट होती प्रखर ज्वालाओं समान जहाँ तक नहीं हुआ हो, तहाँ तक सामने के ऐसे चेतना में निष्ठावान हुए शरीरधारी आत्मा के जीवन की चेतना की भावना उनके जीवन को स्पर्श करे तो भी उस प्रकार की नहीं हो सकती ।

ऐसे लोगों के परिचय में आये हुए कितनेक **जीवों** को उनके स्पर्श के कारण ऐसी एक प्रकार की शक्ति उस काल में, उस प्रसंग में उनको प्रवर्तती हुई दिखती है । इतना ही नहीं, किन्तु कर्म में भी उस

सामान्य **जीव**दशा वाले **जीव** की सामान्य जो शक्ति हो, उस शक्ति की मर्यादा को भी वह पार की गई होती है, ऐसे उदाहरण हैं । तब यह जो ऐसा बनता है, वह ऐसे लोगों की चेतना की प्रबल भावना के कारण ऐसा बनता है ।

ऐसे अलग-अलग प्रकार के लक्षण ऐसे जीवन में प्रत्यक्षरूप से होते हैं तो सही । किन्तु उसे भी समझने के लिए हमारे दिल में जब सचमुच भक्ति प्रगट हो, तब उसके अनुसार हम अनुभव कर सकते हैं । बाकी तो हम .... हम **जीव**दशा में होने से अनेक प्रकार के ये लोग हमें तो धक्के मारे बिना रहेंगे नहीं । और उनके धक्के को स्वीकर करने के लिए, वे धक्के अनेक प्रकार के मारते, किन्तु वे धक्के झेलने के लिए, हजम करने के लिए हमारे आधार (अंतःकरण) के रोम रोम में हमारे जीवन को तादृश्य रूप से एकरस होने के लिए जिस प्रकार की हमारी पात्रता, भूमिका, एकसी भक्ति वाली, चेतनवंती प्रगट हुई हो, तब उसे जो ग्रहण करता है, उसे वह ग्रहण करने में जो उसे उत्साह है वह, कोई अजीब है ।

● ● ●

समर्पण यज्ञ जीवन की झलक कोई अजीब अजीब है ।

तब ऐसा समर्पण यज्ञ जिसके जीवन में एकसा, चेतनवंता अपने ध्येय को अपने जीवन में साकार करने के लिए जो चेतनवंत मर्द होकर पराक्रमी और महापुरुषार्थी जो प्रयत्न करता रहता है और एकसा जो अपने जीवन में जो उसे ही लक्ष में रखकर जो सतत, एकसा, तैलवत् लगा रहा है, उसके आधार (अंतःकरण) में ऐसे जीवन का जो स्पर्श हो तो उस स्पर्श का झनकार कोई निराले प्रकार का है ।

तब ऐसे लोगों के लक्षण तो होते हैं । और वे परख सके ऐसे होते हैं । किन्तु वह परखने के लिए भी हमारे पास ऐसी भूमिका चाहिए । हरिःॐ ...... तत् सत् ।

• श्री*मोटा* ने अपने मातुश्री को मृत्यु समय में दर्शन दिए •

मोटा के जीवन में एक भारी आपातकालीन स्थिति के समय की बात करें। कि **मोटा** नरसिंहराव भोळानाथ की दो दौहित्रिओं को लेकर बनारस में हिन्दू युनिवर्सिटी में थे। तब **मोटा** को– **मोटा** पर उनके छोटे भाई मूळजीभाई भगत का पत्र आया कि भाई, माता तो अब मृत्युशय्या पर है और कितने दिन जीयेगी यह निश्चित नहीं है और आपको माता बहुत याद करती हैं। तब **मोटा** तो वहाँ नहीं जा सके ऐसी स्थिति थी। **मोटा** तो हमेश ऐसा ही मानते कि परिस्थिति का मिला हुआ धर्म और उसका स्वीकार और उसके अनुसार का कर्तव्य वही मुख्य धर्म है। इससे उन्होंने तो कराची उन बेटिओं के पिता को टेलिग्राम किया कि मेरी ऐसी स्थिति है और मुझे एकदम नडियाद जाना ही चाहिए। इसलिए तत्काल इन लड़कियों के साथ रहे सके ऐसी आप व्यवस्था करो। उन्होंने तो कराची से लौटता टेलिग्राम किया की भाई इच्छानुसार व्यवस्था करके तू जा। किन्तु पराये प्रदेश में इन लड़कियों को अकेली रखकर कैसे जाँये ? और किसको रखना ? और बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी में एक कायदा ऐसा था कि जो लड़कियों के साथ उनका बुजुर्ग हो और उनका जो जवाबदार ऐसा कोई योग्य व्यक्ति न हो तो उनको वहाँ रहने की मना थी। और हम तो वहाँ बंगला किराये पर रखकर रहते थे। इससे मुझे तो कोई योग्य व्यक्ति वहाँ मिला भी नहीं और कैसे मैं जाऊँ ? तो वहाँ मैंने जवाब लिखा कि भाई आप आओ तो ही हो सकता। किन्तु वे आये नहीं और मुझे यह जवाबदारी आयी। यह जवाबदारी **मोटा** को तो अदा करनी रही।

अब उस स्थिति में **मोटा** तो बंद हो गये। और भगवान का ही एक आशरा उन्होंने लिया। और एक हकीकत यह थी कि **मोटा** जब हरिजन सेवक संघ की प्रवृत्ति में से निवृत्त होने के थे, तब मा के आशीर्वाद लेने गये। माँगे ! तब माने कहा कि अबे ! तुझे चिड़ियाँ को

डालने के लिए पाव (कच्चा) चुगा तो मिलता नहीं और फिर इतना जरासा तू लाता है, वह भी तू छोड़ देता है । यह कोई रीति है तेरी ? और तूम्हें और तू क्या विशेष वहाँ जाकर पाने का है ? इसलिए यहाँ रहकर जो भी कर । और यह नौकरी कर । फिर मैंने ...... **मोटा** ने तो उनकी मा को बहुत समझाया । तो कहा कि भई देख । तुम्हें .... तुम्हें मुझे रकम देनी पड़ेगी । **मोटा** ने कहा कि हाँ, मा दूँगा । बोल तू अपने आप । कहा कि हर महीने मुझे पाँच रूपये देना । तो **मोटा** ने व्यवस्था कर दी थी । किन्तु दूसरा वचन उन्होंने माँगा । तब **मोटा** की माने कहा कि बेटा, मैं बीमार होऊँ और मृत्यु समय पर तुम्हें मेरे पास हाजिर रहना । तो **मोटा** तो राजी हो गये । कि मा वह तो मेरा धर्म है । तेरी सेवा करना यह तो मेरा सद्भाग्य है । और ऐसे समय पर तो मुझे भी तेरे पास रहने का मन हो ही ।

अब इस परिस्थिति में खुद वचन दे चुके थे और खुद वहाँ जा सके ऐसी स्थिति न थी । उस स्थिति में उन्होंने तो भगवान का ही आशरा लिया । और सतत एकसा भगवान की स्मरणभावना में, प्रार्थनाभाव में, आर्द्र और आर्त भाव से सतत पुकार करते ही रहे । और भगवान की कृपा का असीम जो आनंद का सुख **मोटा** को मिला, उसका आनंद तो उसका अनुभवी ही समझ सकता है । और वहाँ नडियाद में **मोटा** की मा को मृत्यु समय पर भगवानने **मोटा** को वहाँ प्रत्यक्ष कर दिया । यह हकीकत की बात है । और **मोटा** को तब **मोटा** के छोटे भाई मूळजीभाई वहाँ थे, उनको **मोटा** की माँने कहा कि अबे, मूळिया देख, यह चूनिया आया । किन्तु खूबी की बात तो वह है कि अगर मूळजीभाई थोड़े से व्यवहारू होते तो मूळजीभाई ने ऐसा कहा होता कि अच्छा, बहुत अच्छा कि भई, चलो, चूनिया तेरे पास मृत्यु समय पर आया वह अच्छा हुआ । किन्तु मूळजीभाई तो ऐसे कि अरे ! कि मा चूनिया यहाँ कहाँ से हो ? चूनिया तो काशी में है । अरे कि हो ? ना हो ? यहाँ मेरे पास देख । मेरे पैर दबाता है । और यह देख यह

रहा । मैं तो .... मुझे वचन दिया था चूनिया ने कि मृत्यु समय पर मैं तेरे पास हाजिर रहूँगा । वह हाजिर रहा है । देख यहाँ ! और **मोटा** ने— **मोटा** को मूळजीभाई ने उस बाबत का पत्र लिखा था । वह पत्र मेरे पास बहुत समय तक था । अभी भी मैंने खोजने का तो प्रयत्न किया किन्तु अभी मुझे मिलता नहीं है । किन्तु कहीं मैंने रखा है, वह उसे वह मेरे मन से सत्य हकीकत है । किन्तु इसके उपरांत दूसरी खूबी तो यह है कि **मोटा** को उनके गुरुमहाराज ने अनेक बार कहा था कि भई चेतन में निष्ठावान हुए शरीरधारी आत्मा उसके संसर्ग में कोई काम से, मोह से, लोभ से और राग से करके भी जो कोई उसके साथ सचमुच जुड़ा हुआ है, उसका जन्म जल्दी होता है ।

• श्री*मोटा* के मातुश्री का पुनर्जन्म •

इससे **मोटा** को तो ऐसा लगा कि यह सही रीति है । मुझे मेरे लक्षण की भी इस प्रायोगिक— प्रयोग की रीति से भी **मोटा** को इसकी समझ भी आ जाएगी । और उनकी मा का जन्म हुआ है, तो कि उसकी भी उसे । तुरंत जन्म हो तो **मोटा** को अपनी स्थिति विषयक एक प्रयोगात्मक हकीकत मिल जाए ।

इससे **मोटा**ने फिर क्या किया ? कि जब उनके भाई का पत्र आया, तब तो वे उनको एक ध्यान में— एक-एक ऐसी परिस्थिति है एक ध्यान में कि उसे संयम कहते हैं, उस संयम इस इन्द्रियों पर संयम रखने की वह बात है वह नहीं है । यह संयम कोई न्यारे प्रकार का है । योग की भाषा का यह शब्द है । टेकनिकल शब्द है ।

उस संयम की बात ऐसी है कि जब ध्यान में संपूर्णरूप से हम एकाकार हो गये हों और इस शरीर की consciousness शरीर की सभानता जाने की पल हो, उस पल में अगर जो कोई संकल्प हम रखें वह संकल्प साकार हो जाता है । यह कोई मामूली बात नहीं है । यह तो बोलने में तो आसान है । किन्तु ऐसे समय पर ऐसी इतनी सारी

तीव्रतापूर्ण सभानता कोई भी एक संकल्प प्रति जीतीजागती चेतनवंती उस समय पर प्रगट होनी यह एक दुर्घट घटना है । किन्तु **मोटा** को तो वह हस्तकमलवत् समान स्थिति थी । इससे उन्होंने तो तब ऐसा ध्यान धारण किया और शरीर की उनकी सभानता जाने की पल में ही उस संकल्प को अपने में धारण किया । और उस धारण करने के समय में ही उनको काशी के अलग-अलग मुहल्ले-गलियाँ और कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे मोड़ होकर कैसे-कैसे ठिकानें, मुख्य चौराहा आये वहाँ कैसा-कैसा हो, यह सभी प्रत्यक्ष उनकी नजरों में आया । और वहाँ एक-एक कोई एक-एक मोड़ की किसी गली में किसी एक घर एक बालिका माता को जन्मी है । वह बालिका उनकी माता का स्वरूप । वह उनको प्रत्यक्षरूप से सब नजर के सामने आया ।

और सवेरे में ही वे तो जल्दी उठकर उनको वह तादृश्यरूप से एक-एक प्रत्यक्ष details वाला जो दर्शन हुआ था और वह सब उनको ताजा था और बहुत स्मरण में रहा था उसके अनुसार चलते, चलते-चलते फिरते अनेक मोड़ लेते-लेते जो-जो अनुसार निशान मिले थे, उसके अनुसार वहाँ जाते उस घर के आगे पहुँच गये और उस घर के चूबतरे पर वे बैठे रहे । और घर के लोगों का ध्यान उनकी ओर गया नहीं, इससे स्वयं भजन गाने लगे और स्मरण गाने लगे । धुन चलाई । इससे दो-चार व्यक्ति घर में से आये । बाद आने लगे । किन्तु किसीने कुछ पूछा नहीं ।

फिर भी एक भाई आये । कि भई क्यों आप इतना सारा समय से चबूतरे पर बैठे रहे हो ? बात तो सब हिन्दी में करते थे । कि इतना सारा समय भाई । तो **मोटा** तो दूसरा क्या कहते ? किन्तु उन्होंने तो ऐसा कहा कि रात में मुझे स्वप्न आया, कि स्वप्न में मैंने आपके घर एक बालिका ने जन्म लिया है ऐसा मुझे आया । और उस बालिका जो है, वह इस मेरे जीवन के साथ जुड़ा हुआ जीव है । उसका दर्शन मुझे करके चले जाना है । मुझे दूसरा कुछ काम नहीं है । और मुझे ऐसा

हुक्म मिला है, इसके लिए मैं दो घंटा से यहाँ बैठ रहा हूँ। कहा भाई, की आप अभी ही जन्म हुआ है। अभी अब उसे बारह–चौदह घंटे भी नहीं हुए हैं। आप अनजान व्यक्ति को किस तरह हो ? मैंने कहा जैसी आपकी मरजी। मुझे कोई प्रकार का आग्रह नहीं है। किन्तु यह तो मुझे हुक्म हुआ है भगवान का, इससे मैं बैठा हूँ। आप कहेंगे तो चार–पाँच घंटे भी बैठूँगा। किन्तु मुझे हर्ज नहीं, केवल दर्शन करके मैं चला जाऊँगा।

उन लोगों को मेरे पर या तो दया आई, करुणा आई। कैसे भी करके मुझे अंदर ले गये। और महिला लोग– दूर जाकर लड़की लाकर मुझे दी। और मैंने मेरी गोद में ली। लड़की को पैर पड़ा। और मुझे प्रतीति हो गई कि भई यह जो ऐसे जो चेतनावंत शरीरधारी जो आत्मा है, उसका संसर्ग रागवाला भी यदि हो, किन्तु वह सचमुच रागवाला। उस राग में honesty, sincerity and devotion of purpose पूर्ण पक्के होने चाहिए।

और **मोटा** की मा को **मोटा** पर तो बहुत राग था। वह बात तो बिलकुल सच्ची है। वह ऐसा रागवाला **जीव** उसमें **मोटा** में, उनका– उनकी मा का दिल था। और वह **मोटा** को जब जानने मिला कि उनका थोड़े ही समय में उनका **जीव** फिर से शीघ्र में इतने शीघ्र काल में जन्म होना वह **मोटा** को भगवान की कृपा से, उनके गुरुमहाराज के आशीर्वाद से अपने जीवन की प्रत्यक्ष अभी की जो आध्यात्मिक भूमिका वाली जो हकीकत है, उसकी उनको साबिती हुई और उसके द्वारा जो आनंद हुआ वह भगवान ने कृपा करके, अत्यंत करुणा करके उनको जो इस प्रयोग का दर्शन– अनुभव जो कराया इससे उनके जीवन में जो गद्‌गद भाव उस समय पर प्रगट हुआ और भगवान पर वे कितने सारे न्योछावर हो गये होंगे, वह तो हम केवल कल्पना से समझ सकें ऐसी हकीकत है। हरिःॐ .... तत् सत्।

• • •